तेरापन्थ-आचार्य चरितावलि

खण्ड : १

सम्पादक :

श्रीचन्द रामपुरिया, बी० कॉम०, बी० एल०
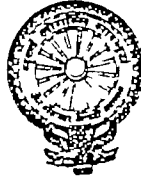
तेरापन्थ द्विशताब्दी समारोह के अभिनन्दन
में प्रकाशित

प्रकाशकीय

तेरापन्थ सम्प्रदाय के वर्तमान अधिनायक आचार्य श्री तुलसी गणि के धवल-समारोह का प्रथम चरण भाद्र शुक्ला नवमी के दिन पडता है। भाद्र शुक्ला त्रयोदशी का दिन आचार्य भिक्खु का पर्यवसान दिवस है। यह कृति इन दो अवसरो के सगम पर प्रकाशित होकर दोनो महापुरुषो के महान कृतित्व वे प्रति अपनी सम्पूर्ण श्रद्धासपूत-श्रद्धाजलि उपस्थित करती है।

इस प्रकाशन के साथ आचार्य-चरित-माला का द्वितीय ग्रथ पाठको के हाथो मे पहुचता है। अब हम अदूरभविष्य मे ही तीसरे खण्ड द्वारा अवशिष्ट आचार्यो के जीवन-चरित उपस्थित करने मे समर्थ हो सकेंगे।

आचार्य भिक्खु अपने युग के ही नही, पर सर्व युगो के महान युगपुरुष हैं। इस खण्ड द्वारा उनकी जीवन-विषयक विस्तृत सामग्री पाठको को सुलभ होती है। आशा है इसके अध्ययन का परिणाम हिन्दी मे स्वामीजी की सर्वाङ्गीण सुन्दर जीवनी के प्रकाशन के रूपमे प्रकट होगा।

श्रीचन्द रामपुरिया
व्यवस्थापक
तेरा० द्विशताब्दी साहित्य-विभाग

३, पोर्च्यूगीज चर्च स्ट्रीट,
कलकत्ता—१
भाद्र शुक्ला १, २०१८

भूमिका

'तेरापथ आचार्य चरितावलि' के इस प्रथम खण्ड मे तेरापथी सम्प्रदाय के आदि आचार्य स्वामी भीखणजी के निम्नलिखित चार जीवन-चरित सग्रहीत हैं :

१—भीखू चरित (मुनि श्री हेमराजजी कृत)

२—भीखु चरित (मुनि श्री वेणीदासजी कृत)

३—भिक्खु जश रसायण (चतुर्थ आचार्य श्री जीतमलजी स्वामी कृत)

४—लघु भिक्खु जश रसायण (चतुर्थ आचार्य जीतमलजी स्वामी कृत)

हम नीचे क्रमशः उनका सक्षिप्त परिचय दे रहे हैं :

१ : भीखू चरित

(१) रचयिता का गृही-जीवन

इस कृति के रचयिता मुनि हेमराजजी, भीखणजी स्वामी के स्वहस्त-दीक्षित शिष्य थे। दीक्षा-क्रम मे आपका स्थान पैतीसवाँ है। आपका कुछ परिचय 'तेरापथ आचार्य चरितावलि' के द्वितीय खण्ड की भूमिका मे दिया जा चुका है[1]। लेखक की 'आचार्य सत भीखण जी' नामक पुस्तक मे भी आपकी संक्षिप्त जीवनी प्रकाशित है[2]।

चतुर्थ आचार्य श्री जीतमलजी स्वामी रचित 'हेम नवरसो' मे आपका विस्तृत जीवन-चरित राजस्थानी भाषा में सगीत-बद्ध है। 'तेरापथ आचार्य चरितावलि' के द्वितीय खण्ड मे प्रकाशित आचार्य भारीमालजी, आचार्य रायचन्दजी और आचार्य जीतमलजी के राजस्थानी पद्यात्मक बखाणो मे आपके अनेक सस्मरण गुफित हैं। इसी तरह 'भिक्खु दृष्टान्त' नामक पुस्तक मे भी आपके कई संस्मरण प्राप्त हैं[3]। आचार्य जीतमलजी स्वामी कृत 'शासन विलास' मे भी आपके विषय मे महत्त्वपूर्ण उल्लेख है। प्रस्तुत खण्ड मे प्रकाशित 'भिक्खु जश रसायण' नामक कृति मे आपका गुणात्मक परिचय मिलता है[4]। प्रसगवश हम यहाँ आपका चरित कुछ विस्तार से दे रहे हैं:

(१) प्रव्रज्या से पूर्व का जीवन : आपका जन्म स० १८२९ की माघ शुक्ला १३ शुक्रवार के दिन पुष्य नक्षत्र मे आयुष्मान योग मे सिरियारी मे हुआ था[5]। आपके पिता का नाम अमरोजी बागरेचा था और माता का नाम सोमाजी।

१—देखिए भूमिका पृ० झ से ठ

२—देखिए पृ० ६९-७१

३—दृ० १५९, १६६, १७६, २७२, २७३

४—देखिए ढाल ४८ गा० ३-२०

५—आप गर्भ में आए उस समय जो घटना घटी उसके लिए देखिए हेमनवरसो १.२-३ ; तथा 'आचार्य संत भीखणजी' पृ० ६८

आपकी एकमात्र छोटी वहिन का नाम रत्तुजी था। भाई-वहिन दोनों मे परस्पर वड़ा स्नेह था। हेमराजजी कैसे स्नेही भाई थे इसकी एक घटना 'भिक्खु दृष्टान्त' मे इस प्रकार मिलती है : रत्तुजी को मामा ननिहाल ले गये। हेमराजजी का मन नही लगा। उन्होने स्वामीजी से कहा—"मन मे होता है कि अभी सवार को भेज वहन को वापस बुला लूं।" स्वामीजी बोले—"ससार के सुख ऐसे ही अस्थिर होते हैं। सयोग मे वियोग होता है[1]।" हेमराजजी का मन शान्त हुआ।

आप जन्म से ही धर्म-संस्कार-सपन्न थे। आपकी वृत्तियाँ सहज शान्त और वैराग्य युक्त थी। बचपन से ही वडे दृढधर्मी थे। रोज सामायिक करते। साधु-सतो के प्रति वहुमान की भावना रखते। आपका तात्त्विक ज्ञान वडा गभीर था। आप वडे निर्भीक चर्चावादी थे। जहाँ जाते लोगो को धर्मवोध देते। आपमे ये गुण अति प्रचुर मात्रा मे विद्यमान थे। आपके गृहस्थ-जीवन का चित्रण निम्न रूप मे प्राप्त है :

वर्ष पनरे ग्रासरे वधिया जी कांई सविया चेत खडा हुवा, किया परनारी रा पचखाण।
सन्त सत्यां नी सेवा जी नितमेवा सामायक करै, वहु पाप तणो भय जाण॥
सौम्य मुद्रा हद प्यारी जी सुखकारी हेम मुनीशरू॥
उत्पत्तिया वुद्धि भारी जी सिरदारी हेम तणी घणी, कांई चर्चावादी जाण।
कठकला ग्रधिकारी जी समझावे नर नारी भणी, कांई वांचे सरस वखाण॥
विणज करणनें जावै जी पाली भिलाडे ग्रादि दे, कांई त्या पिण दे उपदेश।
चरचा करनें समझावै जी ग्रदरावै व्रत श्रावक तणा, घाले दान दया की रेंश॥
करे भेषधार्यां सू चरचा जी कांई थानक मांहे जायनें, विविध न्याय थी जोय।
इम पाखड्यां नें हटावै जी सुध जाव न ग्रावै तेहनें, ते सुणियां ग्रचरज होय॥
सुवनीतपणे सुखदाई जी नरमाई हेम तणी घणी, कांई भिक्षु सू वहु प्रेम।
त्यांरो विरहो खमणो ग्रति दोरो जी नही सोरो सग तसु छाडणो, कांई हिये निरमला हेम[2]॥

(२) प्रतिबोध और प्रव्रज्या पन्द्रह वर्ष की अवस्था मे आपने आजीवन पर-स्त्री-त्याग व्रत ग्रहण किया। आपका हृदय वैराग्यमय भावनाओ से स्निग्ध था। प्रव्रज्या ग्रहण करने की भावना भी रखते थे। इसे और भी वलवती करने की इच्छा से सं० १८५१ मे स्वामीजी ने पाली मे चातुर्मास न कर सिरियारी में किया पर हेमराजजी ने अपना निश्चित अभिमत व्यक्त नही किया। केवल विचार ही विचार मे तीन वर्ष व्यतीत कर दिये। सं० १८५३ में आपने स्वामीजी से प्रतिबोध पा यावज्जीवन विवाह न करने का व्रत ग्रहण किया और साधु प्रतिक्रमण सीखने लगे[3]।

१—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० २५८ पृ० १०२

२—हेम नवरसो १.६-१०

३—प्रतिबोध की घटना के लिए देखिए—'तेरापंथ आचार्य चरित्तावलि' (द्वि० ख०) भूमिका पृ० ञ–ट।

आपकी दीक्षा सं० १८५३ की माघ शुक्ला त्रयोदशी वृहस्पतिवार के दिन पुष्य नक्षत्र और आयुष्यमान योग मे सिरियारी मे सम्पन्न हुई। उस समय आप चौबीस वर्षीय नवयुवक थे। दीक्षा और उसके पूर्व जो घटनाएँ घटी उनका वर्णन इस प्रकार है :

वैरागी बनडो बण्यो गुणधारी रे, हेम हर्ष हुशियार हेम सुखकारी रे।
माहा सुद तेरस दिन भलो गु०, दीक्षा महोत्सव सार ॥
बाबारो बेटो भाई रावले गु०, जाय पुकारयो ताय। हेम०।
भिक्षु नें कहवावियो गु०, मती हरज्यो नगरी मांय। हेम० ॥
गाम रा पञ्च भेला थई गु०, हेम भणी ले साथ। हेम०।
ठुकराणी पासे गया गु०, कही दीक्षा री बात ॥ हेम० ॥
वस्त्र गहणा सहित देखी हेम ने आणन्दा रे, ठुकराणी बोली बाय के। आ०।
दौलतसिंघ री सूस है आ०, यु का यु देस्यू परणाय के। आ० ॥
जब हेम जाब दीधो इसो आ०, थांरो परणावा रो पेम के। आ०।
गाम मे कुवारा घणा आ०, म्हारे परणवा को नेम के। आ० ॥
इम कही हेम पाछा वली आ०, आय बैठा स्वामी पास के। आ०।
गाम मे रहिवा री आगन्या आ०, पच लेई आया तास के ॥ आ० ॥
माघ शुक्ल पुनम पछै आ०, छ काय हणवा रा त्याग के। आ०।
हेम ने नेम पहले हुतो आ०, कीधो आण वैराग के। आ०।
न्यातिला कहै बहिन परणाय ने आ०, पछै लीज्यो सजम भार के। आ०।
सावो फागण बदी बीज रो आ०, पिण हेम न मानी लिगार के। आ० ॥
पछै न्यातिला हठ कीधो घणो आ०, जब हेम कियो अगीकार के। आ०।
पूज भणी कह्यो आयनें आ०, स्वामी निषेध्यो तिवार के। आ० ॥
रे भोला अनर्थ करे आ०, दिवस न लघणो एक के। आ०।
न्यातिला गोतिला अछै आ०, ए फन्द मांही न्हाखै विशेष के। आ० ॥
हेम समझ पाछा आयनें गु०, कहै न्यातिलां नें एम के। हेम०।
हूं कह्यो न मानू केहनो गु०, थे तो भंगावो नेम के ॥ हेम० ॥
तेरस दिन उलघू नही आ०, थे क्यांने करो बकवाय के। आ०।
लोक हसी ने इम कहै आ०, याने भीखणजी दिया भरमाय के। आ० ॥
इकवीस दिवस रे आसरे आ०, जिम्या बनोला जाण के। आ०।
दीख्या महोछब दीपतो आ०, मडिया बहु मण्डाण के। आ० ॥
हजारां लोक भेला हुआ आ०, वड तले दीक्षा विचार के। आ०।
स्वाम भिक्षु स्व हाथ सू आ०, स्वमुख सयम भार के। आ० ॥

सवत् अठारे तेपने आ०, महा सुदि तेरस जाण के। आ०।
वृहस्पतवार वखानिये आ०, पुष्य नक्षत्र वलवान के। आ०॥
आयुष्मान जोग आयो भलो आ०, हर्ष दीक्षा मुनि हेम के। आ०।
जय २ जय जन उचरे आ०, पाम्या अधिको प्रेम के। आ०॥
बारे सन्त आगे हुता आ०, स्वाम भिक्खू रे सोय के। आ०।
हेम हुवा सत तेरमा आ०, यां पछै घस्यो नही कोय के[1]। आ०॥

(३) चातुर्मासों का व्यौरा दीक्षा के बाद आप चार चातुर्मास मे स्वामीजी के साथ थे। स्वामीजी की आज्ञा के अनुसार पाँचवां चातुर्मास मुनि वेणीरामजी के साथ किया। आपके गुणो को देखकर स्वामीजी ने सं० १८५८ मे आपको सिंघाड़पति वनाया।

गुण वुद्धि कठकला भली, भिक्खू देखी भारी हो।
कियो सिंघाडो हेम नो, जाण्या महा उपगारी हो[2]॥

आपके साधु-जीवन के कुल ५१ चातुर्मासो का व्यौरा इस प्रकार है :

१—खैंरवे	२	१८५४ (स्वामीजी के साथ), ६७
२—पाली	११	१८५५,६१,६६,७१,७५,८०,८५,८६,९२,९५,९८
३—श्रीजीद्वार	४	१८५६,८७,१९००,१९०३
४—पुर	४	१८५७,५८ (मुनि वेणिरामजी के साथ) ८४,१९०१
५—पिसागण	१	१८६०
६—जैंतारण	१	१८६२
७—कण्टालिया	२	१८६३,७२
८—सिरियारी	४	१८५९,६५,७३,९७
९—बालोतरे	२	१८६८,९१
१०—कृष्णगढ	१	१८६९
११—इन्द्रगढ	१	१८७०
१२—गोघुदे	४	१८७४,८२,८८,९९
१३—देवगढ	२	१८६४,७६
१४—उदयपुर	२	१८७७,१९०२
१५—आमेट	३	१८७८,८३,१९०४
१६—पिंपाड	५	१८७९,८६,९०,९३,९६
१७—जयपुर	१	१८८१
१८—लाडनूं	१	१८९४

१—हेम नवरसो ३ २-१८, २३
२—हेम नवरसो ४.७

(४) सिंघाड़पति के रूप में · सिंघाड़पति के रूप मे आपमे कुशल नेतृत्व दिखाई पडता है। आप दूरदर्शी और साहसी थे। मरुधर, मारवाड, हाड़ोती और ढूढाड़ इन चार प्रदेशो मे आपने गुरु आज्ञा से भ्रमण किया। आपके द्वारा निम्नलिखित १४ दीक्षायें सपन्न हुई :

१—सं० १८६१ के पाली चातुर्मास के बाद फाल्गुन मे वैरागी सत जीवनजी की।

२—स० १८६६ मे पाली चातुर्मास मे तपस्वी संत पीथलजी की। आपने पत्नी छोडकर दीक्षा ली थी।

३—स० १८७३ मार्गशीर्ष बदि पचमी के दिन लाहवा मे मुनि रतनचदजी की। आपकी पत्नी ने भी साथ ही दीक्षा ग्रहण की।

४—उसी दिन तपस्वी सत अमीचदजी की। आपने पुत्र और पत्नी को छोडकर दीक्षा ग्रहण की थी।

५—स० १८७३ मे खामगाव मे सती नन्दूजी की। आपको गृहस्थ के वस्त्रो मे रहते हुये ही दीक्षा दी गई। दीक्षा के बाद आपने गृहस्थ-वस्त्रो को उतारा।

६—स० १८७६ के देवगढ के चातुर्मास मे तपस्वी सत कर्मचदजी की। आपने माता-पिता को छोडकर दीक्षा ली थी।

७—उपर्युक्त चातुर्मास मे ही सत रत्नजी की। आपने पत्नी छोड कर दीक्षा ग्रहण की।

८—उपर्युक्त चातुर्मास मे ही सत शिवजी की। आपने भी पत्नी छोड़कर दीक्षा ग्रहण की।

९—स० १८७७ के चातुर्मास के बाद गोघुन्दा मे वसत पचमी के दिन सत सतीदासजी की।

१०—स० १८८१ मे सत उत्तमचदजी की। आप खीवार वासी थे। आपने स्त्री-पुत्र छोड़कर दीक्षा ग्रहण की थी।

११—इसी वर्ष उदयपुर मे मुनि उदयचदजी (बडे) की।

१२—स० १८८५ मे पाली चातुर्मास मे मुनि मोतीजी की।

१३—स० १९०२ के चातुर्मास के बाद अटाटे मे मुनि हर्षचदजी की। आपने माता-पिता, भाई-बहन को छोडकर दीक्षा ग्रहण की थी। आपकी दीक्षा आभूषणो सहित हुई। दीक्षा के बाद आपने आभूषणो का त्याग किया।

(५) सिंघाड़े की विशिष्ट तपस्याए · आपके सिंघाडे मे तपस्याएँ भी बडी-बडी होती रही। उनका विवरण इस प्रकार है :

१—सं० १८६२ मे जैतारण चातुर्मास मे मुनि जीवनजी ने २२ दिन की तपस्या की। बाईसवे दिन सथारा किया। १७ दिन का सथारा आया। इस तरह ३९ दिन की तपस्या हुई।

२—स० १८६४ मे देवगढ चातुर्मास मे सत सुखजी ने सथारा किया। दस दिन का अनशन आया।

३—सं० १८६६ मे पाली चातुर्मास में मुनि भोपजी ने ५८ दिन की उदकागार तपस्या की। पारण के बाद मुनि हेमराजजी के चरण पकडकर आपने यावज्जीवन संथारा कराने का अनुरोध किया। चार पहर का संथारा आया।

४—सं० १८७० के इन्द्रगढ चातुर्मास मे मुनि रामजी अष्टम भक्त तप मे परलोक सिधारे।

५—सं० १८७१ के शेषकाल मे नानजी चोले की तपस्या में दिवंगत हुए।

६—स० १८७४ गोघुंदा चातुर्मास मे मुनि पृथ्वीराजजी ने ८२ दिन की तपस्या की। मुनि पीथलजी (लघु) ने ४५ दिन, मुनि जोधराजजी ने ८६ दिन, मुनि सरूपचन्दजी ने १४ दिन और मुनि भीमराजजी ने १२ दिन की तपस्या की।

७—सं० १८७५ के पाली चातुर्मास में मुनि पृथ्वीराजजी ने ८३ दिन और मुनि पीथलजी (लघु) ने ३६ दिन की तपस्या की। मुनि सरूपचन्दजी और जीतमलजी ने भी ४२।४२ उपवास किये।

८—सं० १८७६ के देवगढ चातुर्मास मे मुनि पीथलजी ने १०६ दिन का तप किया।

९—सं० १८७७ के उदयपुर चातुर्मास मे मुनि वर्द्धमानजी तपस्वी ने धोवन के आगार से १०४ दिन की तपस्या की।

१०—सं० १८७८ के आमेट चातुर्मास मे मुनि पृथ्वीराज ने ९९ दिन की तपस्या की।

११—१८८५ के आमेट चातुर्मास मे मुनि उदयचन्दजी ने मास-मास क्षमण का तप किया। मोतीजी मुनि ने आछ आगार से ७६ दिन का तप किया।

१२—स० १८८६ मे पिंपाड मे उदयचन्दजी ने आछ आगार से एक मास का तप किया। मुनि दीपजी ने आछ आगार से १८६ दिन का तप किया।

१३—सं० १८८७ मे दीपचन्दजी स्वामी ने जल के आगार से ३१ दिन का तप किया और उदयचन्दजी ने एक मास का।

१४—सं० १८८८ गोघुदे के चातुर्मास मे सर्व मुनि उत्तमचन्दजी, उदयचन्दजी और दीपचन्दजी ने क्रमशः ३४,३७ और ४५ दिन की तपस्याये की।

१५—सं० १८९० मे पिंपाड मे उदयचन्दजी ने मास क्षमण का तप किया।

१६—सं० १८९२ के पाली चातुर्मास मे वैयावृत्य करते हुए मुनि उदयचन्दजी ने ३० दिन की तपस्या की।

१७—स० १८९३ के पिपाड चातुर्मास मे वैयावृत्य करते हुए मुनि उदयचन्दजी ने ४३ दिन की तपस्या की।

१८—सं० १८९४ के लाडनू चातुर्मास मे मुनि रामजी ने तीस दिन की तपस्या की और वैयावृत्यी मुनि उदयचन्दजी ने जल के आगार से ३७ दिन की।

१९—स० १८९५ के पाली चातुर्मास मे मुनि रामजी ने ४१ दिन का तप किया। मुनि उदयचन्दजी ने उदकागार से ३० दिन की तपस्या की।

२०—स० १८९६ के पिंपाड चातुर्मास मे मुनि उदयचन्द जी ने जल के आगार से २० दिन की तपस्या की।

२१—स० १८९७ के सिरियारी चातुर्मास मे मुनि उदयचन्दजी और मुनि अनूपचन्दजी ने जल के आगार से ५० दिन की तपस्या की।

२२—स० १८९८ मे पाली चातुर्मास मे मुनि सतीदासजी ने आछ आगार से ३१ दिन की तपस्या की और मुनि उदयचन्दजी ने २१ दिन की।

२३—सं० १८९९ मे गोघुदे चातुर्मास मे सत भैरजी ने २१ दिन और मुनि उदयचन्दजी ने जल के आगार से ३० दिन की तपस्या की।

२४—स० १९०० मे श्रीजी द्वार चातुर्मास मे मुनि भैरजी ने २० दिन की और मुनि उदयचन्दजी ने जल आगार से ३० दिन की तपस्या की।

२५—सं० १९०१ के पुर चातुर्मास मे मुनि उदयचन्दजी ने धोवन जल के आगार से ७७ दिन का तप किया।

२६—सं० १९०२ मे उदयपुर चातुर्मास मे मुनि उदयचन्दजी ने जल के आगार से ३० दिन की तपस्या की।

२७—सं० १९०३ के श्रीजी द्वार चातुर्मास मे मुनि कर्मचन्दजी ने जल के आगार से ३१ दिन की तपस्या की।

२८—सं० १९०४ के आमेट चातुर्मास मे मुनि उदयचन्दजी ने २ मास का तप आछ आगार से किया।

(६) दीर्घ स्वस्थ मुनि जीवन : आपका दीक्षा-पर्याय काल ५१ वर्ष व्यापी रहा। यह काल स्वामीजी के दीक्षा-पर्याय काल से भी नौ वर्ष अधिक है। इस सुदीर्घ कालीन मुनि जीवन में आप प्रायः स्वस्थ रहे।

सं० १८७५ के पाली चातुर्मास के बाद आप देवगढ पधारे। एक दिन दिशा से वापस आते समय आपको गाय ने चोट पहुचा दी, जिससे आपका घुटना उतर गया। कबल मे सुला मुनि आपको शहर मे ले आये और दिल्ली के वैद्य मगनीरामजी ने मुनियो को उपचार बतलाया। उस उपचार के द्वारा आप स्वस्थ हुये, परन्तु इस चोट के कारण आपको नौ मास तक वही रहना पड़ा और स० १८७६ का चातुर्मास देवगढ मे ही हुआ।

मुनि हेमराजजी के करीब ३॥। वर्ष तक नेत्रो मे निजला का रोग रहा। इससे दृष्टि जाती रही। सं० १८९७ का चातुर्मास सिरियारी मे रहा। वैशाख मे एक सत ने सिरयारी मे ही नेत्रों की कारी की। आपके नेत्रो मे पुनः ज्योति प्रगट हुई।

(७) अन्तिम चातुर्मास के बाद का विहार : आपका अन्तिम चातुर्मास सं० १९०४ मे आमेट शहर मे हुआ। चातुर्मास की समाप्ति के बाद आप कांकड़ोली पधारे।

वहां आपने तृतीय आचार्य ऋषि रायचंदजी स्वामी का दर्शन किया और फिर उन्ही के साथ घोउन्दे गाव पधारे। वहां से आप श्रीजी द्वार पधारे और वहा एक मास रहे। फिर सिसोदे, कांकडोली और तासोल होते हुये केलवा पधारे। वहा से विहार कर लाहवा होते हुये आमेट पधारे। आपका विचार मरुधर देश जाने का था। साधु और श्रावको ने आपको बहुत रोका पर आप अडिग रहे और विहार कर एक रात कमेरी रहे और दो रात कुवाथल। फिर वहाँ से दोलोजीराखेडे से होते हुये देवगढ पधारे। तीव्र उष्णकाल आ गया था। फिर भी मरुधर जाने का विचार आपने नही छोडा। श्रीजी द्वार के प्रसिद्ध श्रावक मायाचंदजी के पुत्र फोजमलजी ने आपके दर्शन किये और आपसे रुकने की अर्ज की तब आप बोले—"हम मरुधर काल के खीचे हुये जा रहे हैं तो भी कुछ पता नही—'कालरा खॉच्या जावॉ अछॉ, काई ते पिण खबर न काय।" आप सात रात देवगढ रहे। इसके बाद पीपली, फुलेज होते हुये सिरियारी पधारे।

आप सिरियारी पधारे उस दिन जेठ बदी चौथ का दिन था। द्वादशी तक आप पूर्णतः स्वस्थ थे और उस दिन भी, आपने खडे-खडे ही प्रतिक्रमण किया था :

> जाझा एकावन वर्ष स्वामजी, कांई विचर्या हेम सपेख।
> वृद्धपणे पिण स्वामजी, कियो उभो पडिकमणो विशेष॥
> जेठ बिद बारस तांई स्वामजी, होजी उभा पडिकमणो कीध।
> उद्यमी कर्म काटण तणा, होजी जग मांहे जश लीध[1]॥

(८) अन्तिम सप्ताह : कहना होगा कि आपकी पहली अस्वस्थता यही से आरम्भ होती है। जेठ बदी तेरस के दिन आपको कुछ श्वास का प्रकोप हुआ। चौदस के दिन आप गाँव के बाहर दिशा के लिये पधारे। इसी दिन आचार्य जीतमलजी स्वामी ने आपके दर्शन किये। उस दिन आपने जयाचार्य से अनेक तरह का वार्तालाप किया। इस तरह आपको दिन मे चैन रहा पर रात्रि मे श्वास विशेष रूप से उठने लगा। अमावस के प्रातः फिर साता हुआ। सुबह के भोजन मे आपने दो फुलके खाये और शाम के आहार में एक फुलका। रात्रि मे पुनः श्वास-प्रकोप बढ गया। प्रतिपदा के प्रभात में फिर साता हुई और आप गण-समुदाय सम्बन्धी बाते करते रहे। इस दिन तक दोनो वक्त का प्रतिक्रमण स्वयं बैठकर करते और उच्च स्वर से पाठोच्चार करते रहे।

इन दिनो आचार्य ऋषि रायचन्दजी चिरपटिया मे विराजते थे। वही आपकी अस्वस्थता का समाचार आचार्य श्री को प्राप्त हुआ। प्रतिपदी के दिन आपने कपूरजी मुनिजी को मुनि हेमराजजी के पास भेजा। उस दिन आपने कहा—"आहार करने का भाव नही है क्योकि इससे श्वास बढ़ जाता है।" परन्तु जीतमलजी स्वामी के विशेष अनुरोध से आपने एक लूखे (सूखे) फुलके का आहार किया।

१—हेम नवरसो ८.१८-१६

उसी दिन तीसरे पहर आप मुनि कपूरजी से बोले—"शीघ्र जाओ और आचार्य श्री को आज ही दर्शन करने के लिये कहो। यदि आज न पधार सकें तो कल पहर दिन बीतने के पूर्व दर्शन करें। देर न करे। कही उनके मन की मन ही मे न रह जाय।" इसके बाद श्वास का प्रकोप बढ गया। चौथे पहर कुछ साता हुई और फिर शासन सम्बन्धी बाते करने लगे। शाम के आहार का त्याग कर दिया। सायकाल को अपने मुख से शब्दोच्चार करते हुये बैठे-बैठे प्रतिक्रमण किया। रात्रि मे संतो से व्याख्यान दिलवाया।

रात्रि के अन्तिम प्रहर मे मुनि सतीदासजी और उदयचन्दजी ने आपको चौबीसी की चौदह ढाले सुनाई। बाद मे आप फिर अनेक तरह की वैराग्य की बाते सन्तो से करने लगे। जीतमलजी स्वामी ने विचार किया : "आयु का क्या भरोसा ? अभी तो कोई शका नही, फिर भी 'मिच्छामि दुक्कड' दिला देना अच्छा है।" ऐसा सोच उन्होने व्रत उच्चारित करवाये और 'मिच्छामि दुक्कड' दिलवाया। आपने बडे प्रसन्न मन और बडी सावधानी के साथ आलोचना की। उस समय का चित्र इस प्रकार है :

हेम पिण निज मुख सू कहै हो, ऊँचे शब्द उचार।
मिच्छामि दुक्कडं मांहरे हो, एहवा सावधान गुणधार॥
इम पांचू ही भेद में हो, लाग्यो हुवे अतिचार।
मिच्छामि दुक्कड तेहनो हो, कह्या जूजूआ शब्द उचार॥
मन वच काया गुप्त में हो, लागो हुवे अतिचार।
जू जूवा भेद करी कह्या हो, मिच्छामि दुक्कड उदार॥
छऊं व्रतां रा अतिचार मझे हो, हेम बोले ऊचे स्वर बाण।
गये काल रो मिच्छामि दुक्कड हो, आगमिये काल रा पचखाण॥
पाप अठारे आलोविया हो, जूदा जूदा ले नाम।
पचखाण आगमिये काल मे हो, त्रिविधे त्रिविधे कर ताम॥
इण रीत महाव्रत आलोविया हो, आलोवण अधिकार।
भाग्यबली हेम महामुनि हो, योग्य मिल्यो श्रीकार[1]॥

इसके बाद मुनि जीतमलजी ने स्थानांग, उत्तराध्ययन आदि सूत्रों के पाठ सुनाते हुये आपके परिणामो को वैराग्य मे ऐसा तल्लीन किया कि आपकी आत्मा आनन्दविभोर हो उठी। मुनि जीतमलजी ने "मृत्यु महोत्सव है" इस बात को बड़े मार्मिक ढंग से अपने विद्या-गुरु के सम्मुख रखा और उसके बाद उनके गुणवाद किये।

अब तक प्रतिक्रमण का समय आ चुका था। आप सतीदासजी से बोले—"निद्रा आ रही है।" सतीदासजी बोले—"लेटकर निद्रा ले।" आप बोले—"प्रतिक्रमण करना है।"

१—हेम नवरसो ६, ३६-३८, ४२-४४

सतीदासजी बोले—"आप अस्वस्थ हैं ऐसी स्थिति मे प्रतिक्रमण न करें तो कोई बात नही।" आप बोले—"प्रतिक्रमण तो करना ही है, इसमे अस्वस्थता का क्या प्रश्न ?" इसके बाद उच्च स्वर से पाठोच्चार करते हुये आपने बैठे-बैठे प्रतिक्रमण किया।

(६) महा प्रयाण : तदन्तर संतो ने प्रतिलेखन किया और मुनि मोतीजी स्वामी दिशा जाने की आज्ञा लेने के लिये आये। आपने उनके मस्तक पर अपना हाथ रखा। संतो ने पूछा— "साता है तो ?" आपने आह्लादपूर्वक उच्च स्वर मे उत्तर दिया—"देव, गुरु के प्रताप से साता है।"

फिर आप बाजौट से नीचे उतर दिशा पधारे। सभी संत उपस्थित थे।

किसी ने श्वास की औषधि बताई थी। उसको कई संत घिस रहे थे। मुनि जीतमलजी सतीदासजी आदि संतो से बोले—"हम लोग दिशा से वापस आकर औषधि देंगे।" ऐसा कह पछेवड़ी (ऊपर का कपडा) पहन दिशा जाने को प्रस्तुत हुये। इस समय जीतमलजी स्वामी के मन में आया—"यदि कही श्वास बढ गया तो ? अच्छा हो हम औषधि देकर ही दिशा जायँ।" ऐसा विचार कर वे ठहर गये। मुनि हेमराजजी दिशा से निवृत्त हो बाजौट पर बैठे। शरीर मे अत्यन्त पसीना आ गया। श्वास का प्रकोप अत्यन्त बढ गया। हाथ के इशारे से अफीम माँगी। मुनि जीतमलजी ने अफीम दी। आप मुह मे रख उसे चूसने लगे। इतने मे पुद्गलो की शक्ति क्षीण होती हुई दिखाई दी।

अवसर देखकर मुनि जीतमलजी ने अनशन ग्रहण कराया। आपने शुद्ध विवेकपूर्वक उसे ग्रहण किया। मुनि जीतमलजी बोले—"स्वामी ! आपको अरिहत, सिद्ध, साधु और धर्म इन चारो शरणो का आधार है।" इसके बाद अनेक वैराग्य की बाते सुनाईं। तदन्तर चारों आहार का त्याग कराया। फिर शरणो का आधार दिलाया।

इस प्रकार एक घडी का समय बीता। आप मुनि सतीदासजी और करमचंदजी के हाथो के सहारे बैठे हुये थे। इसी दशा मे आपने समाधि-मरण को प्राप्त किया। साधुओ ने शरीर व्युत्सर्ग कर कायोत्सर्ग ध्यान किया। सब सतो ने उस दिन उपवास किया।

इस तरह आपका स्वर्गवास आपकी जन्मभूमि सिरियारी मे ही स० १९०४ की ज्येष्ठ शुक्ला द्वितीया शनिवार के दिन हुआ। उस दिन वहाँ साठ से अधिक साधु-साध्वियाँ उपस्थित थी। आचार्य श्री रायचन्दजी स्वामी आपके स्वर्गवास होने के दो मुहूर्त बाद पधारे। उस समय आपने जो उद्गार प्रकट किये उनको मुनि जीतमलजी ने इस प्रकार पद्य-बद्ध किया है :

भिक्खू भारीमाल सतजुगी चल्या हो, जब इसी करडी लागी नांय।
पिण हिवडाँ करडी लागी घणी हो, इम बोल्या ऋषराय[१] ॥

---

१ —हेम नवरसो ६.१०६

(१०) **महान् व्यक्तित्व :**—आपके व्यक्तित्व के विषय मे हम जयाचार्य के ही उद्गारो को प्रकट करेंगे :

मुनिवर रे शीयल धर्‍यो नवबाड सू रे, धुर बाला ब्रह्मचार हो लाल।
ए तप उत्कृष्टो घणो रे, सुरपति प्रणमें सार हो लाल॥
मुनिवर रे उपशम रस मांहें रह्या रे, विविध गुणा री खाण हो लाल।
एकन्त कर्म काटण भणी रे, सवेग रस गलताण हो लाल॥
मुनिवर रे स्वाम गुणां रा सागरु रे, गिरवो अति गम्भीर हो लाल।
उजागर गुण आगलो रे, मेरु तणी पर धीर हो लाल॥
मुनिवर रे कठिन वचन कहिवा तणो रे, जाण के लीधो नेम हो लाल।
बहुलपणें नही बागर्‍यो रे, वचनामृत सू प्रेम हो लाल॥
मुनिवर रे विविध कठिन बच सांभली रे, ज्यारे मन मे नही तमाय हो लाल।
तन मन वच मुनि बश कियो रे, ए तप अधिक अथाय हो लाल॥
मुनिवर रे चौथे आरे सांभल्या रे, क्षमा शूरा अरिहत हो लाल।
बिरला पचम काल में रे, हेम सरिषा सन्त हो लाल॥
मुनिवर रे निरलोभी मुनि निर्मला रे, आर्जव निर अहकार हो लाल।
हलका कर्म उपधि करी रे, सत्य वच महा सुखकार हो लाल॥
मुनिवर रे सयम में शूरा घणा रे, वर तप विविध प्रकार हो लाल।
उपधि अनादिक मुनि भणी रे, दिलरो हेम दातार हो लाल॥
मुनिवर रे ईर्या धून अति ओपती रे, जाणे चाल्यो गजराज हो लाल।
गुण मूरत गमती घणी रे, प्रत्यक्ष भवदधि पाज हो लाल॥
मुनिवर रे स्वाम गुणा रा सागरू, किम कहिये मुख एक हो लाल।
ऊडी तुझ आलोचना रे, बारू तुझ विवेक हो लाल॥
मुनिवर रे अखड आचार्य आगन्यां रे, तें पाली एकणधार हो लाल।
मान मेट मन वश कियो रे, नित्य कीजे नमस्कार हो लाल॥
साझ घणा सन्ता भणी रे, तें दीधो अधिक उदार हो लाल।
गण वच्छल गण वालहो रे, समरे तीरथ च्यार हो लाल[१]॥

(११) **आचार्यों के वहुमान के पात्र :**—आपने तीन आचार्यो के—आचार्य भीखनजी, आचार्य भारीमालजी और आचार्य रायचन्दजी के युग देखे। आपको सभी का स्नेह एवं वहुमान प्राप्त था।

आपके दीक्षा लेने के भाव स्थिर होते ही स्वामीजी ने युवाचार्य भारीमालजी से फरमाया :

१—हेम नवरसो : ७. ६-१६,१८,२४-२६

भारिमल सू भिक्खू कहै, अब थे हुवा नचिन्त।
आगे तो थांरे म्हे हुता, अब हेम अघजीत ॥
जे कोई पाखड्यां थकी, पड़े चरचा रो काम।
तो छै थांरे हेमजी, इमि कहि भिक्खू स्वाम[1] ॥

जब मुनि वेणीरामजी को आपके यावज्जीवन ब्रह्मचर्य ग्रहण करने का संवाद स्वामीजी से मिला तब वे बोले :

वैणीरामजी साभली, हर्ष्या घणा मन मांय।
घणा प्रशंस्या स्वाम नें, आप कीधी वात अथाय ॥
थे शील अदरायो हेम नें, कीधो उत्तम काम।
म्हे पिण खप कीधी घणी, (पिण) टीप न लागी ताम[2] ॥

आपका व्यक्तित्व कितना आकर्षक एव प्रभावशाली था यह इन दोनो घटनाओ से स्वय प्रकटित हो जाता है। स्वामीजी ने आपमे एक महान् ओजस्वी आत्मा का आलोक देखा था।

एक बार उदयपुर के राणाजी ने भारीमालजी स्वामी को उदयपुर मे न रहने का हुक्म दे दिया। बाद मे उनको अपनी गलती महसूस हुई और उन्होने भारीमालजी स्वामी से उदयपुर पधारने की विनती की :

छिहत्तरें वर्ष पुर मझें, भारीमाल रिपराय।
आई हिन्दुपति नी विनती, करी घणी नरमाय ॥
उदयापुर पधारियें, दुनियां साहमो देप।
दुष्ट साहमो नही देखियें, क्रिपा करो विसेष[3] ॥

आचार्य श्री भारीमालजी स्वय तो नही पधारे पर उनकी विनती स्वीकार कर हेमराजजी स्वामी के सिंघाडे को भेजा। इस अवसर पर ऋषि रायचन्दजी (भावी तृतीय आचार्य) भी आपके साथ थे :

हेम रिष रायचन्द जी, तेरे साध तिवार।
पूज हुकम सू आविया, उदयापुर सेंहर मझार ॥

१—हेम नवरसो ३. दोहा २-३

२—वही दोहा ७-८

३—तेरापथ आचार्य चरितावलि (द्वि० खण्ड) : आचार्य भारीमाल रो बखाण ५. दोहा ४-५

उदयापुर आर्ये नम्यो, हिन्दुपति हरष सहीत।
उपगार हुवो त्यां अति घणो, जांणे चौथा आरा नी रीत[1] ॥

आचार्य श्री ने मुनि श्री हेमराज को भेजना अपने पधारने के बराबर ही माना।

आमेट के अन्तिम चातुर्मास के बाद जब आप काकडोली पधारे तब आचार्य ऋषि रायचन्दजी स्वयं सतो के साथ आपकी अगवानी के लिए गये। यह चरम सम्मान था :

चर्म चौमासो उतर्यो, विहार कियो तिणवार।
विचरत विचरत आविया, कांकडोली शहर मझार॥
परम पूज्य सुण हर्षिया, सत घणा ले सग।
स्हांमा आया हेम नें, उपनो घणो उमग॥
बे कर जोडी वन्दना करे, देखे बहु जनवृन्द।
नर नारी हर्ष्या घणा, पाम्या अधिक आणन्द[2] ॥

आचार्य श्री देहान्त के पूर्व नही पहुच सके। दो मुहूर्त बाद मे पहुचने पर उन्होने जो उद्गार व्यक्त किये वे ऊपर दिये जा चुके हैं। वे उद्गार भी इसी भावना के प्रतीक हैं।

स्वर्गवास के बाद आपने मुनि श्री जीतमलजी को 'हेम नवरसो' लिखने का आदेश दिया :

परमपूज्य जीत ने कह्यो हो, करो नवरसो सार।
इम पूज्य तणी आज्ञा थकी हो, जोड्यो हेम नवरसो उदार[3] ॥

इन पक्तियो से भी उसी भावना की अभिव्यक्ति होती है।

स० १८८१ मे आचार्य श्री रायचन्दजी ने आपके आहार के विषय मे पाती का हिसाब उठा दिया। यह भी महती कृपा का ही कारण था।

(१२) **तपस्वी जीवन :** आपका जीवन बडा तपस्वी था। स० १८५६ के चातुर्मास मे आप स्वामीजी के साथ थे। आपने चातुर्मास भर एकान्तर तपस्या की। आपके तपस्वी-जीवन की झाँकी जयाचार्य के शब्दो मे इस प्रकार है :

१—तेरापथ आचार्य चरितावलि (द्वि० ख०) आचार्य भारीमालजी रो वखाण ५. दोहा ७, ८

इस घटना का उल्लेख हेम नवरसो ५ ४६-४७ में इस प्रकार मिलता है

उदियापुर धर्म उजासो रे सततरे कियो चौमासो रे।
हिन्दुपति हुवो अधिक हुलासो॥
भीमसिह भक्ति हद कीधी रे नमस्कार वदणा प्रसिद्धि रे।
तिण सू हुई घणी धर्म वृद्धि॥

२—हेम नवरसो : ८ दोहा १-३

३—हेम नवरसो : ६. ११४

४—हेम नवरसो ५.६६

मुनिवर रे उपवास वेला बहुला किया रे, तेला चोला तंतसार हो लाल ।
पांच-पांच ना थोकडा रे, कीधा वहुली वार हो हाल ॥
हेम ऋपि भजिये सदा रे ॥
मुनिवर रे षट दिन कीधा खंत सू रे पूरो तप सू प्यार हो लाल ।
श्राठ किया उचरग सू रे, हेम वडा गुणधार हो लाल ॥ हेम० ॥
मुनिवर रेइसना त्याग किया ऋषि रे, वहु विगय तणो परिहार हो लाल ।
हेम वैरागी देखने रे, पामे श्रधिको प्यार हो लाल ॥ हेम० ॥
मुनिवर रे सीतकाल बहु सी खम्योरे, एक पछेवडी परिहार हो लाल ।
घणा वर्पां लग जाणज्यो रे, हेम गुणाँ रा भण्डार हो लाल ॥ हेम० ॥
मुनिवर रे उभा काउसग्ग श्रादस्यो रे, सीतकाल मे सोय हो लाल ।
पछेवडी छांडी करी रे, वहु कष्ट सह्यो श्रवलोय हो लाल ॥ हेम० ॥
मुनिवर रे सज्झाय करवा स्वामजी रे, तन मन श्रधिको प्यार हो लाल ।
दिवस रात्रि में हेमनो रे, एहिज उद्यम सार हो लाल ॥ हेम० ॥
मुनिवर रे काउसग मुद्रा स्थापने रे, ध्यान सुधा रस लीन हो लाल ।
नित्य प्रति उद्यम श्रति घणो रे, मुक्त स्हामी धुन कीन हो लाल[१] ॥ हेम० ॥

(१३) **कुछ जीवन-प्रसग :** आपके जीवन के कई प्रसंग अत्यन्त ही महत्त्वपूर्ण हैं, उन्हे हम यहा सक्षेप मे दे रहे हैं

(क) स० १८७७ के उदयपुर चौमासे के बाद आपने सतो के साथ राजनगर मे द्वि० आचार्य भारीमालजी के दर्शन किये। आचार्य श्री के शरीर मे अधिक असाता थी इससे अनेक सत वहा एकत्रित हुए। आचार्य श्री ने युवराज पदवी के लिए दो नाम लिख रखे थे—एक मुनि खेतसीजी का तथा दूसरा ऋषि रायचन्दजी का। मुनि जीतमलजी ने एक ही नाम के लिए विनती की। आचार्य श्री आपके मन की प्रतिक्रिया जानने के इच्छुक थे। इस परिस्थिति को आपने किस प्रकार परिष्कृत किया उसका वर्णन इस प्रकार मिलता है :

भारीमाल तनु कारण जाणी, बहु सत मिल्या तिहां श्राणी ।
गणपति नी मरजी श्रोलख, ऋषि हेम वदे इम वाणी ॥
प्रगट श्राप ऋषिराय शशी ने, महर करी नें दीजे ।
म्हारी तरफ नु श्राप मन मांही, किंचित फिकर न कीजे ॥
डावी जीमणी श्रांख दोनु मे, नहिं है फरक लिगारो ।
तिम श्राप तणे ऋषिराय श्रने हू, सरीखा बेहु सुविचारो ॥
हेम बयण वर रयण समा सुण, गणपति हर्ष सुपाया ।
परम विनीत रू नीतवद हृद, जाण्या हेम सवाया ॥

१—हेम नवरसो ७ १-७

तब पद युवराज दियो ऋषिराय ने, हेम भणी सु विमासो।
नव सता स्यु स्वाम भोलायो, शहर आमेट चोमासो[1] ॥

मुनि हेमराजजी कितने विनयी और नीति के निर्मल थे, यह इस घटना से स्वय प्रकट होता है। श्री जीतमलजी स्वामीजी ने इस घटना के सम्बन्ध मे लिखा है :

हेम बाण सुनी पूज्य हर्ष्या रे, यानें तन मन सुवनीत परख्या रे।
निकलक हेम इम निरख्या ॥
एहवा हेम सुविनीत गम्भीरो रे, ए तो मेरु तणी पर धीरो रे।
हेम निर्मल अमोलक हीरो[2] ॥

(ख) सं० १८८४ का चातुर्मास पटलावद मे व्यतीत कर आचार्य रायचन्दजी पुर पधारे। दीक्षा मे बडे होते हुए भी आप अनेक श्रावक-श्राविकाओ के वृन्द के साथ आचार्य श्री के सम्मुख पधारे। मुनि हेमराजजी प्रतिक्रमण मे स्वय ही आलोचना ले लिया करते थे। आचार्य श्री ने मुनि जीतमलजी से कहा—"आलोचना गणि से लेनी चाहिये। जब तक हेमराजजी को सहमत नही करोगे तुम्हे चारो आहार का त्याग है।" मुनि जीतमलजी ने यह बात आपसे अर्ज की। आपने यह बात तुरन्त स्वीकार की और तब से आचार्य श्री से आलोचना लेने लगे। वास्तव मे बात यह थी कि उस समय तक इस प्रश्न की चोलना—चर्चा ही नही हुई थी—'तठा ताइ चोलणा न हुइ ताम[3]'।

(ग) एक बार वेणीरामजी मुनि ने स्वामीजी से कहा : "हेमराजजी को व्याख्यान अस्खलित रूप से कण्ठस्थ नही होते। वे जोडते जाते हैं और व्याख्यान देते जाते हैं।" स्वामीजी बोले : "केवली सूत्र व्यतिरिक्त ही होते हैं। उनके सूत्र से काम नही होता।"

(घ) नाथद्वार मे स० १८६० में स्वामीजी को वातरोग के कारण करीब १३ महीने तक ठहरना पडा। एक बार मुनि हेमराजजी गोचरी गये। चने और मूग की दाल को साथ देख कर स्वामीजी ने पूछा · "दोनो दालो को साथ किसने किया ?" आप बोले "मै साथ ही लाया था।" स्वामीजी बोले "अस्वस्थ के लिए अलग माग कर लाना तो दूर रहा तूने दोनो को मिला क्यो दिया ?" आप बोले : "अजाने मे इकट्ठी हुई।" स्वामीजी ने कडा उपालम्भ दिया। आप एकात मे जाकर सो गये। आप उदास हो गये। स्वामीजी ने आहार कर आकर पूछा : "दोष अपनी आत्मा का दिखाई दे रहा है या मेरा ?" आप बोले : "दोष तो अपना ही देखता हूं।"

१—(क) तेरापन्थ आचार्य चरितावलि (द्वि० ख०) : आचार्य जीतमलजी रो वखाण ७.१०-१४
(ख) वही : आचार्य रायचन्द जी रो वखाण ७.४-७
(ग) हेम नवरसो ५ ५५-६०
२—हेम नवरसो ५.५८-५९
३—तेरापंथ आचार्य चरितावलि : आचार्य जीतमलजी रो वखाण · ११ यतनी १३
४—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० १५६

स्वामीजी बोले : "ठीक है। आज के बाद सचेत रहना। उठो! आहार करो।" आपने आहार किया[1]।

(ङ) स० १८५५ मे स्वामीजी काकडोली मे सैहलोतो की पोल मे विराजे। रात में पोल-द्वार की छोटी खिडकी खोल स्वामीजी दिशा गये। आपने पूछा : "स्वामीजी खिडकी खोलने मे क्या बाधा नही ?" स्वामीजी बोले : "पाली का चोथजी सकलेचा दर्शन करने के लिए आया था। वह बडा शकाशील व्यक्ति है। पर इसकी शका तो उसको भी नही हुई ? फिर तुम्हे यह शका कैसे हुई ?" आप बोले : "स्वामीजी ! मुझे कोई शका नही, मै तो पूछता हू।" स्वामीजी बोले: "तू पूछता है तो इसमे बाधा नही। यदि इसमे बाधा होती तो मै क्यो खोलता ?"

(च) सं० १८५५ मे पाली मे आप टीकमजी से चर्चा कर रहे थे। उस समय एक माहेश्वरी बोला : "चार पैसे देकर किसी ने सपेरा से सर्प छुडाया तो उसमे उसे क्या हुआ ?" टीकमजी बोले : "अच्छा धर्म हुआ।" माहेश्वरी बोला : "वह सर्प सीधा चूहे के बिल में जा घुसे तब ?" टीकमजी बोले : "बिल के अन्दर चूहा न हो तो ?"

इस प्रश्नोत्तर की बात आपने स्वामीजी से कही। स्वामीजी बोले : "किसी ने काग पर गोली चलाई। काग उड गया। यह काग का भाग्य—उसकी आयु थी। पर गोली छोडनेवाले को तो पाप लग चुका। इसी तरह जिस सर्प को छुडाया वह बिल मे गया। यदि अन्दर चूहा नही है तो यह चूहे का भाग्य पर सर्प को छुडानेवाला तो हिंसा का भागी ठहर चुका।"

स्वामीजी ने आपसे कहा—"ऐसा जवाब देना चाहिए[2]।"

(छ) आपने दीक्षा लेने के बाद दशवैकालिक सूत्र सीखा। उसके बाद उत्तराध्ययन सूत्र सीखने लगे। स्वामीजी बोले : "व्याख्यान सीखो। तुममे कंठकला है।"

(१४) **सबसे बड़ी देन—विद्यादान :** हेमराजजी स्वामी की सब से बडी देन है उनका विद्यादान। वे चतुर्थ आचार्य जीतमलजी स्वामी के विद्यागुरु थे। उनकी दीक्षा आचार्य भारीमालजी के समय मे ऋषि रायचन्दजी के कर-कमलो से स० १८६९ की माघ बदी ७ के दिन जयपुर मे सम्पन्न हुई। दीक्षा के बाद उन्हे मुनि हेमराजजी को सौप दिया गया था। मुनि जीतमलजी स्वय ही लिखते है :

> सयम देई सूपीया, हेम भणी तिण वारी हो।
> हेम भणाय पका किया, विद्यदान दातारी हो।
> प्यारी बहु बलिहारी हो[3]॥

१—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० १६९
१—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० १७२
१—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० २७२
१—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० २७३
१—(क) आचार्य चरितावलि आचार्य रामचन्दजी रो वखाण ६.९
(ख) हेम नवरसो ४.२८-२९

इसके बाद मुनि जीतमलजी के ग्यारह चातुर्मास सं० १८७० से लेकर १८८१ तक आपके साथ हुए। बाद में स० १९०३ का चातुर्मास भी साथ मे हुआ। इन तेरह चातुर्मासों में आपने जीतमलजी स्वामी को भरपूर ज्ञान-दान दिया :

तेरे चौमासा बहु खप करनें, सूत्रादि अर्थ उदारी।
विविध कला सीखाई जीत नें, हेम इसा उपगारी[1] ॥

इस ज्ञान-दान की चर्चा करते हुए वे पुनः लिखते है :

मुनिवर रे हूँ तो विन्दु समान थो रे, तुम कियो सिन्धु समान हो लाल।
तुम गुण कबहु न बिसरूं रे, निश दिन धरू तुझ ध्यान हो लाल।
मुनिवर रे जीत तणी जय थे करी रे, विद्यादिक विस्तार हो लाल।
निपुण कियो सतीदास ने रे, वलि अवर सन्त अधिकार हो लाल[2] ॥

(१५) साहित्यिक अभिरुचि और देन : आपकी साहित्यिक अभिरुचि बड़ी उच्च-कोटि की थी। आप सहज ज्ञानी और आध्यात्मिक कवि थे। आपकी कृतियाँ थोडी ही प्राप्त हैं पर जितनी भी प्राप्त हैं वे आपकी असाधारण साहित्यिक प्रतिभा का परिचय देती हैं। सम्वत् १९०३ के चातुर्मास मे आपने स्वामीजी के दृष्टान्त मुनि जीतमलजी को लिखाए :

विविध हेतु न्याय युक्ति वर, भिक्खू रा दृष्टान्त भारी।
जीत लिख्या स्वामी हेम लिखाया, और ही विविध प्रकारी[3] ॥

आपके अन्तिम दिनों मे मुनि जीतमलजी ने केलवे मे आपकी दर्शन-सेवा की। उस समय भी आपने अनेक बाते उनको लिखाई :

विविध जूनी वारता, होजी हेम लिखाई ताय।
हेम ज्ञान गुण पोरसो, कांई समुद्र जेम शोभाय[4] ॥

देहान्त की पूर्व रात्रि में जब मुनि जीतमलजी कृत चौबीसी की ढाले उन्हे सुनाई गई तब आपने चौबीसी कंठस्थ करने का अभिग्रह लिया :

हेम पोते अभिग्रहो कियो हो, कारण मिटियाँ ताम।
म्हे पिण चोवीसी मुढे करां हो, एहवा वैरागी स्वाम[5] ॥

ये सब आपकी साहित्यिक अभिरुचि के ज्वलन्त उदाहरण हैं। अतिम दिन के प्रातःकाल में आप और मुनि जीतमलजी के बीच जो संवाद हुआ वह जितना वैराग्यपूर्ण है उतना ही साहित्यिक अभिरुचिपरक भी[6]।

१—हेम नवरसो : ६ ३२
२—वही . ७.२१,२२
३—वही : ६.२५
४—वही : ८.५
५—वही : ६.२६
६—वही : ९.४५-७४

आपका अधिकांश समय स्वाध्याय, ध्यान, अध्ययन और अध्यापन मे लगता था। "भीखू चरित" के उपरान्त आपकी अन्य कृति "आचार्य भारीमालजी रो बखान" है। यह कृति 'तेरापंथ आचार्य चरितावलि" (द्वि० ख०) के पृष्ठ १ से २४ पर प्रकाशित है। इसमें १३ ढालें हैं। दोहे और ढाल-गाथाओ की संख्या क्रमशः ७८ और १७३ हैं। यह कृति मारवाड के पिपाड शहर मे सं० १८७४ में रचित है।

(२) प्रस्तुत कृति का परिचय

(१) कुल ढाल, दोहे तथा गाथाओं की संख्या : इस चरित मे कुल १३ ढाले हैं; जिनके दोहो तथा गाथाओ की सख्या इस प्रकार है :

ढाल	दोहा	गाथा
१	९	१७
२	२	२१
३	६	१५
४	६	१२
५	५	१३
६	५	१४
७	४	२१
८	४	१२
९	५	१३
१०	३	१७
११	५	९
१२	२	१२
१३	४	२१
	६०	१९७

स्वामीजी के जीवन मे तेरह की संख्या का विशेप महत्त्व रहा। आपका जन्म सं० १७८३ की आपाड शुक्ला त्रयोदशी और स्वर्गवास स० १८६० की भाद्र शुक्ला त्रयोदशी मंगलवार के दिन हुआ। संप्रदाय की नाम-स्थापना के समय अनुरागी श्रावक और साधु दोनो की संख्या तेरह-तेरह ही थी। सम्प्रदाय का नाम भी 'तेरह' संख्या के आधार पर ही 'तेरापथ' पडा। राजस्थानी 'तेरा' शब्द 'तेरह' का पर्यायवाची है।

इस कृति मे ढालो की सख्या तेरह रखी गयी है वह आकस्मिक नही, पर संभवतः स्वामीजी के जीवन मे 'तेरह' के अक के इस महत्त्व को ध्यान मे रखते हुये ही रखी गई है।

तेरह ही ढालें भिन्न-भिन्न देशियो—रागिनियो मे हैं। आप कठकला मे प्रवीण थे। आपकी वाणी मे बडा मिठास था। आपकी यह कृति भी अति श्रुतिमधुर, भक्ति-भाव से ओत-प्रोत तथा उच्च प्रमोद-भावना और काव्य-रस से परिपूर्ण है। वर्णन जितना स्वाभाविक है उतना ही प्रामाणिक भी। इस संग्रह की अन्य कृतियाँ इस कृति की शैली, भावाभिव्यक्ति और घटना-वर्णन से प्रभावित हैं, यह स्पष्ट है।

(२) कृति का संक्षिप्त सार : पहली ढाल मे स्वामीजी के जीवन की जन्म से देहावसान तक की मुख्य-मुख्य घटनाओ का सिंहावलोकन है और फिर सक्षेप मे स्वामीजी की कुछ विशेषताओ का वर्णन। दूसरी ढाल मे आचार्य रुघनाथजी से अलग होने पर स्वामीजी को कैसी कठिनाइयों का सामना करना पडा था उनका रोमाचकारी वर्णन है। इन बाधारूपी बादलो को उन्होने अपने तपोतेज से किस प्रकार तितर-बितर कर डाला इसका यहाँ बडा ही सुन्दर वर्णन है :

> रावण रूप किया था घणा रे, बहो रूपणी देवी बोलाय रे। भवक जन।
> पिण लछमण रा बाण सू रे लाल, रूप गया विललाय रे। भ०।
> ज्यू सुध सार्धा सू भडकाया लोकां तणी रे, यांरी सगत म करज्यो कोयरे। भ०।
> पिण पूज सुत्र न्याय ग्यांन बांण सू रे लाल, भ्रम भाग्यो घणां रो जोय रे। भ०।
> चक्रव्रत चढे देश साधवा रे, आंण फेरे छ खण्ड मे आय रे। भ०।
> ज्यू भीखनजी रिष विचरया जठे रे लाल, अरिहत आगन्या दीधी ऊलखाय रे। भ०।

तीसरी ढाल के प्रारम्भिक दोहो मे स्वामीजी की साहित्यिक साधना का सक्षिप्त विवरण देते हुये उन्होने विचार-जगत मे किस तरह से विजय प्राप्त की, इसका सुन्दर वर्णन है। चौथी ढाल का भी प्रायः यही विषय है। पाँचवी ढाल मे स्वामीजी के चरम विहार का वर्णन है। स्वामीजी सिरियारी पधारे तब उनके साथ जो सत थे उन सतो का नामोल्लेख भी यहाँ प्राप्त है। छठी ढाल मे स्वामीजी की रुग्णता और उनकी आत्म-आलोचना का वर्णन है। सातवी ढाल मे उन्होने चतुर्विध सघ को जो चरम उपदेश दिया उसका वर्णन है। आठवी ढाल मे स्वामीजी के सल्लेषणा-सथारे का वर्णन है। नवी ढाल मे स्वामीजी के सथारे की जो प्रतिक्रिया चारो ओर हुई उसका वर्णन है। दसवी ढाल मे स्वामीजी के सथारे की सिद्धि का वर्णन है। ग्यारहवी ढाल मे स्वामीजी के देहान्त के बाद मे जनता मे जो धर्म-ध्यान हुआ उसका उल्लेख है। बारहवी ढाल मे स्वामीजी ने जो उपकार किया उसका वर्णन है। तेरहवी ढाल मे स्वामीजी के चातुर्मासो का वर्णन है। उन्होने कितनी प्रव्रज्याये दी उसका भी वहाँ उल्लेख है।

(३) रचना-स्थान और समय—इस कृति का समाप्ति-दिवस स० १८६० माघ शुक्ला नवमी शनिवार है। यह सिरियारी की उसी पक्की हाट मे रचित है, जहाँ स्वामीजी ने सथारा किया और समाधिपूर्वक देवलोक पधारे। इसका उल्लेख तेरहवी ढाल की २०वी गाथा मे इस प्रकार है :

> जोड कीधी सरीयारी सेंहर मे, पकें हाट विचार हो। मुणिद।
> समत अठारे साठें समे, माहा सुदि नवमी सनिसर वार हो। मुणिद।

यह महत्त्वपूर्ण 'जीवन चरित' आज तक अप्रकाशित ही रहा और प्रथम बार प्रकाशित होकर पाठको के सम्मुख आ रहा है।

(४) आधार प्रति : प्रस्तुत प्रकाशन का आधार तृतीय आचार्य ऋषि रायचन्दजी स्वामी की हस्तलिखित प्रति से धारी हुई प्रति है। यह प्रति सं० १८६६ की वैशाख सुदी चतुर्दशी को मेवाड के खमणोर गात्र में लिखी हुई है। श्री हेमराजजी स्वामी के हाथ की मूल प्रति के प्राप्त न होने से उपर्युक्त प्रति से मिलाकर ही यह चरित इस खण्ड मे दिया गया है।

२ : भीखु चरित

(१) रचयिता का जीवन-चरित

इस कृति के रचयिता मुनि वेणीरामजी (वेणदासजी) स्वामीजी के स्वहस्त दीक्षित शिष्य थ। स्वामीजी के शिष्यो मे आपका प्रव्रज्या-क्रम २७ वा है। आपकी मातृभूमि बगडी (सुघरी) थी। आपकी दीक्षा सं० १८४४ मे हुई। आपने साधुओ में अग्रगण्य स्थान प्राप्त किया। 'साधां मे वेणोजी सतियां मे मेणाजी'—यह उस समय की प्रसिद्ध लोकोक्ति थी। आपके व्यक्तित्व का चित्रण इस रूप मे प्राप्त है :

हुवो वैणीराम ऋषि नीको रे, प्रबल पण्डित चरचावादी तीखौ रे।
मुनि लियो सुजश नौ टीकौ॥

बारु बाचत सखर बखांणौ रे, सखर हेतु दृष्टान्त सुजांणौ रे।
भर्त मैं प्रगट्यौ जिम भांणौ॥

हद देशना मैं हुशियारौ रे, श्रोता नैं लागै अधिक सुप्यारौ रे।
चित्त माहैं पांमैं चमत्कारौ॥

जाय मालव देश जमायौ रे, खण्डी सू चरचा कर तायौ रे।
बहु जन नै लिया समझायौ॥

त्यांरी धाक सू पाखण्ड धूजै रे, वैणीराम केशरी जिम गूजै रे।
प्रगट हलुकर्मी प्रतिबुजै॥

उत्पत्तिया छै बुद्धि उदारौ रे, समझाया घणा नरनारौ रे।
हुवौ जिण शासण शिणगारौ॥

घणां नैं दियो संजम भारो रे, धर्म वृद्धि मूर्त सुखकारौ रे।
ऐ तौ भिक्खु तणौ उपगारो॥[1]

१—भिक्खु जय रसायण ४७ ६-१२

आप बडे बहुश्रुती थे। आपको स्वामीजी रचित प्राय: ३८,००० गाथाएँ कण्ठस्थ थी। सूत्र और सिद्धान्त के रहस्यो के आप बडे अच्छे जानकार थे। आप प्रकाड पण्डित और दुर्धर्ष चर्चावादी थे। मालव देश मे सर्व प्रथम धर्म-प्रचार आप ही के द्वारा हुआ। एक बार रतलाम मे आपको स्थान के लिये बडा कष्ट उठाना पडा। कोई स्थान देने को तैयार न होता। जो देता भी वह बाद मे चले जाने को कह देता। इस तरह तीन दिन मे आपको ६ स्थान-परिवर्तन करने पडे। इस प्रकार आहार और स्थानादि के कठिन परिषहो को सहन करते हुए भी आपने धर्म-प्रचार कर अनेक आत्माओ का उद्धार किया।

आप बडे प्रभावशाली वक्ता थे। आपका व्याख्यान जनता को बडा प्रिय लगता। श्रोता के हृदय मे आपकी वाणी से चमत्कार-सा उत्पन्न हो जाता। आपका व्याख्यान हेतु, न्याय और दृष्टान्तो से गर्भित होता। आप बडे कुशाग्र-बुद्धि थे। आपकी बुद्धि बडी औत्पातिकी थी।

आप बड़े तेजस्वी थे। एक बार मेवाड मे शाम के समय विहार करते हुए साधुओ से चोर भाण्डोपकरण आदि छीन कर ले गये। आप उस पथरीली भूमि मे पद-चिह्नो से चोरो की खोज करते हुए चोर-पल्ली मे जा पहुचे और उन्हे समझा-बुझा कर प्राय: सब चीजे वापस ले आये। केवल एक पात्र और कुछ चित्रित पत्र वापस न मिल पाये।

आपका स्वर्गवास स० १८७० मे हरचासटु नामक गाव मे हुआ[१]। एक यति ने द्वेषवश आपको दवा के बदले विष दे दिया। इस पर भी आपने बडा समभाव रखा। आपका देहावसान अचानक हो गया।

आपने २६ वर्ष पर्यंत बडी निर्मलता से मुनि-जीवन यापन किया। 'भिक्खु दृष्टान्त' मे स्वामीजी के साथ घटित आपके कई जीवन-प्रसग प्राप्त हैं[२]। उनमे से कुछ हम यहाँ देते हैं :

मुनि वेणीरामजी बाल्यावस्था मे थे तब स्वामीजी से बोले : "हिंगुलु से पात्र नही रगने चाहिएँ।" स्वामीजी बोले—"मेरे पात्र तो रगे हुए ही हैं। तुम्हे शका हो तो मत रगो।" वेणीरामजी बोले—"मेरा केलू से रंगने का विचार है।" स्वामीजी बोले : "केलू लाने के लिए जाने पर यदि नजदीक मे कच्चे पीले रग का केलू हो और बाद मे दूर पर पक्के लाल रग का केलू हो तो तुम्हे पहले कच्चे पीले रगवाले केलू को लेना चाहिए। यदि उसे न लेकर पक्के केलू की चाह करोगे तब तो ध्यान सुरगे रंग का ही रहा[३]।" जब इस तरह उनको समझाया तब वे समझ गये।

१—(क) हेम नवरसो १ दो० ६ :

चमालीसे संयम लियो, वैणीरामजी जोय।
हरचासटु में सही, सतरे पोंहता परलोय ॥

(ख) भिक्खु जश रसायण ४७.१४ :

कीधौ स्वाम भिक्खु पछै कालौ रे, शहर चासटु में सुविशालो रे।
संवत अठारह सतरै निहालो ॥

२—देखिए पृ० १५६, १६०, १६२, १६३, १६४, १६५

३—भिक्खु दृष्टान्त दृ० १६०

बाल्यावस्था में वेणीरामजी स्वामी मे दोप निकालने की प्रवृत्ति थी। एक दिन वे दूर बैठे हुये थे। स्वामीजी ने गुप्त रूप से जगह पूँज कर पैर फैलाया और साधुओ से वोले—"देखो, वेणी दूर बैठा देख रहा है, वह कुछ कहेगा।" एक क्षण के वाद ही मुनि वेणीरामजी बोले—"आपने विना पूंजे पैर कैसे फैलाया ?" अन्य साधु स्वामीजी की ओर देखकर हँसने लगे। साधु वोले—"पूंज-कर ही पैर फैलाया है।" इसपर वे शर्मिंदा हो समीप आ स्वामीजी के चरणो मे नतमस्तक हो गये[1]।

पिपाड की घटना है। एक दिन स्वामीजी ने वेणीरामजी को दो तीन वार पुकारा। वे दूसरी हाट मे थे। बोले नही। श्रावक गुमानजी लुणावत से स्वामीजी वोले—"वेणो छूटतो दीसै है।" गुमानजी ने सारी वात जाकर वेणीरामजी से कही। वेणीरामजी तुरन्त आकर चरणो मे झुक गये। स्वामीजी बोले—"पुकारने पर भी तुम बोले नही ?" वेणीरामजी विनयपूर्वक वोले—"मैंने सुना नही।" इसके बाद बडी विनम्रता से क्षमा-याचना की[2]।

एक बार वेणीरामजी बोले—"मैं थली मे जाकर चन्द्रभानजी से चर्चा करूँ ?" अवसर न देखकर स्वामीजी बोले—"उनसे चर्चा करने का तुझे त्याग है[3]।"

स्वामीजी ने एक बार वेणीरामजी से कहा—"तुम ऑखो मे औषधि वहुत लगाते हो। आँख खोते दिखाई देते हो।" इसपर भी उन्होने औषधि न छोडी। ऑखे कच्ची पड गईं। उनमें घाव हो गये[4]।

स० २०६० की भाद्र शुक्ला त्रयोदशी के दिन स्वामीजी का सथारा सपन्न हुआ। उस दिन प्रातः डेढ पहर दिन चढने पर आप साधुओ से वोले—"साधु आ रहे हैं, उनके सम्मुख जाओ।" इसी प्रकार उन्होंने दो तीन बाते और कही। लोगो ने सोचा—"स्वामीजी का ध्यान साधुओ मे है।" करीव एक मुहूर्त बीता होगा कि दो साधु तृषावस्था मे पधारे। इन दो सतो मे एक वेणीरामजी थे और दूसरे कुसालजी। वेणीरामजी का चातुर्मास पाली मे था। स्वामीजी के संथारे का समाचार पाकर वे तुरन्त रवाने होकर सीधे वहाँ स्वामीजी के दर्शन के लिये पहुँचे थे। इस सारी घटना का वर्णन इस रूप मे मिलता है :

साधु आवे साहमां जावो, मुनी प्रकासें वांण।
वले साववीयां आवें वारें, स्वांमी बोले वचन सुहांण।
भवीयण नमो गुर गिरवांण, नमो भीखू चतुर सुजांण॥
के तो कह्यो अटकल उनमांनें, के कह्यो वुध प्रमाण।
के कोइ अवधि ग्यांन उपनो, ते जाणे सर्व नाण। भवी०॥

१—भिक्खु दृष्टान्त : दृ० १६२
२—वही : दृ० १६३
३—वही : दृ० १६४
४—वही : दृ० १६५

केइ नर मुख सू इम भाखे, सांमी रा जोग साधां में वसीया।
एतलें एक महूर्त आसरे, साध आया दोय तसीया ॥
वकसत वकसत साधु वांदे, चर्ण लगावे सीस।
नरनारी जाण्यो अवधि उपनो, साचो वसवावीस ॥
सांमी साधु आया जांणी, मस्तक दीधो हाथ।
एतले दोय महुरत आसरे, आयो साधवीयां रो साथं ॥
वेंणीरामजी साध वदीता, सार्थे कुसालजी आया।
साधवीयां वगतू जी मां डाही जी, प्रणमें भीखू रा पाया। भ० ॥
परचा जू जू आय पुगे छे, नरनारी हरखत थावें।
धिन हो धिन थे मोटा मुनीसर, इम गुण भीख ना गावें[1] ॥

दोनो संतो ने आकर स्वामीजी को वंदन-नमस्कार किया। स्वामीजी ने उनके मस्तक पर अपना हाथ रखा।

मुनि वेणीरामजी ने नाना प्रकार से स्वामीजी के गुण-वर्णन किये और उनके परिणामो को तीव्र करते हुए बोले :

रिख वेणीदास इन विनवें रे, थानें होज्यो सरणा चार।
तुम सरणो मुझ भव भव रे, होज्यो वारवार। भी० ॥
जिसोइ मारग जिन तणो रे, जिसोइ जमायो आप।
दिन दिन इधिका दीपिया रे, टाल्या घणां रा संताप। भी० ॥
स्तुति अरिहृत सिध तणी रे, सभलाइ श्रीकार।
जांण्यो भगत कीहां थी भीखु तणी रे, इण अवसर मझार। भी० ॥

मुनि वेणीरामजी ने स्वामीजी को शरणो का आधार दिया और अरिहत देव और सिद्धो की स्तुति सुनाई। उन्होने स्वामीजी का किस तरह गुण-गान किया इसकी झांकी निम्नोक्त रूप में प्राप्त है :

आया ते साधु गुण गावें, भांत-भांत प्रणाम चढावें।
थे मोटा उपगारी मेहमा भारी, आप तुले ओर कुण आवें ॥
थे पका पका पाखण्ड हटाया, सुत्र न्याय वताया।
दांन दया आछा दीपाया, वुधवता मन भाया ॥
सावद्य निरवद भला निवेंर्या, कीवा वुध प्रमाण।
सुत्र न्याय सरधा सुध लीधी, धारी अरिहृत आंण[2] ॥

१—भीखू चरित १०. १-७

२—भीखू चरित १०. ८-१०

कृति का संक्षिप्त सार : सक्षेप मे प्रत्येक ढाल की विषय-वस्तु इस प्रकार है :

प्रथम ढाल के दोहो मे मगलाचरण के बाद कुल-परिचय, जन्म-स्थान और संवत् को देते हुये स्वामीजी के दीक्षा-ग्रहण करने तक का वर्णन है। बाद मे आगमो के अध्ययन से स्वामीजी के मन मे उस समय के साधु-जीवन के प्रति जिन कारणों से असंतोष उत्पन्न हुआ उनका सक्षिप्त उल्लेख है।

दूसरी ढाल के दोहो मे स्वामीजी के मन मे राजनगर चातुर्मास मे जो विचार-क्रान्ति हुई और उन्होने सत्य के निर्णय के लिए सर्व आगमो का बार-बार अध्ययन किया, उसका उल्लेख है। बाद मे चातुर्मास की समाप्ति पर वे सोजत मे आचार्य रुघनाथजी से मिले और जो चर्चा तथा वार्तालाप हुआ उसका वर्णन है। दूसरी बार बगडी मे चर्चा हुई, जिसके फलस्वरूप स्वामीजी आचार्य रुघनाथजी के सघ से अलग हो गये, वहाँ तक का वर्णन इस ढाल मे है।

तीसरी ढाल के दोहो मे बगड़ी के क्षत्रियो मे जो चर्चा हुई, उसका उल्लेख है। इसके बाद बडलू की चर्चा का वर्णन है। फिर 'तेरापथ' नाम कैसे पडा इसका वृत्तात है। बाद मे स्वामीजी ने केलवे मे स० १८१७ की आषाढ सुदी पूर्णिमा को जो नव दीक्षा ग्रहण की उसका वर्णन है। इस प्रथम चातुर्मास मे जो सत साथ रहे उनका नामोल्लेख भी इस ढाल मे मिलता है।

चौथी ढाल के दोहो मे उत्तम श्रमण के लिये 'अनुयोगद्वार' और 'उत्तराध्ययन' मे क्रमशः जो चौरासी और सोलह उपमायें दी हैं उनका उल्लेख कर ढाल में स्वामीजी के अनेक गुणो को उपमाओ द्वारा बडे ही सुन्दर रूप मे उपस्थित किया है। ये उपमाये कवि के आगम ज्ञान तथा असाधारण कवित्व-शक्ति को व्यक्त करती हैं।

पाँचवी ढाल मे शासन की उत्तरोत्तर वृद्धि का उल्लेख करते हुये स्वामीजी ने किन-किन देशो मे विचरण किया उसका उल्लेख है तथा अन्तिम सिरियारी चातुर्मास के पूर्व के शेष काल के विहार का वर्णन है। इस अन्तिम सिरियारी चातुर्मास मे स्वामीजी के साथ जो सन्त थे उनका नामोल्लेख है। स्वामीजी के श्रावण मास तक की शारीरिक अवस्था का वर्णन है।

छठी ढाल मे भाद्र मास मे हुई अस्वस्थता का वर्णन करते हुये पर्यूषण पर्व मे तीनो समय किस प्रकार व्याख्यान होता रहा इसका उल्लेख है। स्वामीजी ने भाद्र सुदी चौथ को किस तरह 'आयु समीप आ गयी है' इसका सकेत दिया और सयम मे साथ देनेवाले संतो की प्रशंसा की इसका वृतात है। इसके बाद स्वामीजी ने जो शिक्षा दी उसका उल्लेख है।

सातवी ढाल में भारीमालजी आदि सतों को बुलाकर स्वामीजी ने अपने अतीत साधु-जीवन के प्रति परम संतोष की जो भावना व्यक्त की उसका उल्लेख है। और बाद मे सतो के साथ जो वैराग्यमयी बातें हुई और स्वामीजी ने जो पुनः उपदेश दिया उसका वर्णन है।

आठवी ढाल मे स्वामीजी ने किस प्रकार से आत्म-आलोचना की उसका हृदयग्राही चित्रण है।

नवी ढाल में स्वामीजी के संलेखना तप का वर्णन है।

दसवी ढाल मे स्वामीजी के सथारे का वर्णन है। संथारे पर किस तरह त्याग-प्रत्याख्यान हुए, सतो को किस प्रकार व्याख्यान और उपदेश देने को कहा इन प्रसंगो की चर्चा है। स्वामीजी ने अपने परिणामो की दृढता के सम्बन्ध मे जो बाते कही तथा अन्त मे जो चार चरम बाते कही उनका उल्लेख है।

स्वामीजी की कही हुई बाते किस प्रकार मिली उनका वर्णन ग्यारहवी ढाल मे आया है। मुनि वेणीरामजी और कुसालजी ने दर्शन कर किस प्रकार गुणगान किये, स्वामीजी किस प्रकार पद्मासन लगाकर ध्यान मुद्रा मे आसीन हुये और किस प्रकार इसी मुद्रा मे उनका देहावसान हुआ, इसका वर्णन है।

बारहवी ढाल मे स्वामीजी के पन्द्रह गाँवो के चौवालिस चातुर्मासो की इतिवृत्ति है।

स्वामीजी ने एक सौ चार प्रव्रज्यायें दीं, लगभग अडतीस हजार पद्यो की रचना की, इनका उल्लेख तेरहवी ढाल मे है।

कृति की विशिष्टता : इस कृति की कई ढालो को जयाचार्य ने 'भिक्खु जश रसायण' मे उद्धृत किया है। यह कृति अनुपम भक्ति तथा वैराग्य रस से परिपूर्ण है। मुनि वेणीरामजी स्वामीजी के प्रमुख सतो मे से एक थे। इस परिस्थिति मे यह जीवन-चरित्र अधिकांशतः उनका आँखो देखा वर्णन है। अन्यत्र चातुर्मास होने पर भी सथारे के अवसर पर वे स्वामीजी के पास पहुँच गये थे और स्वर्गवास के समय उनके समीप रहे।

इस संग्रह मे प्रकाशित मुनि हेमराजजी कृत 'भीखू चरित' और प्रस्तुत कृति को एक साथ पढने से अनेक घटनाओ की परस्पर पूर्ति हो जाती है और स्वामीजी के जीवन का पूरा चित्रण मिल जाता है। दोनो ही कृतियाँ साहित्यिक प्रभा से परिपूर्ण हैं। मुनि हेमराजजी और आप दोनो ही कवि उस समय के साहित्यिक सतो मे अग्रस्थान रखते थे। आपकी अन्य कृतियाँ तो उपलब्ध नही हो सकी। इसलिये प्रसंगवश भी हम उनका सक्षिप्त परिचय नही दे पा रहे हैं। 'वीस बहरमान' की ढाल जो कि स० १८५९ के चातुर्मास में रचित है, सम्भवतः आपकी ही कृति है। इस ढाल को 'तेरापथ आचार्य चरितावलि' के द्वितीय खड मे मुनि हेमराजजी रचित वतलाया गया है परन्तु यह भूल है। कारण यह है कि १८५९ मे मुनि हेमराजजी का चातुर्मास सिरियारी मे था, पीसागण मे नही जहाँ यह ढाल रची गई थी।

प्रकाशन : यह कृति 'शिशुहित शिक्षा' (द्वितीय भाग) मे सवत् १८८२ मे प्रकाशित हुई थी। प्रस्तुत प्रकाशन तृतीय आचार्य ऋषि रायचन्दजी की हस्तलिखित प्रति से मिलाकर किया गया है।

३ : भिक्खु जश रसायण

(१) रचयिता का परिचय

श्रीमद् जयाचार्य का जन्म-नाम जीतमलजी था। आपने अपनी कृतियो मे अपना उपनाम 'जय' रखा इसलिए आप जयाचार्य के नाम से प्रसिद्ध हुए। आप जाति के ओसवाल गोलेछा थे। आपके पिताजी का नाम आईदानजी गोलेछा और माता श्री का नाम कलूजी था। आपका जन्म मारवाड राज्य के रोयट ग्राम मे स० १८६० के आश्विन सुदी १४ को रात्रि-बेला मे हुआ था। आपके सबसे बडे भाई का नाम सरूपचन्दजी और उनसे छोटे भाई का नाम भीमराजजी था। आपके पिताजी का देहान्त आपके प्रव्रजित होने के पहले ही हो चुका था।

(१) **दीक्षा :** स० १८६९ मे आचार्य भारीमालजी का चातुर्मास जयपुर मे हुआ। अस्वस्थता के कारण आप फाल्गुन तक वही विराजे। जीतमलजी की दीक्षा इसी साल माघ बदी ७ को हुई। आपके बडे भाई सरूपचन्दजी इसी साल पौष सुदी ९ के दिन दीक्षा ले चुके थे। दूसरे बडे भाई भीमराजजी की दीक्षा आपके बाद मिती फाल्गुन वदी ११ को हुई और इसी दिन आपकी माता कल्लूजी ने भी दीक्षा ले ली। इस तरह पौष सुदी ९ से लेकर फाल्गुन बदी ११ तक करीब डेढ महीने के भीतर सारा परिवार दीक्षित हो गया।

जीतमलजी महाराज की बुआ अजवूजी पहले से ही दीक्षित थी। इनकी दीक्षा श्रीमद् आचार्य भीखणजी स्वामी के शासनकाल मे स० १८४४ मे हुई थी। ४२ वर्ष की दीक्षा-पर्याय के बाद स० १८८६ मे इनका देवलोक हुआ। इनके विषय मे पुरानी ख्यात मे लिखा है : "भणी गुणी पक्की विनयवत।" उज्जैन क्षेत्र मे धर्म-प्रचार आपने ही किया। उपर्युक्त वर्णन से पाठको को सहज ही मालूम होगा कि श्रीमद् जयाचार्य का जन्म कैसे दृढ धर्मनिष्ठा-सम्पन्न कुल मे हुआ था।

श्रीमद् जयाचार्य की दीक्षा द्वितीय आचार्य भारीमालजी के शासनकाल मे ऋषि रायचन्दजी के हाथ से हुई थी। उनके हाथ से सर्व प्रथम दीक्षा आपकी ही हुई। आप चतुर्थ आचार्य हुए और अन्तिम दीक्षा मुनि मघराजजी की हुई जो पचम आचार्य हुए।

(२) **शिक्षा और अध्ययन :** दीक्षा के बाद आप शिक्षा के लिए मुनि हेमराजजी को सौपे गये। वे ही आपके विद्या-गुरु थे। उनके चरणो मे रहकर अल्पकाल मे ही आपने अपूर्व आत्मज्ञान प्राप्त किया। आपने अपने विद्या-गुरु की अध्यापन-शक्ति का वर्णन करते हुए एक जगह कहा है—"उनमे बिन्दु को सिन्धु करने की शक्ति थी।" दूसरी जगह कहा है—"हेमराजजी सच्चे हेम—पार्श्व थे। उनके ससर्ग से ही अपूर्व गुण आ जाते थे।' ऐसे अद्भुत उपाध्याय से शिक्षा पाकर आप भी एक महान् विचक्षण पुरुष निकले।

(३) बाल विचक्षण : बाल्यावस्था से ही आप एक असाधारण प्रतिभावान साधु थे। आपकी बुद्धि बड़ी तीक्ष्ण थी। आपमे सहज अध्यात्म था। आप बड़े परिश्रमी थे और स्वाध्यायी भी। आपका हृदय बड़ा गुणग्राही था। पुरानी बातो के सग्रह का आपको बाल्यावस्था से ही बड़ा शौक था। अपने विद्या-गुरु मुनि हेमराजजी से पुरानी बातो को ग्रहण कर आपने अपने पूर्व तीन आचार्यों के शासन-काल के इतिहास को बहुत सुन्दर रूप से ग्रंथ-बद्ध किया।

आपकी दीक्षा केवल ९ वर्ष की अवस्था मे हुई थी। आपकी ११ वर्ष की अवस्था की बात है। आप अपने विद्या-गुरु मुनि हेमराजजी के साथ पाली मे विराज रहे थे। सडक पर खुलती हुई एक हाट में ठहरे हुए थे। हाट के सामने ही एक सोनार की दूकान थी। एक बार एक खिलाडी उस रास्ते मे आकर अनेक तरह के खेल दिखाने लगा। खेल देखने के लिए बूढे-बूढ़े लोग भी आकर जमा हो गये। सोनार की हाट भर गई। आप उस समय कुछ लिख रहे थे। खेल के ढोल आदि बजते रहने पर भी आपने लिखने मे ही अपना ध्यान एकाग्र रखा। बालक होने पर भी खेल की ओर आँख उठाकर भी नही देखा। एकध्यान—एकचित्त से अपना कार्य करते रहे। बालक साधु की इस अपूर्व और आश्चर्यकारी एकाग्र-वृत्ति को देख कर सोनार की हाट मे बैठा हुआ एक वृद्ध अचंभित हो रहा था। वह अपने साथियो से बोला—"इस सम्प्रदाय की नीव १०० वर्ष की तो पड गई।" जब साथियो ने उसकी इस बात का रहस्य पूछा तो उसने जवाब दिया—"जिस सम्प्रदाय मे ऐसे उत्कट वैरागी बालक सत हैं, उसे चिरायु ही समझो। जिस खेल को देखने के लिए हम लोग बडे-बूढे ललचा गए, उसे देखने के लिए इस बालक ने मुँह तक नही फेरा, कितनी आश्चर्यजनक एकाग्रता है इस बालक साधु की!" इस एकाग्र-वृत्ति ने आपके जीवन मे महान् गुण पैदा कर दिए। आपकी वृत्तियाँ शुरू से ही जो अध्यात्म और तत्त्वज्ञान की ओर झुकी सो अन्त तक उत्तरोत्तर अधिक प्रतिभा के साथ अपना प्रकाश फैलाती रही। अध्यात्म की इस अखण्ड एकाग्र साधना के कारण ही आप 'योगिराज' कहलाये। आप बाल रवि की तरह उत्तरोत्तर तेज और ज्ञान से दीप्त हुए। आपने गण को केवल १०० वर्ष की आयु ही नही दी परन्तु अपने यशस्वी आचार्य-काल मे उसकी कीर्ति दिग्दिगत मे फैला कर एव भविष्य के लिए अमर साहित्य की विरासत छोड कर उसे अमर बना दिया।

बाल्यावस्था से ही आपमे हिम्मत और साहस भी खूब था। श्रीमद् आचार्य भारीमालजी भावी आचार्य-पद के लिए दो सतो के नाम लेते—खेतसीजी और रायचन्दजी। वृद्ध हो चुकने पर भी उन्होने युवराज नही बनाया। सतो की इच्छा हुई कि एक नाम निर्धारित करने के लिए अर्ज की जाय। पर किसी की हिम्मत नही पडती थी कि आचार्य श्री से जाकर यह अर्ज करे। आपने जब यह सुना तो अर्ज करने का भार तुरन्त अपने ऊपर ले लिया। आपने अपना चोल पट्टा कमर मे कस लिया और अन्य सतो के आगे हो अर्ज करने के लिए आचार्य श्री के सम्मुख आकर खड़े हो गये। बालक साधु की इस वेप-सज्जा को देख कर आचार्य श्री हँसने लगे

और अर्ज करने की आज्ञा दे दी। इस पर आपने निर्भीकता और निःसंकोच भाव से एक भावी 'पट्टधर' घोषित करने की आवश्यकता की अर्ज विनम्र शब्दो मे की। जो कार्य वयःप्राप्त सतो को करना कठिन हो रहा था, उसे आपने सहज साहस से कुशलतापूर्वक कर दिखाया। बाल्यावस्था से ही आपमे असाधारण ओज और प्रतिभा थी।

आपमे ११ वर्ष की अवस्था मे ही कवित्व शक्ति का प्रादुर्भाव हो गया और वह अपनी असाधारण छटा दिखाने लगी। आप एक संस्कारी कवि थे। यह प्रतिभा आगे जाकर बडे ही अद्‌भुत रूप से चमकी। आप अपनी रचनाओ मे तत्त्वज्ञान और अध्यात्मरस की स्रोतस्विनी बहा गए।

(४) उत्तरोत्तर उत्कर्ष : दीक्षा के बाद १२ वर्ष तक आप निरन्तर हेमराजजी महाराज के सिंघाडे मे रहे और इन वर्षो मे घोर परिश्रम कर आपने गहरा विद्याध्ययन किया। पन्नवणा सूत्र तात्त्विक दृष्टि से बड़ा ही गम्भीर और कठिन सूत्र है। आपने १८ वर्ष की अवस्था मे तो इस सूत्र का राजस्थानी भाषा मे पद्यानुवाद ही शुरू कर दिया।

आपकी अपूर्व प्रतिभा, पाण्डित्य, व्यवस्था-शक्ति और वाङ्‌मयता को देख कर तृतीय आचार्य ऋषि रायचन्दजी ने आपको स० १८८१ के पौष सुदी ३ को पाली मे सिंघाडपति बना दिया। उस समय आपकी अवस्था केवल २१ वर्ष की थी।

आपकी माता श्री सती कल्लूजी का देहावसान स० १८८७ के सावन सुदी १३ को खेर गाव मे हुआ। आपको एक पहर का सथारा आया। आर्या कल्लूजी के देहावसान के समय आपकी उमर २७ वर्ष की थी।

आपको स० १८९३ मे युवराज पदवी प्रदान की गई। उस समय आपकी अवस्था केवल ३३ वर्ष की थी।

(५) विद्या-रसिकता : स० १९०३ मे मुनि श्री हेमराजजी के साथ आपका चातुर्मास श्रीजीद्वार मे हुआ। इसी चातर्मास मे मुनि हेमराजजी ने भीखणजी स्वामी के विविध दृष्टान्त और सस्मरण आपको सुनाये और आपने उन्हे लिपिबद्ध किया। दृष्टान्त और सस्मरणो का यह सग्रह आज एक अनमोल धरोहर है और स्वामीजी की बहुमुखी विशेपताओ पर अपूर्व प्रकाश डालता है। आप एक जन्मसिद्ध इतिहासकार थे। आपने गण सम्बन्धी पुरानी बातो को सग्रहीत कर बडे ही प्रामाणिक रूप से अपनी कृतियो मे भर सदा के लिये उन्हे सुरक्षित कर दिया है।

सं० १९०४ मे आपका चातुर्मास जयपुर मे था। चातुर्मास के बाद भीलाडे होते हुए केलवे पहुच आपने मुनि हेमराजजी के दर्शन किए। इस प्रसग का उल्लेख करते हुए आपने स्वय लिखा है:

विविध जूनी वारता होजी हेम लिखाइ ताय
हेम ज्ञान गुण पोरसो कांई समुद्र जेम सोभाय

इस प्रसंग से यह प्रकट है कि आप पुरानी बातो की बराबर खोज करते रहते थे और जब कभी मौका मिलता तो वे ऐसी बातो को लिख लेते । हेमराजजी महाराज भी अपना समुद्र-सा अगाध ज्ञान अपने इस गुणवान शिष्य को मुक्त-हस्त से देते थे । वास्तव मे आप उन्हीकी अनन्य कृति थे । आपकी सहज प्रतिभा ऐसे अद्वितीय विद्या-गुरु को पाकर ही अपूर्व छटा के साथ मुखरित हो सकी थी । अपने विद्या-गुरु की महान् ज्ञान वारिधि को आप अगस्त्य ऋषि की तरह पी गए थे । आप महान् मेधावी थे । आप जैसी धारणा-शक्ति विरले ही व्यक्ति को होती है । आपमें जिज्ञासु वृत्ति बहुत थी और मुनि हेमराजजी मे बताने की । एक अपनी जिज्ञासु वृत्ति और विनय वृत्ति से आदर्श शिष्य थे और दूसरे बताने की उदारता और ज्ञान पारमितता से महान् गुरु । एक बताने में वृहस्पति थे और दूसरे ग्रहण करने मे । मुनि हेमराजजी के अन्तिम दिनो की घटनाओ से गुरु-शिष्य दोनो की इस प्रवृत्ति पर और भी अधिक प्रकाश पडता है ।

सं० १९०५ के जेठ महीने मे मुनि हेमराजजी सिरियारी पधारे और जेठ बदी १३ के दिन से वे बीमार रहने लगे । आप एक दिन बाद जेठ बदी १४ को सिरियारी पहुचे । १३ के दिन मुनि हेमराजजी को श्वास का दौरा आ चुका था तो भी १४ के दिन उन्होने आपसे नाना तरह की महत्वपूर्ण बाते की । १४ की रात मे श्वास का विशेष प्रकोप रहा और फिर १५ की रात मे भी दौरा आया । जेठ सुदी १ के प्रातःकाल फिर चैन हुआ । साता होते ही फिर गुरु-शिष्य मे अनेक संवाद हुए । आपने इस सबध मे लिखा है :

रात्री श्वास फिर बधियो, एकम दिन प्रभात ।
फिर साता हुई स्वाम रे, बाता करी विख्यात ॥

इस वार्तालाप मे एक पहर दिन चढ गया था ।

इसी वार्तालाप के प्रसग की एक बात इस प्रकार है : आपने मुनि हेमराजजी से कहा—"यदि आपके साता हो जाय तो इस वर्ष १५ सतो से सिरियारी मे चातुर्मास करे । यदि आहार की कमी रहेगी तो श्रावण और भाद्र मास मे हम कई सत एकान्तर कर लेगे । आश्विन कार्तिक मे जब रास्ते साफ हो जायेगे तो आस-पास के अन्य गावो से गोचरी कर ली जायगी ।" यह सुन कर मुनि हेमराजजी बडे ही हर्षित हुए । बोले—"मै भी ३१ उपवास कर लूगा । तुम लोगो ने यह बात बहुत अच्छी विचारी ।"

आप मुनि हेमराजजी के पास रह कर अनेक बाते धारण करना—हासिल करना चाहते थे और इसके लिए एकान्त उपवास करने तक के लिए तैयार थे । यह आपकी विद्या-रसिकता थी । आपके जीवन का यह प्रसग ज्ञानार्जन के लिए आपकी उत्कट इच्छा और कठोर साधना का एक ज्वलंत उदाहरण है ।

ज्येष्ठ सुदी प्रतिपदा के दिन तीसरे पहर मुनि हेमराजजी के श्वास का प्रकोप अधिक हो गया । चौथे पहर कम हुआ तो फिर अनेक तरह की वातचीत हुई । रात मे व्याख्यान के वाद

अनेक त्याग-वैराग्य की बाते हेमराजजी महाराज ने बतलाई। शिष्य किस तरह ज्ञान-तृषित और गुरु किस तरह ज्ञान-उदार था—यह उपरोक्त प्रसगो से साफ प्रकट होगा।

इस तरह ज्ञानार्जन कर आप प्रकाड पण्डित हुए। आपने स० १६०० मे चौबीस तीर्थंकरो की २४ स्तुतियाँ रची, जो 'जिन-चौबीसी' के नाम से प्रसिद्ध हुई। मुनि हेमराजजी ने अपनी अस्वस्थता मे यह अभिग्रह लिया कि रोग मिटते ही वे चौबीसी कण्ठस्थ करेगे। यह घटना आपके लिए बडी गौरवास्पद है। विचक्षण, महापण्डित गुरु के मुख से अपने ही शिष्य की कृति कण्ठस्थ करने की बात शिष्य के लिये अवश्य ही एक बडी-से-बडी कीर्ति की बात है। आप ऐसी कीर्ति के भाजन हुए, यह आपके पाण्डित्य और विद्या-रसकिता की यशोगाथा है।

आप बडे ही स्वाध्याय प्रेमी थे। सभी सूत्रो का आपने कई वार आद्योपान्त गहरा अध्ययन किया। सूत्र-स्वर्गी टीका आदि सर्व ग्रन्थो का मनन कर आपने अपने पाण्डित्य को बडा ही गभीर बना लिया था। ग्रथ अवलोकन आपका एक व्यसन-सा था। यह सुनने मे आता है कि आपने प्रायः एक पहर से अधिक नीद नही ली। सर्व सतो के सो जाने के बाद प्रायः एक पहर बाद सोते और एक पहर रात्रि रहते उठ जाते। प्रभात के पूर्व के एक पहर मे आप चिन्तन करते। रोज ५००० गाथाओ की आवृत्ति का आपने नियम-सा कर रखा था। ऐसे ही सतत अनुशीलन से आपका बहुश्रुतित्व अजोड हो गया था।

आप रागिनियो के राजा थे। शुद्ध राग को बहुत पसन्द करते थे। आपकी कृतियाँ प्रसिद्ध रागिनियो मे हैं। उनमे अमृत की तरह मधुर रस भरा हुआ है। जब कोई राग शुद्ध नही बैठता या कोई राग सीखना होता तो आप अच्छे-से-अच्छे जानकार से उसे ग्रहण करते। इस गुणग्राहिता के कारण ही आप अद्भुत मधुर गानमय ढाले दे सके। आपकी कृतियाँ प्रसाद गुण से ओत-प्रोत हैं।

सस्कृत अध्ययन की आपकी बडी इच्छा रहती। जब कभी सस्कृतविद् पण्डित का ससर्ग होता तो आप उससे पूछने की बात पूछ लेते। इसी तरह सस्कृत अध्ययन कर आपने जैन-सूत्रो की सस्कृत टीका आदि को अच्छी तरह समझने का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। आपकी राजस्थानी भाषा की रचनाओ मे सस्कृत का वडा प्रभाव दिखाई देगा।

(५) विद्या-गुरु से उऋण : अन्तिम समय मे आपने अपने विद्या-गुरु को बडा ही सहारा पहुँचाया। जेठ सुदी १ की रात्रि के पिछले पहर के समय आपने मुनि हेमराजजी को आलोचना कराने की सोची। आपने सोचा :

> ऋपि जीत मन मे विचारियो हो, आऊखारी खबर न काय।
> हिवडा तो वहम दिसे नही हो, तो पिण व्रत देऊँ उचराय॥

यह घटना आपकी दूरदर्शिता का वडा अच्छा परिचय देती है।

यह विचार कर आपने बड़े ही सुन्दर ढग से व्रतोच्चारण करवा कर मुनि हेमराजजी से आत्मालोचना करवाई। आत्म-शुद्धि किस तरह की जानी चाहिये—जैसे आप उसके एक

धुरन्धर विशेषज्ञ हो। आप आत्म-भावनाओ को निर्मल करने की कला मे पारंगत थे।

उपरोक्त आलोचना के बाद मुनि हेमराजजी और आपमे बडा ही रसप्रद और वैराग्य-भावपूर्ण वार्तालाप हुआ। विस्तार का भय होते हुए भी उसे ज्यो-का-त्यो यहा उद्धृत करने का लोभ-सवरण नही किया जा सका है :

हेम कहै आज रात का हो, अजक रही घणी ताय।
तिण सू निद्रा पिण पूरी आई नही हो, इम कहे जीत नें बाय॥
वलि जीत कहै स्वामी हेम ने हो, सांभलज्यो महाराज।
या वेदन सम परिणामाँ सह्याँ हो, योहिज तप समाज॥
ठाणाअग चौथे ठाणे तणो हो, पाठ कह्यो तिण वार।
कष्ट वेदना आयाँ छताँ हो, इम चिन्तवे अणगार॥
तीर्थंकर वेदन सहे समपणे हो, त्याँरो शरीर रोग रहित।
ते पिण लेवे कष्ट उदरीने हो, घोर तप करे हर्ष सहित॥
तो कष्ट लोचादिक रोग नो हो, हूँ किम न सहू समचित जाण।
सम परिणामा भोगव्याँ बिनां हो, एकन्त पाप पिछाण॥
कष्ट लोचादिक तथा ब्रह्मचर्य नो हो, तथा रोगादिक वेदन जाण।
सम परिणामां भोगव्यां हो, एकत निर्जरा पिछाण॥
इण विध साधु चिन्तवे हो, कह्यो ठाणा अग मझार।
हेम नें सर्व सुणाविया हो, पाम्या हर्ष अपार॥
वले उत्तराध्ययन पांचमें ध्ययने हो, सकाम मरण अधिकार।
गाथा सुणाई हेमने हो, अर्थ सहित विस्तार॥
मरण आयां थकां महामुनि हो, राखे अधिक उमेद।
भय करी इम उभा करे नही हो, वछे शरीर नो भेद॥
शीलवन्ता जे बहुश्रुति हो, मरण थी त्रास न पाय।
पहिलां प्रणाम हुतां जिसा हो, अन्त समय अधिकाय॥
तब सू शरीर विसेरने हो, सकाम मरण मरे जाण।
पादुगमण इंगत मरण सू हो, अथवा भत्त पचखाण॥
उत्तराध्येन पांचवे मझे हो, एम कह्यो वर्द्धमान।
हेम सुणी हर्ष्या घणा हो, वैराग रस गलतान॥
वलि जीत कहै स्वामी हेम ने हो, जिन कल्पी अणगार।
ते वेदे कष्ट उदीरने हो, भय नही आणे लिगार॥
[illegible] थी कांटो काढे नही हो, कांटो पग थी न काढन्त।
[illegible] कष्ट वेदे उदीरने हो, जिनकल्पी महा सन्त॥

इसी वेदना तो दिसे नही हो, जब हेम वोल्या इम वाय।
इसी वेदना तो म्हांरे नही हो, जिनकल्पी सरिषी ताय ॥
मेघ सरिषा महामुनि हो, कियो पादोगमन सथार।
ते आंख पिण टमकारे नही हो, एक मास तांई इकधार ॥
ए तन महीना पछे ही छोडणो हो, तो जाण्यो महीनां पहली छोडां एह।
खोली मे जीव छतां शरीर नी हो, सार सभाल तजेह ॥
इसा कष्ट सह्या छै महामुनि हो, ते वेदन नें तुच्छ जाण।
हेम सुणी हर्ष्या घणा हो, सवेग रस गलताण ॥
ए मरण छै सो तो मोछव अछे हो, छूटे अशुच तन एह।
शोच करे किण वात रो हो, आछी वस्तु नही छै जेह ॥
आगे असख्याता काल मे हो, इसा कष्ट तणो नही काम।
नीव लागे शिवपुर तणी हो, तिण सू मृत्यु मोछव अभिराम ॥
हेम हर्ष धर पूछियो हो, मृत्यु मोछव है ताम।
जीत कहै मृत्यु मोछव सही हो, पण्डित मरण सकाम ॥
ए शरीर विणसे सही हो, तिण रो तो इचरज नांय।
इता वर्ष रह्या इहां हो, इचरज एह कहिवाय ॥
देश तणा मनुष्य आयने हो लाख मनुष्य भेला हुआ जाण।
एक मास रही मेलो विखस्यो हो, गया आपरे ठिकाण ॥
ते मनुष्य विखरिया तेहनो हो, अचरज नही छै लिगार।
एक मास ताई भेला रह्या हो, इचरज ए अवधार ॥
अनन्त परमाणु भेला थई हो, शरीर वन्यो छै एह।
इता वर्ष भेला रह्या हो, हिव विणसे छै तेह ॥
पुद्गल रो गलण मिलण सभाव छै हो, विणमे तिणरो इचरज नांय।
इता वर्ष ए पुद्गल रह्या हो, इचरज ते कहिवाय ॥
तिण कारण ए तन छुटे तेहनो हो, सोच नही छै लिगार।
इत्यादिक घणी वार्ता सुणी हो, हेम पाम्या वैराग अपार ॥
घणो हर्ष धरी नें इम कहै हो, सुण सुण रे सतीदास।
सांभल वैराग नी वारता हो, वलि कहै जीत विमास ॥
सुचिन्ना कम्मा सुचिन्ना फला हो, भली करणी रा भला फल होय।
दुचिन्ना कम्मा दुचिन्ना फला हो, भूडी करणी रा भूडा फल जोय ॥
इम सुण हेम वोल्या तदा हो, इम कहनो जयपुरवालो जाण।
देस जीतमल, गृहस्थ स्याणा किस्या हो, किसी विचारणा पिछाण ॥

यह पिछली रात का प्रसंग है। सूर्योदय के बाद आपने जो काम किया, उसका वर्णन इस प्रकार है :

सतीदासजी श्राद साधाँ भणी हो, जीत वोल्या इम वाय।
श्रापाँ दिसाँ जाय पाछा श्रायने हो, श्रौपध देवाँला ताय॥
इम कही हाठ थी उतर्या हो, श्रोढी पछेवडी जीत।
श्रोघो लेई दिसाँ नें त्यारी थया हो, साधु श्राय उभा सुवदीत॥
बलि जीत मनमे विचारियो हो, स्वामी दिसाँ पधार्या ताय।
खेद थी साँस वधे कदा हो, तो श्रौपध देई पछे दिसाँ जाय॥
इम चिन्तव वेठो हाठ नें विषे हो, स्वामी दिसाँ जाय सुरीत।
पाछा बैठा बाजोट ऊपरे हो, इतले श्रायो श्राउखो श्रचिन्त॥
तन माँही परसेवो घणो हो, वाध्यो साँस श्रशेप।
बैठा बाजोट ऊपरे हो, उटिंगण विना सपेख॥
हाथ सू सानी करी तदा हो, श्रमल माँग्यो जीत पास।
जीत दियो श्रमल हाथ में हो, श्राप मुख माँही म्हेल्यो विमास॥
मुख मे म्हेलनें चिगलताँ हो, पुद्गल हीणा पड्या पेख।
श्रणसण जीत उचरावियो हो, स्वामी शुद्ध विवेक॥
ऋष जीत कहै स्वामी श्रापने हो, होज्यो शरणा च्यार।
श्ररिहन्त सिद्ध साधु धर्म नो हो, कहै उँचे स्वर विस्तार॥
बले बैराग्यनी बारता हो, सुणावे विविध प्रकार॥
थोडी बेल्याँ रो कष्ट रह्यो श्रछे हो,भारी सुख पामता दिसो सार॥
पछै च्यारु ही श्राहार पचखायनें हो, बलि दे शरणा सुखसाझ।
श्रासरे घडी में चलता रह्या हो, हेम जाणे गजराज॥
ऋष सतीदास कर्मचन्द नें हो, हस्त सहारे मुनि हेम।
समाधि मरण लह्यो भलो हो, निर्मल ज्याँरा नेम॥

उपर्युक्त प्रसंग से आपके जीवन के कई पहलुओ पर बडा सुन्दर प्रकाश पडता है। आप कितने गहरे आत्मज्ञानी थे—यह उपर्युक्त घटना से साफ प्रकट है। आप एक सेनापति के रूप मे प्रकट होते हैं जो घोर सग्राम के समय भी पौरुष और वीरता को कायम रख सकता है। आपने मृत्यु को महा महोत्सव और जीवन को एक मेला—पुद्गलों का संयोग—बतलाया है। आपने अपने उपदेश से अपने विद्या-गुरु के हृदय मे संवेग-रस की स्रोतस्विनी बहा दी। उस वेदना के समय भी वैराग्योत्पादक बातो के चमत्कारपूर्ण वर्णन से मुनि हेमराजजी का रोम-रोम हर्षित कर दिया। आप एक वैरागी कवि और अनूठे आत्मज्ञानी थे। आप सूत्रो के महान् अध्ययनकर्ता और अध्यात्म-रस के निर्भर थे। घटनाओ का हूबहू वर्णन आपकी लेखनी के लिए एक सहज

वात थी। जैसे भाव और राग आपकी कलम की नोक के इशारे पर नाचा करते। आप एक महान् धन्वन्तरि वैद्य थे जो आत्मिक कष्टो को हरण कर परम सुख की धारा वहा देते।

आपके हृदय मे कृतज्ञता का भाव कूट-कूट कर भरा था। जिस महान् गुरु ने आपको महान् वनाया उसके प्रति आपने जो श्रद्धाजलि अर्पित की है वह अपूर्व है। आप एक जगह कहते हैं

मुनिवर रे मो सू उपकार कियो घणो रे, कह्यो कठा लग जाय हो लाल।
निश-दिन तुझ गुण समरु रे, वस रह्या मो मन मांय हो लाल॥

मु० रे सुपने मे सूरत स्वाम नी रे, पेखत पामे प्रेम हो लाल।
याद कियाँ हियो हुलसे रे, कहणी आवै केम हो लाल॥

मु० रे हू तो विन्दु समान थो रे, तुम कियो सिन्धु समान हो लाल।
तुम गुण कवहु न विसरु रे, निश दिन धरु तुझ ध्यान हो लाल॥

मु० रे साचा पारश थे सही रे, कर देवो आप सरिस हो लाल।
विरह तुम्हारो दोहिलो रे, जाण रह्या जगदीश हो लाल॥

मु० रे जीत तणी जय थे करी रे, विद्यादिक विस्तार हो लाल।
निपुण कियो मतीदास ने रे, वलि अवर सन्त अधिकार हो लाल॥

मु० रे स्वाम गुणा रा सागरु रे, किम कहिये मुख एक हो लाल।
ऊडी तुझ आलोचना रे, वारू तुझ विवेक हो लाल॥

मु० रे अखण्ड आचार्य आगन्यां रे, तै पाली एकण धार हो लाल।
मान मेट मन वश कियो रे, नित्य कीजे नमस्कार हो लाल॥

अपने विद्या-गुरु के देहान्त के वाद आपने उनका नव रस पूर्ण एक सुन्दर काव्य चरित लिखा है। यह चरित-ग्रन्थ साहित्यिक दृष्टि से वडा ही अनोखा है। मुनि हेमराजजी के परलोक गमन के करीव २ महीने के वाद अर्थात् स० १९०५ के श्रावण वदी ११ को आपने इसे जयपुर मे सम्पूर्ण किया। आप चरित लेखन मे वेजोड थे। आप एक महान् इतिहासकार थे जो सूक्ष्म से सूक्ष्म वात को भी सम्पूर्ण व्यौरे के साथ लिख लेने की असाधारण प्रतिभा रखते थे।

(७) शासन-काल और प्रचार क्षेत्र : आचार्य श्रीमद् रायचन्दजी महाराज का देहावसान मिती माघ सुदी १४ को हुआ और उसके दूसरे दिन अर्थात् स० १९०८ साल की माघ सुदी १५ वृहस्पतिवार को प्रातःकाल पुष्य नक्षत्र मे आप शासनाभिरूढ हुए। आपने करीव ३० वर्ष तक शासन-भार वहन किया। तीस वर्ष के इस शासन-काल मे आपने अनेक प्रदेशो मे भ्रमण किया। मारवाड, मेवाड, मालवा, कच्छ, गुजरात, हरियाना, दिल्ली, हाडोती, ढूढाड, थली आदि प्रदेश आपके विहार-स्थल रहे। आपके शासन-काल के चातुर्मासों की विगत इस प्रकार है:—

स्थान	चातुर्मासो की सख्या	सम्वत्
जयपुर	४	१९०९,२८,३७,३८
नाथद्वार	१	१९१०
रतलाम	१	१९११
उदयपुर	१	१९१२
पाली	२	१९१३,२२
बीदासर	८	१९१४,१७,२३,२६,२९,३०,३५,३६
लाडनूं	६	१९१५,१८,२७,३२,३३,३४
सुजानगढ	४	१९१६,१९,२४,३१
चूरू	१	१९२०
जोधपुर	२	१९२१,२५

इस दीर्घ शासन-काल मे आपने धर्म का वडा ही उत्थान किया। हजारो गृहस्थो को श्रावक-व्रत धारण करवाया। सहस्रो को सुलभ वोधि किया। आपके शासनकाल मे १०५ साधु और २२४ साध्वियो की दीक्षा हुई। उस समय सतियो मे मुखिया साध्वी सरदाराजी थी।

(८) महाप्रयाण : आपका ३० वर्ष व्यापी सुदीर्घ शासन-काल वडा ही जयवत रहा। आपके शासन-काल मे अनेक महत्त्वपूर्ण घटनाएँ घटी। आपका यश अनेक देश-प्रदेशो मे फैला। तात्कालिक जयपुर नरेश श्रीमान् महाराज मानसिहजी आपको अपना गुरु मानते थे। इनमे देश बदल कर रात मे गस्त लगाने की आदत थी। जब कभी श्रीमद् जयाचार्य जयपुर मे विराजते तो रात के समय गुप्त वेष मे आप दर्शनार्थ पहुँच जाते। एक बार द्वारपाल को सन्देह हुआ और उसने जयपुर के प्रसिद्ध श्रावक लालाजी को खबर दी। दूसरी बार जब महाराज फिर दर्शन करने के लिए आये तो लालाजी भेट लेकर द्वार के पास खडे हो गये और उनके वापस जाने की प्रतीक्षा करने लगे। जब महाराज लौटने लगे तो उन्होने उनके सम्मुख भेट उपस्थित की। उस समय महाराज साहब ने कहा—"यहा यह भेट कैसी? मैं तो यहा गुरु-दर्शन के लिए आया हू। दिन मे कई विचार रहते हैं इसलिए रात का अवसर निकालता हूं।" यह कह कर उन्होने भेट लेना अस्वीकार कर दिया।

आपका अन्तिम चातुर्मास जयपुर मे हुआ। श्रावण मास मे आपको अन्न-अरुचि हो गई। गले में गाँठ निकल आई और दस्त की शिकायत रहने लगी। भाद्र मास मे ये शिकायते और बढ गई। अब आपको अंत समीप दिखाई देने लगा। भाद्र सुदी ५ और ६ को आपने स्वमुख से आलोचना की, उच्च स्वर मे चौरासी लाख जीव योनियो से खमतखामणा कर व्रत आरोपण और दुष्कृत निन्दा की। चारो शरणो का आधार लिया। वेदना को आप बड़े ही समभाव से सहन कर रहे थे। दशमी की शाम को जल उपरात सागारी अनशन कर दिया। द्वादशी को दोपहर से कुछ पहले पट्टधर मघराजजी से जीवन पर्यन्त के लिए तिविहारी संथारा ग्रहण किया और अन्त समय मे चौविहारी सथारा। स० १९३८ के भादव बदी १२ को सायंकाल आप देवलोक सिधारे।

जयपुर शहर मे चाँदपोल नामक स्थान है। वहाँ से केवल जयपुर दरवार की ही रथी निकल सकती थी। वैकुण्ठी भी राजकुल की ही निकल सकती थी। जयाचार्य के महाप्रयाण के कुछ दिन पूर्व ही लालाजी—भैरुलालजी का स्वर्गवास हो चुका था। उधर जयपुर नरेश श्रीमान् मानसिहजी का भी देहान्त हो चुका था। लालाजी की धर्मपत्नी ने महारानी से मिल कर यह बात वतलाई कि दिवगत महाराज जयाचार्य को किस तरह धर्मगुरु मानते थे। महारानीजी को सारी वाते मालूम थी। उन्होने कहा—"जो महाराज के धर्मगुरु थे वे हमारे भी धर्मगुरु हैं।" उन्होने चाँदपोल से जयाचार्य की वैकुण्ठी निकालने का हुक्म दे दिया। वडी ही सुन्दर वैकुण्ठी मे रथी निकाली गई। रुपयो की काफी उछाल की गई। देखने वाले एक सज्जन ने कहा था कि जयपुर मे उतना वडा जुलूस पहले कभी नही देखा। उस जुलूस मे सभी जाति के लोग सम्मिलित थे। राज्य की ओर से काफी प्रबन्ध था। इस तरह बहुश्रुत योगी जयाचार्य ने महान् यश प्राप्त कर महाप्रयाण किया।

जयाचार्य, आचार्य भीखणजी निर्मित जिन-शासन रूपी महान् मन्दिर के तृतीय स्वर्ण कलश हुए।

(६) जयाचार्य साहित्यिक के रूप में : श्रीमद् जयाचार्य अध्यात्मवाद के एक महान् कवि थे। आपने अपने जीवन काल मे ३॥ लाख गाथाओ की रचना की जिनमे गम्भीर तत्त्वज्ञान और सूक्ष्म से सूक्ष्म अध्यात्मभाव भरा पडा है। स्वामीजी ने ३८००० गाथाओ की ही रचना की थी। आपका साहित्य वहुत विस्तृत है। आप एक महान चरित-लेखक थे। आपने गुणवान् साधु-सतो के वडे ही सुन्दर जीवन-चरित लिखे हैं, जिन्हे पढने से आत्मा वैराग्य-रस मे झूलने लगती है। आपके उपदेश और व्याख्यान वडे सारगर्भित और वैराग्यपूर्ण होते। आप इतने उच्च कोटि के और शीघ्र प्रतिभावान कवि थे कि जव कोई रचना करने लगते तो पाँच-सात सतो को अपने पास रखते और प्रत्येक को अलग-अलग पद धराते—लिखाते जाते। धारण करने वाले सत भी महान् धृतिवान और विचक्षण थे। इस तरह धारे हुए पदो को एकत्रित कर वाद मे समूची रचना सगठित कर ली जाती थी। आप विचक्षण आशु कवि थे। आपके मुख से कविता उसी तरह निकलती जिस तरह से हिमालय से गगा का स्रोत। आचार्य जैसे उत्तरदायित्वपूर्ण पद के धारक होने से वे रचना के लिए वहुत थोडा ही समय दे सकते थे और इस थोडे से समय मे ही वे काफी रचना कर लेते थे। एक-एक दिन मे १६४ पदो की रचना का उदाहरण तो ३०६ वोल की हुण्डी की ढाल २, ३ और ४ को देखने से ही मिल जाता है। आपकी गति और भी अधिक तेज रही होगी—ऐसी हमारी धारणा है अन्यथा इतना ग्रथ-निर्माण अपने जैसे कार्य-व्यस्त आचार्य के लिए थोडे समय मे करना सभव नही था। आप एक दिग्गज विद्वान और प्रगाढ लेखक थे।

आपने कई कठिन सूत्रो का मधुर रागिनीपूर्ण राजस्थानी ढालो में सरस अनुवाद कर उनके विषय को सर्वग्राही बनाया। पन्नवणा जैसे अति कठिन सूत्र के १० पद तक का अनुवाद तो आपने केवल १८ वर्ष की अवस्था में ही शुरू कर के पूरा किया। आचाराङ्गसूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध को ढालो मे गूंथा और द्वितीय श्रुतस्कध पर एक सुन्दर टब्बा लिखा। निशीथसूत्र और उत्तराध्ययन सूत्र के २८ अध्ययन का आपने राजस्थानी मे पद्यानुवाद किया। आपने सम्पूर्ण भगवती सूत्र का भी राजस्थानी मे पद्यानुवाद किया और प्रसिद्ध टीकाओ का उसमें उपयोग किया। भगवती सूत्र के इस राजस्थानी पद्यानुवाद के पदो और ढालो की संख्या क्रमशः ६०,००० और ५०१ है। इस तरह आपने जैनागम वाङ्मय को राजस्थानी भाषा में अनुवादित कर उसे सर्वग्राही रूप दिया और राजस्थानी साहित्य को सुसम्पन्न बनाया। इस आगम-अनुवाद कार्य के अतिरिक्त आपने अनेक स्वतंत्र रचनाये भी की। आपकी कृतियों की सूचि इस प्रकार है :—

१—मुनिवर गुणमाला की ढाल
२—३०६ बोल की हुडी की जोड (६ ढाले)
३—आचारांग (प्रथम श्रुतस्कंध) की जोड (८८ ढाले),
४—भगवती की जोड (५०१ ढाले)
५—ज्ञाता सूत्र की जोड (१२ अध्ययनो की, १०० ढाले)
६—उत्तराध्ययन सूत्र की जोड (प्रथम २८ अध्ययन सम्पूर्ण २९ वां देश रूप)
७—विपाक सूत्र (दो अध्ययनो की जोड)
८—आचारांग (द्वितीय श्रुतस्कंध) का टब्बा
९—निशीथ की जोड
१०—अनुयोग द्वार की जोड (थोडी)
११—पन्नवणा की जोड (१० पद तक)
१२—जयजश (१५१ ढाले)
१३—दीप जश (८५ ढाले)
१४—धनजी रो वखाण (३८ ढालें)
१५—महिपाल चरित्र (७७ ढाले)
१६—सुरसुदर दवदंती (२२ ढालें)
१७—पार्श्व चरित्र बखाण
१८—मगलकलश बखाण
१९—मोहजीत रो बखाण
२०—शीतेन्द्र रो बखाण
२१—शील मजरी
२२—ब्रह्मदत्त बखाण
२३—जशोभद्र बखाण
२४—भरत बाहुबल रो बखाण
२५—व्याघ्र क्षत्री रो बखाण
२६—जमाली रो बखाण (१५ ढालें)
२७—महाबल रो बखाण
२८—खधक सन्यासी रो बखाण (८७ ढाले)
२९—भिक्खु यश रसायण (६३ ढालें)
३०—लघु भिक्खु यश रसायन (५ ढाले)
३१—खेतसी चरित्र (१३ ढाले)
३२—ऋषि राय सुजश (१३ ढाले)
३३—शाति विलास (१३ ढाले)
३४—हेम नवरसो (९ ढाले)
३५—सरूप नवरसो (९ ढालें)
३६—भीम विलास (५ ढालें)

३७—मोतीजी स्वामी (बडा) (५ ढालें)
३८—उदेराजजी स्वामी (५ ढाले)
३९—ऋषिराय रो चोढालियो (४ ढालें)
४०—सरूपचन्दजीरो चोढालियो(४ढालें)
४१—शिवजी स्वामी रो चौढालियो (४ ढाले)
४२—हर्ष ऋषि रो चौढालियो (४ ढाले)
४३—सती सिरदार सुजश (१५ ढालें)
४४—भाद्र मोहछबकी ढाले (२४ ढाले)
५५—मर्यादा मोहछब की ढाले (१७ ढाले)
४६—साधु सती गुणमाला (सैकडो ढाले)
४७—शासन विलास (४ ढालें)
४८—श्रद्धा की चोपी (३८ ढालें)
४९—अकल्पती व्यावच री चोपी
५०—जिन आगन्या री चोपी (५४ ढाले)
५१—१८९० मे गण बारह हुया री जोड (३३ ढालें)
५२—उपदेश री चोपी
५३—सिखामण री चोपी
५४—चरचा नी चोपी (२१ ढाले)
५५—भिक्खु लिखत चोपी (१९ ढाले)
५६—चोबीसी वडी (२४ ढालें)
५७—चोबीसी छोटी (२४ ढाले)
५८—प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध
५९—नयचक्र की जोड
६०—पच सधि का दोहा
६१—धातु रूपावलि का दोहा
६२—ढालोकडा री ढाला
६३—टालोकडा रो लघु रास
६४—परम्परा रा वोल (७ ढालें)
६५—भ्रम विध्वसण
६६—कुमतिविहडन
६७—सदेहविष औषधि
६८—जिनाज्ञा मुखमुड
६९—प्रश्नोत्तर सार्द्धशतक
७०—चर्चा रत्नमाला (अधूरा)
७१—सिद्धान्त सार
७२—झीण चर्चा
७३—ध्यान छोटा
७४—ध्यान वडा
७५—आराधना (१० ढालें)
७६—मर्यादा की ढाला
७७—थोकडा
*७८—शाति चरित (दीर्घ)
७९—शाति चरित (लघु)
८० —हरिवश
८१—महावल
८२—मलया सुन्दरी
८३—पाण्डू चरित्र
८४—चद राजा रो वखाण
८५—रत्नपाल चरित
८६—धर्मवुद्धि पाप वुद्धि
८७—मुनपति चरित
८८—श्रेणिक चरित
८९—मृगावती चरित
९०—लीलावती चरित
९१—हरिवल चरित
९२—जयसेन चरित
९३—उत्तम कुमार चरित

*७८-९३ में उल्लिखित कृतियां जयाचार्य रचित नहीं हैं। अन्त वाचन के लिए इन कृतियों के भिन्न-भिन्न स्थलों पर उपयोग के लिए श्रीमद् जयाचार्य ने अनेक अंगों की रचना की और अपनी ओर से नयी ढालें आदि लिखी हैं। इनकी संख्या प्रचुर है। इसलिए इनका यहां उल्लेख किया गया है।

आपकी सभी रचनाए राजस्थानी भाषा मे हैं और प्राय सभी पद्य मे। उनमें सरसता, चुस्नता, मौलिकता, भावो की ऊँची उडान और गहरा तत्त्वज्ञान भरा है। वे हृदय को बिजली के प्रवाह की तरह अपनी ओर खीच लेती हैं और एक तन्मयता उत्पन्न कर मन और भावो को आत्मिक शान्ति और पवित्र भावनाओ से ओत-प्रोत कर देती हैं। कई ढाले तो अन्त समय के लिए बनाई हुई हैं और उस समय मे उन्हे सुनाने से आत्मा मे एक अपूर्व बल का सचार हो जाता है और म्रियमाण व्यक्ति भी आध्यात्मिक सजीवता से भर जाता है।

श्रीमद् जयाचार्य वास्तव मे एक जीवन-कवि थे। जीवन को उन्नत बनाने के लिए, भावो को पवित्र बनाने के लिए, इन्द्रियो को जीतने और मन को वश मे करने के लिए, सक्षेप मे हृदय मे धर्म की स्रोतस्विनी बहा देने के लिए आपकी ढाले बडी ही उपयोगी हैं। आपकी कृतियो को समझने के लिए विद्वत्ता की जरूरत नही होती और न कोष की ही। उनमे इतनी सरलता है कि यदि एक अनपढ मनुष्य भी उन्हे सुने तो वह उनसे प्रभावित हुए बिना नही रह सकता। आपकी रचनाओ मे सस्कृत शब्दो की बहुलता है परन्तु इन शब्दो का प्रयोग इतने सुन्दर रूप से किया गया है कि ठेठ राजस्थानी की सरसता को वे बिगाडते नही परन्तु उसे और भी दीप्त करते हैं। उनके संस्कृत शब्दो के प्रयोग से न भाषा बोझिल हुई है और न भाव दुर्ग्राह्य। परन्तु उनमें एक अद्भुत मिठास और सर्वग्राहिता निहित है। वास्तव में वह लोक-साहित्य है। स्वामीजी की तरह हम जयाचार्य को भी लोक-साहित्य के अमर गायक-कवि कहेगे।

(१०) कुछ महत्त्वपूर्ण प्रसंग : स० १९३३ मे आपका चातुर्मास लाडनूं (मारवाड) मे हुआ। उस वर्ष ५२ दोहो की एक प्रश्नावली अजीमगज के कालूरामजी श्रीमाल नामक एक श्रावक ने लाडनूं के श्रावको को भेजी। श्रावको ने यह प्रश्नावली आपसे निवेदन की। इस प्रश्नावली मे अनेक तात्त्विक प्रश्न थे और वह बहुत सुन्दर ढग से लिखी गई थी। आपने इस प्रश्नावली के उत्तर मे एक ग्रथ ही बना डाला है, जो 'प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध' के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रश्नोत्तर तत्वबोध को कई श्रावको ने मिल कर कण्ठस्थ कर कालूरामजी को भेजा। बाद मे यह ग्रथ प्रकाशित भी हुआ। यह छपा हुआ ग्रथ १९५ पृष्ठो मे है। आप तत्त्वज्ञान के प्रकाण्ड पण्डित थे। सूत्र तो जैसे आपके कण्ठस्थ-से थे। आपकी रचना सूत्र सदर्भों से भरपूर है। 'प्रश्नोत्तर तत्त्वबोध' जैन तत्त्वज्ञान का एक गम्भीर अध्ययनपूर्ण ग्रंथ है। इस ग्रथ में २७ अधिकार व परिच्छेद हैं और प्रत्येक अधिकार मे एक-एक विषय का सूक्ष्म विवेचन।

पहले साधु तम्वाकू सूंघा करते थे जिससे सफाई कम रहती। आपने तम्बाकू सूंघना एकदम वन्द कर दिया। जो एक वार तम्वाकू सूघते उन्हे पाँच विगह[1] और सूंखडी[2] छोडनी पड़ती। इस नियम के लागू करते ही तम्वाकू की चाल वन्द हो गई।

१—घी, दूध, दही, तेल और तली हुई वस्तुएँ।

२—मिठाई आदि।

एक वार जयाचार्य लाडनूं मे विराज रहे थे। वहाँ पूनी वाई नाम की एक श्रावगी जाति की वहिन थी। उसने अपना जीवित ओसर किया। ओसर मे काफी मिठाई वची। ओसर के वाद उसने जयाचार्य से सतो को गोचरी भेजने की अर्ज की। जयाचार्य ने उत्तर दिया—"अवसर होगा तो देखा जायगा।" वादमे जयाचार्य के मन से यह वात विसर गई और वे सतो सहित लाडनू से विहार कर सुजानगढ पधार गए। जव उस वाई को इस वात की खवर लगी तो उसे मर्मान्तिक पीडा हुई। वह एक वार तो वेहोश भी हो गई। वडे मोतीजी स्वामी उस समय लाडनूं मे थे। उस वाई ने अपनी दुःख-गाथा उनसे कही—"आपके महाराज तो कडी कन्दोले वालो के (धनिको के) घर ही जाते हैं, मुझ गरीवनी के घर कौन आवे ?" मोतीजी स्वामी लाडनू से विहार कर सुजानगढ पधारे और वदना करते हुए वोले—"आपने तो 'धीगा निवाजवाली' की।" जयाचार्य ने पूछा—"सो कैसे ?" मोतीजी स्वामी वोले—"राजा की सवारी निवलती तव एक गरीव आदमी पुकार किया करता—'गरीव निवाज ! मेरी भी सुने' परन्तु राजा इस पर ध्यान नही देते थे। आखिर उसने एक दिन ऊँचे स्थान पर खडे होकर पुकार की—'धीगा निवाज ! मेरी भी सुने।' तव कही राजा के कान खुले। आपने भी पूनी वाई की अर्ज पर ध्यान नही दिया। अतः वह दुःखी होकर अर्ज कर रही थी कि आप 'धीगे निवाज' के साथी है।"

मोतीजी स्वामी की यह वात सुनते ही जयाचार्य को सारी वात याद आ गई। आप वातचीत कर रहे थे वही खूंटीपर आपका ओघा (रजोहरण) रखा हुआ था। ओघे को हाथमे ले आप उसी समय लाडनू की ओर चल पडे। काफी दूर चले भी गये। पीछे से युवाचार्य श्रीमघराजजी स्वामी पहुचे और अपने को भेजने की अर्ज की। जयाचार्य ने मघराजजी स्वामी को भेजा और अच्छी तरह व्रत निपजाने का हुक्म दिया। मघराजजी स्वामी लाडनू पहुच उस वाई के घर गोचरी पधारे। अव उसके हर्ष का ठिकाना नही रहा। मघराजजी स्वामी ने वताया कि जयाचार्य किस तरह विहार कर काफी दूर आ गए थे। वाई गद्गद् हो गई। उसे समझते देर न लगी कि भूल मे ही साधुओ को गोचरी भेजे विना महाराज विहार कर गए।

स्मरण कराते ही जयाचार्य ने अपने वचनो पर कितना ध्यान दिया और वे जैसे धनियो के हैं, वैसे ही गरीवो के भी—यह दिखा दिया। मघराजजी स्वामी उस समय युवराज थे। उन्होने युवराज को भेजकर अपने वात्सल्य का परिचय दिया। मोतीजी महाराज का अर्ज करनेका ढग भी काफी साहस पूर्ण था। वे गण पर किसी तरह का लाछन आवे—यह सह नही सकते थे और इसलिए स्पष्ट अर्ज करने मे भी उन्होने हिचकिचाहट नही की।

तेजपालजी मुनि वडे तपस्वी साधु थे। आप लाडनू के वासी थे। आपके पिताजी का नाम शाह डूंगरसी गोलछा था। वालवय से ही आपके हृदय मे अत्यन्त वैराग्य था और धर्म के प्रति सहज रुचि थी। एक वार जयाचार्य लाडनू पधारे। उनके उपदेश को सुनकर तेजपालजी दीक्षा के लिए तैयार हो गए। उनका वैराग्य इतना तीव्र था कि गृहस्थावस्था मे ही उन्होने हजारो गाथाएँ सीखी। चारित्र लेने की उनकी तीव्र इच्छा थी पर घरवाले अनुमति नही देते थे।

उन्होने तेजपालजी को एक कोठरी मे बन्द कर वाहर ताला लगा दिया। परन्तु तेजपालजी की लौ साधु-जीवन से लग चुकी थी। वे अंतस्थ वैरागी थे। उन्होने कोठरी मे ही लोच कर अपना माथा मूंड लिया और घर मे न रहने की अभिलापा दिखाई। तेजपालजी को और भी कष्ट दिए गये। अंत मे जयाचार्य ने उनके पिताजी को समझा दिया। जयाचार्य बोले—"हम गोलछे हैं और तुम भी गोलछे हो। तुम्हारे पाँच पुत्र हैं। समझ लेना एक पुत्र को गोद ही दिया सही।" जयाचार्य के विनोद पूर्वक समझाने पर और तेजपालजी के उत्कृष्ट वैराग्य को देखकर डूंगरसीजी ने दीक्षा की आज्ञा दी।

श्री जयाचार्य भी स्वामीजी की तरह ही बडे कठोर अनुशासक थे। गुणों के लिए तथा शुद्ध जीवन के लिए उनके हृदय मे बडा सम्मान रहता। उन्होने आचार्य होते हुये भी गुणवान साधु-साध्वियो की मुक्त-कण्ठ से प्रशसा की और जब कही प्रसग आया उनका यशोगान करने मे चूक नही की।

मानसिक शुद्धता और चारित्रिक शुद्धता के लिए उन्होने वहुत कडे नियम बनाए। अनेक मर्यादाएँ बाधी। साधुओ की हाजिरी उन्हीं की प्रारम्भ की हुई है। माघ सुदी ७ के दिन जो मर्यादा-महोत्सव मनाया जाता है, उसके स्रष्टा भी आप ही हैं। स्वामी जी ने स० १८३२, ३७, ४५, ५० और ५९ मे अनेक मर्यादाएँ स्थिर की। अनुभव और जरूरत के अनुसार इन मर्यादाओ को विस्तृत और व्यापक बनाया गया। श्री जयाचार्य ने सं० १९१० में इन समस्त मर्यादाओ को एकत्रित कर सार रूपमें एक सक्षिप्त मर्यादा बनाई और साधु-संत उसे रोज पढे, ऐसा नियम बना दिया। साधुओ को जो रोज एक लिखित—प्रतिज्ञा-पत्र पर हस्ताक्षर करना पडता है, वह भी आप ही का चालू किया हुआ है। इस प्रतिज्ञा-पत्र के अन्तिम शब्द हैं—"मै घणे मन तीखे हरख राजीपा सु लिख्यो सरमा सरमी सुं लिख्यो नथी।" इस प्रतिज्ञा का अर्थ यही था कि साधुओ को प्रतिपल यह स्मरण रहे कि वे महिमामय जैन-शासन के साधु हैं और कुशलता पूर्वक चारित्र का पालन करने और आचार्य के कठोर से कठोर अनुशासन को भी वे अन्तर हृदय से मानने और शिरोधार्य करने के लिए प्रस्तुत हैं। यह प्रतिज्ञा-पत्र विनीत शिष्य की आत्म-साक्षी और आचार्य के पवित्र चरणो पर अपना नम्र समर्पण है।

वृद्धावस्था मे जयाचार्य की आँखो में मोतियाविंद हो गया। बडे-कालूजी महाराज उनकी आँख का आपरेशन कर रहे थे। हठात् बीच ही मे वे वहा से तिरवारी मे आ गए। जो डाक्टर वहाँ मौजूद थे बोले—"यह क्या करते है ?" जयाचार्य बोले—"मेरे शरीर पर जल की छीट—बूंद सी लगी। चरित्र से बढ कर आँख नही है।" सतो ने जाँच की और जब विश्वास हो गया कि फुहारे नही गिरते हैं, तव फिर चौक मे आकर आपरेशन कराया। चारित्रिक विशुद्धता पर जयाचार्य का कितना ध्यान रहता था—यह इस घटना से साफ प्रकट है।

आपके शासनकाल मे सती सिरदाराजी और गुलाबांजी बहुत ही प्रसिद्ध आर्याएँ हुईं। सती सिरदारांजी सतियो की मुखिया थी और इस तरह उनका नाम सार्थक था। वह इतनी वुद्धिमती थी कि संत भी उनकी सलाह से काम करते। उस समय ऐसी परिपाटी थी कि जव संत आहार कर चुकते

तत्र बाकी आहार साध्वियाँ अपने मे विभाजित करती। सती सिरदारा जी ने विभाजन-पद्धति की त्रुटि की ओर श्री जयाचार्य का ध्यान आकर्षित किया। जयाचार्य ने तुरन्त ही इस परिपाटी को बदलकर बराबर विभाजन की पद्धति चलाई। जय-जश और दीप-जश व्याख्यान की तो सामग्री भी उनकी दी हुई है। वे सामग्री देते और जयाचार्य उसे ढालबद्ध करते।

सती गुलाबाँजी भी बडी विदुषी और विचक्षण थी। वे मघराजजी स्वामी की बहिन थी। उनके अक्षरो की मोती से उपमा दी जाती है। वे इतना सुन्दर और साफ लिखती थी कि देखनेवाले की आँखे तृप्त हो जाती। जयाचार्य उनसे लिखवाया करते थे।

पाली मे एक सुनारिन ने सथारा ग्रहण किया। उसकी इच्छा थी कि जयाचार्य दर्शन दें। उसने श्रावको से यह अर्ज जयाचार्य से करवाई। उस समय जयाचार्य पाली से लगभग १२० मील दूर पर विराज रहे थे। अज सुनते ही विहार कर पाली पहुच दर्शन दे उस सुनारिन के मनोरथ को पूरा किया। आप ऐसे ही कृपालु आचार्य थे।

जयाचार्य के जीवन मे अनेक चमत्कारपूर्ण घटनाएँ घटी। स० १९१५ फाल्गुन सुदी १० के रात की बात है। हठात् जयाचार्य को छोडकर सर्व साधु बेहोश हो गए। उस समय जयाचार्य ने एक ढाल जोडी। उसे 'विघ्न हरण की ढाल' कहते हैं। इस ढाल की प्रथम पंक्ति है—"मुणिन्द मोरा, भिक्षु ने भारीमाल वीर गोयम री जोडी रे।" इसमे तेरापन्थ-सम्प्रदाय के सभी विशिष्ट साधु-साध्वियो के गुणो का स्मरण और कीर्तन है। इस ढाल के स्तोत्र से साधु फिर होश मे आये।

इसी तरह एक अन्य परीषह के समय उन्होने शिरियारी मे स० १९१३ की वसत-पञ्चमी वार सोमवार के दिन एक दूसरी ढाल रची, उसमे भी गुणी सन्तो का गुणगान है। इस ढाल के स्तोत्र के बाद परीषह दूर हुआ।

गृहस्थ-जीवन की घटना है। साध्वी अजबूजी का चातुर्मास रोहट मे था। उन्होने माता कलूजी को धर्मध्यान अधिक करने का उपदेश दिया। उस समय जयाचार्य बाल्यावस्था में थे और अत्यन्त अस्वस्थ थे। बचने की कोई आशा न थी। धान गले न उतरता। इससे माता कलूजी बडी चिन्तित रहती। उन्होने साध्वी अजबूजी से कहा—"जीतमल बीमार है। बडा आर्तध्यान रहता है। इससे धर्म-ध्यान विशेष होता नही।" साध्वी अजबूजी बोली—"यदि जीतमल स्वस्थ हो जाय और उसको प्रव्रज्या लेने का भाव हो जाय तो उसे मना करने का त्याग लो।" माता कलूजी ने त्याग कर दिया। आप तुरत नीरोग हो गये। धान गले उतरने लगा।

बाल्यावस्था मे ही आपमे अत्यधिक वैराग्य-भावना थी। साधुओ की सेवा-भक्ति तथा धर्म-ध्यान मे आपकी विशेष अभिरुचि रहती। यदि कोई आपसे पूछता—"आप दीक्षा लेंगे?" तो आपका उत्तर होता—"लूगा।" इस पर साधु कहते—"अभी तुम्हारी उम्र छोटी है। ९ वर्ष के पूर्व दीक्षा नही कल्पती।"

आप हाथ में पला लेकर उसमें कटोरी रख लेते और अपने काका के पास आकर कहते—"मैं साधु हो गया हूँ, शुद्ध आहार देना।" साधु सन्तो से आप बार-बार पूछते—"अभी कल्प आया है या नही ?"

इस प्रसंग से यह स्पष्टतः विदित होता है कि छोटी उम्र मे ही आप मे साधु-जीवन की बड़ी बलवती इच्छा थी।

आपके बड़े भाइयों की सगाई आपके पिताजी ने कर दो थी किन्तु आपकी सगाई वे नही कर सके क्योकि उनका देहान्त स० १८६३ मे हठात् हो गया। आपकी सगाई बाद मे धूंघारे में हुई। यही आपका ननिहाल भी था।

संवत् १८६६ में भारीमालजी स्वामी का चतुर्मास जयपुर मे हुआ। वे पद्मसिह जी ढढा की हवेली में विराजे। उस समय स्वरूपचन्द जी अपनी माता और भाइयो के साथ जयपुर आये और वहाँ पर हरचन्दलालजी जौहरी के मकान पर उतरे। अपने भाइयो के साथ आप तीनों वक्त व्याख्यान सुनते। इससे आपका वैराग्य बढता गया। रात मे ऋषि रायचन्दजी रामायण का व्याख्यान दिया करते थे। आप ने भागा छोडकर पचीस बोल कण्ठस्थ कर लिया और तेरहद्वार के ग्यारह द्वार सीख लिए। आपने विविध चर्चाएँ सीखी। उस समय आप ९ वर्ष के थे। आपकी चातुरी और प्रत्युत्पन्न बुद्धि को देखकर हरचन्दलालजी जौहरी ने विचार प्रकट किया कि यदि जीतमलजी ने दीक्षा ली तो बडे सुयोग्य साधु होगे। यदि दीक्षा लेने का उनका विचार नही रहा तो मैं छोटी बीबी (अपनी भतीजी) का विवाह इससे कर दूगा और बादर सिंह को गोद बिठाकर ५०,००० रुपये नगद तथा वस्त्रादि जो हैं, उन सबको उन्हे दे दूगा। परन्तु कचन और कामिनी के प्रलोभन से आप विचलित नही हुए। आपका वैराग्य बढता ही गया।

चातुर्मास समाप्त होने पर भी शारीरिक अस्वस्थता वश भारीमालजी स्वामी तथा ऋषि रायचन्दजी को कुछ दिनो तक जयपुर मे ही ठहरना पड़ा। इस अवसर पर हेमराजजी स्वामी, अजबूजी, हीराजी, हस्तुजी, किस्तुजी आदि भारीमालजी स्वामी का दर्शन करने आये। जयपुर मे आचार्य श्री के ठहर जाने से लोगो का बडा उपकार हुआ। कइयो ने व्रत आदि धारण किये। अजबूजी ने स्वरूपचन्दजी को उपदेश दिया। युक्ति और उक्ति से उनके अन्तर मे वैराग्य जगाया। हस्तुजी ने कहा—"देखते क्या हो ? सारा यश अपनी बुआ को दो। घर मे न रहने का अभिग्रह लो।" स्वरूपचन्दजी मे वैराग्य भावना तो थी ही इससे उन्होने घर मे न रहने का अभिग्रह लिया। अव श्री जीतमलजी के हृदय मे भी दीक्षा लेने के तीव्र भाव जागृत हुए। भारीमाल जी स्वामी ने स्वरूपचन्दजी को पहले दीक्षा देने का भाव प्रकट किया। माता कलूजी ने सहर्ष आज्ञा प्रदान की।

भारीमालजी स्वामी ने आपकी दीक्षा मिति माघ वदी ७ के दिन ऋषि रायचन्दजी के हाथों घाट दरवाजे के पूर्व के वट-वृक्ष के नीचे करवाई।

भारीमालजी स्वामी ने मुनि भीमराज को ४ महीने वाद और जीतमलजी को ६ महीने वाद वडी दीक्षा देकर मुनि श्री भीमराजजी को वडा किया। मुनि जीतमलजी का प्रथम चातुर्मास मुनि श्री हेमराजजी स्वामी के साथ स० १८७० मे इन्द्रगढ मे हुआ ।

स० १८७५ मे आपका पाली मे चातुर्मास हुआ। इस चातुर्मास मे आपने और स्वरूपचन्दजी स्वामी ने ४२-४२ उपवास किये। आपने "जव तक पूज्यजी के दर्शन न होगे तव तक पाँच विगह न खाऊगा" ऐसा अभिग्रह किया। यह अभिग्रह १३ महीने वाद पूरा हुआ अर्थात् १३ महीने तक आपने घी, दूध, दही, मिठाई आदि का परिहार रखा।

पाली से सुरगढ पधारे। वहाँ दिशा जाकर वापिस आते समय पैर फिसल कर गिर पडने से पैर की ढकनी उतर गयी। बाद मे पीडा दूर हुई, पर कच्ची अवस्था मे पैर पर जोर दे देने से कुछ कसर रह गयी।

श्रीमज्जयाचार्य की जन्म-कुण्डली इस प्रकार है :
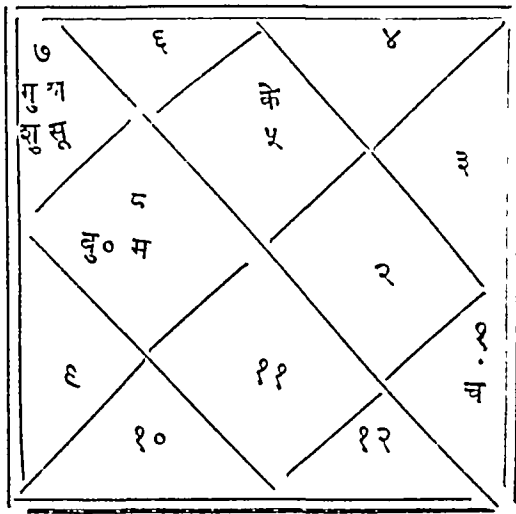
श्री जयाचार्य का विस्तृत जीवन-चरित पचम आचार्य श्री मघराजजी स्वामी कृत आचार्य चरितावलि मे प्रकाशित है। कृपया पाठक उसे देखे।

कृति-परिचय

'भिक्खु जश रसायण' कृति का रचना काल समत् १९०८ आसोज सुदी १ वार शुक्रवार है। यह कृति वीदासर शहर मे सम्पूर्ण हुई जो कि वीकानेर (राजस्थान) मे है[1]।

इस कृति की रचना मे श्री जयाचार्य ने मुख्यतः निम्न कृतियो का सहारा लिया है[2] :

१—ढाल ६३ गा० ४८.

सवत उगणीसै आठे आसोज, एकम सुदि सार ।
शुक्रवार ए जोड रची, वीदासर शहर मझार ॥

२—६३ गा० ४५-४६ .

विस्तार रच्यौ भिक्खु मुनिवर नौ, सुणियौ तिण अनुसार ।
भिक्खु दृष्टान्त हेम लिखाया, देखी ते अधिकार ॥
वेणीरांमजी हेम कृत वर, भिक्खु चरित सुपेख ।
इत्यादिक अवलोकी अधिकौ, ग्रथ रच्यौ सुविशेष ॥

१—'भिक्खु दृष्टान्त'—जो स्वामीजी के शिष्य मुनि श्री हेमराजजी ने लिखाये थे और जिनका संग्रह स्वयं जयाचार्य ने किया था। यह पुस्तक महासभा द्वारा प्रकाशित हो चुकी है।

२—मुनि श्री हेमराजजी कृत 'भीखू चरित'—जो प्रस्तुत खण्ड में प्रकाशित किया जा रहा है।

३—मुनि श्री वेणीदास कृत 'भीखु चरित'—यह कृति भी प्रस्तुत संग्रह मे प्रकाशित है।

यह कृति चार खण्डो मे विभाजित है। प्रथम खण्ड मे चौदह ढाले हैं। जिनमे आचार्य रघुनाथजी से पृथक् हो नूतन दीक्षा ग्रहण करने तक का विवरण है। तथा स्वामीजी ने आध्यात्मिक और दार्शनिक क्षेत्र में जो विचार-क्रान्ति प्रस्तुत की, उसका सुन्दर वर्णन है।

द्वितीय खण्ड मे कुल २८ ढाले हैं। इस खण्ड मे स्वामीजी के अत्यन्त रोचक संस्मरण, दृष्टान्त और प्रसंगो का बडा ही हृदयग्राही चित्रण है। इस खण्ड मे श्री जयाचार्य ने स्वामीजी के जीवन के १५१ प्रसगो का उल्लेख किया है।

तृतीय खण्ड मे कुल १० ढाले हैं। इनमे स्वामीजी के शासन मे जो दीक्षाएँ सम्पन्न हुईं, उनका विवरण है। श्री जयाचार्य ने इस खण्ड मे सर्व साधु-साध्वियो का सक्षिप्त मे घटनापरक जीवन-चरित दे दिया है।

चतुर्थ खण्ड मे कुल ११ ढाले हैं। यहाँ स्वामीजी ने किन-किन देशो मे उपकार किया, उसका और अन्तिम पद-यात्रा का वर्णन आया है। इसी खण्ड मे स्वामीजी ने किस तरह सथारा किया, उसका लोमहर्षक वर्णन है। अन्त मे स्वामीजी के चातुर्मासो का विवरण दिया है।

इस कृति मे कुल ६३ ढाले हैं। ढालवार दोहा और गाथा सख्या इस प्रकार है :

प्रथम खण्ड

ढाल	दोहा	गाथा	कलश	सोरठा
१	६	२१		
२	६	२१		
३	६	२०		
४	६	२६		
५	६	२७		
६	६	१८		
७	६	१३[1]		
८	६	२१		
९	६	३३		
१०	६	१५		१

१—यहाँ सेवग कृत दुहा और भिक्खु कृत छन्द उद्धृत हैं।

ढाल	दोहा	गाथा	कलश	सोरठा
११	६	१७		
१२	६	२४[1]		
१३	६	१४		
१४	६	२६	२	
द्वितीय खण्ड				
१५	६	२०		१
१६	६	१४		
१७	६	१८		
१८	६	१६		
१९	६	२४		
२०	६	२०		
२१	६	२४		
२२	६	१४		
२३	६	४४		
२४	६+२	१८		
२५	६	१३		
२६	६	१७		
२७	६	२३		
२८	६	१६		
२९	६	१७		
३०	६	२२		
३१	६	२०		
३२	६	४८		
३३	६	२०		
३४	६	३७		
३५	६	१९[2]		
३६	६	२१		
३७	६	३१		
३८	६	२३		
३९	६	५६		

१—यहां भिक्खु स्वामी कृत जिन आज्ञा विषयक आठ गाथाएं उद्धृत हैं।
२—'एकलडो जीव खासी गोता' वाली स्वामीजी की गाथा उद्धृत है।

ढाल	दोहा	गाथा	कलश	सोरठा
४०	६	३१[1]		
४१	६	१३०		
४२	६	५६	२	
तृतीय खण्ड				
४३				१[2]
४४	६	१५		
४५	६	२१		
४६	१	२७		१४+२
४७	६	१५		५
४८	१+८	२१		
४९	५	१५		७
५०	७	२४		१९
५१	५	१५		१२
५२ भुजंगी छन्द १४	२१	३७	२	५+२ छप्पय ४
चतुर्थ खण्ड				
५३	४	१६		६
५४	५	१४		
५५	४	३१		
५६	४	१५		
५७	४	१३		
५८	४	२३		
५९	५	१९		
६०	४	१५		
६१	५	१७		
६२	७	२८		
६३	५	४९	२	

१—शोभाचन्द सेवग कृत 'अनभय कथणी रहिणी' वाला छन्द उद्धृत है।

२—इसके बाद मुनि वेणीदासजी कृत दोहों सहित चौथी ढाल उद्धृत है। श्री जयाचार्य ने उस ढाल में जो थोड़ा शाब्दिक संशोधन किया है, वह मूल कृति की इस ढाल के साथ मिलाने से स्वयं प्रकट होगा।

श्रीमज्जयाचार्य की कृतियो और उनके द्वारा रचित जीवन-चरितो मे 'भिक्खुजश रसायन' अपना एक विशिष्ट स्थान रखता है।

उनके द्वारा रचित ग्रथो के अध्ययन से निम्न बातें प्रमुख रूप से सामने आती हैं: (१) वे गभीर अध्ययनशील पुरुष थे। (२) गूढ तत्त्वज्ञानी थे। (३) आगम-ज्ञान मे पारगत थे। (४) जन्मजात इतिहासकार थे। (५) मर्यादा पुरुषोत्तम थे। (६) सिद्धहस्त कवि और चुस्त लेखक थे। (७) उद्भट टीकाकार थे। (८) विशुद्ध दृष्टि सम्पन्न नैयायिक थे और (९) वे धैर्यशील अनुसन्धित्सु थे।

'भिक्षु-जश रसायन'—एक जन्मजात इतिहासकार कवि की सूक्ष्म प्रामाणिक लेखनी का उत्कृष्ट नमूना है। भक्ति-भावना से भीना हुआ यह जीवन-चरित आराध्य के प्रति अतिरजित नही पर एक अपेक्षित श्रद्धाजलि अर्पित करता है।

श्रीमद् जयाचार्य को लगता था—"स्मरण स्वाम तणो शुद्ध साध्या, शिवसुख पामै सार।' जयाचार्य ने ऐसे महान पुरुष की महान यशोगाथा अत्यन्त प्रामाणिक रूप मे उपस्थित की है।

इस जीवन-चरित के लिखने के लिए सामग्री एकत्रित करने मे श्री जयाचार्य ने जो घोर परिश्रम किया है, वह पुस्तक के एक-एक पृष्ठ से स्वय प्रगट है

'भिक्खु दृष्टान्त' का सकलन उन्होने इसी दृष्टि से किया। इन ससमरणो को सग्रह करते समय उनके हृदय मे जो एक अभिनव कल्पना कार्य कर रही थी उसने प्रस्तुत चरित के द्वितीय खण्ड मे साकार रूप लिया है। "खण्ड दूजै गुण खाण रे, दृष्टन्त बहू दयालना" ये दृष्टान्त स्वामीजी की आन्तरिक भावना और वृत्तियो के अन्यतम चित्र हैं। कवि की कुशल तूलिका इन ससमरणो के आधार से ही आभा भरे रग-बिरगे समतल चित्र उपस्थित करने मे सफल हुई है। इस जीवन-चरित मे पूर्व चरितो की अपेक्षा असाधारण विशेषता भी इन संस्मरणो के गुम्फन से ही आ सकी है।

राजस्थानी ससमरण-परक जीवन-चरित लिखने की कल्पना और चिन्तन की शृखला मे श्रीमज्जयाचार्य का स्थान एक अग्रणी के रूप मे आता है। उन्होने प्रस्तुत चरित-लेखन में जिस शैली, कल्पना और ऐतिहासिक वृत्ति को रखा है, वह उस समय के जीवन-चरितो में दुर्लभ है।

इस चरित-ग्रथ की अन्तिम पक्तियो मे कवि कहता है—

अधिको ओछो जे कोई आयो,
विरुद्ध आयो हुवै कोय।
सिद्ध अरिहन्त देव नी साखै,
मिच्छामि दुक्कड मोय॥

इस चरित-लेखन मे जान-बूझकर न्यून-अधिक उल्लिखित करने की बात तो है ही नही। भूल-चूक से भी ऐसा कुछ रह गया हो, ऐसा नही लगता। इतिहासकार की विशुद्ध दृष्टि का यह एक ज्वलन्त उदाहरण है।

तृतीय खण्ड मे स्वामीजी कालीन साधु और आर्याओ का जो संक्षिप्त परिचय उपस्थित हुआ है, वह तेरापन्थ इतिहास की स्वर्ण कड़ियो को सुरक्षित रखता है। स्वामीजी के गण में कैसे उच्च चारित्रिक सत, तपस्वी और शास्त्रगामी साधु-साध्वी हुए, उनका वह सुन्दर हृदयग्राही परिचय प्रस्तुत करता है। समूचा चारित्र संवेग-रस की भावना के उद्रेक का सहज अविराम स्तोत्र है। उत्तम रागिनियो मे गुम्फित यह जीवन चरित उतना श्रद्धाञ्जलि परक नहीं जितना कि वह भावना-प्रेरक है। यह अध्यात्म रस का निर्झर है। जीवन-विशुद्धि की प्रक्रिया में ऐसा अध्यात्मरस समृद्ध जीवन-चरित साधक के लिए प्रबल संबल होता है।

कवि जितना भावना के साथ चला है उतना ही तथ्यो के साथ भी। तथ्य, चित्रण की रोचकता मे कमी नही ला सके। न भाव-प्रवीणता ने ही तथ्यों को ओझल किया है। दोनो ने मिलकर ग्रंथ को एक सुन्दररूप दिया है।

लेखक की "आचार्य संत भीखणजी" नामक पुस्तक प्रस्तुत कृति पर ही आधारित है। उसके अवलोकन से प्रस्तुत ग्रथ का सार विस्तृत रूप में सामने आ जायगा।

प्रस्तुत प्रकाशन का आधार श्रीमज्जयाचार्य के स्वयं की हस्तलिखित प्रति है।

यह जीवन-चरित पहले भी दो बार श्री धनसुखदास हीरालाल आँचलिया, गंगाशहर की ओर से प्रकाशित हो चुका है। गुजराती लिपि में वह बम्बई से प्रकाशित हुआ था। प्रस्तुत सस्करण मे उन प्रकाशनो मे रही हुई भूलो का संशोधन मूल प्रति से मिलाकर किया गया है।

४: लघु भिक्खु जश रसायण

यह भी श्री जयाचार्य की ही कृति है। भिक्खुजश रसायण के १५ वर्ष बाद यह लिखी गयी है। इसके सम्पूर्ण होने की तिथि का उल्लेख इस रूप मे मिलता है :

उगणीसै तेवीस, माघ सुदि तिथ तिज।
गुरुवारे ए जोड करी भिक्षु बीज॥

इस कृति मे स्वामीजी के सस्मरण और अनुयायी साधु-साध्वियों का वर्णन नही है। अवशेष जीवन-चरित है। यद्यपि इसका नाम "लघु भिक्खु जश रसायण" है तथापि यह "भिक्खु जश रसायण" कृति का सक्षिप्तरूप नहीं, पर एक स्वतन्त्र कृति है। इसमें स्वामीजी के जीवन चरित को संक्षेप मे उपस्थित किया गया है, पर वह अपने आप में सम्पूर्ण है।

रचना की दृष्टि से यह कृति भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। कवि की चित्रण-कुशलता सर्वत्र व्याप्त है। एक ही बात दोनो चरितो मे भिन्न-भिन्न शब्दो मे वैसे समानरूप से सुन्दर चित्रित हुई है, यह कवि की सहज कवित्व-शक्ति का परिचायक है।

इस कृति का आरम्भिक अंश एक भिन्न ही भूमिका को लिए हुए है और उतना सर्वतः नवीन है। अवशेष चरित में प्रथम चरित में समाविष्ट घटनाओ का ही वर्णन है, पर वह

भाषा और भाव-व्यंजना की दृष्टि से सम्पूर्णतः नवीन है। दोनो चरितो के वर्णनो से घटनाओ का पूरा-पूरा रूप सामने आ जाता है।

इस कृति मे कुल पाच ढालें हैं तथा दोहे और गाथाओ आदि की संख्या २६३ है।

प्रस्तुत प्रकाशन का आधार शासन की हस्तलिखित प्रति से धारा हुआ पाठ है। यह प्रति किसके हाथ की लिखी हुई है, इसका पता नही चल सका।

यह चरित प्रथम बार ही प्रकाशन मे आ रहा है।

तेरापन्थ आचार्य चरितावली के इस प्रथम खण्ड मे प्रकाशित आचार्य भिक्खु के चार जीवन चरितों से स्वामीजी के जीवन से सम्बन्धित अनेक घटनाओ का हूबहू चित्र सामने आ जाता है। इसमे सन्देह नही कि भविष्य मे हिन्दी मे स्वामीजी के चरित लिखने के लिए इस प्रकाशन द्वारा पाठको के हाथ में अपूर्व सामग्री आ जाती है।

तेरापन्थ आचार्यो और सन्तो द्वारा राजस्थानी साहित्य की जो श्री वृद्धि हुई है, उसका यह प्रकाशन एक ज्वलन्त प्रमाण है। महासभा का यह प्रकाशन राजस्थानी साहित्य मे अवश्य महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त करेगा, इसमे कोई सन्देह नही।

कलकत्ता *श्रीचन्द रामपुरिया*

भाद्र शुक्ला १, २०१८

विषय-सूची

तेरापंथ आचार्य चरितावलि

[खण्ड : १]

: १ :

भीखू चरित

[मुनि श्री हेमराज जी कृत]

दूहा

अरिहंत सिद्ध साधु नमूं, सारद भगवत उर आण।
गुरु गिरवा गुणवंत नो, कहूं भीखू चरित बखाण॥ १॥
मोटा मोटा मुनिवर हुवा, आगे चौथे आर।
बखाण्या सूत्र वीर जी, सूत्र में सुध सार॥ २॥
त्याने नेणां नहीं निरखीया, वीर कह्यो विस्तार।
पिण धिन धिन भिक्खु स्वामजी, प्रगट्या पांचमें आर॥ ३॥
गुण गावे गुणवंत गुरु तिणा, भोला रे मन नहीं भाय।
ग्यानी कह्यो गिनाता मझे, तीर्थंकर गोत बंधाय॥ ४॥
उतकृष्टा परिणाम सूं, उतकृष्टो आवे रसाण।
संका मत आणो सवथा, वीर सूत्र री वाण॥ ५॥
तिण काले ने तिण समें, दुषम आरा नो थान।
पूज भीखनजी प्रगट्या, सुणी नाम नासमान॥ ६॥
सुणी कथा सुणी वारता, सुणी सरध्या आचार।
सुणे सुणे जीव जगत में, आवागमण निवार॥ ७॥
जनम लियां दिख्या लियां, प्रभव पोहता तिण ठाम।
कीया चोमासा तिण विधे, तेहना पिण कहूं नाम॥ ८॥
जस महिमा घणी जगत में, रही घटा छा जाय।
पिण थोडसी परगट करूं, नामभाख्यो नित न्याय॥ ९॥

ढाल : १

त्या भीखनजी अवतरीया जी, काइ धरीया जणणी गर्भ मे,
उतम जीव अपार ।
समत सतरेसे बेयासी जी, सुखवासी नदण उपना,
सुपन लह्यो श्रीकार ॥ २ ॥
सीह सुपने माता जी सुखसाता, सुत ने जनमीया,
हुओ हरख उछाव ।
दीपादे अग जाता जी, काइ पिता वलूजी सोभता ।
काइ कुल ओसवाल कहाव ॥ ३ ॥
बडे साजन वले वीसा जी, सकलेसा जात जाणजो,
एक परण्या था नार ।
घणो नही कीयो ग्रहवासो जी, काइ आछो सीलज आदर्‍यो,
दीख्या री मन धार ॥ ४ ॥
वरस पचीस आसरे वधीया जी, काइ सधीया चेत खडा हुआ ।
आयो घट वेराग ।
रूघनाथजी गुरू धरीया जी, काइ क्रिया काची जाणने,
पछे अुपनो सोच अथाग ॥ ५ ॥
सुत्र ने सुध वाच्या जी, काइ राच्या ग्यान रसालसू,
अुडो दियो उपयोग ।
भगवत मारग भूला जी, काइ डूला छोड ससार ने ।
नही दीसे सजम जोग ॥ ६ ॥
राजनगर मे भणता जी, काइ गुणता ग्यान भलो लह्यो,
वरस पनरे चऊमास ।
सुत्र माहि साचो जी, काइ काचो म्हे पाला जको,
हिवे तोड न्हाखू मोह पास ॥ ७ ॥
आय कहे गुरा ने क्रिया जी, वीसरीया वीर भाखी जका,
काइ चूका समक्त सार ।
छोडो सुरत सभाली जी, मन वाली मारग मोकलो,
पिण उहारी उठ न हुई लिगार ॥ ८ ॥
अवारू पाचमो आरो जी, कहे सारो सयम नही पले,
इत्यादिक कह्या ढीला वचन अनेक ।
पिण सुत्र न्याय साकरे लीधा जी, काइ कीधा कष्ट रूडी परे,
वीर वचन वनाय वसेख ॥ ९ ॥

दूहा

सामी मारग साचो लीयो, सारण आतम काम।
पिण भारीकर्मा जीवडा, अलीया बोले आम ॥ १ ॥
कुगुरा ना भरमावीया, बोले आल पंपाल।
थोडा सा प्रगट करू, सुणजो सुरत सभाल ॥ २ ॥

ढाल : २

[धीज करे सीता सती रे लाल]

गुरु ने उथापी अलगा हुआ रे, वले दान दया दीधी उथाप रे, भवक जिण।
जीव बचावे छे तेहने रे लाल, ऐ कहे छे अठारे पाप रे, भवक जिण।
सुणजो भीखूजी री वारता रे लाल ॥ १ ॥
सगत यागी करज्यो मती रे, लाग जायला थारे लाल रे। भ०।
[illegible] छे ए नीकल्या रे लाल, इम देवे अनेक विध आल रे। भ० ॥ २ ॥
भरमाया अनेक जीवा भणी रे, घणा गावा नगरा विख्यात रे। भ०।
[illegible]गपथ्या रो मारग ओलख्या रे लाल, तो हरगज नावे म्हारे हाथ रे। भ ॥ ३ ॥
आपरा पखीया भणी रे, वले अनेक टोला सू मिलीया जाय रे। भ०।
[illegible]नेक ग्रहस्थ्या ने सीखावीया रे लाल, याने टकवा म देज्यो ताहि रे। भ० ॥ ४ ॥
[illegible] टोला रे माहोमा बेशो घणो रे, एक एक ने सरधे असाध रे। भ०।
भीखनजी सू बेशो करे तरे रे लाल, कहे म्हे तो सगलाइ छा साध रे। भ० ॥ ५ ॥
अनेक विध कर रह्या रे, आहमी साहमी घमडोल रे। भ०।
[illegible]ने कितायक दिन ठाहरे रे लाल, नावा उपर झोल रे। भ० ॥ ६ ॥
[illegible] न्हाखे सूर्य सामे रे, आप उपर पाछी परे आय रे। भ०।
[illegible]खनजी सू [illegible] रे लाल, देखो गाठ रा श्रावक जाय रे। भ० ॥ ७ ॥
ज्य ज्यू भीखनजी विचरे जठे रे, उवारा भरमाया आगुच जोवे वाट रे। भ०।
[illegible] थे [illegible] जायजो मती रे लाल, आया थोडा मे गेल्या हुवे थाट रे। भ० ॥ ८ ॥
[illegible]ना प्रश्न पछवा रे, कोई देखण काज रे। भ०।
कुगुर ना भरमावीया रे लाल, उवा बोलता नही आणे लाज रे। भ० ॥ ९ ॥
[illegible] अनेक देवा धरा रे, केइ बोलता वचन विकराल रे। भ०।
[illegible] रे लाल, केइ [illegible] गोसाल रे। भ० ॥ १० ॥
[illegible] नही रे, गुन बनावे गुन न्याय रे। भ०।
[illegible] रे लाल, देवे भिन्न भिन्न भेद दरसाय रे। भ० ॥ ११ ॥

चतुर ते सुण सुण चितवे रे, कुड कपट न दीसे यामे कोय रे। भ०।
आतो साची वाता कही सही रे लाल, घणा इचर्य होय रह्या जोय रे। भ०।
साचो धर्म भगवान रो रे लाल॥ १२॥

भगू भडकाया था वेटा भणी रे गुध गाथा मे चूक वताय रे। भ०।
ज्यू लोका ने भडकाया भीखनजी थकी रे लाल, आहीज मेलो न्याय रे॥ १३॥
वारुवार पूछी निरणो करी रे, कुगुरा ने दीया छटकाय रे। भ०।
साची सरधा आदरी रे लाल, कहे धिन धिन भीखू रिपराय रे। भ०॥ १४॥
केइका लियो साधुपणो रे, के हुवा श्रावक श्रावका साख्यात रे। भ०।
केइ प्रतीत धार पका हुवा रे लाल, छोटी कुगुरा तणी पखपात रे। भ०॥ १५॥
इम अनेक गामां नगर मझे रे, चरचा कर लीया समजाय रे। भ०।
जे हलूकर्मी था जीवडा रे लाल, ते कुगुरु छोडने आया ठाय रे। भ०॥ १६॥
जो भारीकर्मा था जीव रे, खोटा मत माहे रह्या खूत रे। भ०।
कुमत कुबध माहे कल रह्या रे लाल, ज्यू माखी रहे सघेण मे सूत रे। भ०॥ १७॥
रावण रूप कीया था घणा रे, वहो रूपणी देवी वोलाय रे। भ०।
पिण लछमण रा वाण सू रे लाल, रूप गया विललाय रे। भ०॥ १८॥
ज्यू सुध साधा सू भडकाया लोका तणी रे, यारी सगत म करज्यो कोय रे। भ०।
पिण पूज सुत्र न्याय ग्यान वाण सू रे लाल, भ्रम भाग्यो घणा रो जोय रे। भ०॥ १९॥
चक्रव्रत चढे देस सावदा रे, आण फेरे छ खड मे आय रे। भ०।
ज्यू भीखनजी रिप विचरया जठे रे लाल, अरिहत आगन्या दीधी अुलखाय रे। भ०। २०।
निरजुगता न्याय मेल्या घणा रे, सुध सुत्र जोय जोय सार रे। भ०।
वले उतपात बुध सू आछो कीयो रे लाल, आसरे ग्रथ अडतीस हजार रे। भ०॥ २१॥

दूहा

आचार उपर हजारा कीया, समकत उपर हजारा सोय।
व्रत अव्रत ने उपरे, ग्रथ हजारा जोय॥ १॥
वले उपदेस अनेक विध, रचीया वचन रसाल।
तेरे दुवार ताजा कीया, सुत्र साहमो भाल॥ २॥
उपगार आछो कीयो, कमी न राखी काय।
सके तो जाणू साम जी, पदवी तीर्थंकर पाय॥ ३॥
ज्या ज्या विचरया पूज जी, मिथ्यात देवे मिटाय।
उतकष्टी रसायण उपजे, तो पदवी तीर्थंकर पाय॥ ४॥
ग्यानी कह्यो ज्ञाता मझे, सका म धरजो सोय।
वीसमो वोल विचारजो, निरणो कीजो जोय॥ ५॥

उतपात बुध अत ही भली, च्यारू बुध रे माहि।
ते हूती घट पूज ने, निरमल मेल्या न्याय ॥ ६ ॥

ढाल : ३

[धिन धिन जीव जी]

आठ सपदा सहीत आचार्य, कुल मडण कुल दीवो।
पाचमे आरे प्रगट हुआ रे, भीखू रिप वादो भव जीवो।
धिन धिन भीखू साम जी ॥ १ ॥

पाखंड पथ ने परहर्‍यो रे, मोटा मुनी मतवंत।
सुमत गुप्त माहावरत सही रे, एते रे पाले ते तेरापथ ॥ २ ॥

दोष बयालीस टालता रे, बावण टाले अणाचार।
सुत्र न्याय सुध परूपणा रे, अरिहंत आगन्या धार ॥ ३ ॥

सुत्र ने सुध वाचता रे, मेलता सुध सरूप।
मीठे वचन ने मुनीसरू रे, वागरे वाण अनूप ॥ ४ ॥

कोई पाखडी अडे आयने रे, उणरा वचन सुणी ने सांम।
उणरा वचना सु कष्ट उनने करे रे, आछी बात अमाप ॥ ५ ॥

अनेक स्याल आये अडे रे, को किम भागे सीह।
जे आचारे उजला रे, ते वया ने आणे वीह ॥ ६ ॥

मेवाड मुरधर देस मे रे, कछ देस हाडोती ढुढार।
साची सरधा प्रगट करी रे, घाली घट मे सार ॥ ७ ॥

जठे श्रावक श्रावका किया घणा रे, केइ हुवा साधवी साध।
ते चरणा लगा स्वामी तणे रे, आछी टाली असमाध ॥ ८ ॥

केइ भेष धार्‍या ने छोड साधू हुआ रे, चरचा करने सोय।
मान अहकार मेलने रे, कुमी न राखी कोय ॥ ९ ॥

कुगुरू छोडी सतगुरू कीया रे, आ चोथा आरा नी रीत।
घणा गावा नगरा मझे रे, पूज तणी धारी परतीत ॥ १० ॥

जसकर्मी था जीवडा रे, आदेज वचन आताप।
भिखू विचर्‍या ज्यां पाखड भाजता रे, धर्म आगे ज्यू पाप ॥ ११ ॥

दरसण भीखू रो ज्या देखीयो रे, पेखीया गुण वचन पिछाण।
सो जाणे स्वामी नी सेवा करू रे, उजम इधिको आण ॥ १२ ॥

भज भज रिप भीखू भणी रे, तज तज पाखड तास।
धज धर्म धारो धुर रे, करो मुगत मे वास ॥ १३ ॥

अणत भव आगे कीया रे, तत न मिलीया सार।
कदा मिलीया तो ही मनख्या नही रे, आय उपनो पाचमे आर ॥ १४ ॥
हिवे भीखू मुनीसर भेटीया रे, गुणवत ग्यान भंडार।
साचो भजन कीधा सही रे, पामस्या वेगा भव पार ॥ १५ ॥

दूहा

पूज भीखनजी मोटका, मोटा गुण भरपूर।
भव जीवा भजो तुमे, प्रह ऊगते सूर ॥ १ ॥
वले गुण गाऊ भीखु तणा, सांभलजो सहु कोय।
मोटा गुण महापुरुष ना, ग्रहु गुण साहमो जोय ॥ २ ॥
भीखनजी भरत क्षेत्र मझे, कीयो धर्म उद्योत।
जीवादिक ओलखाविया, घट घट व्यापी ज्योत ॥ ३ ॥
भजन कीया भीखु तणा, भाजे भव भव भूख।
कर्म कटे निरजरा हुवे, दूर जावे सब दुख ॥ ४ ॥
छाण कीधी जिण धर्म नी, भला नीवेड़ा न्याय।
इसडा बुधवत जीवडा, नही दीसे भरत रे माहि ॥ ५ ॥
तिहा भीखनजी नित भेटीया, त्यारे माथे भाग।
सुणजो गुण स्वामी तणा, एक मना चित्त लाग ॥ ६ ॥

ढाल : ९

[हरखत गायलो रे सुधारा भव]

सामी भीखू मारिखा, दुषम आरा रे माहि।
हूआ ने होसी वली, आज न कोइ दिखाय।
भीखू गुण गायलो रे, सुधारस्या भव दोय ॥ भी० ॥
जसवत बुधवत जोय। श्री। भजन करो सहू कोय ॥ भी० १ ॥
मिथ्यात मेटे मोटा मुनी, कीधो ग्यान उजास।
धर्म अधर्म उलखावीया, ज्यू मुख दीसे काच ॥ भी० २ ॥
धर्म धुरा धुरधरु, मेहमा मेर समान।
भरत क्षेत्र मे मलके रह्या, मरद्या क्रोध ने मान ॥ भी० ३ ॥
खिम्या करी सामी तणी, कर्म काटण तरवार।
तपसा पिण कुले आवे नही, प्रसिध लोक विचार ॥ भी० ४ ॥
दयावत मुनी दीपता, गिरवा ग्यान भंडार।
एक जीभ कहणी आवे नही, पूज गुणा रो पार ॥ भी० ५ ॥

सतवादी मुनी सुरमा, नही कुड कपट री वात।
साचो धर्म उलखावीयो, ज्यू भाख गया जगनाथ ॥ भी० ६ ॥
अदत न ग्रही दतग्रही, ब्रह्मचारी बखाण।
नव ही जात रो सर्वता, परिग्रह ना पचखाण ॥ भी० ७ ॥
नित नित नमो भीखू मुनी, काटो कर्म कठोर।
नरमाइ नित नित करो, मडदो मान मरोड ॥ भी० ८ ॥
साचा गुण स्वामी तणा, सवरे छे दिन रात।
जीवे ज्या लग भूले नही, चावा गुण साख्यात ॥ भी० ९ ॥
च्यार तीर्थ गुण सेवरा, हूता भीखनजी साध।
काम पडेला कडली चरचा तणो, आवेला जद याद ॥ भी० १० ॥
भली हुई मुझ चाकरी, लेखे लागी आज।
गुण गाया भीखू तणा, सारण बछत काज ॥ भी० ११ ॥
गुण प्रमाग गणनायकू, थिर कर थाप्या हो साम।
भार चलावे टोला तिणो, भारमलजी त्यारो नाम ॥ भी० १२ ॥

दूहा

बयाली वरसा लग पूज जी, बोहत कीयो उपगार।
विचरत विचरत आविया, मुरधर देश मझार ॥ १ ॥
उपगार कीयो दोय वरस मे, मारवाड मे आय।
च्यार साध सात साधव्या हुई, त्या सजम लीयो सुखदाय ॥ २ ॥
वले श्रावक श्रावका कीया घणा, विचर्‍या घणा गावा नगरा माहि।
जठे उपगार कीयो घणो, कह्यो कठा लग जाय ॥ ३ ॥
हिवे चर्म किल्याण स्वामी तणो, अण भव आसरी जाण।
किहा विचर्‍या किण सेहर मे, प्रभव पोहता किहा आण ॥ ४ ॥
छेला छेला गाम फरसता, छेलाइ करता विहार।
विचरत विचरत आविया, सोजत सेहर मझार ॥ ५ ॥

ढाल : ५

[सलहा मारू ना गीत नी तथा हथणापुर हो]

विचरत विचरत हो आया सोजत सेहर मझार, आग्या लेइ छत्री माहि उतर्‍या जी।
ते छत्री छे हो मुत्ता रायमल री विचार, उण ठामे आगे इ उपगार कीयो घणो जी ॥१॥
त्या वहू आया हो साध साधवी सुवनीत, केइ दर्शन करवा धर्म चरचा धारणे जी।
त्याने पूरी हो पूजजी री प्रतीत, केइ आया चोमासा री आग्या कारणे जी ॥२॥

भीखू त्याने हो दीया चोमास भलाय, मुनी पिण चोमासा रो कीधो हुवेला मनो जी ।
एतले आयो हो हुकमचन्द आछो चलाय, धर्म दलाली माहे आछो दीपतो जी ॥३॥
ते करे दलाली हो बोले बेकर जोडी ताहि, धर्म आचार्य मोटा गुर जाण ने जी ।
सामी चोमासो हो करो सेहर सरीयारी माहि, आ वीनती मानो करपा भाव आणने जी ॥४॥
चतुराई सू हो वीनती कीधी वारम्वार, अवको चोमासो सरीयारी कीजिये जी ।
सुझती छे हो पको हाट विस्तार, स्वामी तिण ठामे वासो लीजिये जी ॥५॥
केतलायक दिन रहने हो सामीजी तो कीधो विहार, वगडी रहने कटाल्यो आया वही जी ।
ठांम ठाम हो वीनती करे नरनार, सामी तो सरीयारी चलाय आया सही जी ॥६॥
सरीयारी हो सोभे सेहर भाठा री कोट, दोल्लो दोल्लो मगरो गढ कोट ज्यू दीसतो जी ।
राज करे छे हो तिहा राज राठोर, कुपावत कल्ली छाप नो दीपतो जी ॥७॥
जाडी वस्ती हो त्या साजना री जाण, जठे मेहमा घणी छे जिन धर्म तणी जी ।
बहु नरनारी हो सुणे साधा रा वखाण, भल्ली तपसा करे केइ कर्म काटण भणी जी ॥८॥
तिहा मुनी आया हो नसरिंगी अणगार, सुध सजम पाले उद्रथा ने जीपता जी ।
स्वामी सोभे हो, साधा रे सिरदार, गणनायक रिष भीखन जी दीपता जी ॥९॥
आग्या लेने हो उतरया पके हाट, रखे दोप लागे तो रहे मुनी धरकता जी ।
वखाण वाणी रा हो लागे छे तिहा थाट, घणा नरनारी सुण सुण ने हीये हरपता जी ॥१०॥
वखाण वाणी मे हो सामी भारमल जी वदीत, साथी खेतसीजी सतजुगी कहावता जी ।
उदेरामजी हो त्यारे तपसा री नीत, वाल ब्रह्मचारी रायचद मुनी जीवो मन भावता जी ॥११॥
भगजी कीधी हो सामी जी री सेवा भगत, तिण सू साधा मे सोभा हुइ घणी जी ।
वनीत होवे छे हो तिण ने सरावे जगत, अवनीत माहि अवगति कही घणी जी ॥१२॥
आपाढ उतरने हो सावण सुध छेहले आय, स्वामी जी रे काइक असाता उठी सही जी ।
तो ही दिसा वारे हो, गोचरी उठे गाव माहि, लावी तो गिणत स्वामी जी राखे नही जी ॥१३॥

दूहा

अवसर काल आय लगो, सूत्र भणवा चाहि ।
सुध कर कर साम जी, सिप ने अर्थ वताय ॥ १ ॥
जोड करे घणी जुगत सू, ओर ही अर्थ अनेक ।
उदमी छे नही आलसु, सामी सुध ववेक ॥ २ ॥
फोरी आसता फेरा तणी, मिटावण मुनी सोय ।
ओखद लीया अणाय ने, पिण काम न आया कोय ॥ ३ ॥
वले पुनम रे दिन पुज जी, उठ्या गोचरी आप ।
ओखद आण खादी खरी, वेदन रही छे व्याप ॥ ४ ॥

हिवे आगा ऊपर आदरी, साचे मन स्वामी नाथ।
कार्य सुधारे किण विधे, साभलजो साख्यात ॥ ५ ॥

ढाल : ६

[कामणगारो छे कुकडो रे]

साध भीखूजी तिण अवसर रे, आऊ नेरो आयो जाण।
करे आलवणा किण विधे रे, साचा साचा चतुर सुजाण।
सुणजो आलोवण स्वामी तणी रे ॥ १ ॥
आज पेहली इण जीवडे रे, हसा कीधी हुवे कोय।
मन वचन काया करी रे, मिछामी दुकरो छे मोय ॥ सु० २ ॥
क्रोध मान माया लोभ सू रे, झूठ कह्यो हुवे कोय।
जाणता ने अजाणता रे, मिछामी दुकरो छे मोय ॥ ३ ॥
अदत्त पाच प्रकार नो रे, सेव्यो सेवायो हुवे सोय।
भलो जाण्यो हुवे सेवता रे, मिछामी दुकरो छे मोय ॥ ४ ॥
ममता धरी हुवे महीथुन सु रे, सूता जागता जोय।
मन वचन काया करी रे, मिछामी दुकरो छे मोय ॥ ५ ॥
परिग्रहो नवइ जात नो रे, त्यारा न्यारा न्यारा भेद होय।
ममता करी हुवे किण ही उपरे रे, मिछामी दुकरो छे मोय ॥ ६ ॥
क्रोध कीधी वे किण ही उपरे रे, कडली सीख दीधी हुवे कोय।
कडला काठा वरु वचन रो रे, मिछामी दुकरो छे मोय ॥ ७ ॥
मान माया लोभ कीया हुवे रे, राग धेष कीया वे दोय।
इत्यादिक अठारेइ पापना रे, मिछामी दुकरो छे मोय ॥ ८ ॥
रागी उपर राग कीयो हुवे रे, धेखी सू धरीयो हुवे धेख।
मन साचे हिव माहरे रे, मिछामी दुकरो छे वशेख ॥ ९ ॥
प्रथवी अप तेऊ वाऊ छे रे, ज्यारी सात सात लाख जात।
हणी वे तीन कर्ण जोग सू रे, बारूबार खमाऊ विख्यात ॥ १० ॥
चवदे लाख साधारण वनस्पति रे, दस लाख प्रतेक।
बे ते चोइन्द्री बे बे लाख छे रे, वली वली खमाऊ आण ववेक ॥ ११ ॥
नारकी देवता तिर्यंच नी रे, जात च्यार च्यार लाख।
चवदे लाख जात मिनख नी रे, खमाऊ अरिहत सिधा री साख ॥ १२ ॥
वले वडा शिष्य सुवनीत छे रे, अतेवासी अमोल।
आगे लेहर जे आइ हुवे रे, खमाऊ छू दिल खोल ॥ १३ ॥

एहवी आलवणा काने सुण्या रे, आवे इधक वेराग।
करे ज्यारो केहवो कसू रे, त्यारे माथे मोटो भाग॥ १४ ॥

दूहा

खात करी खमावता, सर्व जीवा ने साम।
वारूवार विशेप जी, आछी भात अमाम॥ १ ॥
बावीस टोला माहि तेहसू, कडली चरचा रो पडियो हुवे काम।
अवर ई अनमती अनेक ने, खमावे ले ले नाम॥ २ ॥
वले आप तणा गछ माहिला, गछ वारे व्रते कोय।
त्याने पिण खमावता, हरखत मन मे होय॥ ३ ॥
हिवे सावण तो सर्व नीकल्यो, आयो भादवो मास।
साधा ने तेडी स्वामजी, बोले वचन विलास॥ ४ ॥

ढाल : ७

[मीठो छे पुन ससार मे]

श्रावक श्रावका सुणता थका, बोले अमृत वाय।
छेले अवसर मामजी, सीख देवे सुखदाय।
सुणजो सीख स्वामी तणी जी॥ १ ॥
थे आगे जाणता मो भणी, ज्यू जाणीजो भारीमाल।
संका म आणजो सर्वथा, असल साधु री छे चाल। २ ॥
साध साधवी ए सर्व छे, त्यारा भारमलजी नाथ।
भार सूप्यो छे टोला तिणो, कोइ म लोपज्यो यारी वात॥ ३ ॥
अरिहत आगन्या माहि रहे, जिण ने सरधजो साध साख्यात।
आगन्या लोपने उधो पडे, त्यारी म करज्यो पखपात॥ ४ ॥
इमही आगन्या सत गुर तणी, रहे भारमल जी माहि।
सुध आचार पाले सही, त्याने मत दीज्यो चटकाय॥ ५ ॥
अरिहत सतगुर नी आगन्या, कर्म जोगे लोपे कोय।
वदणा परतीत करज्यो मती, साध म सरधज्यो तिणने सोय॥ ६ ॥
साची सीख तीर्थ च्यार ने, विध सू दीधी छे बताय।
इत्यादिक अनेक वचना करी, कही कठा लग जाय॥ ७ ॥
हिवे सुतजुगी साम सू, मुख सू बोले एहवी वाय।
म्हारे विरहो पडतो दीसे पूज नो, आप जाता दीसो भ्रड माहि।
हाथ जोडी ने इम कहे॥ ८ ॥

वलता सामी इम वागरे, मारे झड तणी नही चाहि।
आगे अनती वार जीवडो, गयो देवलोका माहि ॥ ९ ॥
पुदगल सुख कारिमा, विणसता नही लागे बार।
गृद्धी हुवे ते जाय नरक मे, आगे खाय अनती मार ॥ १० ॥
मे आगे पुदगल खाधा मोकला, सार जाण जाण सोय।
देखता देखता विणसे गया, काम न आवे आज मोय ॥ ११ ॥
तिण कारण हू देवलोक नी, करूं नही बछा कोय।
पोचा सुख पुदगल तिणा, मुगत सुखां सूं मन मोय ॥ १२ ॥
थे पिण बछा पुदगल तणी, मूल म करज्यो मन माहि।
अफासू नै अनएषणी, चित्त मे धरज्यो मती चाहि ॥ १३ ॥
वले लोलपिणो करज्यो मती, माया ममता ने मार।
दोख बयालीस टालनें, असल लीज्यो सुध आहार ॥ १४ ॥
अरज्या भाखा ने एषणा, इत्यादिक आठ प्रवचन।
मन वचन काया करी, कीज्यो घणा जतन ॥ १५ ॥
साधपणो सुध पालज्यो, चिता फिकर म करज्यो तास।
म्हां सुइ मिलेला ग्यानी मोटका, वले वेगो करोला मुगत मे वास ॥ १६ ॥
चेलां री ममता करज्यो मती, लीजो सुध जोय जोय।
असल आचार पाले तको, काचो म घालज्यो गण में कोय ॥ १७ ॥
असल आचार आछी तरे, पालज्यो प्रभू वचन पिछांण।
आग्या म लोपज्यो अरिहत नी, तों वेगा पामसो निरवांण ॥ १८ ॥
हू तो जातो दीसू परभवे, सीख दीधी छे थाने जांम।
लोक बतावे कोई आगली, कदीय म कीजो एहवो काम ॥ १९ ॥
सुणज्यो सहू स्वामी तणा, मूढा हुंदा रे बोल।
बोल सहू रे सुहामणा, आछा वले अमोल ॥ सु० २० ॥
ए साची सीख सामी तणी, पालसी चतुर सुजाण।
सूरा वीरा धीरा तके, उजम मन माहि आण ॥ २१ ॥

दूहा

आलवणा आछी करी, सीख दीधी वले सार।
उजम मन माहि आणंता, आग्या उपर धार ॥ १ ॥
वले आयो पर्व पजूषणा, धर्म वधतो जाय।
सांमी कार्य किण विधे, सुधारे छे ाहि ॥ २ ॥

हिवे पासम रे दिन पूज जी, आप कीयो उपवास ।
सुदि पख पासम ने सवछरी, भादवो थो मास ॥ ३ ॥
पूज कीयो छठ पारणो, ऊठो पडीयो आय ।
किण किण करे गवेषणा, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ४ ॥

ढाल : ८

[धिन [illegible] जी]

सातम आठम नम मुनीसर, अन्न नो कीधो आहार वे ।
दसम रे दिन चोखा चावीस, आगरे दन गोठ विचार वे ।
धिन भीखू स्वाम जी, धिन थारो नाम जी ।
थे कीधो आछो काम जी, आछो जस अमाम जी ॥धि०१॥
इग्यारस रे दिन अमृत आगारे वेगो कीयो उपवास वे ।
भली भावना भावता भीखू, करता करमाँ रो नास वे ॥ २ ॥
बारस रे दिन वेगो कीयो पूज, पचख दीया तीनूं आहार वे ।
चतुर विचक्षण निसल्यो कीनो, हिवे वेगो करणो संथार वे ॥ ३ ॥
साहोमा नर नारी कहे मुख सूं, जो स्वामी करे संथार वे ।
तो मन ना मनोरथ आपरे पूरा, ओ आछो अवसर सार वे ॥ ४ ॥
साधा माहो मां विचार करै ने, रायचंद जी ने मेल्यो सीगाय वे ।
पूज ने वह्ने पुदगल हटीया दीसे, सुण ने सीह जिम उठ्या मुनिराय वे ॥ ५ ॥
सामल्यो हाट सूं उठ मुनीसर, चल्लीया चल्लीया आय वे ।
पक्कोड हाट ने पधा मुनीसर, देवे पक्को संथारो ठाय वे ॥ ६ ॥
करे नमोत्थुणं अरिहन्त सिधा ने, तीखे वत्तने ताम वे ।
घणा नर नारी देखता सुणता, संथारो पचख्यो भीखू साम वे ॥ ७ ॥
भादवा सुदि बारस भली तिथ, वार सोम विचार वे ।
त्या वेराग आयो ने संथारो ठायो, छेलो दुगरीयो श्रीकार वे ॥ ८ ॥
धिन धिन कहे बहु नरनारी, धिन धिन केहता वेला देव वे ।
सुध साद मुनीसर मोटा, त्यारी इंद्रादिक करे सेव वे ॥ ९ ॥
घणा नर नारी आवे ने सीस नमावे, बोले वेकर जोड वे ।
धिन हो धिन थे मोटा मुनीसर, कीधी वडां वडा री होड वे ॥१० ॥
केइ सनमुख आया ने परणमे पाया, विकसित हुवे विलास वे ।
खात करी खमावे ने अघ उडावे, हीये आण हुलास वे ॥११ ॥

कहे केइ का अभिग्रहो एहवो कीयो थो, या साचो मत काढ्यो होसी सार बे।
तो संथारो करसी ने जीतब सुधरसी, पको उतरसी पार बे ॥१२॥

दूहा

इण विध कीधो अभिग्रह, भोला लोका ताम।
बात सुणी कहे पचखीयो, सथारो भीखू स्वाम ॥ १ ॥
जे धेखी हूता जिण धर्म ना, ते चित मे पाम्या चमतकार।
जाण्यों दीसे ओ मार्ग खरो, केइ वादे बारूबार ॥ २ ॥
संथारो चावो हुओ, घणा गावा नगरां माहि।
केइ माहोमा इम कहे, आपे वादो पूज रा पाय ॥ ३ ॥
गुण गावे मुख सू घणा, भल भल भीखू स्वांम।
इण दुखम आरा मझे, भलो सुधास्यो काम ॥ ४ ॥
थाणे कठेइ थपीया नही, इद्री नही पडी हीण।
व्याहार करता विचरता चालता, पका रह्या परवीण ॥ ५ ॥

ढाल : ६

[एक दिवस लकापति क्रीडा नी उपनी रति]

संथारो चोखो कीयो, सरणो अरिहत नो लीयो।
सरणो लीयो, कीयो कार्य आतम तणो ए ॥ १ ॥
मुनी आण्यो मन सतोस ए, मेट्यो राग नें रोस ए।
मेट्यो रोस ने, दोस कर्म नों टालीयो ए ॥ २ ॥
समता धारी साम ए, भजे भगवत नो नाम ए।
भजे नाम ने, काम करे छे आतम तणो ए ॥ ३ ॥
हरख सहीत हुलास ए, तोडे छे कर्म पास ए।
तोडे पास ने, आस तो मुक्त री ए ॥ ४ ॥
नर नारी बहु आवता, गुण भीखू रा गावता।
गुण गावता, वचन बोलें मन भावता ए ॥ ५ ॥
धेखी पिण केइ आवता, खांत करी खमावता।
खमावता , गुण भीखू रा गावता ए ॥ ६ ॥
बहु गावा नगरा तणा, नरनारी श्रावक श्रावका आया था घणा।
आया घणा, दर्शन करवा गुरां तणा ए ॥ ७ ॥
आय पडे पूज रे पाय ए, वदणा करे सीस नमाय ए।
वदणा करे, सीस नमाय आतम ने सुध करें ए ॥ ८ ॥

ओर लोक अनेक ए, करे गुण ग्राम वशेष ए।
करे वशेष, देख मुनी ने हरखत हुवे ए ॥ ६ ॥
कहे उतम थाए साम ए, उतम कीधो काम ए।
कीधो काम, नाम जपीजे इण रिपी तणा ए ॥ १० ॥
नर नारी सइकडा आवता, वाजार माहि अमावता।
अमावता , गुण स्वामी ना गावता ए ॥ ११ ॥
भात भात करे गुण ग्राम ए, किसा किसा कहू नाम ए।
किसा कहू, नाम साम मे गुण घणा ए ॥ १२ ॥
सामी भारमल जी आदि साध ए, त्या कीधी सेवा वाध ए।
कीधी वाध, असमाध टालण स्वामी तणी ए ॥ १३ ॥

दूहा

तेरस नो दिन आवीयो, ध्यावता निरमल ध्यान।
सके तो जाणु स्वाम ने, उपनो दीसे अवधि ग्यान ॥ १ ॥
साध वेठा सेवा करे, वोलता मीठी वाण।
श्रावक श्रावका हरष सू, करे सामी ना वखाण ॥ २ ॥
दिन दोढ पोहर ने आसरे, चढती वेला सोय।
वचन प्रकासे किण विधे, साभलजो सहू कोय ॥ ३ ॥

ढाल : १०

[वीस विहरमान सदा शास्वता जघन्य०]

साधु आवे साहमां जावो, मुनी प्रकासे वाण।
वले साधवीया आवे वारे, स्वामी वोले वचन सुहाण।
भवीयण नमो गुर गिरवाण, नमो भीखू चतुर सुजाण ॥ १ ॥
के तो कह्यो अटकल उनमाने, के कह्यो वुध प्रमाण।
के कोइ अवधि ग्यान उपनो, ते जाणे सर्व नाण । भवी० ॥ २ ॥
केइ नर मुख सू इम भाखे, सामी रा जोग साधा मे वसीया।
एतलें एक महूर्त आसरे, साध आया दोय तसीया ॥ ३ ॥
वकसत वकसत साधु वादे, चर्ण लगावे सीस।
नरनारी जाण्यो अवधि उपनो, साचो वसवावीस ॥ ४ ॥
सामी साधु आया जाणी, मस्तक दीधो हाथ।
एतले दोय महुरत आसरे, आयो साधवीया रो साथ ॥ ५ ॥

वेणीराम जी साध वदीता, साथे कुसाल जी आया।
साधवीया वगतू जी मा डाही जी, प्रणमे भीखू रा पाया। भ० ॥ ६ ॥
परचा जू जूं आय पुगे छे, नरनारी हरखत थावे।
धिन हो धिन थे मोटा मुनीसर, इम गुण भीखू ना गावे ॥ ७ ॥
आया ते साधु गुण गावे, भात भात प्रणाम चढावे।
थे मोटा उपगारी मेहमा भारी, आप तुले ओर कुण आवे ॥ ८ ॥
थे पका पका पाखण्ड हटाया, सुत्र न्याय बताया।
दान दया आछा दीपाया, बुधवता मन भाया ॥ ९ ॥
सावद्य निरवद भला निवेस्या, कीधा बुध प्रमाण।
सुत्र न्याय सरधा सुध लीधी, धारी अरिहत आण ॥ १० ॥
साधा जांण्यो सांमी सूताने, घणी हुइ छे बार।
आप कहो तो बैठा करा जब, भरीयो काय हुकार ॥ ११ ॥
बेठा कर साधु लारे बेठा, गुण स्वामी ना गावे।
बहु नरनारी दरसण देखी, मन मे हरखत थावे ॥ १२ ॥
आयो आउखो अण चितवीयो, बेठा बेठा जाण।
सुखे समाधे बारज दीसत, चट दे छोड्या प्राण ॥ १३ ॥
अणसण आयो सात बगत रो, तीन बगत सथार।
सात पोहर तिण माही बरतीया, पको उतास्यो पार ॥ १४ ॥
माडी सीविने दरजी पूगा, कहे सूइ पाग मे घाली।
इर्य-लोक पामिया इधिको, चट स्वामी गया चाली ॥ १५ ॥
समत अठारे साठे वरस, भाद्रा सुदि तेरस मगलवार।
पूज पोहता परलोक सरीयारी, गुण गावे नरनार ॥ १६ ॥
दिन पाछिलो दोढ पोहर आसरे, उण बेला आउषो आयो।
दिवसे मरवो राते जन्मवो, कहे विरला ने थायो ॥ १७ ॥

दूहा

साध देही ने छोडने, अलगा बेठा जाय।
विरहो पडीयो छे पूजनो, समभाव रह्या सुख थाय ॥ १ ॥
अहो अहो अस्थिर ससार, सयोग जठेई वियोग।
पूज सरीखा पुरुष था, पोहता आज परलोग ॥ २ ॥
सुख दुख ससार मे, हर कोइ कू होय।
ग्यानी भुगते ग्यान सू, मूरख भुगते रोय ॥ ३ ॥

तीर्थङ्कर चक्रव्रत मोटका, काल न छोडे कोय।
जेतो आऊखो बाधीयो, तेतोई भुगते सोय ॥ ४ ॥
साधा जाण्यो स्वामी जी, पोहता परलोक रे माहि।
याद कीया सिध अरिहत ने, काउसग दीधा ठाय ॥ ५ ॥

ढाल : ११

[रघुपति जीतो रे]

काल गया जाणी भीखू भणी हो, मेल्या माडी रे माहि।
जे म्हैमा कीधी माडी तणी हो, कही कठा लग जाय।
स्वामी नो सुजस घणो ॥ १ ॥
अनेक छ्बीया लगावीया हो, अनेक उछाल्या लार।
अनेक देऊ सोभागरी हो, ते गृहस्थ नो ववहार। स्वामी० ॥ २ ॥
जो विस्तार करे माडी तिणो हो, तो गुणताई इचरज थाय।
पिण साधु रे मुडे सोभे नही हो, तिण रो बुधवत जाणसी न्याय ॥ ३ ॥
ससार करतव सरावे नही हो, त्यारे सावद्य जोग पचखाण।
पिण वीती वात वरणवे हो, वागरे निरवद्य वाण ॥ ४ ॥
सङ्करा नरनारी आवीया हो, छोडी घर ना काम।
जाणे के मेल्लो मडीयो हो, गावे भीखू ना गुण ग्राम ॥ ५ ॥
वले सूस लेवे केइ चूप सू हो, उजम मन माहि आण।
सीलव्रत केइ आदरे हो, केइ छोडे काचो पाण ॥ ६ ॥
केइ छोडे नीलोतरी हो, केइ छोडे सूड निनाण।
वेला तेला आदरे हो, अनेक प्रकारे आण ॥ ७ ॥
वले च्यार तीर्थ आय मिल्या हो, स्वामी तणे सथार।
काल गया जब पूज जी हो, उहा पिण आहार पचख्या मन धार ॥ ८ ॥
जसकर्मी था जीवता हो, जस गावे ससार।
वले आगेइ जस हूतो दीसे घणो हो, वेगा पामता दीसे भवपार ॥ ६ ॥

दूहा

आदि काढी आदिनाथ ज्यू, इण दुपम आरा माहि।
असल धर्म ओलखावियो, धिन भीखू रिषराय ॥ १ ॥
आपी चीजा अमोलख, घाली घण घट माहि।
थोरी सी प्रगट करू, सांभलज्यो चित ल्याय ॥ २ ॥

ढाल : १२

[उस रघुपति के धर्म सूरा जी सुखीया सगला]

भगवंत भाखी सरधा राखी, असल लीयो आचार।
आइच नी प्रे ग्यान उद्योतो, मेट दीयो मिथ्यात अधार।
रिष भीखू जी ना धर्म सूरां जी, सुख पावे श्रीकार ॥ १ ॥
चन्द्रमा ज्यू सोम निजर थी, दीठा दिल ठराय।
क्रोध करी कोइ कटक आवे, सामी देख सुख पाय। रिष० ॥ २ ॥
इत्यादिक तीसोइ उपमा, भीखू ने सोभाय।
चतुर होसी ते समजे जासी, भोला ने खबर न काय ॥ ३ ॥
चरचा वाला ने चरचा आपी, ग्यान वाला ने ग्यांन।
प्रश्न वाला ने प्रश्न आप्यो, ध्यान वाला ने ध्यान ॥ ४ ॥
दिष्टत वाला ने दिष्टत आप्यो, हेत वाला ने हेत।
क्रोध करी नही बोले किरवा, भली सीखावण देत ॥ ५ ॥
सजम दे सिवपुर ना कीधा, वले आपी समकत सार।
समणोवासक कीया देइने, श्रावक ना व्रत बार ॥ ६ ॥
खमता दमता सुमता आपी, वले गंमता वचन बखाण।
दिढता थिरता जमता जुरता, सुत्र न्याय जोड्या सुध जाण ॥ ७ ॥
रागी ते तो राजी होसी, धेखी करसी धेख।
रागी धेखी नी खबर पडेसी, बखांण सुण्या वशेख ॥ ८ ॥
बडा सिष बुधवत वदीता, सारा सिरे सोभाय।
आचार्य पदवी त्याने आपी, भारमलजी मन भाय ॥ ९ ॥
और साध साधवीया ने सामी, आपी सीख अमोल।
अरिहत आग्या माहि रहिज्यो, थारो तीखो वधे ज्यू तोल। १० ॥
साची वात बतावे सामी, पोहता परभव माहि।
गुणकरी स्वामी था गिरवा, म्हांसू पूरा केम कहवाय ॥ ११ ॥
नित नित नमो भीखू मुनीसर, हिवडे आण हुलास।
मुगत हेते करणी करने, तोड न्हाखो मोह पास ॥ १२ ॥

दूहा

घणा वरसां लग सामजी, आछो कीयो उपगार।
घणा जीवा ने प्रतिवोधीया, आर्य देस मझार ॥ १ ॥

हिवे चोमासा सामना, साभलजो सहू कोय।
ववरो कहू छू तेहनो, नाम प्रणामे सोय ॥ २ ॥
आठ चोमासा आगे कीया, असल नही अणगार।
सतरा सू साठा लगे, वरत्यो सुध ववहार ॥ ३ ॥
साघपणो सतरे लीयो, साठा सुधा स्वाम।
चोमासा चमाली कीया, सुणो तेहना नाम ॥ ४ ॥

ढाल : १३

[धिन धिन जबू स्वाम ने तथा धिन धिन मलो जिरा]

छ चोमासा केलवा कीया, सतरें इकवीसे पचीसे पिछाण हो, मुणिद।
अडतीसे गुणचासे उठावने, हद कीधी कर्मा री हाण हो। मुणिद।
धिन धिन भीखू अणगार ने ॥ १ ॥
एक चोमासो वडलू कीयो, वरस अठारे विचार हो। मु०।
वीसें राजनगर कीयो, उठे कीयो घणो उपगार हो। मु०। धि० ॥ २ ॥
कीया दोय चोमासा कटालिये, चोवीसे अठावीसे आय हो। मु०।
तीन चोमासा वगडी कीया, सतावीसे तीसे छतीसे सुहाय हो। मु० ॥ ३ ॥
दोय चोमासा माधोपुर कीया, इगतीसे अठचालीसे आण हो। मु०।
चोतीसमो ने पेतालीसमो, पीपार सेहर पिछाण हो। मु० ॥ ४ ॥
एक चोमासो आमेट मे, बरस पेतीसे विचार हो। मु०।
सेतीसे पादू कीयो, भलो कीयो उपगार हो। मु० ॥ ५ ॥
एक चोमासो स्वामजी, कीयो सोजत सेहर मझार हो। मु०।
समत अठारे तेपने, आछो कीयो उपगार हो। मु० ॥ ६ ॥
नाथदुवारा सेहर मे, तीन कीया चोमास हो। मु०।
तयालीसे पचासे छपने, तठे तोड्या केतारा कर्म पास हो। मु० ॥ ७ ॥
दोय चोमासा पुर सेहर मे, सेतालीसे ने सतावने होय हो। मु०।
एक सो ने एकवीस पोसा एक दिन आसरे, वले जुओ छोड़ायो घणो सोय हो। मु० ॥ ८ ॥
पाच चोमासा पूज जी सेहर खैरवे, उपगार कियो सरस हो। मु०।
छवीसे वतीसे एगतालीसे समे, छयालीसे चोपने वरस हो। मु० ॥ ९ ॥
सात चोमासा पाली सेहर मे, तेवीसे तेतीसे चालीसे चोमास हो। मु०।
वावने पचावने गुणसठे सुखे सुखे, नेडो आयो काल हो। मु० ॥ १० ॥
सात चोमासा सरीयारी सेहर मे, उगणीसे वावीसे गुणतीसे गिणाय हो। मु०।
गुणालीसे वयालीसे एकावने, साठे प्रभव पोहता मुनी आय हो। मु० ॥ ११ ॥

सासण श्री वर्धमांन रो, आछो दीपायो भीखू स्वांम हो। मु०।
घणा जीवां ने प्रतिबोधनें, आप पोहता सुध ठाम हो। मु० ॥ १२ ॥
पचीस वरस आसरे घर मे रह्या, आठ वरस आसरे भेखधार हो। मु०।
एक दिन अधिको सतरे संजम लीयो, तिणमे बरत्या चालीने वरस च्यार हो। मु० ॥ १३ ॥
सर्व आऊ सिततंर वरस आसरे, पाल्यौ भीखनजी स्वाम हो। मु०।
चमालीस वरसां मझै, सास्या घणा रा काम हो। मु० ॥ १४ ॥
एकसो ने च्यार रे आसरे, दिख्या दीधी निज गण माहि हो। मु०।
एकवीस साध सतावीस साधव्या, मेली प्रभव पोहता मुनिराय हो। मु० ॥ १५ ॥
हजारा श्रावक श्रावका कीया, सुलभ बोधि हजारा थाय हो। मु०।
गुणग्राम करतां लाखा गमे, अेसा हुआ भीखू रिष राय हो ॥ १६ ॥
मुनी मोसूं उपगार कीयो घणो, सजम दीयो सुखदाय हो। मु०।
जो अनेक प्रकारें गुण अखूं, तो ही उरण नही थाय हो। मु० ॥ १७ ॥
जनम मरण री लाय सूं, आप काढ्यो देइने साझ हो। मु०।
वले मारग बतायो मोख रो, धिन धिन भीखू रिषराज हो। मु० ॥ १८ ॥
चिरत कीयो भीखू तणो, सुणीयो जिम अटकल अणुसार हो। मु०।
सांसा सहीत ते निश्चै कह्यो हुवै, तो मिच्छामी दुकरो बारूंबार हो। मु० ॥ १९ ॥
जोड़ कीधी सरीयारी सेहर मे, पके हाट विचार हो। मु०।
समत अठारे साठे समे, माहासुदि नवमी सनिसर वार हो। मु० ॥ २० ॥
ए गुण गाया भीखू तणा, कर्म काटण निरजरा करण हो। मु०।
हाथ जोडी ऋषि हेमो कहे, भव भव होजो भीखू रो मोने सरण हो।मु०ध०॥२१ ॥

(इति श्री भीखू चरित्र सपूर्ण समत १८६६ रा वेसाख सुदी १४ वार ब्रसपत पूजजी श्री भीखन जी सांमी तरा शिष्य लखत ऋषि रायचद देस मेबार गांम खमणोर ते मधे पूरो थयो भीखू चरित्र ।)

: २ :

भीखु चरित

[मुनि श्री वेणीदासजी कृत]

दोहा

अरिहंत सिद्ध ने आयरिया, उवझाया अणगार।
पांचू पद परमेश्वरु, त्याने जपता जय जयकार॥ १ ॥
सासन नायक समरिये, महावीर मतिवंत।
मुक्त गया मोटा मुनि, सकल सिरे शोभंत॥ २ ॥
पांचू पद प्रणमी करी, भाव भगत भलि आण।
कर्म काटण रे कारणे, कहु भीखु चिरत वखाण॥ ३ ॥
आज्ञा लेई अरिहंत नी, वली सतगुरु आज्ञा श्रीकार।
गुण गाऊ गुणवंत ना, ते सांभलजो नरनार॥ ४ ॥
किहां उपना किहां जनमिया, परभव पहोता किण ठाम।
धुर सूं उत्पति त्यांरी कहु, ते सुणज्यो शुद्ध परिणाम॥ ५ ॥

ढाल : १

[धीज करे सीता सती रे लाल—ए देशी]

तिण काले ने तिण समे रे लाल, दुःखम आरा रे माय रे। सोभागी।
जंबूद्वीप भरत खेत्र मे रे लाल, मरुधर देश सुखदाय रे। सोभागी॥ १ ॥
भाव सुणो भीखु तणा रे लाल, हृदय शुद्ध धार रे। सो०।
सतगुरु ने समस्या थका रे लाल, वरतसी जे जे कार रे। सो०। भा०॥ २ ॥
गाम कंटालियो सोभतो रे लाल, कांठे कोर कहाय रे। सो०।
कमधज राज करे तिहां रे लाल, वगतसिंघ सोभाय रे। सो०। भा०॥ ३ ॥
साहा बलुजी सोभता रे लाल, दीपांदे तसु नार रे। सो०।
तिहां भिषनजी आवी अवतस्या रे लाल, सिंह सुपनो दीठो श्रीकार रे। सो०। भा०॥ ४ ॥
संवत सतरे बयासे समे रे लाल, आषाढ मास शुक्ल पष माय रे। सो०।
वार मंगल तीखी तिथि तेरस सुणी रे लाल, जनम कल्याणक थाय रे। सो०। भा०॥ ५ ॥
अनुक्रमे मोटा हुआ रे लाल, एक परण्या नार रे। सो०।
पछे शील दोनूं आदर्यो रे लाल, पछे चारित्र लेवा त्यार रे। सो०। भा०॥ ६ ॥
वियोग पड्यो स्त्रीया तणो रे लाल, सगपण मल्ता अनेक रे। सो०।
छता भोग छिटकादिया रे लाल, आयो वैराग विशेष रे। सो०। भा०॥ ७ ॥
संवत अठारे आठा वर्स मे रे लाल, लीधो द्रव्ये संजम भार रे। सो०।
गुरु किया रुघनाथ जी रे लाल, पण ओलख्यो नही आचार रे। सो०। भा०॥ ८ ॥
वर्ष किताएक विचर्या पछै रे लाल, वाच्या सूत्र सिद्धांत रे। सो०।
ठीक पड्यो पहचाणीयो रे लाल, ए तो न दीसे संत रे। सो०। भा०॥ ९ ॥

या थापिता थांनक आदर्‍या रे लाल, वले आधाकर्मी जांण रे। सो०।
मोल रा लिधा माहे रहे रे लाल, यां भागी भगवत आण रे।सो०। भा० ॥ १० ॥
ववेक विकल बालक भणी रे लाल, मूडता नही शंके लिगार रे। सो०।
मत बाधण रे कारणे रे लाल, या भागी भगवत कार रे। सो०। भा० ॥ ११ ॥
नित्य पिंड लागा बेंहरवा रे लाल, पोथ्या रा गिज ठामो ठाम रे। सो०।
पडिलेह्या बिण पडिया रहे रे लाल, यारा किणविध सीभसी काम रे।सो०भा० ॥१२॥
भड उपकरण ने पातरा रे लाल, वस्त्र उपध अनेक रे। सो०।
इधिका राखे जाणने रे लाल, ए बूडे बिना ववेक रे। सो०। भा० ॥ १३ ॥
क्रिया मे काचा घणा रे लाल, कह्यो कठा लग जात रे। सो०।
समकत रतन जिन भाषियो रे लाल, ते पण न आयो हाथ रे। सो०। भा० ॥ १४ ॥

दुहा

विधसू करी विचारणा, बारूबार वशेष।
शुध मारग लेणो सही, परभव सामो देख ॥ १ ॥
रखे जूठ लागे ला मो भणी, तो खप करणी बारूंबार।
सूतर सगला बाचणा, ज्यूं सक न रहे लिगार ॥ २ ॥
राजनगर भणता थका, उघडी अभितर आख।
हवे चारित्र ले शुध पालणो, छोड आतम रो वाक ॥ ३ ॥
मे वैरागे घर छोडिया, न्यातीला नें रोवाण।
इणविध जन्म पूरो किया, मूल न होवे किल्याण ॥ ४ ॥
वीर वचन विचारता, ए निश्चे नही अणगार।
खप करी समभावा एहने, मिल पाला शुध आचार ॥ ५ ॥

ढाल : २

[आ अणुकम्पा जिन आज्ञा मा—ए देशी]

एहवो विचार कियो तिण ठामे, गाढी बात हिया मे धार।
टोकरजी हरनाथजी भारिमाल, समभने लागा पुज री लार।
भीखु चिरत सुणो भव्य जीवा। ए आकणी ॥ १ ॥
मुरुधर देश मे आया तेवारे, मिलिया सोजत सहर मभार।
गुरु ने कहे वीर वचन सभालो, आपा मे नही छे शुध आचार। भी० ॥ २ ॥
देव अरिहंत ने गुरु निग्रंथ, केवली भाष्यो धर्म ततसार।
तीनुइ रत्न अमोलक जाणो, यामे मेल म सरधो लिगार। भी० ॥ ३ ॥
ओर हि वस्तु मे भेल पड्या थी, चोषी वसत विगडे छे वशेष।
तो पुण्य मे पाप रो भेल किहां थी, सासो हुवे तो सूतर ल्यो देख। भी० ॥ ४ ॥
आ शुध सरधा पण हाथे न आई, शुध किरीया थी पिण अलगा परिया।
आगम न्याय अजे शुध चालो, तो राखु माथे गुरु धरिया। भी० ॥ ५ ॥
भेषधार्‍या तो मूल न मानी, जब भीखु मन मे विचार्‍यो एम।
उतावल किधा तो समभे नाही, धीरे समभावसा धर प्रेम। भी० ॥ ६ ॥

या थापिता थानक आदर्‍या रे लाल, वले आधाकर्मी जाण रे। सो०।
मोल रा लिधा माहे रहे रे लाल, या भागी भगवत आण रे ।सो०। भा० ॥ १० ॥
ववेक विकल बालक भणी रे लाल, मूडता नही शके लिगार रे। सो०।
मत बाधण रे कारणें रे लाल, या भागी भगवत कार रे ।सो० ।भा० ॥ ११ ॥
नित्य पिड लागा बेंहरवा रे लाल, पोथ्या रा गिंज ठामो ठाम रे। सो०।
पडिलेह्या बिण पडिया रहे रे लाल, यारा किणविध सीभसी काम रे।सो०भा० ॥१२॥
भड उपकरण ने पातरा रे लाल, वस्त्र उपध अनेक रे। सो०।
इधिका राखे जाणने रे लाल, ए बूडे बिना ववेक रे। सो०। भा० ॥ १३ ॥
क्रिया मे काचा घणा रे लाल, कह्यो कठां लग जात रे। सो०।
समकत रतन जिन भाषियो रे लाल, ते पण न आयो हाथ रे। सो०। भा० ॥ १४ ॥

दूहा

विधसू करी विचारणा, बारूंबार वशेष।
शुध मारग लेणो सही, परभव सामो देख॥ १ ॥
रखे जूठ लागे ला मो भणी, तो खप करणी बारूंबार।
सूतर सगला बाचणा, ज्यू सक न रहे लिगार॥ २ ॥
राजनगर भणतां थका, उघडी अभितर आख।
हवे चारित्र ले शुध पालणो, छोड आतम रो वाक॥ ३ ॥
मे वैरागे घर छोडिया, न्यातीला ने रोवाण।
इणविध जन्म पूरो किया, मूल न होवे किल्याण॥ ४ ॥
वीर वचन विचारता, ए निश्चे नही अणगार।
खप करी समझावा एहने, मिल पाला शुध आचार॥ ५ ॥

ढाल : २

[आ अणुकम्पा जिन आज्ञा मा—ए देशी]

एहवो विचार कियो तिण ठामे, गाढी बात हिया मे धार।
टोकरजी हरनाथजी भारिमाल, समझने लागा पुज री लार।
भीखु चिरत सुणो भव्य जीवा। ए आकणी ॥ १ ॥
मुरुधर देश मे आया तेवारे, मिलिया सोजत सहर मझार।
गुरु ने कहे वीर वचन सभालो, आपा मे नही छे शुध आचार। भी० ॥ २ ॥
देव अरिहत ने गुरु निग्रंथ, केवली भाष्यो धर्म ततसार।
तीनुइ रत्न अमोलक जाणो, यामे मेल म सरधो लिगार। भी० ॥ ३ ॥
ओर हि वस्तु मे भेल पड्या थी, चोषी वसत विगडे छे वशेष।
तो पुण्य मे पाप रो भेल किहा थी, सासो हुवे तो सूतर ल्यो देख। भी० ॥ ४ ॥
आ शुध सरधा पण हाथे न आई, शुध किरीया थी पिण अलगा परिया।
आगम न्याय अजे शुध चालो, तो राखु माथे गुरु धरिया। भी० ॥ ५ ॥
भेषधार्‍यां तो मूल न मानी, जब भीखु मन मे विचार्‍यो एम।
उतावल कियां तो समझे नाही, धीरे समझावसा धर प्रेम। भी० ॥ ६ ॥

गुरु ने कहे चौमासो भेलो करस्यां, चरचा करा दोनू रूडी रीत ।
सूतर वाचेने निरणो करस्या, खोटी सरधा छोडस्या विपरीत । भी० ॥ ७ ॥
रूघनाथजी कहे चोमासो भेलो किया, वले म्हारा चेला ने लेवे समभाय ।
जव भीखु कहे जड बाजा ने राखो, त्याने चरचा री समभ पडे नही काय । भी० ॥ ८ ॥
इण विध उपाय घणाइ किधा, पिण चरचा न कीधी चित्त लगाय ।
कर्म घणा ने बोहल ससारी, ते तो किण विध आवे ठाय । भी० ॥ ९ ॥
बीजी वार मिलीया वगडी मे, कह्यो थे तो वीर वचन वीसरीया ।
निरणो करता निश्चे न देष्या, जव भीखु तडके तोड नीसरीया । भी० ॥ १० ॥
बगडी सू विहार कियो तिण वेला, वावल वाजवा लागी ताम ।
अजेणा जाणे छतरी मे वेठा, रूघनाथजी पिण आया तिण ठाम । भी० ॥ ११ ॥
लोक घणा आया शहर वारे, रूघनाथजी कहे भिखु ने वारूवार ।
टोलो छोडे मती निकलो वारे, धीरप राखो वात विचार । भी० ॥ १२ ॥
बात हमारी माने लेवो, नही निवीला ओ दुपम काल ।
शुध आचार साधु रो न चाले, भीखु किण विध वोले रसाल । भी० ॥ १३ ॥

दोहा

भीखु वलता भापे भलो, मे किम माना थारी वात ।
मे निरणो कियो सूतर वाचने, तिण मे सक नही तिलमात ॥ १ ॥
छेहला दिन लग चालसी, तीरथ श्रुत अगाध ।
मे सुध साधुपणो पालसा, अरिहत वचन अराध ॥ २ ॥
छतरी माहे बैठा थका, मोह आण्यो साप्यात ।
मन माहे चिता करी, पिण गरज न सरी असमात ॥ ३ ॥
उदेभाण बोल्यो इसो, आसू पच करो केम ।
टोला तणा धणी वाजने, आछी न लागे एम ॥ ४ ॥
किणरो एक जाये जरे, चिता हुवे अपार ।
मारा पाच जाये परा, गण मे पडे वगार ॥ ५ ॥

ढाल : २

[कामणगारी छ कामनी रे—ए देशी]

फेर वोल्या रूघनाथजी रे, थे जासो केतीएक दूर ।
आगे थारो पाछे माहरो रे, हु लोक लगाव सू पूर ।
चरित सुणो भीखु तणो रे । ए आंकणी ॥ १ ॥
भीखु वलता भापे भलो रे, जीवणो कितोएक पार ।
परीसा पमसा पिम्या करी रे, नही लोपा जिनवर पार । च० ॥ २ ॥
विहार कीयो वगडी थकी रे, हुआ रूघनाथजी [illegible] ।
वले चरचा कीधी वडलू मझे रे, ते [illegible] । च० ॥ ३ ॥
रूघनाथजी वात [illegible] रे, दुसम [illegible] ।
सोलो साधपणो नही पले रे, [illegible] । च० ॥ ४ ॥

या थापिता थानक आदर्या रे लाल, वले आधाकर्मी जाण रे। सो०।
मोल रा लिधा माहे रहे रे लाल, या भागी भगवत आण रे।सो०। भा० ॥ १० ॥
ववेक विकल बालक भणी रे लाल, मूडता नही शंके लिगार रे। सो०।
मत बांधण रे कारणे रे लाल, या भागी भगवत कार रे।सो०।भा० ॥ ११ ॥
नित्य पिंड लागा बेंहरवा रे लाल, पोथ्या रा गिंज ठामो ठाम रे। सो०।
पडिलेह्या बिण पडिया रहे रे लाल, यारा किणविध सीभसी कांम रे।सो०भा० ॥१२॥
भड उपकरण ने पातरा रे लाल, वस्त्र उपध अनेक रे। सो०।
इधिका राखे जाणने रे लाल, ए बूडें बिना ववेक रे। सो०। भा० ॥ १३ ॥
क्रिया मे काचा घणा रे लाल, कह्यो कठा लग जात रे। सो०।
समकत रतन जिन भाषियो रे लाल, ते पण न आयो हाथ रे। सो०। भा० ॥ १४ ॥

दुहा

विधसू करी विचारणा, बारूंबार वशेष।
शुध मारग लेणो सही, परभव सामो देख॥ १ ॥
रखे जूठ लागे ला मो भणी, तो खप करणी बारूंबार।
सूतर सगला बाचणा, ज्यूं सक न रहे लिगार॥ २ ॥
राजनगर भणता थका, उघडी अभितर आख।
हवे चारित्र ले शुध पालणो, छोड आतम रो वाक॥ ३ ॥
मे वैरागे घर छोडिया, न्यातीला ने रोवाण।
इणविध जन्म पूरो किया, मूल न होवे किल्याण॥ ४ ॥
वीर वचन विचारता, ए निश्चे नही अणगार।
खप करी समझावा एहने, मिल पाला शुध आचार॥ ५ ॥

ढाल : २

[आ अणुकम्पा जिन आज्ञा मा—ए देशी]

एहवो विचार कियो तिण ठामे, गाढी बात हिया मे धार।
टोकरजी हरनाथजी भारिमाल, समझने लागा पुज री लार।
भीखु चिरत सुणो भव्य जीवा। ए आकणी॥ १ ॥
मुरुधर देश मे आया तेवारे, मिलिया सोजत सहर मझार।
गुरु ने कहे वीर वचन सभालो, आपा मे नही छे शुध आचार। भी० ॥ २ ॥
देव अरिहत ने गुरु निग्रंथ, केवली भाख्यो धर्म ततसार।
तीनुइ रत्न अमोलक जाणो, यामे मेल म सरधो लिगार। भी० ॥ ३ ॥
ओर हि वस्तु मे भेल पड्यां थी, चोपी वसत विगडे छे वशेष।
तो पुण्य मे पाप रो भेल किहा थी, सासो हुवे तो सूतर ल्यो देख। भी० ॥ ४ ॥
आ शुध सरधा पण हाथे न आई, शुध किरीया थी पिण अलगा परिया।
आगम न्याय अजे शुध चालो, तो राखु माथे गुरु धरिया। भी० ॥ ५ ॥
भेषधार्‌या तो मूल न मानी, जव भीखु मन मे विचार्‌यो एम।
उतावल किधा तो समझे नाही, धीरे समझावसा धर प्रेम। भी० ॥ ६ ॥

गुरु ने कहे चौमासो भेलो करस्यां, चरचा करा दोनू रूडी रीत।
सूतर बाचेंने निरणो करस्या, खोटी सरधा छोडस्या विपरीत। भी० ॥ ७ ॥
रूघनाथजी कहे चोमासो भेलो किया, वले म्हारा चेला ने लेवे समझाय।
जब भीखु कहे जड बाजा ने राखो, त्याने चरचा री समझ पडे नही काय।भी०॥ ८ ॥
इण विध उपाय घणाइ किधा, पिण चरचा न कीधी चित्त लगाय।
कर्म घणा ने बोहल ससारी, ते तो किण विध आवे ठाय। भी० ॥ ९ ॥
बीजी वार मिलीया बगडी मे, कह्यो थे तो वीर वचन वीसरीया।
निरणो करता निश्चे न देष्या, जब भीखु तडके तोड नीसरीया। भी० ॥ १० ॥
बगडी सू विहार कियो तिण वेला, बावल बाजवा लागी ताम।
अजेणा जाणे छतरी मे बेठा, रूघनाथजी पिण आया तिण ठाम। भी०॥ ११ ॥
लोक घणा आया शहर बारे, रूघनाथजी कहे भिखु ने बारूबार।
टोलो छोडे मती निकलो बारे, धीरप राखो बात विचार। भी० ॥ १२ ॥
बात हमारी माने लेवो, नही निबौला ओ दुषम काल।
शुध आचार साधु रो न चाले, भीखु किण विध बोले रसाल। भी० ॥ १३ ॥

दोहा

भीखु वलता भाषे भलो, मे किम माना थारी बात।
मे निरणो कियो सूतर बाचने, तिण मे सक नही तिलमात ॥ १ ॥
छेहला दिन लग चालसी, तीरथ श्रुत अगाध।
मे सुध साधुपणो पालसा, अरिहत वचन अराध ॥ २ ॥
छतरी माहे बैठा थका, मोह आण्यो साप्यात।
मन माहे चिंता करी, पिण गरज न सरी असमात ॥ ३ ॥
उदेभाण बोल्यो इसो, आसू पच करो केम।
टोला तणा धणी वाजने, आछी न लागे एम ॥ ४ ॥
किणरो एक जाये जरे, चिता हुवे अपार।
मारा पाच जाये परा, गण मे पडे वगार ॥ ५ ॥

ढाल : ३

[कामणगारी छै कामनी रे—ए देशी]

फेर बोल्या रूघनाथजी रे, थे जासो केतीएक दूर।
आगे थारो पाछे माहरो रे, हु लोक लगाव सूं पूर।
चरित सुणो भीखु तणो रे। ए आंकणी ॥ १ ॥
भीखु वलता भाषे भलो रे, जीवणो कितोएक काल।
परीसा षमसां पिम्या करी रे, नही लोपा जिनवर पाल। च० ॥ २ ॥
विहार कीयो बगडी थकी रे, हुआ रूघनाथजी लार।
वले चरचा कीधी वडलू मझे रे, ते साभलजो नरनार। च० ॥ ३ ॥
रूघनाथजी बात इसडी कही रे, दुसम काल माझार।
चोखो साधपणो नही पले रे, थे मान ल्यो माहरी बात। च० ॥ ४ ॥

भीखु कहे जिन भाषियो रे, सूतर आचाराग माहि।
ढीला भागल इम भाषसी रे, हिवडा शुध न चलाय। च० ॥ ५ ॥
बल सिघेण हीणा करी रे, पूरो न पले आचार।
आगुच जिनजी इम भाषियो रे, इम केहसी भेषधार। च० ॥ ६ ॥
साची सूतर तणी वारता रे, मानी नही लगार।
समझाया समझे नही रे, जब कष्ट हुआ तिणवार। च० ॥ ७ ॥
भीखनजी आद दे तिहा रे, तेरे जणा हुवा त्यार।
फेर दीष्या लेवा भणी रे, करवा आतम नो उधार। च० ॥ ८ ॥
श्रावक पिण तिण अवसरे रे, जोधाणा शहर मे ताम।
तेरे भाया समाई पोसा किया रे, तिण सू तेरापथी दियो नाम। भ० ॥ ९ ॥
पाखड पथ दूरो कियो रे, देख रह्या अरिहत।
अनेरो पथ माने नही रे, जाणो तेरापथ तत। च० ॥ १० ॥
गया देश मेवाड मे रे, केलवा शहर मझार।
आग्या ले अरिहत नी रे, पचख्या पाप अठार। च० ॥ ११ ॥
सवत अठारे सतरो तरे रे, आसाढ सुद पूनम जाण।
सयम दीधो स्वामजी रे, कर जिन वचन प्रमाण। च० ॥ १२ ॥
हरनाथजी हाजर हुता रे, टोकरजी तीखा सुवनीत।
परम भगता सिप पाटवी रे, या राखी पूज री परतीत। च० ॥ १३ ॥

दोहा

चारित लीधो चूप सू, पाषड पथ निवार।
भवियण रे मन भावता, हुआ मोटा अणगार ॥ १ ॥
उदे उदे पूजा कही, श्रमण निर्ग्रंथ नी जाण।
तिणसू पूज प्रगट थया, ए जिन वचन प्रमाण ॥ २ ॥
ओपमा तो आछी कही, श्रमण निग्रथ नें श्रीकार।
चौरासी अति दीपती, कही सूत्र अणुजोग दुवार मझार ॥ ३ ॥
वले दसमा अग इधिकार मे, कही तीस ओपमा तत।
श्रमण भीपू ने सोभती, भाष गया भगवंत ॥ ४
वले पटदश दीधी ओपमा, बहुश्रुती ने श्रीकार।
उत्तराध्ययन अध्यन इग्यारमे, श्री वीर कह्यो विसतार ॥ ५
इण अनुसारे ओलखो, भीखु ने भली भंत।
ओपम गुण आछा घणा, तिणरो पार न कोई पावत ॥ ६ ॥
गुणवत गुरु ना गुण गावता, तीर्थकर नाम गोत बधाय।
हिवे ओपमा सहित गुण वरणवू, ते सुणजो चित ल्याय ॥ ७ ॥

ढाल : ४

[हरियाने २ग भरिया जी—ए देशी]

आदिनाथ आदेसरजी, जिनेश्वर जगतारण गुरु।
धरम आद काढी अरिहत, इण दुपम आरे करम कटीया जी।
प्रगटीया आद जिणद ज्यू, ओ इचरज इधिक आवत।
साध भीखु सुखदायाजी, मन भाया भवियण जीव ने। ए आकणी॥१॥
स्याम वरण अति सोवेजी, मन मोवे नेम जिणद ज्यू।
त्यारी वाणी अमिय समाण, भवियण रे मन भाया जी।
चित्त चाया तीरथ चार मे, मुनि गुण रत्ना री खाण। साध० ॥ २ ॥
कालवादी आद जाणी जी, मत आणी मारग उथापवा।
कुबध्या केलवीया कुड, अे पाखड घोचा पोचा जी।
काइ ग्यान करे गिरवा मुनि, चरचा करी किया चकचूर। साध० ॥ ३ ॥
सख उज्वल श्री कारी जी, जयधारी दोनू दीपता।
नही विगडे दूध लगार, ज्यूं थे तप जप किरीया कीधी जी।
कर लीधी आतम उजली, पयदश जति धर्म धार। साध० ॥ ४ ॥
कमोद देश नो घोडोजी, अत सोरो करे सिरदार ने।
नही आणे आहल लिगार, ज्यू भवियण ने थे तारस्या जी।
उतारस्या पार ससार थी, सुखे जासी मोप मभार। साध० ॥ ५ ॥
सूर सिरोमण साचो जी, नही काचो लडता कटक मे।
सुवनित अश्व असवार, ज्यू करम कटक दल दीवो जी।
जश लीधो जाभो जगत मे, चढ सूतर अश्व श्रीकार। साध० ॥ ६ ॥
हाथी हथिणा परवारे जी, वल धारे दिन दिन दीपतो।
वधे साठ वरस शुध मान, ज्यू थे तयाली वरस लग जाभाजी।
तप ताजा तेज तीखा रह्या, पराक्रम पिण परवान। साध० ॥ ७ ॥
वरषभ सिंग खध भारी जी, सिरदारी गाया गण मझे।
थेट भार वहे भली भत, ज्यू थे गण भार थेट निभाया जी।
चलाया तीरथ चूप सू, सहु साधा मे सोभत। साध० ॥ ८ ॥
सिघ मिरगादिक नो राजा जी, अत ताजो डाढा तेज सू।
ते जीव न जीपे जोय, ज्यू आप वेशनी नी परे गूंज्या जी।
सदा धूज्या पाखड धाक सू, था सू गिज गवयो नही कोय। साध०॥९॥
वासुदेव बल जाण्यो जी बखाण्यो वीर [illegible] सिधत मे।
सख चकर गदा धरणहार, ज्यू धारा ग्यान दर्शन चारित [illegible]।
नही फीरा त्याकर तेज सू, [illegible] पाखड दियो [illegible]। साध० ॥ १० ॥
आखा भरत नो राजा जी [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।
आणे वेरया नो [illegible] ज्यू [illegible] पाखड [illegible] [illegible]।
हटाया [illegible] [illegible] सू [illegible] [illegible] [illegible]। [illegible]

सकेंद्र सिरदारी जी, वज्रधारी सुर मे सोभतो।
जखादिक जीपे जांण, ज्यूं सूतर वज्र श्रीकारी जी।
बलधारी वुध उतपात सू, पूज पाडी पाखड री हाण। साध० ॥१२॥

आइच उगा आकासे जी, विणासे तिमिर तेज सू।
इधिको करे उद्योत, ज्यू थे अग्यान अधार मिटायो जी।
बतायो मारग मुगत रो, घणा रा घट घाली जोत। साध० ॥१३॥

चद सदा सुखकारी जी, परवारि ग्रह ना गण मभे।
सोमकारी सोभत, ज्यूं चार तीरथ सुखदाया जी।
मन भाया भवियण जीव रे, भीखु भला जशवंत । साध० ॥ १४ ॥

लोक घणा आधारी जी, अत भारी धाना कर भर्‌यो।
ते कोठागार कहाय, ज्यू ज्ञानादिक गुण भरिया जी।
परवरिया पूज प्रगट थया, आधार भूत अथाय। साध० ॥ १५ ॥

सर्व विरपा मे अति सोवे जी, मन मोवे दीसे दीपतो।
जबू सुदर्शन जाण, ज्यूं सता मे सिरदारी जी।
मत भारी भीखु भरत मे, उपना इचरिजकारी आण।साध०॥ १६ ॥

सीता नदी सिरे जाणी जी, बखाणी वीर सिद्धंत मे।
पाचसें जोजन प्रवाह, ज्यूं तप तेज अत तीखाजी।
नही •फीका रह्याज फावता, सदा काल सुखदाय । साध० ॥ १७ ॥

मेरू नी ओपमा आछी जी, नही काची कही किरपाल जी।
ते उचो घणो अतंत, ओपध अनेक छाजेजी।
बिराजे गुण त्यामे घणा, ज्यू अें बहुश्रुती बुधवत। साध० ॥ १८ ॥

सयभूरमण समुद्र रूडो जी, पुरो पाव रजु पेहलौ पड्यो।
परभूत रतन भरपूर, सागर जेम गभीरा जी।
सूरवीरा गुण कर गाजता, सूतर चरचा मे सूर ॥ साध० ॥ १९ ॥

अे षट्‌दश ओपमा आछी जी, काई साची सूतर में कही।
बहुश्रुति ने श्रीकार, ईण अणुसारे जाणोजी।
पीछाणो करल्यो पारिखा, भीखु गुण भडार ॥ साध० ॥ २० ॥

ओपमा अनेक गुण छाज्या जी, विराज्या गादी वीर नी।
पूज पट लायक गुण पाय, समुद्र जेम अथागा जी।
जल थागा जिन भाष्यो नही, ज्यू गुण पूरा केम कहिवाय ॥ साध ॥ २१ ॥

पाट लायक शिष भाली जी, सूहाली परकत सुन्दरू।
भारमलजी गेहरा गभीर, पदवी थिर कर थापी जी।
आ आपी आचारज तणी, जाणे सुविनीत सधीर ॥ साध० ॥ २२ ॥

दोहा

भगोती मे भगवत भाषीयो, वीसमा सतक मझार।

वले उतराधेन दसमा अधेन मे, गोतम प्रते कह्यो भगवान।
दुषम आरा तेहमे, जिण धर्म चालसी असमान ॥ २ ॥
धणी विना ते जुझसी, लेसी आगम वचन अराध।
तो हिवडा मुझ वेठा थका, समो एक म कर परमाद ॥ ३ ॥
वले वक चूलीया मे वारता, तेपना पछे विचार।
इधिक पूजा अरिहत कही, श्रमण निग्रथ नी श्रीकार ॥ ४ ॥
तिणसू पूज पूजाविया, दिन दिन इधिक दयाल।
उपकार कीधा अति घणा, मेट्या मोह जजाल ॥ ५ ॥
किहा किहा विचरया स्वामीजी, किहा किहा किया उपकार।
थोडो सो प्रगट करू, ते सुणजो इधिकार ॥ ६ ॥

ढाल : ५

[भरत नरिद तिण वार—ए देशी]

हाडोती ढूढाड मझार, वले मरुधर देश मेवाड ॥ आछेलाल ॥
या चारूड देशा मे विचरीया जी ॥ १ ॥
पाखंड उठ्या अनेक, पूज मेट्या आण ववेक ॥ आ० ॥
सूतर चरचा रा जोर सू जी ॥ २ ॥
कीधा साध साधवीया रा थाट, रह्या दिन २ इधिक गेह घाट ॥ आ० ॥
श्रावक श्राविका कीया घणा जी ॥ ३ ॥
करता पर उपकार, आया मुरधर देश मझार ॥ आ० ॥
चरम उपकार हुओ घणो जी ॥ ४ ॥
चार भाया ने वाया सात, त्यां दीष्या लीधी जोडे हाथ ॥ आ० ॥
वेरागे घर छोडिया जी ॥ ५ ॥
चाणोद आदे देइ जाण, पीपाड ताइ पीछाण ॥ आ० ॥
छेहल्ला दर्शन दिधा साम जी ॥ ६ ॥
गामा नगरा करता उपकार, आया मोजन नहर मझार ॥ आ० ॥
रायमलजी नी छनरी मे उतरया जी ॥ ७ ॥
हुकुमचन्द आछो आयो ताम, पूज्य ने वान्द्या सीस नाम ॥ आ० ॥
विनती तो विध सू करी जी ॥ ८ ॥
चौमासो करो सिरियारी माय, म्हारी पक्की हाट दिराजो आय ॥ आ० ॥
पूज्य माने लीधी वीनती जी ॥ ९ ॥
[illegible] कटाले होय, विनती रीधी घणा [illegible] ॥ आ० ॥
चौमासा नी अन्न मानी नही जी ॥ १० ॥
पूज्य आया सिरियारी [illegible], दियो चौमासो ठाय ॥ आ० ॥
आना ते पक्की हाट [illegible] जी ॥ ११ ॥
सिरियारी सोभे [illegible] नी कोर [illegible] ॥ आ० ॥
[illegible]

भारमलजी खेतजी उदेराम, रायचन्द ब्रह्मचारी ताम ॥ आ० ॥
जीवो मुनि वेरागी भगजी भगत मे जी ॥ १३ ॥
सप्त रिप सहित तिणवार, ग्यानादिक गुण रा भंडार ॥ आ० ॥
संजम तप सुध अराधता जी ॥ १४ ॥
रागी घणा शहर मझार, ते वादण आया नरनार ॥ आ० ॥
भवीयण रे मन भावीया जी ॥ १५ ॥
श्रावण मास मजार, आवश्यक अर्थ विचार ॥ आ० ॥
लिख लिख शिष्य ने बतावता जी ॥ १६ ॥
गोचरी पिण फिरीया ठांम ठाम, दर्शन देवा काम ॥ आ० ॥
श्रावण सुदि पूनम लगे जी ॥ १७ ॥

दोहा

चरम किल्यांण चढतो हुवौ, तिणरो सुणो सहु विस्तार ।
सरियारी मे स्वाम विराजिया, हिवे भाद्रवा मास मजार ॥ १ ॥
अल्प अशाता फेरा तणी, कांइक जणाणी जाण ।
और अशाता इधिकी न उपनी, प्रबल पुण्य प्रमांण ॥ २ ॥
पूर्व पाप प्रवल हुवे, ते रिबे घणा दिन रात ।
एहवी अशाता वेदनी या रें नही, ऐ पदवी धर पूज्य विख्यात ॥ ३ ॥
हवे पजूसणा मे परवरा, तीन टक हुवे वखाण ।
नरनारी आवे घणा, सुणवा सुन्दर वाण ॥ ४ ॥
शुकल पप सुहामणो, मास भाद्रवो जाण ।
चौथज आई चादणी, आयु नेडो आयो पिछाण ॥ ५ ॥
सतजुगी ने स्वामी कहे, थे आछा शिप सुवनीत ।
साज दियो थे मो भणी, मे सयम पाल्यो रुडी रीत ॥ ६ ॥
आगे टोकरजी तीखा हूता, विनेवत विचार ।
भगत करी भारी घणी, सुवनीत हूता श्रीकार ॥ ७ ॥
भारीमालजी सूं भेलप भली, रहीज रुडी रीत ।
जाणक पाछिल भव तणी, लगती हूती प्रीत ॥ ८ ॥
या तीना रा साझ सूं, पाल्यो सुध सयम भार ।
चित्त समाव रही घणी, थे रह्याज एकण धार ॥ ९ ॥
उत्तराध्ययन पेहलाध्ययन मे, भाप गया वीर जिणद ।
शिप सुवनीत हुवे सदा, तो गुरु ने रहे आणद ॥ १० ॥

ढाल : ६

[पथीडा रे वात कहे ने धुर छेह थी रे—ए दशी]

देवे रे देवे सिखामण स्वामजी रे, शासण चलावण काम रे ।
सावज रे साव श्रावक ने श्राविका रे, घणा सुणता तिण ठाम रे ।
सुणजो रे सुणजो सीख, स्वामी तणी रे । ए आकणी ॥ १ ॥

मोने रे मोने जाणना जिण विधे रे, राखना मुज परतीत रे।
निसहिज रे निसहिज परतीत राखजो रे, भारीमालजी री आहिज रीत रे। मु०॥ २ ॥
आज्ञा रे आज्ञा लोपे एहनी रे, दोष लागा काढे गण बार रे।
तिणने रे तिणने साधु मत सरधजो रे, मत गिणजो तीर्थ मझार रे। मु०॥ ३ ॥
आज्ञा रे आज्ञा आराधे एहनी रे, सदा रहे सुविनीत रे।
सेवा रे सेवा भगत कीजो तेहनी रे, आ जिन मारग री रीत रे। मु०॥ ४ ॥
म पदवी रे पदवी दीधी छै एहने रे, भारलायक जाणे भारीमाल रे।
सका रे सका मूल म आणजो रे, यामे अवगुण माया री चाल रे। मु०॥ ५ ॥
कोइ दोष रे दोष लगावे गण मझे रे, वले कर्म जोगे लगावे कूर रे।
तो काण रे काण म राषजो तेहनी रे, प्राछित न लेतो करजो दूर रे। मु०॥ ६ ॥
सुध रे सुध साधा ने सेवजो रे, अणाचारी सू रहेजो दूर रे।
आ छेली रे छेहली सिखामण धारजो रे, ज्यू करम हूवे चकचूर रे। मु०॥ ७ ॥
उसना रे उसना ने पासत्था रे, कुसीलिया परमादि पिछाण रे।
अपछंदा रे अपछंदा आप छान्दे रहे रे, त्या भागी है भगवन आण रे। मु०॥ ८ ॥
ए पाचा ने रे पाचा ने प्रभु नपेखिया रे, सिन्याना निसीथ विसाल रे।
त्यारो सग रे सग परचो करणो नही रे, आ वाणी भगवत पाल रे। मु०॥ ९ ॥
आणद रे आणद श्रावक अभिग्रह लियो रे, जिन मत थी न्यारा जाण रे।
तियारी सेवा रे सेवा भक्ति करू नही रे, पेहली बोलण रा पिण पचखाण रे। मु०॥१०॥
वीर रे वीर जिणद बखाणियो रे, ओ आणद अभिग्रह श्रीकार रे।
आहीज रे आहीज रीत आरावजो रे, ज्यू पामो भवजल पार रे। मु०॥ ११ ॥
सगला रे सगला साध ने साधवी रे, रायजो हेत बसेष रे।
जिण तिणने रे जिण तिण ने मत मूडजो रे, दिक्षा दीजो देख देख रे। मु०॥ १२ ॥
आ दीधी रे दीधी सीखामण स्वामजी रे, एकन्त तारण ताम रे।
और रे और कारण त्यारे को नही रे निज सीझे आतम काम रे। मु०॥ १३ ॥

दोहा

ढाल : ७

[चतुर नर बात विचारो एह—ए देशी]

भारमलजी आद साधा भणी रे, श्री पूज्य कहे छै बोलाय।
चरम सीखामण माहरी रे, साभलजो सुखदाय।
भविक रे भिखु दीया उपदेश। ए आकणी ॥ १ ॥
म्हे तो जाता दीसा परभवे रे, सका न दीसे काय।
मरण रो भय म्हारे नही रे, हिवडे हर्ष अथाय। भ० ॥ २ ॥
मे चारित दियो घणा जीवा भणी रे, समकत पमाही रूडी रीत।
श्रावक श्राविका किया घणा रे, एकत तारण नी नीत। भ० ॥ ३ ॥
मे जोडा कीधी जुगत सू रे, समझाया नर नार।
उणायत रही नही रे, म्हारा मन मजार। भ० ॥ ४ ॥
थे पिण रहीजो निर्मला रे, मोह म कीज्यो मन माहि।
अरिहत वचन अराधजो रे, ज्यू मोसू बेगा मलोला आय। भ० ॥ ५ ॥
रायचद ब्रह्मचारी ने इम कहे रे, तू छ बालक बुधवान।
मोह म आणे माहरो रे, राखजे रुडो ध्यान। भ० ॥ ६ ॥
ब्रह्मचारी कहे श्री पूज ने रे, आप जावो शुध गति माय।
पिंडत मरण करो भलो रे, हू मोह आणू किण न्याय। भ० ॥ ७ ॥
वले पूज्य वाणी इण विध वदे रे, थे आराधजो आचार
इर्या भाषा ने एषणा रे, लोपज्यो मती लिगार। भ० ॥ ८ ॥
भड उपकरण लेता मेलता रे, परठता पूजता ताम।
जयणा कीज्यो जुगत सू रे, ज्यू सीझे आतम काम। भ० ॥ ९ ॥
शिष शिषणी उपगरण ऊपरे रे, ममता म कीज्यो कोय।
ममता मोह किया थका रे, करम तणो वध होय। भ० ॥ १० ॥
पुद्गल ममता कोइ मत करो रे, इण ममता थी दुख थाय।
सुमता सदाई राखजो रे, ज्यू वेगा जावो मुगत गढ माय। भ० ॥ ११ ॥
भगतवत भारमलजी रे, बोले एहवी वाय।
विरहो पडे दर्शन तणो रे, हिवे पूज्य बोले सुखदाय। भ० ॥ १२ ॥
थे सयम आराध्या सुर होसे रे, मुज थकी मोटा अणगार।
महाविदेह खेतर मझे रे, त्यारा देखजो दरसण दीदार। भ० ॥ १३ ॥

दोहा

सतजुगी कहे श्री साम ने, आप जासो भिड रे माहि।
स्वाम कहे सुण सातजी, म्हारे नही भिड री चाहि ॥ १ ॥
पुदगलिक सुख छै पावला, मे भोगव्या अनती वार।
त्यागी वांछा सुख रह नही, म्हारे जाणो मुगत मझार ॥ २ ॥
हिवे सथाम मरण करे स्वामिजी, पंडित मरण पिछाण।
आलोयणा आछी तरे होय गया गुण गुजाण ॥ ३ ॥

दोहा

हरखो भारमलजी भणी, वले सतजुगी सुजाण।
यारे रत्ना आविया, जतके ऊभा आण॥ १॥
अरिहंत सिध प्रणमी करी, पोते लिया पचखाण।
तिन् आहार रा त्याग जाव जीव छै, ऊंच सुर बोल्या इम वाण॥ २॥
कहे प्रथम संथारा सीप पाटवी, वपू न राख्यो अमल आगार।
स्वाम कहे सेठाइ किसी राखणी, किसी करणी देही री सार॥ ३॥
बारस दिन वेला समे, आसरे दोय घडी दिन जाण।
कीयो संथारो स्वामजी, मन में उच्छव आण॥ ४॥
खबर हुआ अणसण तणी, घणा आवे दर्शन काज।
वैराग वधीयो अति घणो, कहे धिन धिन ए मुनिराज॥ ५॥

ढाल : १०

बडा शिष सुवनीत री, जुगती मिलीज जोड।
लेहर काई राखी नही, काट्या करम कठोड ॥ २ ॥
थोडी अशाता फेरा तणी, और अशाता नही तिणवार।
षट शिष सेवा साचवे, एहवा पुण्य सच्या सार ॥ ३ ॥
आज्ञा ऊपर आदरी, भीखु भलेंज भाव।
जनम सुधारचो जुगत सू, जाण तिरण रो डाव ॥ ४ ॥
सषरी करी सलेषणा, अणसण रो इधिकार।
भाव धरि भवियण सुणो, आलस सर्व निवार ॥ ५ ॥

ढाल : ६

[षड षानी—ए देशी]

भाद्रवा शुकल पष पचमी प्रगटी, चोथ भगत चोही आहार ठावें।
अशाता इधिक तिरषा तणी उपनी, सूर कायरपणो नाही लावे।
कर हो जीव तूं भजन भीखु तणो ॥ए आकणी ॥१॥
पारणो किधो छठ प्रभात रो, ओषध अल्प सो आहार लीयो।
ते पिण आहार समो नही प्रगम्यो, तिण दिन तीनू आहार नो त्याग कियो।क०॥२॥
सातम आठम आहार ले अल्प सो, ततषिण त्याग तो कर लेवें।
पुद्गल स्वरूप तो पूज पिछाणने, आशा वछा सहु मेट देवे। क० ॥ ३ ॥
खरे मते कहे खेतसी खाचकर, तडके त्याग रो नही कहिणो।
पूज कहे देही पातली पारणी, तेरस दिन तो अणसण लेणो ॥ क० ॥ ४ ॥
वीरधो शेठ तो श्रावक सनमुखे, विविध प्रकार सुखडी आपे।
पूज्य कहे वच्छा नही माहरे, थिर कर मोष सू प्रीत थापे। क० ॥ ५ ॥
भाद्रवा सुकल नवमी तणे दिन, पूज कहे आहार नो त्याग लेउ।
सतजुगी कहे मुझ हाथ नो चाखिए, चरिम आहार थोडो आण देउ ॥ क० ॥ ६ ॥
अल्प सो आहार आण्यो स्वामि खेतसी, चाख के ततषिण त्याग कीधो।
ओ तो मन राषीयो सुविनीत शिष तणो, पिण इच्छा सूं आहार त्या न्हा लीधो।क०॥७॥
दशमी तणे दिन परम भगता शिष, पूज जी सूं एम भाषे।
चालीस चावल दश मोठ रे आसरे, वीनती मानके तेह चाखे। क० ॥ ८ ॥
इग्यारस तो पूज आहार त्यागे दियो, अमल पाणी रो आगार राख्यो।
हिवे मुझने आहार लेतो मत जाणजो, वचन अमोलष एम भाख्यो। क० ॥ ९ ॥
सनमुख पधारिया तावडो आविया, बारस बेलो थिर कर ठायो।
सक्त इसडी रही आहार किया विनां, एह अचर्य[1] इधिक आयो ॥ क०। १० ॥
जीवण आछे अरज कीधी हाट री, तोही पूज पक्कीहाट आय बेठा।
सेन सिपा कीयो विषराम त्या लियो, स्वाम तो मन माहे इधिक सेठा।क०॥११॥
सुखे सुता देख पूज परम गुरु, रिख रायचन्द आय एम बोले।
किरपा तो कीजिये दरशण दीजिये, ताम तो पूजजी नेण खोले। क० ॥ १२ ॥
पूज सू वीनवे पराक्रम हीणा पड्या, ब्रह्मचारी बिने सू एम बोलें।
केसरी नी पडे वेण हीवडे धरी, ताम ते आपरो तेज तोले। क० ॥ १३ ॥

१—अचर्य=अचरज=आश्चर्य

भारमलजी स्वामी इम विनवे, थानें होज्यो हो स्वामी सरणा चार।
किण ही माहे मन मत राखजो, आप किधो हो घणा जीवा रो उधार।भ०॥११॥
अवधि ज्ञान उपनो नही जाणीयो, तिणसं पाछो हो नही पूछ्यो लिगार।
या जाण्यो मन साधा मे गयो, नही किधो हो इण बात रो विचार।भ०॥१२॥
घणा गावा रा श्रावक श्राविका, दरसण करवा हो आया बहू थाट।
चरिम ओच्छब करे चूप सू, इसडा हुआ हो सिरियारी मे गेहघाट।भ०॥१३॥

दोहा

पाली रा चलीया पाधरा, दोय साध आया तिणवार।
रिख वेणीदास कुशाल जी, देखी इचरिज पाम्या नरनार॥ १॥
पग प्रणम्या श्री पूज रा, दिधो माथे हाथ।
साता पूछ्या सानी करी, पिण मुख सू न कीधी बात॥ २॥
दुषम आरा तेहमें, अवधि वागरणी दुर्लभ विष्यात।
सयम अराध्यो स्वामजी, तिण सूं कही अल्प सी बात॥ ३॥
छेहडै स्वाम भिक्षु तणै, अवधि उपनो जणाय।
निश्चै तौ जाणे केवली, ताण न करवी ताहि॥ ४॥

ढाल : ११

[हणमत गायलो रे—ए देशी]

दोनूइ साव आया तके रे, बोले बे कर जोड।
दरशन दीठा दयाल रा रे, पुगा मन रा कोड।
भीखु भजो भाव सूं रे।
त्या सुधास्या भव दोय, बुधवत जसवंत होय।
या समो अवर न कोय, इण आषा भरत मे जोय। भी० ॥ १ ॥
॥ ए आकणी ॥
रिख वेणीदास इम विनवे रे, थाने होज्यो सरणा चार।
तुम सरणो मुझ भव भव रे, होज्यो बारबार। भी० ॥ २ ॥
जिसोइ मारग जिन तणो रे, जिसोइ जमायो आप।
दिन दिन इधिका दीपिया रे, टाल्या घणा रा सताप। भी० ॥ ३ ॥
स्तुति अरिहत सिध तणी रे, सभलाइ श्रीकार।
जाण्यो भगत कीहा थी भीखु तणी रे, इण अवसर मझार। भी० ॥ ४ ॥
इतले आइ तिन आरज्या रे, वगतुजी झुमा डाइजी जाण।
इचरिज इधिको उपनो रे, पूज कही ते बात मलि आण। भी० ॥ ५ ॥
चार तीर्थ भल भाव सूं रे, देखे दरशण दीदार।
भगत करे भीखु तणी रे, जाणे अवसर सार। भी० ॥ ६ ॥
बेठा हुआ तिण अवसरे रे, ध्यान आगण श्रीकार।
जाणेके जिनजी विराजिया रे, न जांणी अगाता लिगार। भी० ॥ ७ ॥
तेरे खडी त्यारी हुई रे, जाणक देव विमाण।
तनो तंन इमडो मिन्यो रे, पूज बैठांड छोड्या प्राण। भी ॥ ८ ॥

नाथद्वारे मे नीका किया, तीन चोमासा तेहतीक जी।
त्यालीसें पचासे छपने, त्यारी रूडी राखजो ठीक जी। सु० ॥ ७ ॥
कंटालिया माये किरपा करी, पूज कीया चोमासा दोय जी।
चोबीसे अठावीसा वरस मे, जिहा जन्म किल्याणज जोय जी। सु० ॥ ८ ॥
पीपाड मे पाखड हूता घणा, दोय चोमासा दिया ठाय जी।
चौतीसे ने पैतालीस मे, घणु दियो मिथ्यात मिटाय जी। सु० ॥ ६ ॥
गढ रतणभमर किलो तिहा, तलेटी माधोपुर मभार जी।
इकतीसें अडतालीसे दोनूं किया, तिहा इधिक हुओ उपकार जी। सु० ॥ १० ॥
दोय चोमासा किया पुर सहर मे, तिहा उपकार जाभो जाण जी।
सेतालीसे ने सतावने, ते गिण लीजो चुतर सुजाण जी। सु० ॥ ११ ॥
अठारा रे वरस वडलू कियो, बीसे राजनगर विचार जी।
पेतीसें आमेट पादू सेतीसमे, तेपने सोजत सहर मभार जी। सु० ॥ १२ ॥
पनरे गामा मे किधा पूज जी, चुमालीस चोमासा सार जी।
ऐ परम भगता शिष्य पाटवी, घणा रह्या पूज रे लार जी। सु० ॥ १३ ॥

दोहा

आद हुआ आदेसरू, आदिनाथ अरिहंत।
तीजा आरा तेहमे, मुगत गया मतवत ॥ १ ॥
त्यां आद काढी जिन धर्म री, जुगलवारो मिटाय।
ससारी ने धर्म री, दीधी रीत बताय ॥ २ ॥
आद काढी अरिहत ज्यू, भीखु भलाइज साध।
आरा दुषम तेहमे, लीधा अरिहत वचन अराध ॥ ३ ॥
भव्य जीवा रा भाग सू, किधो अतत उद्योत।
मत सुरत बलै मोटा मूनी, घणा घट घाली जोत ॥ ४ ॥
उपकार कीधो अति घणो, पूरो केम कहिवाय।
थोडो सो प्रगट करू, ते सुणजो चित्त ल्याय ॥ ५ ॥

ढाल १३

[पूज्य पधारो हो नगरी सेविया—ए देशी]

साध साधवी श्रावक श्राविका, ए थाप्या तीरथ चार हो। महामुनि।
जिन मारग जमायो हो मुनिवर जुगत सूं, घणो पाखड दियो निवार हो ॥ महा० ॥
थे भला ने अवतरीया भीखु भरत क्षेत्र मे। ए आकणी ॥ १ ॥
लोकालोक नवोड ततव तणा, वले दया दान दिपाय हो। महा०।
ज्यांरा भेद जथातथ भिन भिन भाषीया, जिनवर ज्यू दियो जमाय हो। महा। थे०॥ २॥
चारित लीयो एक सौ च्यार आसरे, पूज री प्रतीत मन धार हो। महा०।
केइका ने पापड मा सू पाचने, आप दीया पार उतार हो। महा०। थे०॥३॥
जोडां कीवी हो मुनिवर जुगत सू, सहस अडतीस रे आसरे गिणाय हो। महा० ॥
निरणा न्याय बताया निरमला, जाणे आप गया जिनराय हो। महा०।थे०॥४॥

· ३

भिक्खु जश रसायण

[चतुर्थाचार्य जीतमलजी स्वामी कृत]

मृगपति महा महिमा निलौ रे लाल, पुण्यवत सुत सुपसाय।
सफल स्वप्न सुखदायकौ रे लाल, देखी हरषी माय ॥ ५ ॥
यशधारी सुत जन्मियौ रे लाल, अनुक्रम अवसर आय।
संवत् सतरैसे तियासियै रे लाल, पञ्चाग लेखै ताहि ॥ ६ ॥
आषाढ सुदी पख ओपतौ रे लाल, तेरस तिथ जणाय।
सर्व्व सिद्धा त्रयोदशी रे लाल, कहै जगत मे वाय ॥ ७ ॥
दशा माहिलौ दीपतौ रे लाल, नक्षत्र मूल निहाल।
पायौ चौथो परवरौ रे लाल, जन्म थयौ तिण काल ॥ ८ ॥
जन्म किल्याण थया पछै रे लाल, बाल भाव मुकाय।
उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे लाल, विविध मेलवै न्याय ॥ ९ ॥
सुन्दर इक परण्या सही रे लाल, सुखदाइ सुविनीत।
भिक्खु नै परभव तणी रे लाल, चिन्ता अधिकी चित्त ॥ १० ॥
केता दिन गछवास्या कन्हैं रे लाल, जाता कुलगुरु जाण।
पाछै पोत्याबध कन्है रे लाल, सुणबा लाग्या बखाण ॥ ११ ॥
पछैं धास्या रुघनाथ जी रे लाल, छोड्या पोत्याबध।
ते हिवडा संजम सरधै नही रे लाल, न सरधै सामायक सध ॥ १२ ॥
काल कितीक बित्या पछै रे लाल, शील आदरियौ सार।
भिक्खु नै तसु भारज्या रे लाल, चारित्र नी चित्त धार ॥ १३ ॥
लेवा संजम त्या लगै रे लाल, एकान्तर अवधार।
अभिग्रह एहवो आदस्यौ रे लाल, विरक्त पणै सुविचार ॥ १४ ॥
तठा पछै त्रिया तणो रे लाल, पडियौ ताम विजोग।
वर सगपण मिलता बहु रे लाल, भिक्खु न बछ्या भोग ॥ १५ ॥
दीक्षा नैं त्यारी थया रे लाल, अनुमति न दियै माय।
रुघनाथ जी नै इम कह्यो रे लाल, म्हैं सिह स्वप्न देखाय ॥ १६ ॥
तब बोल्या रुघनाथ जी रे लाल, साभल बाई वाय।
सिंह तणी पर गूजसी रे लाल, ए स्वप्नौ छै चवदा मांय ॥ १७ ॥
अनुमति मा आपी तदा रे लाल, सहस रोकड उन्मान।
भिक्खु दिया जननी भणी रे लाल, चारित लेवा ध्यान ॥ १८ ॥
दीख्या महोछव दीपतो रे लाल, बगडी शहर बखाण।
द्रव्ये चारित्र धारियौ रे लाल, भावे चरण म जाण ॥ १९ ॥
संवत् अठारै आठै समै रे लाल, घर छोड्यो विप जाण।
द्रव्य गुरु धास्या रुघनाथ जी रे लाल, पिण नाई धर्म्म नी छाण ॥ २० ॥

प्रथम ढाल प्रगटपणैं रे लाल, कह्यौ भिक्खु नौ जन्म किल्याण।
बलि द्रव्य दीक्षा वरणवी रे लाल, वारु आगै बखाण ॥ २१ ॥

दूहा

अल्प दिवसरै आंतरै, सिख्या सूत्र सिद्धन्त।
तीव्र बुद्धि भीक्खु तणी, सुखदाई शोभन्त ॥ १ ॥
विविध समय रस वांचता, बारु कियौ विचार।
अरिहंत वचन आलोचता, ऐ असल नही अणगार ॥ २ ॥
या थापिता थानक आदस्या, आधाकम्मीं अजोग।
मोल रिया माहै रहै, नित्य पिण्ड लियै निरोग ॥ ३ ॥
पडिलेह्यां विण रहै पड्या, पोथ्या रा गञ्ज पेख।
विण आज्ञा दीक्षा दियै, विवेक विकल विशेष ॥ ४ ॥
उपधि वस्त्र पात्र अधिक, मर्य्यादा उपरन्त।
दोष थापै जाणनै, तिण सू ऐ नही सन्त ॥ ५ ॥
सरधा पिण साची नही, असल नहिं आचार।
इण विध करै आलोचना, पिण द्रव्य गुरु सू अति प्यार ॥ ६ ॥
पूछ्यां जाब पूरो न दै, काल कितौ इम थाय।
पीत द्रव्य गुरु सूं परम, ते करै शोभ सवाय ॥ ७ ॥
पूछै बात आचार नी, जाणो वैरागी जेह।
तिण सू पूछै बलि बलि, पिण नही और सन्देह ॥ ८ ॥
पटधारक भिक्खु प्रगट, हद आपस मै हेत।
इतलै कुण विरतन्त हुऔ, सुणज्यो सहू सचेत ॥ ९ ॥

ढाल : २

[परभवौ मन मै चिन्तवै—ए देशी]

इह अवसर मेवाड में, राज नगर सुजाण।
राजसमुद्र पासै बस्यो, अधिका त्या आइठाण ॥ १ ॥
त्या बस्ती घणी महाजना तणी, जाण सूत्रा ना जेह।
वदणा छोडी निज गुरु भणी, दिल मैं पडियौ सदेह ॥ २ ॥
मुरधर मैं रुघनाथजी, साभली सहु बात।
भिक्खु नै तिहा भेजिया, शङ्का मेटण साख्यात ॥ ३ ॥

मृगपति महा महिमा निलौ रे लाल, पुण्यवत सुत सुपसाय ।
सफल स्वप्न सुखदायकौ रे लाल, देखी हरषी माय ॥ ५ ॥
यशधारी सुत जन्मियौ रे लाल, अनुक्रम अवसर आय ।
सबत् सतरैसे तियासियै रे लाल, पञ्चाग लेखै ताहि ॥ ६ ॥
आषाढ सुदी पख ओपतौ रे लाल, तेरस तिथ जणाय ।
सर्व्व सिद्धा त्रयोदशी रे लाल, कहै जगत मे वाय ॥ ७ ॥
दशा माहिलौ दीपतौ रे लाल, नक्षत्र मूल निहाल ।
पायौ चौथो परवरौ रे लाल, जन्म थयौ तिण काल ॥ ८ ॥
जन्म किल्याण थया पछै रे लाल, बाल भाव मुकाय ।
उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे लाल, विविध मेलवै न्याय ॥ ९ ॥
सुन्दर इक परण्या सही रे लाल, सुखदाइ सुविनीत ।
भिक्खु नै परभव तणी रे लाल, चिन्ता अधिकी चित्त ॥ १० ॥
केता दिन गछवास्या कन्हैं रे लाल, जाता कुलगुरु जाण ।
पाछै पोत्याबध कन्है रे लाल, सुणवा लाग्या बखांण ॥ ११ ॥
पछै धास्या रुघनाथ जी रे लाल, छोड्या पोत्याबध ।
ते हिवडां संजम सरधै नही रे लाल, न सरधै सामायक सध ॥ १२ ॥
काल कितौक बित्या पछै रे लाल, शील आदरियौ सार ।
भिक्खु नै तसु भारज्या रे लाल, चारित्र नी चित्त धार ॥ १३ ॥
लेवां संजम त्या लगैं रे लाल, एकान्तर अवधार ।
अभिग्रह एहवो आदस्यौ रे लाल, विरक्त पणै सुविचार ॥ १४ ॥
तठा पछै त्रिया तणो रे लाल, पडियौ ताम विजोग ।
वर सगपण मिलता बहु रे लाल, भिक्खु न बछ्या भोग ॥ १५ ॥
दीक्षा नै त्यारी थया रे लाल, अनुमति न दियै माय ।
रुघनाथ जी नै इम कह्यो रे लाल, म्है सिह स्वप्न देखाय ॥ १६ ॥
तब बौल्या रुघनाथ जी रे लाल, साभल बाई वाय ।
सिंह तणी पर गूजसी रे लाल, ए स्वप्नौ छै चवदा माय ॥ १७ ॥
अनुमति मा आपी तदा रे लाल, सहस रोकड उन्मान ।
भिक्खु दिया जननी भणी रे लाल, चारित लेवा ध्यान ॥ १८ ॥
दीख्या महोछब दीपतो रे लाल, बगडी शहर बखाण ।
द्रव्ये चारित्र धारियौ रे लाल, भावे चरण म जांण ॥ १९ ॥
सवत् अठारै आठै समै रे लाल, घर छोड्यो विष जाण ।
द्रव्य गुरु धास्या रुघनाथ जी रे लाल, पिण नाई धर्म्म नी छाण ॥ २० ॥

प्रथम ढाल प्रगटपणैं रे लाल, कह्यौ भिक्खु नौ जन्म किल्याण।
बलि द्रव्य दीक्षा वरणवी रे लाल, वारु आगै बखाण ॥ २१ ॥

दूहा

अल्प दिवसरै आतरै, सिख्या सूत्र सिद्धन्त।
तीव्र बुद्धि भीक्खु तणी, सुखदाई शोभन्त ॥ १ ॥
विविध समय रस वाचता, बारु कियौ विचार।
अरिहत वचन आलोचता, ऐ असल नही अणगार ॥ २ ॥
या थापिता थानक आदस्या, आधाकर्म्मी अजोग।
मोल लिया माहै रहै, नित्य पिण्ड लियै निरोग ॥ ३ ॥
पडिलेह्या विण रहै पड्या, पोथ्या रा गञ्ज पेख।
विण आज्ञा दीक्षा दियै, विवेक विकल विशेष ॥ ४ ॥
उपधि वस्त्र पात्र अधिक, मर्य्यादा उपरन्त।
दोष थापै जाणनै, तिण सू ऐ नही सन्त ॥ ५ ॥
सरधा पिण साची नही, असल नहिं आचार।
इण विध करै आलोचना, पिण द्रव्य गुरु सू अति प्यार॥ ६ ॥
पूछ्या जाब पूरी न दै, काल कितौ इम थाय।
पीत द्रव्य गुरु सूं परम, ते करै शोभ सवाय ॥ ७ ॥
पूछै बात आचार नी, जाणौ वैरागी जेह।
तिण सू पूछै बलि बलि, पिण नही और सन्देह ॥ ८ ॥
पटधारक भिक्खु प्रगट, हद आपस मैं हेत।
इतलै कुण विरतन्त हुऔ, सुणज्यो सहू सचेत ॥ ९ ॥

ढाल : २

[परभवौ मन मै चिन्तवै—ए देशी]

इह अवसर मेवाड मै, राज नगर सुजाण।
राजसमुद्र पासै बस्यो, अधिका त्या आइठाण ॥ १ ॥
त्यां बस्ती घणी महाजना तणी, जाण सूत्रा ना जेह।
वदणा छोडी निज गुरु भणी, दिल मैं पडियौ सदेह ॥ २ ॥
मुरधर मैं रुघनाथजी, साभली सहु वात।
भिक्खु नै तिहा भेजिया, शङ्का मेटण साख्यात ॥ ३ ॥

बुद्धिवंत विण भ्रम ना मिटै, तिण सूं थे बुद्धिवान।
जाय शङ्का मेटो तेहनीं, इम कहि मेल्या ते स्थान ॥ ४ ॥
टोकरजी हरनाथजी, वीरभाणजी साथ।
भिक्खु शिप भारीमालजी, दीक्षा दी निज हाथ ॥ ५ ॥
ऐ साथ लेई भिक्खु आविया, राजनगर मझार।
सबत् अठारै पनरै समै, चौमासो गुणकार ॥ ६ ॥
चूंप धरी चरचा करी, भाया थी तिण वार।
ते कहै बात भिक्खु भणी, आप देखौ आचार ॥ ७ ॥
आधाकरमी थानक आदस्या, मोल लिया प्रसिद्धि।
उपधि वस्त्र पात्र अधिक ही, आ पिण थे थाप कीधी ॥ ८ ॥
जांण किंवाड जड़ी सदा, इत्यादिक अवलोक।
म्हे वन्दना करा किण रीत सू, थेतो थाप्या दोष ॥ ९ ॥
द्रव्य गुरु नौ वैण राखवा, भिक्खु बुद्धि ना भण्डार।
अकल चतुराई करी तदा, दिया जाब तिवार ॥ १० ॥
कला विविध केलवी करी, त्यानै पगां लगाया।
ते कहै शका मिटी नही, पिण निसुणौ मुझ वाया ॥ ११ ॥
आप वैरागी बुद्धिवत छौ, आपरी परतीत।
तिण कारण वदना करां, आप जगत मै वदीत ॥ १२ ॥
इम कहिनै वदना करी, इह अवसर माय।
भिक्खु रै असाता वेदनी, उदय आवी अथाय ॥ १३ ॥
अधिक ताव अति आकरौ, सीऔ दोहरो सैहणो।
उत्तम नर नै ते अवसरै, रूडै चित रैहणौ ॥ १४ ॥
अधम पुरुष दुःख उपना, करै हायतराय।
समचित्त वैदन ना सहै, पापे पिण्ड भराय ॥ १५ ॥
तीव्र ताप नी वेदना, भिक्खु नै अधिकाय।
तिण अवसर मै आविया, एहवा अध्यवसाय ॥ १६ ॥
म्हैं साचा नै तौ झूठा किया, श्री जिन वचन उठाय।
आउ आवै इह अवसरै, तो माठी गति पाय ॥ १७ ॥
द्रव्य गुरु काम आवै कदी, तौ हिवे बात विचारू।
कारण मिटिया निर्पक्ष सूं, साचौ मारग धारू ॥ १८ ॥
जेम सिद्धत मै जिन कह्यौ, चूंप धरी तिम चालू।
काण न राखू केहनी, झट जिन मारग झालू ॥ १९ ॥

एहवौ अभिग्रह आदर्‌यौ, भिक्खू ताव मझार।
उत्तम पुरुष नै आवै घणो, भय परभव नौ अपार ॥ २० ॥
दूजी ढाले आविया, राजनगर सुरीत।
आख अभ्यन्तर उघडी, निर्मल धारी नीत ॥ २१ ॥

दुहा

तुरत ताव तब उतर्‌यौ, विधसूं कियौ विचार।
हिवै साचौ मत आदरी, करू आतम तणौ उद्धार ॥ १ ॥
रखे जूठ लागैला मो भणी, तौ करणी पकी पिछाण।
इम चिंतवि सिद्ध तनै, वाच्या अधिक सुजाण ॥ २ ॥
जो साचा नै भूठा कहू, तो परभव रै माय।
जीभ पामणी दोहिली, विविध पणै दुख पाय ॥ ३ ॥
पख राखी द्रव्य गुर भणी, जो कहू साचा सोय।
तो पिण परभव नै बिषै, काम कठिन अति होय ॥ ३ ॥
औ दूधारी खाडो अछै, एहवी मन मैं धार।
दोय दोय बार सूत्रा भणी, बाच्या धर अति प्यार ॥ ५ ॥
सूत्र विविध निर्णय करी, गाढी मत मै धार।
सम्यक्त्त चारित बिहु नही, एहवौ कियौ विचार ॥ ६ ॥
भाया नै भिक्खु कह्यो, थे तौ साचा सोय।
म्हे भूठा गुरु सू मिली, शुद्ध मग लेस्या जोय ॥ ७ ॥
भाया सुण हरष्या घणा, बोल्या एहवी वाय।
अब म्हारी शका मिटी, दिल मै रही न काय ॥ ८ ॥
प्रतीत आप तणी हुती, जिसी म्हारा मन माय।
तिसी दिखाडी तुरत ही, इम कही हरषत थाय ॥ ९ ॥

ढाल : ३

[राणी भाखै सुणरे सूडा—ए देशी]

राजनगर थी कियौ विहार, चौमासौ उतरिया सार।
आवै मुरधर देश मझार रे।
मन प्यारा भिक्खु जश रसायण सुणिजै ॥ १ ॥
साधा नै सहु बात सुणाई, सरधा किरिया ओलखाई।
ते पिण सुण हरष्या मन माही रे। म० ॥ २ ॥
टोकरजी हरनाथजी ताय, भारीमाल घणा सुखदाय।
समझी लागा पूजरै पाय रे। म० ॥ ३ ॥

वीरभांणजी पिण तिणवार, आदस्या भिक्खु वयण उदार।
आवै सोजत शहर मझार रे। म० ॥ ४ ॥

बीचै गाम नान्हा जाणी सोय, दोय साथ किया अवलोय।
सीख इण पर दीधी जोय रे। म० ॥ ५ ॥

वीरभाणजी नै कहै वाय, जो थे पहिला जावौ गुरु पाय।
तौ या बात म करज्यो काय रे। म० ॥ ६ ॥

पहिला बात सुण्या भिडकाय, मनखच हुवै मन माय।
तौ पछै समझाया दोरा जाय रे। म० ॥ ७ ॥

नेम तौ ते आपा रा गुरु है, मन खच्या समझणा दुकर है।
बिगडिया पछै काम न सरहै रे। म० ॥ ८ ॥

कला विनय करी हू कहस्यू, दिल श्रद्धा बैसाडी देसू।
युक्ति सू समझाई लेसू रे। म० ॥ ९ ॥

स्वामी एम त्यानै समझाया, वीरभाणजी आगूच आया।
रुघनाथजी सोजत पाया रे। म० ॥ १० ॥

कर जोड़ी नै वन्दना कीधी, पूछै द्रव्य गुरु प्रसिद्धि।
भाया री शङ्का मेट दीधी रे। म० ॥ ११ ॥

वीरभाणजी बोल्या वायो, भाया तौ साचौ भेदज पायौ।
मन शङ्क हुवै तौ मिटायो रे। म० ॥ १२ ॥

आधाकर्मी थानक अशुद्ध आहार, बिन कारण नित्यपिण्ड वार।
आपे भोगवा ए अणाचार रे। म० ॥१३ ॥

वस्त्र पात्र अधिका सेवा, बिन आगन्यां दीख्या देवा।
विवेक विकल भणी मूड लेवा रे। म०॥१४॥

दिन रात्रि मै जड़ा किंवाड, इत्यादिक बहु दोष विचार।
त्यारी थाप आपारे धार रै। म० ॥१५ ॥

भाया तौ कहै साची साख्यात, तिणमैं झूठ नही तिलमात।
द्रव्य गुरु निसुणी ए बात रे। म० ॥१६ ॥

द्रव्य गुरु कहै यूं काई बोलै, वीरभाणजी पाछौ झखोलै।
कुडी तौ भिक्खु पास अतोल रे। म० ॥१७॥

म्हारै वन्है तौ बानगी तास, कूडी रास भीखणजी पास।
इम सांभल हुआ उदास रे। म० ॥ १८ ॥

वीरभाण रै नही समाही, तिणसू आगूच वात जणाई।
हिवै आया भिक्खु ऋपराई रे। म० ॥१९॥

तंत ढाल कही ए तीजी, वीरभाण नी बात कहीजी।
ऋष भिक्खु नी बात रहीजी रे।म०।।२०।।

दुहा

हिव भिक्खु द्रव्य गुरु भणी, वन्दै बेकर जोड।
माथै हाथ दियौ नही, चश्मा देख्या और।। १ ।।
जब भिक्खु मन जाणियौ, आगूच आखी बात।
पहिली मनडौ फिर गयौ, तौ पूछू साख्यात।। २ ।।
कर जोडी नै इम कहै, यू क्यू स्वामीनाथ।
चित्त उदास तिण कारणै, माथै न दियौ हाथ।। ३ ।।
द्रव्य गुरु भाखै ताहरै, शक पडी सुविचार।
तिण सू कर शिर ना दियौ, मन पिण फाटौ धार।। ४ ।।
बलि थारै नै माहरै, भेलौ नही आहार।
वचन सुणी भिक्खु कहै, शक मेटौ इहवार।। ५ ।।
बलि भिक्खु मन चिन्तवै, म्हामै यामै जाण।
सजम समगत को नही, पिण हिवडा न करणी ताण।। ६ ।।
प्राछित लेई एहनै, द्यू प्रतीत उपजाय।
पछै खपकर नै समभाय नै, आणू मारग ठाय।। ७ ।।
इम चिन्तव द्रव्य गुरु भणी, बोलै एहवी वाय।
शक जाणौ तौ मुझ भणी, प्राछित दौ सुखदाय।। ८ ।।
इम प्रतीत उपजायनै, भेलौ कियौ आहार।
हिवै समझावै किण विधै, ते सुणज्यो विस्तार।। ९ ।।

ढाल : ४

[हिव राणी नै हो समझावै पण्डिता धाय—ए देशी]

हिवे द्रव्य गुरुनै हो, समझावै भिक्खु स्वाम।
सूत्र वयण दिल सरदहौ, निसुणौ बात अमाम।। १ ।।
अरि अघ हणिवै हो, देव कह्या अरिहन्त।
धर्म्म जिनेश्वर भाखियौ, गुरु जाणौ निर्ग्रन्थ।। २ ।।
साची सरधा हो ए जाणौ तत सार, पामै तिण सू पार।
आज्ञा बारै धर्म को नही।। ३ ।।
या तीनू मैं हो भेल म जाणौ लिगार, अन्तर आख उघाड।
सूत्र सीख सरधौ सही।। ४ ।।

और वस्तु मै हो भेल पड़ै जो आय, तो रूड़ी पिण बिगडाय।
तौ पुन्य पाप भेला किम हुवै ।। ५ ।।
अशुभ जोगा सूं हो बधै पाप एकन्त, शुभ सू पुण्य बधत।
पुण्य पाप भेला किसा जोग सू ।। ६ ।।
एके करणी हो बधै पुन्य कै पाप, तिण मै मिश्र म थाप।
करणी तीजी जिण ना कही ।। ७ ।।
भिक्खु भाखै हो द्रव्य गुरु नै अवलोय, जिन वचन साहमौ जोय।
ग्रही टेक नै परिहरौ ।। ८ ।।
शुद्ध श्रद्धा हो हाथ न आई श्रीकार, असल नही आचार।
थाप दीसै घणा दोष री ।। ९ ।।
जो थे मानौ हो सूत्र नी बात, तौ थेइज म्हारा नाथ।
नहितर ठीक लागै नही ।। १० ।।
म्हे घर छोड्या हो आतम तारण काम, और नहा परिणाम।
तिणसू बार बार कहू आपनें ।। ११ ।।
आप मानौ हो स्वामी सूत्रा नी बात, छोड़ देवौ पक्षपात।
इक दिन परभव जावणो ।। १२ ।।
पूजा प्रशसा हो लही अनन्ती वार, दुर्लभ श्रद्धा श्रीकार।
निर्णय करो आप एहनों ।। १३ ।।
विविध विनय सू हो आख्या वयण उदार, मान्या नही लिगार।
क्रोध करी उलटा पड्या ।। १४ ।।
भिक्खु भारी हो स्वामी बुद्धि ना भण्डार, मन सू कियौ विचार।
ए हिवडा न दीसै समझता ।। १५ ।।
धीरै २ हो समझावस्यू धर पेम, आप विचारी एम।
तिण सू आहार पाणी तोड्यौ नही ।। १६ ।।
भिक्खु भाखै हो भेलौ करा चौमास, चरचा करस्या विमास।
साच झूठ निर्णय करा ।। १७ ।।
साची सरधा हो आदरस्या सुखदाय, झूठी देस्या छिटकाय।
तव बोल्या रुघनाथ जी ।। १८ ।।
म्हारा साधा नै हो तू लेवै फटाय, जो चौमासो भेलौ थाय।
भिक्खु कहै राखो जड वाज नै ।। १९ ।।
ते चरचा मे हो समझै नही लिगार, करो चौमासो श्रीकार।
दुर्लभ सामग्री ए लही ।। २० ।।

इण विध कीधा हो भिक्खु अनेक उपाय, तौ पिण नाया ठाय।
कर्म घणा तिण कारणै ॥ २१ ॥
बले मिलिया हो भिक्खु दूजी बार, बगडी शहर मझार।
आय द्रव्य गुरु नै इम कहै ॥ २२ ॥
स्वामी भूला हो शुद्ध श्रद्धा आचार, मन मैं करी विचार।
विविध प्रकारै समझाविया ॥ २३ ॥
पिण नही मानी हो द्रव्य गुरु बात लिगार, जाण लियौ तिणवार।
ए तौ न दिसै समझता ॥ २४ ॥
निज आत्म नौ हो हिव हू करू निस्तार, एहवी मन मै धार।
आहार पाणी तोड निसरया ॥ २५ ॥
चौथी ढाले हो आख्यौ चरचा सरूप, आछी रीत अनूप।
आगलि बात सुहामणी ॥ २६ ॥

दुहा

थानक बारै निसरया, तडके आहारज तोड।
जब द्रव्य गुरु मन जाणियौ, बात हुई अति जोर ॥ १ ॥
रहिवा जागा ना मिलै, तो फिर थानक आय।
सेवक फिरियौ शहर मै, जागां म दीज्यो काय ॥ २ ॥
जो रहिवा भिक्खु भणी, जागा दीधी जाण।
सर्व साथ सुणज्यो सही, सघ तणी छै आण ॥ ३ ॥
कडली कुबुद्धिज केलवी, आसी पाछा एम।
जब भिक्खु मन जाणियौ, करिवौ विचार केम ॥ ४ ॥
पुर मै जागा ना दियै, जो फिर थानक जाय।
तौ पाछौ फन्द मै पडू, दुखे निसरणी थाय ॥ ५ ॥
एहवी करे विचारणा, विहार कियो तिण बार।
शूरवीर सिंह नी परै, न डरया मूल लिगार ॥ ६ ॥
आया बगडी बारणै, बावल अधिक विशेष।
बाजी तब पग थाभिया, भिक्खु परम विवेक ॥ ७ ॥
जैतसिंहजी री जिहां, छत्र्यां अधिक उदार।
देखी नै आया जिहां, वैठा छत्र्या मझार ॥ ८ ॥
पुर माहै जाण्यो प्रगट, सुण्यो द्रव्य गुर सोय।
आया छत्र्या नै विषै, साथै बहुला लोय ॥ ९ ॥

ढाल : ५

(राम कहै सुग्रीव नै रे लङ्का केतिक दूर—ए देशी)

बगडी री छत्र्या मझे रे, बहु लोक बोलै इम वाय।
टोलो छोडी मत निकली रे, धैर्य धरी मन माय।
चतुर नर भिक्खु बुद्धि नां भडार ॥ १ ॥
रुघनाथजी इसडी कहै रे, थे मानौ भीखणजी बात।
अबारूं आरौ पांचमो रे, नही निभौला साख्यात। च० ॥ २ ॥
भिक्खु बलता भाखै भली रे, म्हे किम मांना तुझ बात।
म्हे सूत्र बाचे निर्णो कियो रे, शङ्का नही तिल मात। च० ॥ ३ ॥
तीर्थ श्रीजिनवर तणो रे, छेहडा ताई विचार।
श्री जिन आणा सिर धरी रे, शुद्ध पालस्यूं संजम भार। च० ॥ ४ ॥
ए वचन सुणी द्रव्य गुरु भणी रे, तूटी आश तिवार।
मोह आयो तिण अवसरै रे, चिन्ता हुई अपार। च० ॥ ५ ॥
सामजी ऋष नौ साध थो रे, उदैभांण कहै एम।
टोला तणा धणी बाजनै रे, आसू पच करो केम। च० ॥ ६ ॥
किणरौ एक जावै तरै रे, आवै फिकर अपार।
म्हांरा पांच जावै सही रे, गण मे पड़ें बिगाड़। च० ॥ ७ ॥
मोह देखी द्रव्य गुरू तणे रे, दृढ चित्त भिक्खु धार।
म्हैं घर छोड्यौ तिण दिने रे, मुझ माता रोई अपार। च० ॥ ८ ॥
भागलां भेली हूं रहू रे, तौ परभव मैं पेख।
विविध पणै रोवणौ पडै रे, पामै दु:ख विशेष। च० ॥ ९ ॥
कठिन छाती इण विध करी रे, बारु ज्ञान विचार।
सैंठा रह्या तिण अवसरै रे, उत्तम जीव उदार। च० ॥ १० ॥
द्वेष स्यू तुरत नर ना डीगै रे, राग दै तुरत चलाय।
द्रव्य गुरू मोह आण्यौ सही रे, पिण कारी न लागी काय। च० ॥ ११ ॥
फेर बोल्या रुघनाथजी रे, जासी कीतियक दूर।
आगो थारी नै पूठौ माहरौ रे, लोक लगावस्यूं पूर। च० ॥ १२ ॥
परीषह खमण री मुझ मन मझै रे, भिक्खु भाखै विशाल।
इम तौ डरायो नही डरू रे, जीवणु कितौएक काल। च० ॥ १३ ॥
विहार कियौ बगडी थकी रे, द्रव्य गुरु लारै देख।
चरचा करी बडलु मझै रे, साभलज्यो सुविशेष। च० ॥ १४ ॥

रुघनाथजी इसडी कहै रे, साभल भिक्खु बात।
पूरी साधपणु नही पलै रे, दुखम काल साख्यात। च० ॥ १५ ॥
भिक्खु कहै इम भाखियौ रे, सूत्र आचारङ्ग माय।
ढीला भागल इम भाखसी रे, हिवडा शुद्ध न चलाय। च० ॥ १६ ॥
बल सघयण हीणा घणा रे, पञ्चम काल प्रभाव।
पूरो आचार पलै नही रे, नहिं उत्सर्ग प्रस्ताव। च० ॥ १७ ॥
आगूंच जिनजी भाखियो रे, इम कहसी भेषधार।
ए जाब सुणी रुघनाथ जी रे, कष्ट हुवा तिणवार। च० ॥ १८ ॥
गुरु चेला रै हुई घणी रे, चरचा माहो माहि।
सक्षेप मात्र कही इहा रे, पूरी केम कहाय। च० ॥ १९ ॥
द्रव्य गुरू कहै भिक्खु भणी रे, दोय घडी सुभ ध्यान।
चोखौ चारित्र पालिया रे, पामैं केवलज्ञान। च० ॥ २० ॥
भिक्खु कहै इण विध लहै रे, बे घडी केवलज्ञान।
तौ दोय घडी ताई रहू रे, श्वास रूधी धरू ध्यान। च० ॥ २१ ॥
प्रभव सिज्जंभव आदि दे रे, बै घडी पाल्यौ कै नाहि।
केवल त्यानै न उपनौ रे, सोच विचारौ मन माहि। च० ॥ २२ ॥
चवदै सहस शिष वीरनैं रे, सात सौ केवली सोय।
तेर सहस नै तीन सौ रे, छद्मस्थ रहिया जोय। च० ॥ २३ ॥
त्यामै केवल नही उपनौ रे, त्या बे घडी पाल्यौ कै नाहि।
थारै लेखै त्या पिण नही पालियौ रे, बे घडी चरण सुहाय। च० ॥ २४ ॥
बारै वर्ष तेरह पखै रे, वीर रह्या छद्मस्थ।
थारै लेखै त्या पिण नही पालियौ रे, दोय घडी चारित। च० ॥ २५ ॥
इत्यादिक हुई घणी रे, चरचा माहो माहि।
समझाया समजै नही रे, किया अनेक उपाय। च० ॥ २६ ॥
पवर ढाल कही पाचमी रे, चर्चा विविध प्रकार।
हिव भिक्खु किण रीत सू रे, करे आत्तम नौ उद्धार।
चतुर नर साभलौ भिक्खु विलास ॥ २७ ॥

दुहा

द्रव्य गुरु तौ समझ्या नही, खप बहु कीधी ताहि।
जैमलजी काका गुरु, आया त्यारै पाहि ॥ १ ॥
भद्र सरल प्रकृति भली, जैमलजी नौ जाण।
भिक्खु तास भली परै, समझावै सुविहाण ॥ २ ॥

जैमलजी रै जुक्ति सूं, दी सरधा वैसार।
भिक्खु रे साथै भला, ते पिण हो गया त्यार ॥ ३ ॥
बात सुणी रुघनाथजी, भाग्या तसु परिणांम।
फकीर वाली दुपटी हुसी, नहि हुवै थारौ नाम ॥ ४ ॥
बुद्धिवन्त साधु साधवी, लेसी त्यानै लार।
लाडै कोडे घर छोडिया, और होसी निराधार ॥ ५ ॥
यांनैं रोसी सहु जणा, थे म विचारौ बात।
थारै बहु परिवार छै, घणां तणा थे नाथ ॥ ६ ॥
थांरा साधा रा जोग सू, होसी भिक्खु रौ काम।
टोलौ भिक्खु रौ बाजसी, थारौ न हुवै नाम ॥ ७ ॥
इत्यादिक वचना करी, पाड्या तसु परिणाम।
तब जैमलजी बोलिया, सुणौ भीखणजी आंम ॥ ८ ॥
गला जितौ हू कल गयौ, थे शुद्ध पालौ सोय।
पंडितां रै जाणी वर्त्तौ, इम बोल्या अवलोय ॥ ९ ॥

ढाल : ६

[सुण सुण रे शिष्य सयाणा—ए देशी]

शिष्य भिक्खु ना महा सुखकारी, भारीमाल सरल भद्र भारी।
त्यारौ तात कृष्णोजी तास, बिहुं घर छोड्यो भिक्खु पास।
सुण सुण रे शिष्य सयाणा रूडी भिक्खु जश रसाणा।
भिक्खु जश रस अमृत भारी, शिव सम्पति सुख सहचारी। ॥ १ ॥
आसरै दशमै वर्ष आया, भारीमाल सरल सुखदाया।
भेषधार्‍यां माहि छता सोय, सुत तात भिक्खु शिष्य होय। सु० ॥ २ ॥
त्यारै चेला तणी छै रीत, तिणसू शिष्य किया धरि प्रीत।
त्यामै रह्या आसरै वर्ष चार, पछै निसरिया भिक्खु लार। सु० ॥ ३ ॥
कृष्णाजी री प्रकृति करडी जाणी, भारीमाल भणी वदै बाणी।
सजम लायक नही तुझ तात, तुम तो उत्तम जीव विख्यात। सु० ॥ ४ ॥
आपा नवी दीख्या लेस्या सोय, लागू होता दिसै बहु लोय।
आहार पाणी वचनादिक ताय, कृष्णाजी नै दुक्कर अधिकाय। सु० ॥ ५ ॥
तुझ मन मुझ पास रहिवा रो, कै निज जनक कन्है जावारो।
इम पूछचौ भिक्खु धर प्रेम, भारीमाल उत्तर दियौ एम। सु० ॥ ६ ॥

म्हारै तात थकी काई काम, हूं तो आप कन्हे रहस्यू ताम।
सजम पालस्यू रूडी रीत, मोनै आप तणी परतीत। सु० ॥ ७ ॥
कृष्णाजी नै भिक्खु कहै ताम, थासू मूल नही म्हारे काम।
चारित्र पालणो दुक्कर कार, तिण सू थाने न लेवा लार। सु० ॥ ८ ॥
किस्नोजी कहै मोनै न लेवो, तो म्हारौ पुत्र मोनै सूप देवौ।
सुत नै राखसू मुझ साथ, इण ने लेजावा न देऊ विख्यात। सु० ॥ ९ ॥
भिक्खु कहै पुत्र ए थारौ, आवै तौ नही बरजा लिगारो।
जब आयौ भारीमाल पास, और जागा लेई गयौ तास। सु० ॥१०॥
भारीमाल पिता नै भाखै, कृष्णाजी री काण नही राखै।
थारा हाथ तणु अन पाण, म्हारै जाव जीव पचखाण। सु० ॥ ११ ॥
भारीमाल अभिग्रह कीयौ भारी, दिन दोय निसख्या तिवारी।
रह्या सुरगिर जेम सधीरा, हलुकर्मी अमोलक हीरा। सु० ॥ १२ ॥
तब बाप थाकौ तिण वार, भिक्खु नै आण सूप्या उदार।
थासूईज राजी छै एह, म्हासू तौ नही मूल सनेह। सु० ॥ १३ ॥
इण नै आहार पाणी आण दीजै, रूडा जतन करी राखीजै।
म्हारी पण गति काइक कीजै, किण ही ठिकाणै मोने मेलीजै। सु० ॥ १४ ॥
थे नही लियो सजम भारो, जितरै करो ठिकाणौ म्हारो।
भिक्खु सूप्यौ जैमलजी नै आण, जैमलजी हरष्या अति जाण। सु० ॥ १५ ॥
जैमलजी बोल्या तिणवारी, देखौ भीखणजी री बुद्धि भारी।
सूप्यौ कृष्णोजी म्हानै सोय, तीना घरा बधावणा होय। सु० ॥ १६ ॥
कृष्णो हर्ष्यौ ठिकाणै हूँ आयौ, म्हे पिण हर्ष्या चेलौ एक पायौ।
भिक्खु हर्ष्या टलियौ औगाली, तीना घरा बधावणा न्हाली। सु० ॥ १७ ॥
भारीमाल री सङ्कट टलियौ, मन बाञ्छत कारज फलियौ।
छट्ठी ढाले भारीमाल भारी, रह्या अडिग अचल गुणधारी। सु० ॥ १८ ॥

दुहा

हिव भिक्खु भारीमालजी, सत आदि दे तेर।
मनसोबो मोटौ कियौ, चारित लैणौ फेर ॥ १ ॥
शहर जोधाणा मै सही, तेरह श्रावक ताहि।
सामायक पोसा करी, बैठा बाजार रे माहि ॥ २ ॥
फतैचन्द सिंघी प्रगट, दीवाण पद दीपत।
चौहटे देख्या चालता, प्रत्यक्ष तब पूछत ॥ ३ ॥

ढाल : ७

[[illegible]]

फतेचन्द दीवान ने, वलि पूछ्या करै वात हो।
श्रावक थे किसा सही, भाख्या धर्म उदार हो।
शिव साधन साचा तो, भिक्खु दर्शण भाख्यो वार हो॥ १ ॥
श्रावक कहै तेरै अछा, आतम तारण हार हो।
सिघी वलि पूछै सही, सत किसा सुगणाल हो।
नौका शिव ने तारु हो।॥ भि० २॥
श्रावक कहै तेरे सही, साधु सखर श्रद्धालु हो।
भिक्खु समण शिरोमणि, वर मारग विशालु हो।
साधण सिव पद सालू हो।॥ भि० ३॥
सिघी कहै आछो मिल्यो, वर जोग विचारु हो।
श्रावक पिण तेरे सही, तेरे सत तत सारु हो।
भिक्खु बुद्धि ना भण्डारु हो।॥ भि० ४॥
सिघी मुख प्रशसा सुणी, सेवग ऊभो सुधारु हो।
तत्खिण तिण जोड्यो तुको, तेरा पथ ए तारु हो।
विस्तर्यो नाम वारु हो।॥ भि० ५॥

सेवग कृत दुहा

साध साधरो गिलै करै, ते तौ आप आपरौ मत।
सुणजो रे शहर रा लोका, ए तेरा पन्थी तत॥ १॥

ढाल तेहिज

लोक कहै तेरापन्थी, भिक्खु सवली भावै हो।
हे प्रभु औ तेरौ पन्थ है, और दाय न आवै हो।
मन भ्रम मिटावै हो, सो ही तेरापन्थ पावै हो॥ ६॥
पंच महाव्रत पालता, शुद्धि सुमति सुहावै हो।
तीन गुप्त तीखी तरै, भल आतम भावै हो।
चित्त सू तेरा ही चाहवै हो॥ ७॥

भिक्खु कृत छन्द

गुण विन भेष कू मूल न मानत, जीव अजीव का किया निवेरा।
पुन्य पाप कु भिन्न भिन्न जानत, आस्रव कर्मा कु लैत उरेरा॥
आवता कर्मा नै सवर रोकत, निर्जरा कर्मा कु दैत बिखेरा।
बन्ध तौ जीव कु बाधिया राखत, शाश्वता सुख तौ मोक्ष मै डेरा॥
इसी घट प्रकाश किया, भव जीव का मेट्या मिथ्यात अधेरा।
निर्मल ज्ञान उद्योत कियो, ए तौ है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा॥ १॥
तीन सौ तेसट्ठ पाखण्ड जगत मै, श्री जिन धर्म सू सर्व अनेरा।
द्रव्य लिगी केई साध कहावत, त्या पिण पकड्या त्याराइज केडा॥
ताहि कु दूर तजै ते सत, विधि सू उपदेश दिया रूडेरा।
जिन आगम जोय प्रमाण किया, जब पाखण्ड पन्थ मै पड्या विखेरा॥
व्रत अव्रत दान दया बतावत, सावद्य निर्बद्य करत निवेरा।
श्री जिन आगन्या माहै धर्म वतावत, ए तौ है पन्थ प्रभु तेरा ही तेरा॥ २॥

ढाल तेहिज

पन्थ अनैरा मै रह्यो, तिणसू भमण भमावै हो।
प्रभु अब आयो तेरा पन्थ मै, तेरी आज्ञा सुहावै हो।
तेह थी शिव पद आवै हो॥ ८॥
तेरौ वचन आगै करी, चारू धर्म चलावै हो।
तेहिज छै तेरापन्थी, थिर कीरत थावै हो।
भिक्खु समचित भावं हो॥ ६॥

हिन्सा भूठ अदत हरै, मैथुन परिग्रह मिटावै हो।
तीन करण तीन जोग सू, त्याग करी तन तावै हो।
बारु व्रत वसावै हो ॥ १० ॥
इर्या भापा एपणा, रूडी रीत रखावै हो।
आयाण भण्ड निखेवणा, परठण जैणा करावै हो।
सखरी सुमति सुहावै हो ॥ ११ ॥
अशुद्ध मन नही आदरै, वच सावज वस लावै हो।
पाडुइ काया परिहरै, तीन गुप्त तत लावे हो।
थिरता पद चित्त थावै हो ॥ १२ ॥
सखर ढाल आ सातमी, गुण भिक्खु ना गावै हो।
नाम तेरापन्थ निर्मलो, अर्थ अनुपम आवै हो।
सखरौ सुजश सुणावै हो ॥ १३ ॥

दुहा

भारी बुद्धि भिक्खु तणी, निर्मल मेल्या न्याय।
अरिहन्त आज्ञा थाप नै, श्रद्धा दी ओलखाय ॥ १ ।
चरचा कर त्यारी हुवा, तेर जणा तिणवार।
नाम कहू हिव तेहना, भिक्खु गण शृङ्गार ॥ २ ॥
थिरपालजी फतेचन्दजी, बडा तात सुत बेह।
भिक्खु आचारज भला, ज्ञान कला गुण गेह ॥ ३ ॥
टोकरजी हरनाथजी, भारीमाल सुविनीत।
सरल भद्र सुखदायका, परम पूज्य सू प्रीत ॥ ४ ॥
वीरभांणजी सातमौ, लिखमीचन्दजी लार।
बखतराम नै गुलाबजी, दूजौ भारमल धार ॥ ५ ।
रूपचन्द नै पेमजी, ए तेरा रा नाम।
नवी दीक्षा लेवा तणा, तेरा रा परिणाम ॥ ६ ॥
रुघनाथजी रा पाञ्च छै, छः जयमलजी रा जोय।
दोय अन्य टोला तणा, ए तेरह ही होय ॥ ७ ॥
चर्चा केयक बोल री, करी माहोमा तास।
केइक अल्पज चरचिया, ऊपर आयी चौमास ॥ ८ ॥
चौमासा सगला भणी, भिक्खु दिया भलाय।
आसाढ सुदि पुनम दिने, सजम लीज्यो ताय ॥ ९ ॥

ढाल : ८

[सीहल नृप कहै चन्द ने—ए देशी]

भिक्खु मुख सू इम भणै, मुणिन्द मोरा चौमासो उतरया जाण हो।
सरधा आचार मीढ्या पछै, मुणिन्द० भेलो करस्या आहार पाण हो।
सखर गुणा कर शोभतो, ऋष भिक्खु गुण निलो।
मु० अधिक ओजागर आप हो ॥ १ ॥

जो श्रद्धा आचार मिली नही, मु० तो भेलो न करा आहार हो।
इम पैंहला समझाविया, मु० आया देश मेवाड हो ॥ २ ॥

सम्बत् अठारै सतरे समै, मु० पंचाग लेखै पिछाण हो।
आसाढ सुदी पुनम दिनै, मु० कैलवै दीक्षा किल्याण हो ॥ ३ ॥

अरिहन्त नी लेई आगन्या, मु० पचख्या पाप अठार हो।
सिद्ध साखे करी स्वामजी, मु० लीधो सजम भार हो ॥ ४ ॥

हरनाथजी हाजर हुंता, मु० टोकरजी भिक्खु पास हो।
परम भगता भारीमालजी, मु० पूरो ज्यारो विश्वास हो ॥ ५ ॥

सतरोतरै कैलवा मझै, मु० प्रथम चौमासो पेख हो।
देवल अधारी ओरी तिहा, मु० कष्ट सह्यौ सुविशेष हो ॥ ६ ॥

हिवै चौमासौ उतरयो, मु० भेला हुवा सहु आण हो।
बखतराम नै गुलाबजी, मु० कालवादी हुवा जाण हो ॥ ७ ॥

नव तत्व मे तर्क उपजी, मु० इक जीव आठ अजीव हो।
जे सिद्धा मे वस्त पावै नही, मु० सरधै काल सदीव हो ॥ ८ ॥

थिरपालजी फतैचन्दजी, मु० भिक्खु ऋष जग भाण हो।
टोकरजी हरनाथजी, मु० भारीमाल बहु जांण हो ॥ ९ ॥

रूडै चित्त भेला रह्या, मु० वर षट सत वदीत हो।
जावजीव लग जाणज्यो, मु० परम माहोमाहि प्रीत हो ॥ १० ॥

सात जणा भेला ना रह्या, मु० केयक धुर ही थी न्यार हो।
कोयक पाछै न्यारो थयो, मु० थेट न पौहता पार हो ॥ ११ ॥

वर्ष किता वीरभाणजी, मु० रह्या भिक्खु रै हजूर हो।
अविनय अवगुण आकरौ, मु० तिण सूं निषेध नै कियौ दूर हो ॥ १२ ॥

पछै श्रद्धा पिण फिर गई, मु० वीरभाण री विशेष हो।
इन्द्रिया सावज श्रद्धनै, मु० वले द्रव्य भाव जीव एक हो ॥ १३ ॥

अनेक बोल ऊंधा पड्या, मु० बिगडी अविनय थी बात हो ।
वर्ष बतीसै गण बारै कियो, मु० पछै मैणा ने मूंड्या साख्यात हो ।।१४।।
पट रह्या तेरा माहिला, मु० सात हुवा इम दूर हो ।
पिण पुण्य प्रबल भिक्खु तणा, मु० दिन दिन चढतै नूर हो ।। १५ ।।
शूरा सिह तणी परै, मु० सुर-गिर जेम सधीर हो ।
अङ्गज ओजागर अति घणा, मु० बिडद निभावण वीर हो ।। १६ ।।
टोली छोडी नै निसर्या, मु० त्यारी पिण नही तमाय हो ।
ग्रन्थ हजारा जोडीनै, मु० श्रद्धा दीधी ओलखाय हो ।। १७ ।।
अतिशय धारी ओपता, मु० शासण शिरमणि मौड हो ।
आचार्य इण काल मै, मु० अबर न एहनी जोड हो ।। १८ ।।
सावद्य निर्वद्य शोधनै, मु० दान दया ओलखाय हो ।
व्रत अव्रत वर बारता, मु० भिन्न भिन्न भेद बताय हो ।। १९ ।।
उत्पत्तिया बुद्धि आपरी, मु० आछी अधिक अनूप हो ।
दृष्टान्त विविधज दीपता, मु० चित्त चरचा अति चूंप हो ।। २० ।।
ढाल भली ए आठमी, मु० भिक्खु गुण रा भडार हो ।
उमङ्ग करी चरण आदर्यो, मु० समण शिरोमणि सार हो ।। २१ ।।

दुहा

स्वाम मारग साचो लियो, करवा जन्म कल्याण ।
कुगुरु कुबुद्धि अति केलवी, जन भरमाया जाण ।। १ ।।
भागल भेष धार्या तणै, उपनौ द्वेष अत्यन्त ।
लोका भणी लगाविया, विविध वचन विलपन्त ।। २ ।।
कोई मन्त्र यागे कीज्यो मनी, लाग जावैला लाल ।
निन्हव छै ए निकल्या, कोई कहै जमाली गोमाल ।। ३ ।।
यां देव गुरु नै उत्थापिया, दान दया नै उत्थाप ।
जीव बचावै तेह मैं, ए कहै अठारै पाप ।। ४ ।।
भृगु भिड़काया पुत्र भणी, माया मैं चूक बनाय ।
ज्यूं भिक्खु सूं भिड़काविया, आंटिज मिलियो न्याय ।। ५ ।।
जिहां जिहां भिक्खु विचर्या, आगूच जोवै वाट ।
भणो मतै पासमो मती, थोडा मैं होय जाय थाट ।। ६ ।।
केई तो प्रश्न पूछवा, कपट केलवा लाज ।
कुगुरां ने भरमाविया, ऊबा बोल्या नाणै लाज ।। ७ ।।

उपसर्ग अनेक दे रह्या, बदै बचन विकराल।
पिण क्षमा भिक्खु तणी, बारु अधिक विशाल ॥ ८
अधिक नीत आचार नी, अधिक सुमति उपयोग।
अधिक गुप्त गुण आगला, जशधारी शुभ जोग ॥ ९

ढाल : ९

[ब्रजवासी लाला कान्ह तैं मेरी गागर काय मारी—ए देशी]

भिक्खु स्वाम भारी, जगत उद्धारक जशधारी। ए आकडी ॥
भारी रे खिम्यां गुण भिक्खु नौ भाल २, निर्लोभी मुनि निर्मल न्हाल। भि० ॥ १ ॥
कपट रहित शुद्ध सरल कहाय २, निरहकार रूडी नरमाय। भि० ॥ २ ॥
लाघव कर्म उपधि वर लाज २, सत्य वचन स्वामी सुख साज। भि० ॥ ३ ॥
बारु रैं भिक्खु नौ संजम वाह वाह २, लीधौ मनुष्य जनम नौ लाह। भि० ॥ ४ ॥
बारु रे भिक्खु नौ तप तहतीक २, रूडै चित्त मुनि महा रमणीक। भि० ॥ ५ ॥
बारु रे दान मुनि नै दै आण २, नित्य प्रति गौचरी करत प्रधांन। भि० ॥ ६ ॥
घोर ब्रह्म भिक्खु नौ सार २, सङ्ग रहित तिहु जोग श्रीकार। भि० ॥ ७ ॥
इर्या धुन भिक्खु मुनिराज २, जाणके चाल रह्यौ गजराज। भि० ॥ ८ ॥
भाषा सुमति भिक्खु नी भाल २, निर्वद्य निर्मल सुधा सम न्हाल। भि० ॥ ९ ॥
एषणा अधिक अनुपम सार २, देखन हारौ पामै चमत्कार। भि० ॥ १० ॥
वस्त्रादि लैंता जैणा विशेष २, म्हेलता अति उपयोग सपेख। भि० ॥ ११ ॥
पंचमी सुमति भिक्खु नी पिछाण २, सावचेत भिक्खु सुविहाण। भि० ॥ १२ ॥
मन वच काया गुप्त गुणवन्त २, सत दत शील दया निर्ग्रंथ। भि० ॥ १३ ॥
अष्ट सम्पदा गुण अधिकार २, आचार्य भिक्खु अणगार। भि० ॥ १४ ॥
आचारज ना गुण सुछतीस २, भिक्खु मैं शोभै निश दिस। भि० ॥ १५ ॥
पञ्च महाव्रत निर्मल पालत २, च्यार कषाय भिक्खु टालत। भि० ॥ १६ ॥
बश करैं इन्द्रिय पञ्च विचार २, पञ्च सुमति त्रिण गुप्ति उदार। भि० ॥ १७ ॥
आचार पञ्च भिक्खु ना अमोल २, वाड सहित ब्रह्म अधिक अतोल। भि० ॥ १८ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि भिक्खु नी उदार २, ततक्षण जाव दियै ततसार। भि० ॥ १९ ॥
अन्यमति स्वमति सुण वच सार २, चित्त माहै पामै चमत्कार। भि० ॥ २० ॥
वारु रे भिक्खु थारा दृष्ठन्त २, आश्चर्यकारी अधिक अत्यन्त। भि० ॥ २१ ॥
वारु रे भिक्खु तुझ बुद्धि ना जाव २, पूछता उत्तर देवै सताव। भि० ॥ २२ ॥
वारु रे भिक्खु वीर्य आचार २, तै कियौ उद्यम अधिक उदार। भि० ॥ २३ ॥
वारु रे भिक्खु तुझ नीत वैराग २, तूं प्रगट्यौ वहु जन नै भाग। भि० ॥ २४ ॥

बारु रे भिक्खु तूं गिरवौ गम्भीर २, तू गुणदधि* कुंण पामै तीर। भि० ॥ २५ ॥
बारु रे भिक्खु तुझ मुद्रा ऐन २, पेखत पामै चित्त में चैन। भि० ॥ २६ ॥
सांवली सूरत दीर्घ देह विशाल २, लाल नयण गज हस्ती नी चाल। भि० ॥ २७ ॥
जीव घणा तिरणा इण काल २, आगूंच देख्या दीन दयाल। भि० ॥ २८ ॥
त्यां जीवा रै तरण रै साज २, तूं प्रगट्यौ मोटौ मुनिराज। भि० ॥ २९ ॥
याद आवै भिक्खु दिन रैन २, तन मन विकसावे मुझ नैन। भि० ॥ ३० ॥
मरणी तेवर तै धार्‌यो शुद्ध माग २, भ्रम भञ्जन मुनि तू महा भाग। भि० ॥ ३१ ॥
अनघ अथग गुण भिक्खु मझार २, मैं सक्षेप कह्यो सुविचार। भि० ॥ ३२ ॥
नवमी ढाले भिक्खु ऋष न्हाल २, महिमागर मोटा गुण माल। भि० ॥ ३३ ॥

दुहा

भारी गुण भिक्खु तणा, कह्या कठा लग जाय।
मरण धार शुद्ध मग लियौ, कमिय न राखी काय॥ १ ॥
परम दुर्ल्लभ श्रद्धा प्रगट, आखी श्रीजिन आप।
तीजे उत्तराध्ययन तन्त, थिर भिक्खु चित्त थाप॥ २ ॥
बहुलकर्मी जीव बहु, ऊपजिया इण आर।
दिलमै बैसणी दोहिली, श्रद्धा महा सुखकार॥ ३ ॥
परम पूरी धूर पगथियौ, श्रीजिन श्रद्धा सार।
शुद्ध सरध्या समकित सही, भिक्खु कियौ विचार॥ ४ ॥
धर्म तणा द्वेषी घणा, लागू बहुला लोग।
समझाया समझै नही, अधिका मूढ अयोग॥ ५ ॥
जव भिक्खु मन जाणियौ, कर तप करूं किल्यांण।
मग नही दिखै चालती, अति घन लोग अजांण॥ ६ ॥
घर छोडी मुझ गण मझै, सञ्जम कुण लै सोय।
श्रावक नै वलि श्राविका, हुता न दिसै कोय॥ ७ ॥
एहवी करे आलोचना, एकन्तर अवधार।
आतापन वलि आदरी, संतां साथै सार॥ ८ ॥
चौविहार उपवास चित्त, उपधि ग्रही सहु सत।
आतापन लै वन मझै, तप कर तन तावंत॥ ९ ॥

*गुणदधि = गुणोदधि

ढाल : १०

[पूज्यजी पधारौ हो नगरी सेविये—ए देशी]

थिरपालजी स्वामी फतैचन्दजी, सत दोनू सुखकार हो। महामुनि।
तात सुत ने दोनू तपसी भला, सरल भद्र सुविचार हो। महामुनि।
थे भला नै अवतरिया हो, भिक्खु भरत क्षेत्र मैं ॥ १ ॥
टोला मै छता बडा स्वाम भिक्खु थकी, त्यानै बडा राख्या भिक्खु स्वाम हो।म०।
यानै छोटा करनै हू बडौ होऊ, इन मैं सू परमार्थ ताम हो। म० ॥ २ ॥
करै एकान्तर भिक्खु ऋष भला, लेवै आतापन लाभ हो। म०।
व्रत अव्रत लोका नै बतावता, जन हर्षे सुण जाब हो। म० ॥ ३ ॥
सरल भद्र कैक लागा समझवा, बारु कैक बुद्धिवान हो। म०।
ओलखणा आई श्रद्धा आचार नी, पायौ धर्म प्रधान हो। म० ॥ ४ ॥

सोरठिया

पच वर्ष पहिछाण रे, अन पिण पूरौ ना मिल्यो।
बहुल पणै वच जाण रे, घी चोपड तौ ज्याहीई रह्यौ॥

ढाल तेहिज

नित्य थिरपालजी फतैचन्दजी इम कहै, स्वामी भिक्खु नै सोय हो। म०।
क्यू तन तोडौ थे तपस्या करी, समझता दिसै बहु लोय हो। म० ॥ ५ ॥
थे बुद्धिवान थारी थिर बुद्धि भली, उत्पत्तिया अधिकाय हो। म०।
समझावौ बहु जीव सैणा भणी, निर्मल बतावौ न्याय हो। म० ॥ ६ ॥
तपस्या करा म्हे आतम तारणी, अधिक पौच नही और हो। म०।
आप तरौ थे तारौ अवर नै, जाझौ बुद्धि नौ जोर हो। म० ॥ ७ ॥
सत बडा रौ वचन भिक्खु सुणी, धार्यौ धर चित्त धीर हो। म०।
न्याय विशेष बतावता निर्मला, हरख्यौ हिवडौ हीर हो। म० ॥ ८ ॥
दान दया हद न्याय दीपावता, ओलखावता आचार हो। म०।
जिन वच करी प्रभु माग जमावता, समझ्या बहु नर नार हो। म० ॥ ९ ॥
प्रगट मेवाड मै पूज्य पधारिया, युक्ति आचार नी जोड हो। म०।
अनुकम्पा दया दान रै ऊपरै, जोडा करी धर कोड हो। म० ॥ १० ॥
अति उपकार करी पूज्य आविया, मुरधर देश मझार हो। म०।
सखर पणै वर जोडा सुणावता, इम करता उपगार हो। म० ॥ ११ ॥

व्रत अव्रत नै माड बतावता, सखरी रीत सुचङ्ग हो। म०।
श्री जिन आज्ञा मै धर्म श्रद्धावता, सुण जन पामै उमङ्ग हो। म० ॥ १२ ॥
जशधारी भिक्खु नौ जगत मै, बाध्यौ जश विख्यात हो। म०।
बुद्धि प्रबल गुण पुण्य नौ पोरसौ, स्वाम भिक्खु साख्यात हो। म० ॥ १३ ॥
शिष भारीमाल भिक्खु पै सोभता, सरल बडा सुविनीत हो। म०।
भद्र प्रकृति बुद्धि पुण्य गुणे भला, परम पूज सू प्रीत हो। म० ॥ १४ ॥
दशमी ढाले पूज दयाल नी, जाभी कीरति जाण हो। म०।
देश प्रदेश माहै जश दीपतौ, विस्तरियौ सुविहांण हो। म० ॥ १५ ॥

दुहा

साधू श्रावक ने श्राविका, सखर भला सुविनीत।
समणी न हुई स्वाम रै, वर्ष किता इम बीत ॥ १ ॥
किण ही भिक्खु नै कह्यौ, तीर्थ थारै तीन।
साध्र श्रावक नै श्राविका, समणी नही सुचीन ॥ २ ॥
तिण कारण छै तांहरै, मोदक मोटौ माण।
समणी बिण खाण्डौ सही, प्रत्यक्ष देख पिछाण ॥ ३ ॥
भिक्खु ऋष भाषै इसौ, लाडू खाण्डौ लेख।
पण चौगुणी तणौ पवर, स्वाद अनूप सपेख ॥ ४ ॥
आछी बुद्धि उत्पात सू, उत्तर दियौ अनूप।
दिन केतै हुई दीपती, समणी तीन सद्रुप ॥ ५ ॥
तीन बायां त्यारी हुई, सञ्जम लेवा साथ।
भिक्खु रिष भाषै भली, सुन्दर सीख साख्यात ॥ ६ ॥
सञ्जम लेवौ साथ त्रिण, पण तीना मै पेख।
वियोग एक तणौ हुवा, स्यूं करिवौ सुविशेष ॥ ७ ॥
सलेषणा करणी सही, त्या दोयां नै ताम।
करार पक्को इम करी, सञ्जम दीधौ स्वाम ॥ ८ ॥
कुशलाजी मटू कही, त्रीजी अजबू ताय।
एक साथै अदरावियो, साधपणी सुखदाय ॥ ९ ॥

ढाल : ११

[स्वामी ऋष रायचन्द राजा—ए देशी]

गजब गुण ज्ञान करी गाजै रे, गजब गुण ज्ञान करी गाजै।
गुरु भिक्खु पै अजब छटा हट भारीमाल छाजै॥ ए आकड़ी॥

सरल भद्र भल श्रमण शिरोमणि, ऋष रूडा राजै।
चर्ण कर्ण धर समस्या चित्त सू, भ्रम कर्म भाजै॥
गजब गुण ज्ञान करी गाजै रे। ग०॥ १॥

क्षान्त दात चित्त शाति खरालज, उभय थकी लाजै।
परम विनीत प्रीत हद पूरण, शिव रमणी साजै। ग०॥ २॥

जोडी गोयम वीर जिसी बर, शिष्य बारु बाजै।
कार्य भलाया बेकर जोडी, करत मुक्ति काजै। ग०॥ ३॥

परम पीत पूज्य सु जल पयसी, पद भवदधि* पाजै।
कठिन वचन गुरु सीख कहै तौ, समचित मुनि साजै। ग०॥ ४॥

उत्तराध्ययन छत्रीसे अध्ययने, ऊभा छता अधिकारी।
वार अनेक गुणिया विध सू, धुर गुरु आज्ञा धारी।
गजब गुण ज्ञान गरब गारी रे। ग०॥
गुरु भिक्खु पै अजब छटा, हद भारीमाल भारी॥ ५॥

भिक्खु भारीमाल नै भाषै, साभल सुखकारी।
काढै खूचणो गृहस्थ कोई तो, तेलौ डड त्यारी। ग०॥ ६॥

भिक्खु भारीमाल नै भाषै, साची कहै सारी।
तब तौ तेलौ तन्त खरौ, पिण द्वेष जगत् धारी। ग०॥ ७॥

भूठौ नाम लियै कोई जन, लागू अति लारी।
सूं करिवौ ते स्वामी प्रकाशी, आज्ञा अधिकारी। ग०॥ ८॥

भिक्खु कहै जो साचौ भापै, तो तेलौ त्यारी।
अणहुतौ कोई आल दियै, तौ सचित सम्भारी। ग०॥ ९॥

पूर्व सचित पाप उदय नौ, तेलौ तत सारी।
स्वामी नौ वच श्रद्ध कियौ, कर जोडी अगीकारी। ग०॥ १०॥

भारीमाल सुवनीत इसा भड, सुगुणा सुखकारी।
पुण्य प्रवल थी भिक्खु पाया, ममत मान मारी। ग०॥ ११॥

घोर घटा घन गरजारवसी, वाण सुधा उवारी।
भिन्न २ भेद भली पर भापत, दाखत दमितारी। ग०॥ १२॥

*भवदधि=भवोदधि

हद वचनामृत सुण जन हर्षत, निरखत नर नारी।
नयनानन्दन कुमति निकन्दन, पद सूरत प्यारी। ग० ॥ १३ ॥
हिये निर्मल हरनाथ मुनि, टोकरजी तत सारी।
परम विनीत भारमलजी, भल सत साताकारी। ग० ॥ १४ ॥
घर छोड़ी बहु थया मुनि, धन्य ज्ञान गर्व गारी।
समणी पिण बहु थई सयाणी, स्वाम शरण भारी। ग० ॥ १५ ॥
दिन २ भिक्खु नौ मग दीपत, शासण शिणगारी।
पंचम काल स्वाम प्रगटियौ, हू तसु बलिहारी। ग० ॥ १६ ॥
एकादशमी ढाल अनोपम, बारु विस्तारी।
कठा तिलक भिक्खु गुण कहियै, पामत किम पारी। ग० ॥ १७ ॥

दुहा

आगम रहिस अनुपम लही, स्वाम भिक्खु सार।
शुद्ध श्रद्धा शोधी सही, बलि आचार विचार ॥ १ ॥
दान सुपात्रे दाखियौ, सत मुनी नै सार।
असजती नै आपिया, एकंत पाप असार ॥ २ ॥
भगवती अष्टमै शतक भल, षष्टम उद्देशै आप।
असजती नै आहार दे, प्रभु कह्यौ एकत पाप ॥ ३ ॥
दै गृहस्थ नै दान ते, अनुमोदै अणगार।
निशीथ पनरमै निरखल्यौ, डड चौमासी धार ॥ ४ ॥
सावज दान प्रशसिया, हिन्सा रौ बाछण हार।
सूयगडा अग सूत्र मै, आख्यौ मुनि आचार ॥ ५ ॥
श्रावक सामायक मझै, अधिकरण अति जाण।
भगवती सप्तम शतक भल, प्रथम उद्देशै पिछाण ॥ ६ ॥
व्यावच गृहिनी वर्णवी, अणाचार मै आम।
दशवैकालिक देखल्यौ, तीजै अध्येने ताम ॥ ७ ॥
श्रावक नौ खाणौ सर्व, अव्रत मै अधिकार।
वर्णन उववाई बीस मै, बलि सूगडाग विचार ॥ ८ ॥
इत्यादिक जिनवर अखी, शोधी भिक्खु स्वाम।
बले संक्षेपे वर्णऊ, सूत्र साख सुख ठाम ॥ ९ ॥

ढाल : १२

[पूज्यने नमैं शोभो गुण करै—ए देशी]

पुत्र भगु नौ परवरौ, उत्तराध्ययन उमग । सुज्ञानी रे।
विप्र जिमाया तमतमा, चउदमैं अज्झयण सुचग । सुज्ञानी रे॥
श्रद्धा दुर्ल्लभ देवा कही ॥ १ ॥

आद्रमुनि इम आखियौ, सुगडाग छट्ठै सम्भाल । सु० ।
ब्राह्मण बे सहस जिमाविया, नरय तणा फल न्हाल ।सु०। श्रद्धा० ॥ २ ॥
आणन्द श्रावक लियौ अभिग्रही, सातमैं अग श्रीकार । सु० ।
अन्यतीर्थी नै आपू नही, असणादिक च्यारू आहार । सु० ॥ ३ ॥
प्रत्यक्ष गोसाला नै आपिया, सकडाल सेज्झा सथार । सु० ।
उपासग सातमें आखियौ, नही धर्म तप लिगार । सु० ॥ ४ ॥
दैतौ लैतौ वर्त्तमान देखनैं, मून कही तिणकाल । सु० ।
पंचम अध्येने परवरौ, सूयगडा अग सभाल । सु० ॥ ५ ॥
दुःखी मृगालोढौ देखनैं, प्रभु नैं गोतम पूछन्त । सु० ।
'किंदच्चा' दान किसौ दियौ, विपाक सूत्र मे वृतन्त । सु० ॥ ६ ॥
भाव अव्रत शस्त्र भाखियौ, ठाणाअग दशमैं ठाण । सु० ।
कोई अव्रत सेवायां धर्म कहै, जिन मारग रा अजांण । सु० ॥ ७ ॥
नव प्रकारै पुण्य नीपजै, नवमा ठाणा मे न्हाल । सु० ।
समचै नवूं ही कह्या सही, समचै मन वचन सभाल । सु० ॥ ८ ॥
करणी धर्म अधर्म नी कही, जुजूई दोनूं सुजांण । सु० ।
आचारग चौथा अध्ययन मैं, तीजी मिश्रनी करखी म ताण । सु० ॥ ९ ॥
आज्ञा माहैं धर्म आखियौ, बोलवौ जुगतौ न बाहार । सु० ।
उत्कृष्टी चरचा आचारङ्ग मैं, छट्ठै अध्ययन रै दूजै विचार । सु० ॥ १० ॥
जिन आज्ञा तणा अजाणनैं, समकित दुर्लभ सुजाण । सु० ।
आचारग चौथे अध्ययन मैं, चौथे उदेशै पिछांण । सु० ॥ ११ ॥
उद्यम करै आज्ञा विना, आज्ञा मे आलस आय । सु० ।
सुगुरु कहै वे बोल होज्यो मती, आचारग पांचमा रै छट्ठा मांय । सु० ॥ १२ ॥
आज्ञा लोपी छान्दै चालै आप रै, ज्ञान रहित गुण हीण । सु० ।
आचारग दूजा अध्ययन मैं, छट्ठे उदेशै सुचीन । सु० ॥ १३ ॥
प्रमादी द्रव्यलिंगी पासत्था, वीर कह्या आज्ञा बारै अवधार । सु० ।
आचारंग चौथा अध्ययन मैं, पिण धर्म न कह्यो आज्ञा बार । सु० ॥ १४ ॥

साधां छोड्यौ उन्मार्ग सर्वथा, आदर्यौ मार्ग उदार । सु० ।
आवसाग चौथा अध्ययन मैं, साधां छोड्यौ ते अधिक असार । सु०॥ १५ ॥
चार मंगल उत्तम शर्ण चिहुं, केवली परूप्यौ धर्म मंगलीक । सु० ।
एहिज उत्तम शरणौ पिण एहनौ, तंत आवसग मै तहतीक । सु० ॥ १६ ॥
इत्यादिक बोल अनेक छै, आगम मै अधिकाय । सु० ।
स्वामी भिक्खु शोध शोधनै, आछी रीत दिया ओलखाय । सु० ॥ १७ ॥
पाखण्डियां प्रभु पन्थ उत्थापियौ, ओलख्यो जिन वचन अमोल । सु० ।
भिक्खु आगम न्याय शोधी भला, प्रगट कीधी पाखण्ड्यां री पोल ।सु० ॥ १८ ॥
सावद्य दान मैं धर्म श्रद्धायनै, मतिहीन न्हाखे फन्द मांय । सु० ।
स्वामी सूत्र न्याय सम्भालनैं, व्रत अव्रत दीधी बताय । सु० ॥ १६ ॥
धर्म आगन्या बारै धारनैं, भेषधार्यां मांड्यौ भ्रम जाल । सु० ।
थिर नीव आज्ञा भिक्खु थापनै, बारु जिन वच थाप्या विशाल । सु० ॥ २० ॥
आगन्या बारै धर्म पाखण्ड्या आदर्यौ, वर भिक्खु पूछ्यो इम वाय । सु० ।
आगन्या बारै धर्म किण परूपियौ, इणरौ मोनै नाम बताय । सु० ॥ २१ ॥
विकल कहै म्हारी माता बांजणी, दियौ तिणरौ दृष्टान्त । सु० ।
वेश्या ना पुत्र तणुं बलि, खरा न्याय मेल्या धर खन्त । सु० ॥ २२ ॥

भिक्खु स्वाम कृत

जिण धर्म री जिन आज्ञा दियै, जिन धर्म सिखावै जिनराय । भविक जन हो ।
आज्ञा बारै धर्म केणै सिखावियौ, इणरी आज्ञा देवे कुण ताय । भविक जन हो ।
श्री जिण धर्म जिन आज्ञा तिहां ॥ १ ॥
कोई कहै म्हांरी माता है बांजणी, हूं छूं तिणरौ अंग जात । भ० ।
ज्यूं मूरख कहै जिन आज्ञा बिना, करणी कियां धर्म साख्यात । भ० ॥ २ ॥
मा बिन बेटा री जन्म हुवै नही, जनमै तिका बाज न होय । भ० ।
ज्यूं धर्म छै तौ जिन आगन्या, आज्ञा नहीं औ धर्म नही कोय। भ० ॥ ३ ॥
वेश्या पुत्र नै पूछा करै, थांरी कुंण माय नै कुण तात । भ० ।
तौ नांम वतावै किण तात रौ ज्यूं, आ आगन्या बारला धर्म नी बात। भ० ॥ ४ ॥
वेश्या री अंग जात ऊपनौ, उणरौ कुण हुवै उदेरी नै बाप । भ० ।
ज्यूं आगन्या बारै धर्म नै पुण्य तणी, जिन धर्मी तौ कुंण करै थाप । भ० ॥ ५ ॥
वेश्या री अंग जात ऊपनौं, उण लखणी हुवै उदेरीनैं वाप । भ० ।
ज्यूं आज्ञा बारै धर्म नै पुण्य तणी, भेषधारी करे रह्या थाप । भ० ॥ ६ ॥

इण आज्ञा बारला धर्म री कुण धणी, कुण आज्ञा देवै जोड्या हाथ । भ० ।
देव गुरु मून साभ न्यारा हुवा, इणरी उत्पत्ति री कुण नाथ । भ० ॥ ७ ॥
दुष्ट जीव मजारी नै चीतरा, छल सू करै पर प्राणी नी घात । भ० ।
ज्यू दुष्ट हिंसाधर्मी जीवडा, छल सू घालै लोका रे मिथ्यात । भ० ॥८॥

ढाल तेहिज

इत्यादिक आज्ञा ऊपरै, स्वामी न्याय मेल्या सुखदाय । सु० ।
भाख्या भिन्न २ भेद भली परै, कसर न राखी काय । सु० ॥ २३ ॥
बारु ढाल कही ए बारमी, साखा दान आज्ञा ऊपर सार । सु० ।
बलि श्रद्धा तणी बहु बारता, तिणमै सूत्र साख तंत सार । सु० ॥ २४ ॥

दुहा

पुण्य री करणी परवडी, श्रीजिन आगम सिन्ध ।
भिक्खु तास भली परै, प्रगट करी प्रबन्ध ॥ १ ॥
निर्जरा री करणी निमल, जिन आज्ञा मै जाण ।
ते शुभ जोग निर्वद्य त्या, पुण्य बन्ध पहिछाण ॥ २ ॥
विरुई आज्ञा बारली, सावद्य करणी सोय ।
पाप बन्धै तेहथी प्रगट, जिण थी पुण्य म जोय ॥ ३ ॥
शुद्ध बहिरावै साध नै, कहि निर्जरा एकन्त ।
भगवती अष्टम शतक भल, छट्ठै उदेशे सुचिन्त ॥ ४ ॥
शुभ लाम्बी आऊ सखर, तसु बन्ध तीन प्रकार ।
हिन्सा भूठ मेवै नही, सत भणी दै सार ॥ ५ ॥
बहिरावै वन्दना करि, आहार मनोज्ञ उदार ।
भगवती पचम शतक भल, छट्ठै उद्देशे विचार ॥ ६ ॥
वन्दणा ना फल वर्णव्या, नीच गोत क्षय नाश ।
ऊच गोत नौ बन्ध इम, उत्तराध्ययन उजास ॥ ७ ॥
व्यावच कीधा बन्ध बलि, तीर्थंकर पुण्य ताम ।
गुणतीसम ज्ञानी कह्यौ, उत्तराध्ययने आम ॥ ८ ॥
इत्यादिक आज्ञा तिहा, पुण्य नौ बन्ध पिछाण ।
समय शोध भिक्खु सखर, आखी उज्झम आण ॥ ९ ॥

ढाल : १३

[पुण्य निपजै शुभ जोग सू रे लाल—ए देशी]

दाखी व्यावच दश प्रकार नी रे लाल, ठाणां अंग दशमै ठाण हो। भविकजन।
प्रगट दशो ही साध पिछाणज्यो रे लाल, जिणसूं पुण्य बन्धे निर्जरा जाण हो। भ०॥
स्वामी श्रद्धा दिखाई श्रीजिन बयण सू रे लाल॥ १॥

कालोदाई पूछ्यौ कर जोडनै रे लाल, भगवती मै भाख्यौ भगवन्त हो। भ०।
पाप स्थानक अठारह परहस्या रे लाल, किल्याणकारी कर्म बन्धन्त हो। भ०॥ स्वा २॥

सेवै पाप स्थानक अठारह सही रे लाल, बन्धै पाप कर्म विकराल हो। भ०।
सात मै शतक सम्भालज्यो रे लाल, दाख्यो दशमै उद्देशै दयाल हो। भ०॥ ३॥

कर्कस वेदनी पिण इमहिज कही रे लाल, अठारह पाप सेव्या असराल हो। भ०।
न सेव्या अकर्कस भर्तनी परै रे लाल, भगवती सातमा रै छट्ठै भाल हो। भ०॥ ४॥

आख्यौ ज्ञाता रै आठमा अध्ययन मै रे लाल, बीस बोला तीर्थङ्कर पुण्य बन्धाय हो। भ०।
बीसू ही निर्वद्य वर्णव्या रे लाल, श्री जिन आज्ञा मै शोभाय हो। भ०॥ ५॥

सूत्र विपाक मैं सुबाहु तणी रे लाल, गौमत पूछा करी प्रभु पास हो। भ०।
'किं दच्चा' इण दान दियौ किसो रे लाल, बारु निर्वद्य करनी विमास हो। भ०॥ ६॥

अणुकम्पा सर्व जीवा री आणिया रे लाल, प्राणी ने दुख नही उपजाय हो। भ०।
सातावेदनी तिणरै बन्धै सही रे लाल, सातमै शतक भगवती सुहाय हो। भ०॥ ७॥

करणी आठ कर्म बन्धनी कही रे लाल, भगवती आठमा रै नवमै भेद हो। भ०।
तिणमै निर्वद्य करणी पुण्य तणी रे लाल, सावद्य पाप री करणी सवेद हो। भ०॥ ८॥

जयणा सू आधु आहार करै जिहा रे लाल, पाप न बन्धै पिछाण हो। भ०।
दसवैकालिक चौथे देपली रे लाल, इहा पिण जिण आगन्या अगवाण हो॥ ९॥

साधु री गोचरी असावज सही रे लाल, दशवैकालिक देख हो। भ०।
अध्ययन पचमे आंखियौ रे लाल, वाणुमी गाथा विशेप हो। भ०॥ १०॥

सात कर्म ढीला पडै सही रे लाल, शुद्ध आहार करंता साध हो। भ०।
पहिलै शतक भगवती नवमै पेखल्यौ रे लाल, एहवा श्रीजिन वचन आराध हो। भ०॥ ११॥

इत्यादिक वहु वोल अनेक छै रे लाल, श्रीजिन आज्ञा मै सोय हो। भ०।
तिणसू निर्जरा हुवै पुण्य वन्धै तिहा रे लाल, स्वामी ओलखाया सूत्र जोय हो। भ०॥ १२॥

सावज करणी आज्ञा वारै सही रे लाल, प्रगट थाप्यौ पाखण्डया पुण्य हो। भ०।
भिक्खु आगम न्याय शोधी भला रे लाल, ज्यारी श्रद्धा दिखाई जबून हो। भ०॥ १३॥

तन ढाल कही ए तेरमी रे लाल, निर्विद्य करणी पुण्य री निर्दोप हो। भ०।
भिक्खु ओलखाई भान भान सू रे लाल, मिलै तिणसू अविचल मोक्ष हो। भ०॥ १४॥

दुहा

सूत्र मै समचै कही, अणुकम्पा अधिकार ।
भिक्खु तास भली परे, शोध लीयो ततसार ॥ १ ॥
जीव असजती जेहनौ, जीवण बान्छै जाण ।
सावज अनुकम्पा सही, मोहराग महि माण ॥ २ ॥
मरणौ वछ्या द्वेप महि, जीवण राग जिवार ।
पाप आठारा मै प्रगट, भ्रमण करावै भार ॥ ३ ॥
मोहराग अनुकम्प मै, आज्ञा न दियै आप ।
इन कारण सावद्य छै, प्रगट राग है पाप ॥ ४ ॥
तरणौ बाछै ते सही, श्रीजिन आज्ञा सार ।
पाप टलावै पार कौ, ते निर्वद्य इकतार ॥ ५ ॥
निर्वद्य करुणा निर्मली, सावज अधिक असार ।
विविध सूत्र निर्णय सखर, स्वाम कियौ ततसार ॥ ६ ॥
प्राश्चित आवै प्रगट, अरिहन्त आज्ञा बार ।
अनुकम्पा सावज छै, वारु हियै विचार ॥ ७ ॥
गाय भैंस आक थोर नौ, ये चारू ही दूध ।
ज्यू अनुकम्मा जाणज्यो, मन मैं राखी सुध ॥ ८ ॥
आक दूध पीधा थका, जुदा हुवै जीव काय ।
ज्यू सावज अणुकम्पा कियां, पाप कर्म वधाय ॥ ९ ॥

ढाल : १९

[दया धर्म श्री जिनजी री वाणी—ए देशी]

अनुकम्पा त्रस जीव नी आणी,, वान्धै छोडै साधु तिण वारोजी ।
छोडता नै अनुमोद्या चौमासी, निशीथ बारमैं निरधारो जी ॥
स्वाम भिक्खु निर्णय कियौ सूत्र सू ॥ १ ॥
वाघ सिह हिसक जीव विलोकी, मार न कह मतिवन्तो जी ।
मति मार नही कहै राग आणी मुनि, सूगडाग इकवीस म सतो जी ॥
वीर असजम जीतव वरज्यौ, दशमं सूगडाग दयालो जी ।
दशमैं ठाणैं वलि आचारग मै, वारु वचन अनेक विशालो जी ॥ ३ ॥
उत्तराध्ययन वावीस मै अध्येनै, नेम पाछा फिरया जीव न्हालो जी ।
इतला जीव हणै मुझ अर्थे, वारु फल परभव न विशाल्यो जी ॥ ४ ॥

मिथिला नगरी बलती जांण नमि मुनि, स्हामी न जायी सोयो जी।
उत्तराध्ययन रै नवमै अध्ययनै, कुरणा सावज नाणी कोयो जी॥ ५ ॥
मनुष तिर्यंच देव माहो माही, विग्रह देखी विशेपो जी।
जीत हार बांछणी बरजी जिन, दशवैकालिक सात मै देखो जी॥ ६ ॥
बायरो वर्षा शीत तावडौ, कलह उपद्रव रहित सुकालो जी।
बोल सातूं ही बाछणा वरज्या, दशवैकालिक सात मै दयालो जी॥ ७ ॥
दूजै आचारंग अध्ययन दूसरै, प्रथम उद्देशै सुपन्थो जी।
माहोमा गृहस्थ लडता देखी नै मुनि, मार मत मार न कहै महन्तो जी॥ ८ ॥
तीन आत्मऋष तीजा ठाणा रै तीजै, दूंणी उपदेश हिसक देखी जी।
न समझै तौ मून राखणी निरमल, बलि एकन्त जाणी विशेषी जी॥ ९ ॥
उत्तराध्ययन रे इकवीस मै अध्ययनैं, तस्कर नैं मारतौ देखी तायो जी।
समुद्रपाल लियौ वर सजम, मोह करुणा नाणी मन मांयो जी॥ १० ॥
समचै अनुकम्पा कही ते साम्भलौ, लखण आज्ञा थकी मीढ लीज्यो जी।
प्रभु आज्ञा देवै तेतो निर्वद्य प्रत्यक्ष, आज्ञा नही ते सावज ओलखीज्यो जी॥११॥
अणुकम्पा सुलसा री आणी, सुर हरणगवेषी सोयो जी।
पुत्र देवकी रा म्हेल्या प्रत्यक्ष, अन्तगढ मै अवलोयो जी॥ १२ ॥
ईंट उपाड मूकी कृष्ण आवत, अणुकम्पा पुरुष नी आणी जी।
अन्तगढदशा मै पाठ अनोपम, जिन आगन्या नही जाणी जी॥ १३ ॥
उत्तराध्ययन बारमैं अध्ययनै, अणुकम्पा हरकेशी नी आणी जी।
छात्रा नै ऊधा पाड्या यक्ष छलकर, प्रत्यक्ष सावद्य पिछाणी जी॥ १४ ॥
रैणा देवी री करुणा करी जिन रिष, स्हामौ - जोयौ साक्षातो जी।
नवमै अध्ययने ज्ञाता माहै न्हालौ, अनर्थ दु:ख उत्पातो जी॥ १५ ॥
कोई कहै कलुणरस छै, करुणा, अणुकम्पा नही आखी जी।
अणुकम्पा करुणा दया अनुक्रोस ए, कलुण रसना नाम अमर साखीजी॥ १६ ॥
करी नेम जीवा री अनुकम्पा, अनुक्रोस पाठ आछौ जी।
तिण अनुक्रोस नौ अर्थ कुरणा टीका मै, सावज निर्वद्य कलुणरस साचो जी॥ १७ ॥
सम्यक्त्व बिन मेघ गज भव साम्प्रत, अणुकम्पा सुसला री आंणी जी।
प्रत ससार मनुष्य आयु प्रगट, प्रथम अध्ययन ज्ञाता मै पिछाणी जी॥१८॥
निज गर्भ री अणुकम्पा निमतै, रूडी भोगव्यौ धारी राणी जी।
प्रथम अध्ययन ज्ञाता माही प्रत्यक्ष, जिहां जिन आगन्या किम जाण जी॥१९॥
अभयकुमार नी कर अणुकम्पा, दौहलौ पूर्ख्यौ धारणी री देवी जी।
ए पिण ज्ञाता रै प्रथम अध्ययनैं, साम्प्रत सावज जाणौ स्वयमेवो जी॥ २०॥

शीतल तेजू लेश्या म्हेली स्वामी, अणुकपा गोशाला री आणी जी ।
सूत्र भगवती पनरमै शतके, वृति माहैं सराग बखाणी जी ॥ २१ ॥
पन्नावणा सूत्र रै छत्रीस मैं पद, लब्धी तेजू फोड्या क्रिया लागै जी ।
तिणरा दोय भेद उष्ण शीतल तेजू छै, शीतल तेजू फोडी वीर सागै जी ॥ २२ ॥
कही साधु री हर्ष खेद्या वैद नै क्रिया, नही साधु रै क्रिया निहाली जी ।
पिण धर्म अन्तराय साधु रै पाडी वैद, भगवती सोल्मा रै तीजे भाली जी ॥ २३ ॥
इत्यादिक बोल अनेक आख्या छै, समचै सूत्र माही सोयो जी ।
जिन आज्ञा नही ते सावज जानौ, आज्ञा ते निर्वद्य अवलोयो जी ॥ २४ ॥
नेम समुद्रपाल गज नै नमि ऋपि, आतम ऋपि अवधारी जी ।
निर्वद्य आगन्या मै छै निर्मल, सावज भ्रमण ससारो जी ॥ २५ ॥
स्वाम भिक्खु ए सूत्र शोधी, अनुकम्पा ओलखाई जी ।
विविध हेतु न्याय जुगति वताया, कुमि१ न राखी काई जी ॥ २६ ॥
भेषधारी भ्रम पाडै भौला ने, दया मोहराग नै दिखाई जी ।
सिद्धन्त रा जोर सू भिक्खु स्वामी, असल श्रद्धा ओलखाई जी ॥ २७ ॥
चवदमी ढाल सुन जन चातुर, अनुकम्पा निर्वद्य आदरजो जी ।
रूडी आसता भिक्खु नी राखी, पाखण्ड मत परहरो जी ॥ २८ ॥
दान दया सूत्र साख दिखाई, खण्ड प्रथम धर खतो जी ।
सूत्र नेश्राय ए ज्ञान स्वाम नौ, मति ज्ञान नौ भेद सुततो जी ॥ २९ ॥

कलश

जय जय कारण दुख विडारण, सुमग धारण स्वाम जी ।
शुद्ध सुमति सारण कुमति वारण, जगत तारण काम जी ॥ १ ॥
प्राक्रम मृगपति सखर धर चित्त, ज्ञान नेत्रे रिषी गुणी ।
जिन मग्ग केतु हद सुहेतु, नमो भिक्खु महा मुनि ॥ २ ॥

●

द्वितीय खण्ड

सोरठा

प्रथम खण्ड पहिछाण रे, रचियौ रूडी रीत सूं।
खण्ड दूजै गुण खाण रे, दृष्टन्त कहू दयाल ना॥

दुहा

आख्यी दान दया असल, जिम भाख्यो जिनराज।
बुद्धि उत्पत्तिया महाबली, साध्यौ शिव पन्थ साज॥ १ ॥
मतिज्ञान महिमा निलौ, दोय भेद तसु देख।
सूत्रे नेश्राय सिद्धन्त छै, सूत्र बिना सम्पेख॥ २ ॥
सूत्र कहीजे बात सहु, निर्मल सूत्र नेश्राय।
बुद्धि सू मिलती बात बर, सहु असूत्र नेश्राय॥ ३ ॥
सूत्र साख श्रद्धा सखर, स्वाम दिखाई सार।
सूत्र तणी नेश्राय शुद्ध, आगम अर्थ उदार॥ ४ ॥
चार बुद्धि सू चिन्तवी, दियै विविध दृष्टान्त।
असूत्र नेश्राय ओलखौ, बर नदी बिरतत॥ ५ ॥
हिवे असूत्र नेश्राय हद, दिया स्वाम दृष्टात।
मति ज्ञान महा निर्मली, स्वाम तणौ शोभंत॥ ६ ॥
केवल उत्तरतौ कह्यो, मति ज्ञान महाराज।
पज्जवा लेख पिछांणज्यो, सूत्र भगवती साज॥ ७ ॥
सखरौ भिक्खु स्वाम नौ, महा मोटौ मति ज्ञान।
साचा न्यायज शोधिया, दृष्टान्त देई प्रधान॥ ८ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि सूं अख्या, मिलता न्याय मुणन्द।
केशी नी परै शुद्ध कथा, दृष्टान्त अति दीपंत॥ ९ ॥

ढाल : १५

[अभड भड रावण इन्दा सू अडियो रे—ए देशी]

पाखण्डिया सावज दान परूपियौ, त्यानै भिक्खु पूछ्यौ तिणवार।
सावज मै पुण्य श्रद्धियौ, एक साभलज्यौ हेतु उदार॥
स्वामी वुद्धि सागरू, वारु मेल्या न्याय विशाल।
अधिक गुण आगरू भल, उत्पत्तिया वुद्धि भाल॥ १॥

पाच सीरी वायौ खेत परवरौ जी, चणा तणो चित्त धार।
नाज पाच सौ मण चणा निपना, तव मतौ कियौ तिणवार॥ २॥

घर माहैं तौ धन आपारै घणु जी, करां दान धर्म कहि वाय।
एक जणै सौ मण चणा आपिया, वहु भिख्यारया नै वोलाय॥ ३॥

दिया सौ मण चणां रा दूसरै, सेकाय भूगरा सोय।
त्यारी गुगरी तीजै करायनै, जिमाया भिखारया नै जोय॥ ४॥

चौथै रोट्या सौ मण चणा तणी जी, कडी पाखती कराय।
भिखारी राकादिक भणी जी, जुगति सू दिया जिमाय॥ ५॥

सौ मण चणा पाचमै वोसिराविया, तिणरै हाथ लगावा ना त्याग।
कहौ धर्म पुन्य घणो केहनै, सखरी उत्तर देवौ सताव॥ ६॥

भगवन्त री आज्ञा किण भणी, कुण आज्ञा वार कहात।
एम सुणने उत्तर आयौ नही, ऐसी भिक्खु नी वुद्धि उत्पात्त॥ ७॥

दान ऊपर दृष्टात दूसरौ, स्वाम भिक्खु दियौ सुखदाय।
हलुकर्मी साभल हर्षं घणा, भारीकर्मी रै द्वेप भराय॥ ८॥

भिख्या मागतौ डोकरौ, भम रह्यौ अभ्यागत दुखियौ एक।
धर्मात्मा भूखा नै धान द्यौ, विरुआ वोलै वचन विशेप॥ ९॥

एक जणै अणुकम्पा आणनै, सेर चणा दिया सोय।
गुणग्राम भिखारी करे घणा, आशीश देवै अवलोय॥ १०॥

आगै जाई एम वोलियौ, सेर चणा दीवा सेठ एक।
पिण दाँत नही कोई पीस दौ, वारु छै कोई धर्मी विशेप॥ ११॥

एक वाई अणुकम्पा आण नै, पीस दियो कैहत पाण।
वलि आगै जाई इम वोलियौ जी, छै कोइ धर्मी पिछाण॥ १२॥

एक सेठ चणा सेर आपिया, पीस दिया दूजी पुण्यवांन।
आटौ फाकणी आवै नही, जिण सूं रोटी कर दौ धर्म जान॥ १३॥

अनुकम्पा तीजी आणनैं, सेर चूणा रा फांफडा सोय।
सिन्धो घाल कर दीधा सही, जीमी तृप्त हो गयी जोय ॥ १४ ॥
तृषा लागी तिण अवसरे, आगै जाई बोल्यौ वान।
सेर चणा दिया एक सेठ जी, पीस दिया दूजी पुन्यवान ॥ १५ ॥
झट रोट्यां कर तीजी जीमावियौ, अति लागी है तृपा अथाय।
है धर्मात्मा एहवौ, प्राण जातानैं पाणी पाय ॥ १६ ॥
चौथी वाई अणुकम्पा चित्त धरी, पायौ त्रस सहित काचौ पाण।
कहौ धर्म घणौ हुवो केहनैं, पाछै कह्या च्यारु ही पिछाण ॥ १७ ॥
आज्ञा बारला दान ऊपरै, दियौ स्वामी भिक्खु दृष्टन्त।
प्रत्यक्ष कारण पापना जी, किण विध पुन्य कहत ॥ १८ ॥
हलुकर्मी सांभल हर्षे हियै, भारीकर्मी सुणे भिड़कन्त।
सूत्र न्याय साचा सही, धारै उत्तम पुरुष धर खत ॥ १९ ॥
पवर ढाल कही पनरमी, स्वामी थापी है श्रद्धा सार।
उत्पत्तिया बुद्धि ओपती, बलि आगलि बहु विस्तार ॥ २० ॥

दुहा

जाब सुणी बुद्धिवान जन, चित्त पामै चमत्कार।
साभल केइक समझिया, पाम्या हर्ष अपार ॥ १ ॥
केयक बलि इण पर कहै, थे दान दया दी उथाप।
श्रद्धा किहां ही ना सुणी, प्रत्यक्ष श्रद्धौ पाप ॥ २ ॥
भिक्खु बलता इम भणौ, पज्जुसणा मै पेख।
आखा आटौ आदि दै, आपै नही अशेष ॥ ३ ॥
पर्व्व दिवस पज्जुसणा, धर्म्म तणा दिन धार।
अधिक धर्म्म तिहां आदरै, पाप तणौ परिहार ॥ ४ ॥
दान अनेरा नै दिया, जाणैं धर्म्म जिवार।
कीधौ बध किण कारणै चित्त सू करौ विचार ॥ ५ ॥
एह बात है आगली, परम्परा पहिछाण।
कही ए थाप करी किणैं, वारु करौ विनाण ॥ ६ ॥
हूं तौ हिवडाइज हुवौ, जद तौ नही थी जाण।
जाव दियौ अति जुगत सूं, सुण हरष्या सुविहाण ॥ ७ ॥
सूत्र न्याय शुद्ध परम्परा, सखर मिलावैं स्वाम ॥ ८ ॥
जग पूर्व धारी जिसा, औजागर अभिराम ॥ ८ ॥

अपर दान रै ऊपरै, दीधा वलि दृष्टान्ति।
विवध न्याय वर वारता, साभलजो चित्त शाति ॥ ६ ॥

ढालः १६

[घोडी री देशी]

शहर खेरवै पधारस्या स्वामी, ओटी शाल प्रश्न पूछयौ एम।
श्रावक कसाई गिणौ थे सरीखा, कहै खोटी श्रद्धा इसडी धारा म्हे केम ॥
स्वाम भिक्खु रा दृष्टान्त सुणजो ॥ १ ॥
स्वाम कहै किम गिणा सरीखा, जब ते कहै श्रावक नै दिया पाप जोणौ।
कसाई नै दिया पिण पाप कहौ छो, प्रत्यक्ष दोनू सरीखा इण न्याय पिछाणौ ॥ २ ॥
स्वाम कहै इम नही सरीखा, श्रावक कसाई बे जुआ सपेख।
ओटी कहै दोनू थया सरीखा, दोया नै दिया पाप कहौ तै लेख ॥ ३ ॥
पूज कहै थारी माता नै पायौ, सचित पाणी री लोटी भर सोय।
कहौ तिणमै थारै निपनौ काई, ओटौ कहै पाप छै अवलोय ॥ ४ ॥
पुनरपि स्वाम औटा ने पूछयौ, पाणी लोटी भर वेश्या नै पायौ।
धर्म थयौ कै पाप हुवौ थानै, ओटौ कहै तिणमै पिण पाप थायौ ॥ ५ ॥
पूज कहै दोया मै पाप थायौ, थारी माता नै वेश्या सरीखी थारै न्यायौ।
जो माता वेश्या नै न गिणौ सरीखी, तौ श्रावक कसाई सरीखा न थायौ ॥ ६ ॥
अति कष्ट थया लोक कहै ओटै जी, माता नै वेश्या सरीखी मानी।
चित्त माहै चमत्कार लहै चातुर, अणहुता अवगुण धारै अग्यानी ॥ ७ ॥
सवत् अठारै पैतालीसै स्वामी, प्रगट चौमासौ कियौ पीपार।
जनक हस्तु कस्तु नौ जगु गाधी, वारु चरचा सू श्रद्धा चित्त धार ॥ ८ ॥
भेषधारी तिणनै लागा भडकावा, खोटी श्रद्धा भीखणजी री स्वार।
एक गृहस्थ श्रावक नै वासती आपी, पाप कहै तिण माही अपार ॥ ९ ॥
वलि किणहि गृहस्थ री वासती चोर ले गयौ, तिणरौ पिण गृहस्थ नै पाप बतावै।
श्रावक नै चोर गिणै इम सरीखौ, जब जगु स्वामी जी नै पूछयौ प्रस्तावै ॥१०॥
पूज कहै उणनैज पूछणौ, चद्दर थारी एक ले गयौ चोर।
एक चद्दर थे श्रावक नै आपी, जद थानै इड किणरो आवै जोर ॥११॥
तस्कर चद्दर लेई गयौ तिणरौ, प्राश्चित मूल न सरधै सपेख।
श्रावक नै दिया री प्राश्चित सरधै, जद तौ ढंगौज खोटौ ठहरचौ त्यागै लेख ॥१२॥
जाब सुणी समज्यौ जगु गाधी, ऐसी स्वामीजी री बुद्धि उन्यान।
सिद्धात री सरधा नै थापण साची, न्याय विविध मेलव्या स्वामी नाथ ॥१३॥

सोलमी ढाल मैं भिक्खु स्वामी री, ओलखाई बुद्धि श्रद्धा उदार।
श्री जिन आगन्या धारी सिर पर, सरधा दिखाय दीधी तत सार ॥ १४ ॥

दुहा

श्रद्धै सावज दान मैं, पुण्य मिश्र एकन्त।
पूछ्या कहे मुझ मून है, केई इसड़ी कपट करत ॥ १ ॥
पूछ्यां न कहै पाधरो, पुन्य मिश्र पख एक।
आख्यो हेतु ओपतो, वारु स्वाम विशेष ॥ २ ॥
किण ही पुरुष पूछा करी, नार भणी पिउ नाम।
थारी धणी रौ नाम कुण, स्यूं पेमौ है ताम ॥ ३ ॥
कहै पेमौ क्यानै हुवै, वलि पूछ्यौ तिणवार।
नाथ् नांम है तेहनौ, कत तणौ अवधार ॥ ४ ॥
कहै नाथू क्यानै हुवै, वलि पूछ्यौ सुविशेष।
पाथू है नांम तेहनौ, तुझ पीतम सपेख ॥ ५ ॥
कहै पाथू क्यानै हुवै, इम बहु नांम विचार।
सागे नाम आया थका, रहै अबोली नार ॥ ६ ॥
सैणौ तव जाणै सही, इणरा पिउ रौ नाम।
एहिज छै तिण कारणै, मून रही इण ठाम ॥ ७ ॥
ज्यूं सावज दान मैं पाप है, कहै क्यानै हुवै पाप।
मिश्र पूछ्या पिण इम कहै, क्यानै है मिश्र थाप ॥ ८ ॥
पुन्य पूछ्या सू मून रहै, न करै तास निखेह।
सैणौ जब जाणै सही, इणरै श्रद्धा एह ॥ ९ ॥

ढाल : १७

[प्रभवौ मन मैं चिन्तवै—ए देशी]

पूज्य भीखणजी पधारिया, वर इक गाम विमास।
साध अमर सिंघजी तणा, पूज आया त्या पास ॥ १ ॥
प्रश्न भिक्खु स्वाम पूछियौ, अनुकम्पा मन आण।
मरता नै मूला दिया, जिणमैं सू हुवौ जाण ॥ २ ॥
तांमस आणी ते कहै, प्रश्न इसौ पूछन्त।
जे मिथ्याती जाणियै, भिक्खु वलि भाषंत ॥ ३ ॥
पूछण वालै पूछियौ, समकती होवै सोय।
अथवा मिथ्याती मानवी, जे पिण पूछै जोय ॥ ४ ॥

उत्तर आपै एहनों, जो मिथ्याती होय जाय।
उत्तर तौ आपौ मति, नही तौ आखौ न्याय ॥ ५ ॥
तव ते वोल्या तडकनै, मूला माहै पाप।
पूज्य कहै पुन्य पाप विहु, के केवल पाप किलाप ॥ ६ ॥
देंण वाला नैं दाखियें, पुन्य पाप पिछाण।
जाव न देवै जाण नैं, वलि भिक्खु कहै वाण ॥ ७ ॥
केई मूला खवाया मिश्र कहैं, इम पूछ्या कहै आम।
मिश्र कहै ते पापी सही, तव स्वामी कहै ताम ॥ ८ ॥
केई मूला खवाया पाप कहै, वलि ते वोल्या वाण।
पाप कहै सो पापिया, झूठा एकन्त जाण ॥ ९ ॥
फिर स्वामी पूछा करी, मूला खवायां माण।
कई एक पुण्य कहैं सही, जव ते वोल्या जाण ॥ १० ॥
पुण्य कहै सोही पापिया, सुणनै स्वाम विचारं।
श्रद्धा पुन्य री दीसै सही, बात तीनूई वारे ॥ ११ ॥
वलि मन भिक्खु विचारियौ, कहिण वाला नैं कह्यौ पापी।
पिण श्रद्धण वाला पुरुप नी, थिर पूछा करू थापी ॥ १२ ॥
पूज इम चिन्तवी पूछियौ, अनुकम्पा आण।
मूला देवै ते मनुष्य नैं, पुण्य केई श्रद्धे पिछाण ॥ १३ ॥
स्वाम तणी पूछा साभली, वलि बोल्यो ते वाण।
मन आसी ज्यू सरघसी, जव स्वाम लियौ जाण ॥ १४ ॥
इम चिन्तवी स्वामी ऊचरै, मूला खवाया माण।
प्रगट पुन्य प्ररूपी नही, पिण श्रधा पुन्य री पिछाण ॥ १५ ॥
इत्यादिक जाव अनेक सू, कप्ट किया अधिकाय।
आया ठिकाणं आपणं, स्वामी महा सुखदाय ॥ १६ ॥
मोटी मति महाराज नी, वारु वृद्धि सुविचार।
जाव लियौ अति जुगत सू, ऊपर सूं अववार ॥ १७ ॥
सखर ढाल कही मतरमी, आगं वहु अधिकार।
स्वाम दृप्टान्त मुणी करी, चतुर रहे चिमत्कार ॥ १८ ॥

दुहा

भीखणजी स्वामी भणी, किणही पूछा कीध।
दान अनन्तो न दिया, पाप कह्यो प्रसिद्ध ॥ १ ॥

कड़वा फल किण कारणैं, निर्मल बतावौ न्याय।
कहै भिक्खु किण सेठ रै, नवली कडी बधाय ॥ २ ॥
ते नवली रुपया तणी, तस्कर देखी ताम।
सेठ तणै लारै हुवौ, रुपया लेवण काम ॥ ३ ॥
पूठै तस्कर पेखनै, साहुकार न्हासंत।
लारै तस्कर दौडतो, इतलै पग अखुडत ॥ ४ ॥
पग आखुड हेठौ पड्यौ, चित्त बिलखाणौ चोर।
इतलै किण हीक मानवी, अमल खवायौ जोर ॥ ५ ॥
अमल खवाय पायौ उदक, सैठौ कियौ शूर।
दुश्मन ते तिण सेठ नौ, साझ दियौ भरपूर ॥ ६ ॥
अमल खवायौ ते पुरुष, बैरी सेठ नौ बाध।
साझ दियौ बैरी भणी, अरि थी हुवै उपाधि ॥ ७ ॥
ज्यू छकाय ना हिंसक भणी, जे नर पोषै जाण।
ते बैरी षट काय नौ, प्रत्यक्ष हियै पिछाण ॥ ८ ॥
हणण हार षट काय नौ, तसु पोषे कियौ शूर।
तिण कारण जीवा तणौ, बैरी ते भरपूर ॥ ९ ॥

ढाल : १८

[सीता दियै रे आलभडो—ए देशी]

सावज दान श्रद्धायवा, दियौ भिक्खु दृष्टान्त।
खेत बायौ एक करसणी, पाकौ खेत अत्यत।
तत दृष्टात भिक्खु तणा ॥ १ ॥
इतलै धणी रै वालौ हुवौ, दूखणी आयौ देख।
किणहिक औषध दे करी, सात री कियौ विशेप। त० ॥ २ ॥
ताजौ हुवौ तिण अवसरै, खेत काट्यो धर खत।
साझ दैण वाला नै सही, लागै पाप एकन्त ॥ ३ ॥
कहै पाप हुवै खेत काटिया, ती काटण वाला नै सोय।
साझ देई नै साझौ कियौ, तिणनै पिण पाप जोय ॥ ४ ॥
तिमहिज और पापी तणे, साता कीधी विशेप।
तिण माहै धर्म किहा थकी, दिल माहै देख ॥ ५ ॥
कैकेडक भेपधारी कहै, धन दीधा धर्म।
वले कहै ममता उतरी, भोला रे पा[illegible] भ्रम ॥ ६ ॥

पूज्य भिक्खु तिण ऊपरै, निरमल मेला न्याय।
भ्रम लोका री भाजवा, स्वामी महा सुखदाय॥ ७ ॥
किणही मनुष्य रै खेती हुती, वीस विघा विचार।
दश विघा ब्राह्मण नें दिया, धर्म अर्थे धार॥ ८ ॥
वीस हला री खेती विषै, दश हल खेती दीध।
ए पिण ममता उतरी, तिणरै लेखै प्रसिद्ध॥ ९ ॥
कह्यो परिग्रह नव प्रकार नों, दोपद चौपद देख।
पाच दास्या दीधी पर भणी, पाच गाया सपेख॥ १० ॥
ए पिण ममता ऊतरी, तिणरै लेखै तहतीक।
धर्म कहै रुपया दिया, तो इणमें पिण धर्म ठीक॥ ११ ॥
दास्या खेती गाया दिया, पुन्य री अश म पेख।
इमहिज रुपया आपिया, धर्म पुन्य म देख॥ १२ ॥
पाप अठारा मे पचमी, परिग्रह महा विकराल।
सेव्या सेवाया पाप छै, भगवती मैं सम्भाल॥ १३ ॥
सावद्य साता करै सही, इणसू पाप एकन्त।
जिन आज्ञा वाहिर जाणज्यो, सूयगडा अङ्ग शोभत॥ १४ ॥
भिक्खु स्वाम भली परे, ओलखाया ऐन।
हलुकर्मी हरष्या घणा, चित्त में पाम्या चैन॥ १५ ॥
आखी ढाल अट्ठारमी, वारु स्वामी ना वोल।
वोल सार ही मुहामणा, आछा नै अमोल॥ १६ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नें कह्यो, असजती अवलोय।
तिणनें दान देवा तणा, त्याग करावो मोय॥ १ ॥
भिक्खु स्वामी इम भणें, सरध्या मुझ वच सोय।
प्रतीतिया रुचिया पवर, जिणसू त्याग मुजोय॥ २ ॥
कै म्हानें भाडण भणी, करें इसा पचखाण।
इम कही कष्ट कियो अति हि, सखर स्वाम वृद्धिवान॥ ३ ॥
किणहिक भिक्खु नें कह्यो, टोला वाला ताहि।
प्रत्यक्ष पुन्य प्ररूपं नही, सावज दान रै माहि॥ ४ ॥
स्वाम कहै कोई अनतरो जल लोटो भर जाण।
म्हारै हाटे सूप-यो कहो किण नें वाण॥ ५ ॥

नाम पिउ नौ ना लियो, पिण सूंप्यौ कर सान।
इम सानी कर पुन्य कहै, पुन्य री श्रद्धा पिछाण॥ ६ ॥
किणहिक स्वामी नै कह्यो, पड़िमाधारी पेख।
दान निर्दोषण तसु दिया, सूं फल कहौ विशेष॥ ७ ॥
स्वाम कहै लै सूझती, पडिमाधारी पिछाण।
तसु फल होवै ते सही, दैणवाला नै जाण॥ ८ ॥
लैण वाला नै पाप कहै, पाप लगायौ दातार।
तिण मै पुन्य किहा थकी, स्वाम जाब श्रीकार॥ ६ ॥

ढाल : १६

[वीर सुणौ मोरी विनती—ए देशी]

काचौ पाणी पाया माहै पुन्य कहै, स्वामी दीधो हो तेहनै दृष्टन्त।
कोई खाई लुटावै पारकी, थारै लेखै हो इणमै पुन्य एकन्त॥
तत दृष्टन्त भिक्खु तणा॥ १ ॥
खाई लुटाया जो पाप है, पाणी पाया हो किम होसी पुन्य।
दोनूं बरोबर देखल्यौ, सावद्य दोनू हो कण रहित है सुन्य।त०॥२॥
अव्रत मे अन धन दिया, भेषधारी हो थापै धर्म नै पुन्य।
स्वाम भिक्खु दियो शोभतौ, हद हेतु हो सुणज्यो तन मन॥ ३ ॥
लाय मा सूं काढै दूजी लाय मै, धन न्हाख्या हो काम न आवै ते धार।
आप कन्है धन अव्रत मै हुतौ, अव्रती ने हो दियौ अव्रत मझार॥ ४ ॥
लाय लागा गृहस्थ रौ घर जलै, बलतौ देखी हो किण ही धन काढ्यौ बार।
ले न्हाख्यौ दूजी लाय मै, तत्खिण आयौ हो सेठ पास तिवार॥ ५ ॥
अहो सेठजी तुझ घर आग थी, सखरी वस्तु हो धन काढ्यौ म्है सार।
सेठ सुणी हरख्यौ सही, ते धन किहा छै हो आपौ वस्तु उदार॥ ६ ॥
औ कहै न्हाख्यौ दूजी आग मै, सेठ जाण्यौ हो पूरौ मूरख सोय।
लायमा सूं काढी न्हाख्यौ लाय मै, काम न आवै हो तिण लेखै कोय॥ ७ ॥
अव्रत रूप लाय हुती आप रै, अव्रती नै हो दीधौ औरनै धन।
लाय लगाई और रै, प्रत्यक्ष देखी हो तिणमै किम हुवै पुन्य॥ ८ ॥
श्रावक रै त्याग तेती व्रत सही, अव्रत जाणी हो बाकी रह्यौ आगार।
अव्रत सेवावै और री, तिण माहै हो धर्म नही लिगार॥ ६ ॥
अव्रत व्रत न ओलखै, भेषधारी हो करै भेल सभेल।
दृष्टान्त स्वाम दियौ इसो, घी तम्बाकू हो भेल्यां कदेय न मेल॥ १० ॥

औषध जीभ आख्या तणी, आहमी साहमीं हो घाल्या दोनूं विलाय।
ज्यूं अव्रत मैं धर्म सरधिया, पाप व्रत मैं हो सरध्या दुर्गति जाय ॥ ११ ॥
शोरीगर रा घर मैं शोर वासदी, न्यारा राख्या हो घर विणसै नाय।
ज्यूं व्रत अव्रत फल जु जूआ, जन जाण्या हो समकित न जलाय ॥ १२ ॥
प्रगट पसारी रै पारखा, न्यारा राखै हो मिश्री सोमल न्हाल।
ज्यूं धर्म अधर्म खाती जू जुवी, सैंठी समकित हो शुद्ध सरध्या सभाल ॥ १३ ॥
कोई कहै गृहस्थ री छान्दो अछै, दान देवै ही गृहस्थ नै देख।
भिक्खु कह्यौ छान्दा मैं तो धूल छै, घृत तौ छै हो कूडी मे सपेख ॥ १४ ॥
मेदी खाण्ड घृत शुद्ध मिल्या, सखरा कहियै हो लाडू सरस सवाद।
ज्यूं चित्त वित्त पात्र तीनूं जूड्या, अति फल लहियै हो भव दधि तिरियै अगाध ॥१५॥
घृत खाण्ड विहु शुद्ध घणा, मैंदा री जागा हो लाद है माय।
ज्यूं चित्त वित्त दोनूं चोखा मिल्या, पात्र जागा हो असाधु नै वहिराय ॥ १६ ॥
घृत मैंदी चौखा घणा, खाण्ड जागा हो माहै घाली धूल।
ज्यूं चित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जूड्या, वित्त जागा हो असूझतौ विष तुल्य ॥ १७ ॥
खाण्ड मेदो चौखा खरा, घृत जागा हो माहे घाल्यौ गौमूत।
ज्यूं वित्त पात्र दोनूं ही शुद्ध जूड्या, चित्त जागा हो दैवणवालो कपूत ॥ १८ ॥
घृत री ठौर गौमूत ह्वै, खाण्ड ठामै हो घाली धूल महा खार।
लाद मैंदा री जायगा, आवी मिलिया हो तीनूं अधिक असार ॥ १९ ॥
ज्यूं दैणवालौ ही असूझती, वस्तु दीधी हो असूझती जवून।
अव्रत माही लेवाल अगीकरी, प्रत्यक्ष पेखौ हो इणमैं किम हुवै पुन्य ॥ २० ॥
चित्त वित्त पात्र चोखा मिल्या, कर्म निर्जरा हो पुन्य वन्ध कहिवाय।
एक अधूरो तीना मझे, थिर चित्त देखौ हो तिणमे पुन्य न थाय ॥ २१ ॥
दृष्टान्त ऐसा भिक्खु दिया, स्वामी मेल्या हो सूत्र नै न्याय सिंध।
या विन इमडी कुण कथै, पूर्वधारी हो जैसा भिक्खु प्रबन्ध ॥ २२ ॥
पचम आरै प्रगट्या, आप ओजागर हो आपमूं अनुराग।
हूं पिण हिवडा ऊानौ, साची श्रद्धा हो पामी ए मुझ भाग ॥ २३ ॥
आखी ढाल उगणीसमी, चित्त उमग्यो हो भिक्खु आया चीत।
याद आया हो हियौ हुल्सै, गुण गावत हो हुवौ जन्म पवित्र ॥ २४ ॥

दुहा

सखरो मारग सोधने, दियो स्वाम उपदेश।
कुबुद्धि कुगला केलवी, पूछै प्रश्न अनेक ॥ १ ॥

थानै असाध सरधनै, दीधी मैं तुझ दान।
तिणरी मुझनै स्यूं हुवौ, इम पूछ्यौ किण जान॥ २॥
भिक्खु कहै मिश्री भली, किण खाधी विष जाण।
मन सुख पावै के मरै, उत्तर एह पिछांण॥ ३॥
ज्यूं थे असाध जाणने, दियौ सूझतौ दान।
अजाणपणौ घट थाहरै, पात्र उत्तम फल जान॥ ४॥
इत्यादिक बहु आखिया, दान ऊपर दृष्टन्त।
किंचित् मात्र मै कथ्या, बधतौ जाणी ग्रन्थ॥ ५॥
विविध दया ऊपर बलि, हेतु महा हितकार।
आक थोहर रा दूध सम, सावज दया असार॥ ६॥
अनुकम्पा इहै लोक री, जीवणो बाछै जाण।
मोह राग माहैं तिका, तिणमैं धर्म म ताण॥ ७॥
जे आरम्भ सहित जीवणौ, असजती रौ अभ।
जिण बाछ्यौ ए जीवणौ, तिण बाछ्यौ आरम्भ॥ ८॥
सूत्रे श्री जिन बरजियौ, असजम जीतब आस।
भिक्खु स्वाम भली परै, मेल्या न्याय बिमास॥ ९॥

ढाल २०

[नगर सोरीपुर राजवी रे—ए देशी]

केई पाखण्डी इम कहै रे, लाय बुझावै लोयो।
अल्प पाप बहु निर्जरा रे, दम्भ करी थापै दोयो।
दम्भ करी दोय थापै बेशर्मो, तेउ जीव मुआ ते पाप कर्मो।
आगला जीव बच्या तिणरो धर्मो।
भौला तणै मन पाडै भ्रमो जी, सहु कोई जी हो॥ १॥
उत्तर भिक्खु आपियौ रे, साभलज्यो चित्त लायो।
हलुकर्मी सुण हर्षियै रे, भारीकर्मी भिडकायो।
भारीकर्मी भिडकै लहै तापो, तेउ जीव मुवा रो कहै पापो।
और बच्या तिण रौ धर्म थापो, कर रह्या मूरख कूड किलापो।
तिणरी श्रद्धा रौ लेखौ सुण आपो, नाहर मार्‍या एकलौ नही पापो जी॥ २॥
नाहर हिल्यौ एक आकरौ रे, करै मनुषां रौ खैगालो।
गायां भैस्यां अजा बाकरा रे, सांभर रोझ सियालो।
सांभर रोझ सियाल पिछाणौ, प्रत्यक्ष लूंट रह्यौ पर प्रांणो।
जीव घणां रौ करै घमसाणो, पङ्क प्रभा उत्कृष्ट पयांणी जी।स०॥३॥

किणही विचार इसौ कियौ रे, एतौ है मांस आहारी ।
ए जीविया जीव मारै घणा रे, एहवा अध्यवसाय धारी ।
एहवा अध्यवसाय सू सिंह मारी, उणरी श्रद्धा रै लेखै विचारी ।
नाहर रौ पाप हुवौ निरधारी, और वच्या रौ धर्म हुवौ भारी जी ।म०।।४।।

वीजौ दृष्टन्त भिक्खु दियौ रे, छै एक पापी कसाई ।
पाच पाच सौ भैंसा नै मारतौ रे, करुणा न आणै काई ।
मन माहैं करुणा आणै ने काई, किण ही विचार कियौ मन माही ।
एहनै मार्या वहु जीव वचाई ।
एम विचारी नै मारयो कसाई, घणा जीवा नै वचावण ताई जी ।स०।।५।।

लाय बुझाया मिश्र कहै रे, तिणरी श्रद्धा रै लेखौ ।
कसाई नै मार्या पिण मिश्र छै रे, पोता नी श्रद्धा पेखौ ।
पोतारी श्रद्धा पेखौ निज नैणी, पाप कसाई नौ ए सत्य वैणी ।
जीव घणा वच्या रौ धर्म लैणी ।
पोता री श्रद्धा लेखै कहि देणी, कसाई नै मार्या एकन्त पाप न कैहिणी जी ।स०।।६।।

तीजौ दृष्टन्त स्वामी दियौ रे, उरपुर एक अजोगो ।
घणा ऊंदरा ना गटका करै रे, मनुष्य पहुचावै परलोको ।
मनुष्य मार परलोक पहुचावै, घणा पख्या ना अण्डा पिण खावै ।
सर्प घणा जीवा नै सतावै, उत्कृष्टे धूमप्रभा लग जावै जी ।स०।।७।।

किण ही विचार इसौ कियौ रे, सर्प घणा नै सतावै ।
एक सर्प मार्या थका रे, जीव घणा सुख पावै ।
जीव घणा सुख पावै सुजाणी, अनुकम्पा वहु जीवा री आणी ।
सर्प मार वचाया वहु प्राणी, लाय बुझाया कहै मिश्र वाणी ।
तिणरै लेखै इणमें मिश्र पिछाणी जी ।स०।।८।।

चौथौ दृष्टान्त स्वामी दियौ रे, कोई पुरुष नौ एहवौ आचारो ।
वाप मुवा पहिली कह्यौ रे, काल करता तिणवारो ।
काल करता सुत कही थी वाणो, सुखे तुम्हारा निसरो प्राणो ।
था लारै अटव्यादिक वालस्यू जाणो, घणा ग्राम नगर वाल करस्यू घमसाणोजी ।स०।।९।।

मनुष्य दाता घणा मारस्यू रे, वाप नै एहवौ सुणायौ ।
पिता पहुंतौ परलोक में रे पछै करवा लागौ सहु तायो ।
करवा लागौ हूं जीवा नौ घमसाणो, किणहिक मन में विचार्यौ जाणो ।
एह मार्या सू बचै बहु प्राणो, इम चिन्तव नै पुरुष नै मार्यौ अचाणो जी ।स०।।१०।।

लाय बुझाया मिश्र कहै रे, तिणरै लेखै ए पिण मिश्र होयौ।
एक मार्‍यौ पाप तेहनौ रे, बहु बचिया तिणरौ धर्म जोयो।
बचियां री धर्म त्यारै लेखै बाजै, अल्प पाप बहु पुन्य फल राजै।
एक मार्‍यौ घणा राखण काजै, इणमै पिण मिश्र कहिता काय लाजै जी।स०॥११॥

पूज्य कह्यौ बलि पाचमौ रे, दृष्टान्त अधिक उदारो।
कोई तुरकादिक आकरौ रे, साथ सेना ले अपारो।
सेना लेई देश ऊपर आयौ, ग्राम नगर कतल करवानै ध्यायौ।
मनुष्य तिर्यंच मारण ऊमाह्यौ, सैन्य अधिकारी ना हुक्म थी थायो जी।स०॥१२॥

किण ही विचार इसौ कियौ रे, करसी घणा जीवा रौ सहारो।
सैन्य अधिकारी नै मारिया रे, सर्व जीव बचै इणवारो।
जीव बचै कतल नही हुवै तायो, इम जाण अधिकारी नै परभव पहुचायौ।
मार्‍यौ ते पाप बच्यौ पुन थायो, तिणरे लेखै इणमै पिण मिश्र कहिवायो जी।स०॥१३॥

बचियारौ धर्म बतायनै रे, कहै लाय बुझायां धर्म।
जीव अग्नि रा जीविया रे, तिणसूं घणा मरै ते अधर्म।
अग्नि जीव्या घणा मरै ते पापो, इण विध कर रह्या कूड किलापो।
अग्नि जीव हणियां मिश्र थापो, तेहनौ न्याय सुणौ चुप चापो।
तिण रै लेखै गाया मार्‍या केवल न पापोजी।स०॥१४॥

गायां भेस्या आदि जीवसी रे, तेपिण घणी छ काय हणतो।
मनुष्यादि पवन छतीस छै रे, मच्छादिक जलचर जन्तो।
जन्तु मच्छादिक जलचर जाणी, ते पिण हणै छ:काय ना प्रांणी।
अग्नि जीव नै हण्या मिश्र माणी, तिणरै लेखै ए सर्व हण्या मिश्र जाणी जी।स०॥१५॥

ससार माहैं साधु बिनां रे, सर्व हिंसा रा त्याग न दीसै।
पन्नवणा पद बीस मै रे, भाख्यौ श्री जगदीसै।
श्री जगदीश भाखी इम रेसो, प्राणातिपात बेरमण सु अशेषो।
मनुष्य बिना और रै न कहेसो, बुद्धिवन्त जोय विचारज्यो रेसो जी।स०॥१६॥

साधु बिना ससारी सहु रे, हिंसक जीव कहायो।
त्या सगला नै मारिया रे, एकलौ पाप न थायो।
किण ही नै मार्‍या एकलौ पापो, जिणनै मार्‍यौ तिणरौ महा तापो।
और बच्या तिणरौ पुन्य मिलापो, साधु नै मार्‍या रौ एकन्त पापो।
खोटी श्रद्धा रा लेखा री ए थापो जी।स०॥१७॥

लाय बुझाया मिश्र कहै रे, तिणरी श्रद्धा रै न्यायो।
हिंसक नै मारण तणा रे, त्याग करावणा नही तायो।
त्याग करावे छै किण न्यायो, हिंसक बच्या घणा जीव हणायो।
हिंसक मार्‌या मिश्र धर्म थायो, ऊंधी सरधा री तौ औहिज न्यायो जी।स०॥१८॥

दृष्टन्त स्वाम भिक्खु दिया रे, सूत्र न्याय तत सारी।
जीव बच्या धर्म थापनै रे, भूल गया भ्रम मे भेषधारी।
भूल गया भ्रम मे भेषधारी, मोहराग माहैं दया विचारी।
भिक्खु ओलख तसु कियौ परिहारी, तिरणी बाछै निज पर नो तिवारी।
तिण माहैं धर्म कह्यौ ततसारी जी।स०॥१६॥

वीसमी ढाल विषै कह्या रे, दया ऊपर दृष्टन्तो।
सूत्र सिद्धन्त रा जोर सू रे, न्याय मिलाया ततो।
स्वाम भिक्खु शुद्ध न्याय मिलायो, दान दया रूडी रीत दिखायो।
हलुकर्मी सुण हर्षायो, भारी कर्मा रै तौ मन नही भायो जी।स०॥२०॥

दुहा

पाली शहर पधारिया, पूज्य भवोदधि पाज।
एक जणौ तिहा आवियो, चरचा करवा काज॥ १ ॥
ऊंधी बोलतौ कहै, दुष्ट श्रावक तुझ देख।
फासी कोई रा गल्हुती, काढै नही सपेख॥ २ ॥
थारा म्हारा मति करौ, स्वामी भाखै सोय।
समचै वात करौ सही, न्याय हिये अवलोय॥ ३ ॥
फासी लौ किण रुख थी, देख्यौं जावन दोय।
काटै नही ते कैहवौ, काढै तै कैहवौ होय॥ ४ ॥
ते कहै फासी काढ लै, उत्तम पुरुष ते तन।
जाणहार शिव स्वर्ग नौ, दयावत दीपन॥ ५ ॥
नहि काटै ते नरक रौ, जाणहार दौभाग।
भिक्खु कहै तुम तुझ गुरु जाना दोनू माग॥ ६ ॥
तुम फासी काटै नहीं, कहै हू काटू तिहा जाय।
मुझ गुरु तो काटै नही, मुनि नै कल्पै नाय॥ ७ ॥
स्वाम कहै शिव स्वर्ग नौ, जाणहार तू पेख।
तुम्ह गुरु नरक निगोद ना, जाणहार तुम्ह लेख॥ ८ ॥

सुणनै कष्ट हुवौ घणौ, जाब दैन असमर्थ।
ऐसी बुद्धि स्वामी तणी, उर मै अधिक ओपंत॥ ६ ॥

ढाल : २१

[पर नारी सग परिहरो—ए देशी]

सावद्य उपकार ससार तणा छै, तिणमै म जाणज्यो ततो।
पूज्य भिक्खु ओलखायवा, प्रगट दियौ इसौ दृष्टन्तो॥
स्वाम भिक्खु रा दृष्टात सुणज्यो॥ १ ॥

एक नृपति चोर पकड़्या इग्यारह, दुवौ मारण री दीधौ।
साहुकार एक अरज करी इम, साभलज्यो प्रसिद्धो। स्वा० ॥ २ ॥
पच पच सौ सौ रुपया प्रगट, इक इक चोर ना लीजै।
आप कृपानिधि अरज मानी नै, पोर इग्यारा छोडीजै। स्वा० ॥ ३ ॥
राजा भाखै महा अपराधी, दुष्ट घणाई दुख दाता।
छोड़वा जोग नही छै तस्कर, मान मछर मद माता। स्वा० ॥ ४ ॥
सेठ कहै दस मूकौ स्वामी, लाभ रुपया री लीजौ।
तौ पिण नृप नही छौडै तस्कर, कहै चोरा री पख नही कीजै। स्वा० ॥ ५ ॥
नव तस्कर मूंकौ कृपानिधि, आठ सात आदि जाणी।
इण पर अरज करी अधिकेरी, महिपति तौ नही मानी। स्वा० ॥ ६ ॥
रोकड़ पाच सौ देई राजा नै, चोर एक छोडायौ।
ते पिण विनती अधिक करी तव, तस्कर मूक्यौ तायौ। स्वा० ॥ ७ ॥
पुर ना लोक करै गुण प्रगट, सेठ तणा सहुकोयो।
धन्य धन्य लोक कहै यौ धर्मी, हर्ष हियै अति होयो। स्वा० ॥ ८ ॥
वधी छोड लोका मै वाजै, अधिक कियौ उपगारो।
तस्कर पिण गुण गाव तेहना, सुजस फैल्यौ ससारो। स्वा० ॥ ६ ॥
महिपति दस चोरां नै मराया, इक निज स्थानक आयौ।
समाचार स्यानीला नै सुनाया, परियण दुख अति पायौ। स्वा० ॥ १० ॥
तस्कर दस ना स्यायनीला ते, भागी द्वेष भराणा।
वैर वालण नै भेला हुवा, बहु प्रत्यक्ष ही प्रगटाणा। स्वा० ॥ ११ ॥
चोर साग नै मार्ग लेई चाल्यौ, पुर दरवाजे पिछाणी।
सिट्ठी वाय लोका नै चेतायौ, साभलज्यो सहु वाणी। स्वा० ॥ १२ ॥
सब तस्कर दस मारया निणरां, उपगार गुणां वैर गिणस्यू।
[illegible] दस मारया [illegible], पछै विनटाल्यौ [illegible]। स्वा० ॥ १३ ॥

साहुकार ना पुत्र सगा नें, मित्र भणी नही मारू।
अवर न छोडू डराणे आयौ, पथ रह्या पिण पारू। स्वा० ॥ १४ ॥
एम कही जन मारण उमग्यौ, सुत किण ही री सहारें।
किण ही री तात भाई हणें किण री, माता किण री मारें। स्वा० ॥ १५ ॥
किण री नार हणें अति कोप्यौ, वहिन कोई री विणसैं।
किण ही री भूवा भतीजी किण री, तस्कर इम जन त्रासे। स्वा० ॥ १६ ॥
प्रवल भयकर नगर में प्रगट्यौ, होय रह्यौ हा हा कारो।
सेठ नें निंदवा लागा सहु जन, प्राभवें वचन प्रहारो। स्वा० ॥ १७ ॥
साहुकार रै घर जाई सगला, रोवें लोग लुगाई।
कोई कहैं मुझ माता मराई, कोई कहैं प्रिय भाई। स्वा० ॥ १८ ॥
रे पापी तुझ घर धन वहु थो, तो कूवा में क्यो नही न्हाख्यौ।
चोर छोडाई म्हारा मनुष मराया, तस्कर जीवतो राख्यौ। स्वा० ॥ १९ ॥
सेठ लातरियो शहर छोडीनें, वीजै गाम वस्यौ जाई।
इण भव फिट २ हुवौ अधिको, परभव दुर्गति पाई। स्वा० ॥ २० ॥
जे जन गुण करता था तेहिज, अवगुण करत अथागो।
ससार नों उपगार इसी छै, मोख तणौ नही मागो। स्वा० ॥ २१ ॥
मोख तणो उपगार है मोटो, सुर शिव पद सचरिये।
जिण अगन्या तिण माहें जाणी, उलट धरी आदरियें। स्वा० ॥ २२ ॥
भिक्खु स्वाम भली पर भाख्यौ, दया ऊपर दृष्टन्तो।
उत्पत्तिया वुद्धि अधिक अनोपम, हलुकरमी हरपतो। स्वा० ॥ २३ ॥
एक वीसमी ढाल में आख्यौ, अघ हेतु उपगारो।
प्रत्यष ही फल सेठज पाया, आगलि वहु अधिकारो। स्वा० ॥ २४ ॥

दुहा

शिव ससार तणा नही, कह्या दोय उपगार।
भिक्खु तिण ऊपर भल्या, दृष्टन्त दिया उदार ॥ १ ॥
उरपुर साधां एक नें, उजाड में अवधार।
तिण [illegible] देई [illegible], तारौ गियौ निवार ॥ २ ॥
पिता कहै सुत सुत दियौ, भाई बहिन भाणज।
नें [illegible] भाई दियौ, [illegible] कहै दीजै [illegible] ॥ ३ ॥
[illegible] सूखी अन्दर [illegible] नें [illegible] उतार।
इम [illegible] [illegible] नें, [illegible] [illegible] [illegible] ॥ ४ ॥

ए उपगार ससार नौ, तिण मै नही ततसार।
कर्म्म बंध कारण कह्यौ, नही धर्म्म पुण्य लिगार॥ ५ ॥
उरपुर खाधौ एक नै, साधा नै कहै सोय।
यन्त्र मन्त्र बूटी जडी, औषध आपौ मोय॥ ६ ॥
सत कहै कल्पै नही, बलि बोल्यौ ते बान।
करामात ह्वौ तौ कहौ, कै लियो भेष तुफान॥ ७ ॥
करामात मुनि कहै इसी, दुखी कदे नही थाय।
ते कहै मुझ ते पिण कहौ, अणशण मुनि उचराय॥ ८ ॥
शरणा सूस दिया घणा, शिवगामी सुर थाय।
मोख तणौ उपगार ए, स्वाम दियौ ओलखाय॥ ९ ॥

ढाल : २२

[डाभ मु जादिक नी डोरी—ए देशी]

दूजो दृष्टान्त भिक्खु दीधौ, साभलज्यो प्रसिद्धौ।
लोक मोक्ष नै मग नही मेले, तेतौ कठे ही न थावै भेल॥ १ ॥
साहुकार रै स्त्रिया दोय, एक श्राविका शुद्ध अवलोय।
बैराग अत्यत बखाण, किया रोवण रा पचखाण॥ २ ॥
दूजी धर्म्म मैं समझै नाही, चित्त काम भोग री चाहि।
केतलाइक काल विचार, परदेश माहैं भरतार॥ ३ ॥
काल कर गयौ ते किण वार, बात साभली छै बेहु नार।
तिणरै रोवण रा छै त्याग, ते तौ रोवै नही धर राग॥ ४ ॥
समताधार बेठी सोय, कियौ नेम न भागै कोय।
शुभ अशुभ कर्म्म स्वभावै, प्रत्यष ओलख लियौ प्रभावै॥ ५ ॥
दुःख पाप प्रभावै देखै, बलि कर्म्म बाधू किण लेखै।
उदै बाध्या जिसाईज आय, इम चित्त नै दियौ समझाय॥ ६ ॥
बीजी रोवै करत विलाप, कहै कवण उदय हुवा पाप।
छाती माथौ कूटै तन झाडै, अति रोवती बागा पाडै॥ ७ ॥
हाहाकार हुवौ तिण वेला, लोक हुवा सैकडा भेला।
रोवै तिणनै अधिक सरावे, पतिव्रता ये दुःख पावै॥ ८ ॥
बले बोलै घणा लोग लुगाई, धन्य धन्य ये नार सुहाई।
इणरै प्रीतम स्यू अति प्यार, तिणस्यू रोवै छै बागा पाड॥ ९ ॥
नही रोवै तिणनै जन निन्द, आ तौ पापणी थी अपछंद।
आ तो सुवांज बाछती कंत, आस मैं आसू नही आवत॥ १० ॥

ससारी रै मन इम भावै, मोह कर्म्म वसै मुरझावै।
साधु कही किणनै सरावै, परमारथ विरला पावै ॥ ११ ॥
मोख नै लोक री मग न्यारी, बुद्धिवत हिया मे विचारी।
दियी स्वाम भिक्खु दृष्टात, प्रत्यक्ष देखाया दोनू पथ ॥ १२ ॥
इम ही ससार नी उपगारो, मोक्ष रा मारग सू न्यारी।
वारु मोख तणी उपगार, ससार नी छेदणहार ॥ १३ ॥
ऐसा भिक्खु उजागर भारी, न्याय मेलविया ततसारी।
कही ढाल बावीसमी सार, भिक्खु रा गुणा री नही पार ॥ १४ ॥

दुहा

श्रद्धा ऊपर स्वामीजी, दिया घणा दृष्टात।
कहि २ नै कितरौ कहू, न्याय मिलाया तत ॥ १ ॥
वलि आचार रै उपरै, न्याय मिलाया सार।
ग्रन्थ वधती जाणनै, न कियो बहु विस्तार ॥ २ ॥
इन्द्रीवादी ऊपरै, कालवादी पर सोय।
दृष्टात पूज दिया घणा, म्है बहु न कह्या जोय ॥ ३ ॥
प्रस्ताविक प्रगट पणै, हेतु हद हितकार।
आख्या भिक्खु ओपता, उत्पत्तिया अधिकार ॥ ४ ॥
कथा नदी सूत्रे कही, चार बुद्धि पहिछाण।
तिण कारण दृष्टात सुण, चमकै मति सुजाण ॥ ५ ॥
केसी स्वामी पिण कह्या, सखरा हेतु सार।
इमहिज भिक्खु जाणज्यो, पचम काल मभार ॥ ६ ॥
मूरख जन दृष्टात सुण, उलटा बाधै कर्म्म।
खबर नही जिन धर्म्म री, भूला अज्ञानी भ्रम ॥ ७ ॥
हलुकर्मी दृष्टात सुण, पामै अधिको प्रेम।
भारीकर्म्मा नाभग्गी, बोलै भावै नेम ॥ ८ ॥
विचरत विचरत आविया, शहर [illegible] स्वाम।
ठाकुर मोहकम सिहजी, वादण आया ताम ॥ ९ ॥

ढाल : २३

([illegible])

[illegible] परपरा सुणता, [illegible] [illegible] रे।
[illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] रे ॥
भिक्खु [illegible] [illegible] ॥ १ ॥

गांम गाम री विनत्या, अति आपनै आवै रे।
जन बहु देश ना, सहु आपनै चहावै रे। भि० ॥ २ ॥
नर नारी आपनैं, देखी हुवै राजी रे।
कर जोडी करै, जन कीरत जाभी रे। भि० ॥ ३ ॥
पुण्यवंता प्रत्यक्ष, नर नारी निरखै रे।
सूरत देखतै, हिवडै अति हर्षे रे। भि० ॥ ४ ॥
घणा लोक लुगाया नै, आप बल्लभ लागौ रे।
ते कारण किसौ, यारै हर्ष अथागौ रे। भि० ॥ ५ ॥
इसौ गुण काई आपमैं, ते मुझ नै बतावौ रे।
सखरपणै सही, दिल मैं दरसावौ रे। भि० ॥ ६ ॥
भिक्खु इम भाखै, एक सेठ प्रदेशै रे।
वर्ष बहु बीतिया, त्रिय छै निज देशै रे। भि० ॥ ७ ॥
ते नार पतिव्रता, शीले गह गहती रे।
निज प्रीतम थकी प्रेमे अति रहती रे, भिखु ऋष भणै। भि० ८ ॥
घणा महीना हुवा, कागद नवी आयौ रे।
त्रिय चिन्ता करै, मन प्रीतम माह्यो रे। भि० ॥ ९ ॥
ते सेठ प्रदेश थी, कासीद पठायो रे।
खरची दे करी, तिण पुर ते आयौ रे। भि० ॥१० ॥
सेठ तणी हवेली, आय ऊभौ तायो रे।
किणहिक पूछियौ, किण पुर थी आयौ रे। भि० ॥ ११ ॥
लियौ नाम ते पुर नौ, नारी सुण हरखी रे।
आवी बारणै, नैणा तसु निरखी रे। भि० ॥ १२ ॥
कासीद नै देखी, हिवडै हरषांणी रे।
सुखसाता सुणी, रु रुं विकसाणी रे। भि० ॥ १३ ॥
उन्हा पाणी सू, उण रा पग धोवै रे।
आनन्द जल भर्‍या, नेत्रा सू जोवै रे। भि० १४ ॥
वर भोजन करनै, कन्है वेस जीमावै रे।
पूछै वलि वलि, समाचार सुहावै रे। भि० ॥ १५ ॥
साहजी डिला मैं, किसाईक छै जाणी रे।
सुख साता अछै, पूछै हरषांणी रे। भि० ॥ १६ ॥
साहजी कठै पौढ़ै, किण जागा वैसै रे।
वात सारी कही, सुणनै अति उलसै रे। भि० ॥ १७ ॥

कोई कारण नही छै, साहजी रै तन मे रे।
उत्तर साभली, त्रिय हर्षै मन मे रे। भि० ॥ १८ ॥
साहजी कहौ मुझनै, समाचार कह्या छै रे।
इहा आसी कदे, वर्षबहोत् थया छै रे। भि०॥ १९ ॥
दिन रात्रि हू तौ, दिल अति चिन्ता करती रे।
कागद ना दियौ, मन मै दुख धरती रे। भि० ॥ २० ॥
कासीद कहै सुणौ, साहजी रा जाबो रे।
एम कह्यो सही, अवा छा सतावो रे। भि० ॥ २१ ॥
पिण कोइक कारण सू, अल्प दिन री जेजो रे।
मुझनै मेलियौ, सुण बाध्यौ हेजो रे। भि० ॥ २२ ॥
समाचार आपनै, साहजी कहिवाया रे।
म्हे ताकीद स्यू, आया कै आया रे। भि० ॥ २३ ॥
पैदास घणी छै, सुख सूं तुम रहिज्यो रे।
किण ही बात री, मन फिकर म कीजो रे। भि० ॥ २४ ॥
समाचार ज्यू ज्यू कहै, त्यू त्यू मन हरषै रे।
राजी हुवै घणी, कासीद नै निरखै रे। भि० ॥ २५ ॥
कासीद नै देखी, हर्षै अति नारी रे।
ते कहै पिउ तणी, बतका अति प्यारी रे। भि० ॥ २६ ॥
एहवी विरतन्त देखी, कहै अजाण एमो रे।
इण दलिद्री थकी, पतिव्रता नौ पेमो रे। भि० ॥ २७ ॥
सुण बोल्यौ सैणो, नही इण स्यूं प्यारो रे।
पिउ समाचार थी, हरषी है नारो रे। भि० ॥ २८ ॥
और भ्रम मति राखौ, आ महा गुणवन्ती रे।
सत्यवती सती, शुद्ध माग चलती रे। भि० ॥ २९ ॥
समाचार प्रयोगे, पतिव्रता हरषाणी रे।
और भ्रम नही, तिमहिज म्हे जाणी रे। भि० ॥३०॥
भगवान रा गुण म्हे, विध रीत वतावा रे।
शिव ससार नौं, मारग ओलखावा रे। भि० ॥ ३१ ॥
झीणी झीणी म्हे, सूत्र रहिस वतावा रे।
लोभ रहित पणै, भिन्न २ दरशावा रे। भि० ॥ ३२ ॥
दुःख नरक निगोद ना, दूरा टल जावै रे।
ते वातां कहा, तिण कारण चाहवै रे। भि० ॥ ३३ ॥

घणा लोग लुगाई, इण कारण राजी रे।
गांमो गाम थी, विनतियां ताजी रे। भि० ॥ ३४ ॥
कवडी नही मांगां, शिव पंथ बतावा रे।
नर नार्‍यां भणी, इण कारण सुहावा रे। भि० ॥ ३५ ॥
कासीद निर्गुण थो, पिण पिउ समाचारो रे।
तिण मुख स्यूं कह्या, तिण स्यूं हरषी नारो रे। भि०॥३६॥
म्हे महाव्रत धारी, जिण वैण सुणावा रे।
बहु प्रकार थी, नर नार्‍यां नै सुहावा रे। भि० ॥३७॥
नरपति सुरपति पिण, राण्यां इन्द्राणी रे।
ते मुनिवर भणी, निरखै हरषाणी रे। भि० ॥ ३८ ॥
मुनि नौ अभरोसौ, कोई नही राखै रे।
अण समझूं तिकौ, मन आवै ज्यू भाखै रे। भि० ॥ ३९ ॥
ठाकुर मौहकमसिंह, सुणनै हरषाणौ रे।
सत्य वचन आपरा, स्वामी वैण सुहांणो रे। भि० ॥ ४० ॥
ऐसा भिक्खु स्वामी, बुद्धि अधिक उदारी रे।
उत्तर अति भला, सुणतां सुखकारी रे। भि० ॥ ४१ ॥
भिक्खु ना जवाब स्यूं, अनुरागी हर्षै रे।
भिक्खु गुण भला, गुणग्राही परखै रे। भि० ॥ ४२ ॥
द्वेषी अगुणी जन, सुण मुह मचकोडै रे।
ते अवगुण थकी, आतम नै जोडै रे। भि० ॥ ४३ ॥
तत ढाल तेबीसमी, सुणता सुखदाई रे।
स्वाम भिक्खु तणी, वतका मन भाई रे। भि० ॥ ४४ ॥

दुहा

किण ही भिक्खु नै कह्यो, लागू तुझ बहु लोय।
अवगुण काढै थाहरा, स्वाम कहै तब सोय ॥ १ ॥
अवगुण काढै माहरा, छांनी काढता सोय।
म्हांरे अवगुण काढणा, माहैं न राखणा कोय ॥ २ ॥
कांयक तप संयम करी, अवगुण काढा आप।
नायक जन अवगुण करै, मम रहि काढा पाप ॥ ३ ॥
सबरी वैंवी स्वामजी, इम बहु वात अनेक।
देखो जांता मिल्यो, द्वेपी महाजन एक ॥ ४ ॥

तिण पूछयौ सू नाम तुझ, भीक्खण नाम कहीज।
तिण कह्यौ तेरापथी ते, स्वाम कहै तेहीज ॥ ५ ॥

तब कहै तुझ मुख देखिया, जावै नरक मझार।
पूज कहै तुझ मुख देखिया, किहा जावै कहौ धार ॥ ६ ॥

मुझ मुख देख्या शिव स्वर्ग, तब बोल्या महाराय।
म्हे तौ इसडी ना कहा, मुख थी नरक शिव पाय ॥ ७ ॥

पिण मुख देख्यौ थाहरौ, म्हारै तौ शिव स्वर्ग।
म्हारौ मुख देख्यौ तुम्हे, तुम कहिणी तुझ नर्क ॥ ८ ॥

सुणनै कष्ट हुवौ घणौ, ऐसी बुद्धि अधिकाय।
बलि उत्पत्तिया बुद्धि करी, निर्मल मेल्या न्याय ॥ ९ ॥

ढाल : २४

[कहै छै रुपश्री नार सुणज्यो—ए दशी]

स्वाम भिक्खु सुखदाय, मणिधारी महा मुनिराय हो।
भिक्खु बुद्धि भारी।
अति मति श्रुति पर्यव अथाय, जसु गुण पूरा कह्या न जाय हो॥
भिक्खु बुद्धि भारी।
बुद्धि अति अधिक अपारी, ऐ तौ स्वाम सदा सुखकारी हो। भि० ॥ १ ॥

धर देव गुरु नै धर्म्म, पद तीन दिखाया पर्म्म हो। भि०।
शुद्ध सरध्या समकित सार, धुर शिव पावड़्यौ धार हो। भि० ॥ २ ॥

दियौ गुरु ऊपर दृष्टन्त, तकडी रौ डाडी रौ तत हो। भि०।
तीन बेच डाडी रे समीच, बिहु पासै नै इक बीच हो। भि० ॥ ३ ॥

बिचले हुवै फरकज बाण, कहियै तसु अन्तर काण हो। भि०।
तसु बिचलौ बेच हुवै तत, कोई अन्तर काणी न कहत हो। भि० ॥ ४ ॥

ज्यू देव गुरु धर्म्म जाणी, पद गुरु नौ बीच पिछाणी हो। भि०।
गुरु होवै शुद्ध गुणवत, तौ देव धर्म्म कहै तत हो। भि० ॥ ५ ॥

होवै गुरु हीन अचारी, बलि श्रद्धा भ्रष्ट विचारी हो। भि०।
पाडै देव माहै पिण फेर, धर्म्म मै पिण कर दै अधेर हो। भि० ॥ ६ ॥

गुरु मिले ब्राह्मण तत् खेव, तौ देव कहै महादेव हो। भि०।
अनै धर्म्म बतावै एह, जन विप्र जमावै जेह हो। भि० ॥ ७ ॥

भोपा गुरु मिलै भरमाजा, देव कहै देव धर्म्मराजा हो। भि०।
सुरह गायनौ वाहल्सावौ, धर्म्म पातील्यौ भोपा जिमावौ हो। भि० ॥ ८ ॥

गुरु मिलै कावरिया कहे जी, देव वताय देवै रामदेजी हो। भि०।
धर्म्म कहै कावर जिमावौ, वले जमारी रात्रि जगावौ हो। भि० ॥ ९ ॥

अरु गुरु मिल जावै मुल्ला, तौ देव बताय दै अल्ला हो। भि०।
धर्म्म जबै करण जलपता, एर चरंति आदि कहता हो। भि० ॥ १० ॥

दुहा

एर चरंति मैरू चरंति, खेर चरंति बहुतेरा।
हुक्म आया अल्ला साहिब रा, गला काटूगा तेरा ॥ ११ ॥
ए साखी पढ पापिया, कती करै पर जीव।
ते पाप उदय आया छता, पामैं दुःख अतीव ॥ १२ ॥

ढाल तेहिज

जो गुरु मिलै हिसा धर्म्मी, कहै निगुणा देव कुकरमी हो। भि०।
धर्म्म फूल पाणी मै थापै, सूत्रा रा वचन उत्थापै हो। भि० ॥ १३ ॥
गुरु मिलै असल निर्ग्रन्थ, देव बताय देवैं अरिहत हो। भि०।
धर्म्म जिन आज्ञा मै बतावैं, इहा अन्तर काण न आवै हो। भि० ॥ १४ ॥

दुहा

गजी मैमूदि वासती, तीनू एकण गोत।
जिणनै जैसा गुरु मिल्या, तिसा काढिया पोत ॥ १५ ॥

ढाल तेहिज

इण दृष्टन्त गुरु हुवै जैसा, तिकै देव बतावै तैसा हो। भि०।
बलि धर्म्म इसीज बतावैं, नर समभू न्याय मिलावै हो ॥ १६ ॥
उत्तम पुरुष आचारी, गुरु सत्त बीस गुण धारी हो। भि०।
निर्मल धर्म्म देव निर्दोष, मन सू सरध्या लहै मोख हो ॥ १७ ॥
वर लेखा भिक्खु बताया, दिलमैं भिन्न २ दरशाया हो। भि०।
ए कही चोबीसमी ढाल, भिक्खु यश अधिक रसाल हो ॥ १८ ॥

दुहा

अजाण कैयक इम कहै, म्हारै करणी सू नही काम।
म्हेतौ ओघी मुहपति, वादा छा सिर नाम ॥ १ ॥
भिक्खु कहै ओघा भणी, वदणा किया तिरत।
तौ ओघी हुवै ऊंनरी, ऊन गाडर उपजत ॥ २ ॥
पग गाडर ना पकरना, जो तिरै ओघा थी तास।
भिन है माता तू सही, सो ओघा करै पैदास ॥ ३ ॥

मुहपति हुवै कपास नी, कपास बणि नौ होय।
जो तिरै मुहपति वादिया, तो बणि नै वदनौ जोय॥ ४ ॥
धिन है बणि सो ताहरी, हुवै मुहपति एह।
भेष भणी इम वादिया, भव दधि केम तिरेह॥ ५ ॥
गुण लारै पूजा कही, तौ निगुण पूजता जाय।
चौडै भूला मानवी, किम आणीजै ठाय॥ ६ ॥
जिन मारग मैं देखल्यौ, गुण लारै पूजाह।
निगुणा नै पूजै तिके, ते मारग दूजाह॥ ७ ॥
गुण गोली सीरै भरी, पुरस्या पात धपाय।
गुण बिन ठाली ठीकरौ, देख्या भूख न जाय॥ ८ ॥
एक व्रत भागै इसौ, दोषण थापै जाण।
इम इक व्रत भागा छता, पाचूं जाय पिछाण॥ ९ ॥

ढाल : २५

[कामण गारौ छै कुण—ए देशी]

किणहिक स्वाम भणी कह्यौ रे, किम ए बात मिलाय।
एक महाव्रत भागा छता रे, पच वरत किम जाय।
सुणज्यो दृष्टत भिक्खु तणा रे॥ १ ॥
स्वाम कहै तुमे साभलौ रे, पाप उदै थी पिछाण।
इण भव मैं पिण दुःख उपजै रे, सुण एक हेतु सयाण।
तत दृष्टन्त भिक्खु तणा रे॥ २ ॥
एक भिखारी भीख मागती रे, फिरता फिरता पुर माहि।
पच रोटी रौ आटौ पामियौ रे, अन्तर भूख अथाय। त०॥ ३ ॥
रोटी करण लागी तदा रे, भिख्याचर भागहीण।
एक रोटी नै उतारनै रे, चुला लारै मेली दीन। त०॥ ४ ॥
एक रोटी तबै सक रही रे, एक पीरै सकै आम।
एक रोटी रौ लोयो हाथ मैं रे, लोयौ एक कठौत्ती मैं ताम। त०॥ ५ ॥
स्वान एक आयौ तिण समै रे, पाप तणै प्रमाण।
लोयौ कठौती रौ ले गयौ रे, जद ते स्वान लारै न्हाठौ जाण। त०॥ ६ ॥
स्वान लारै भिख्याचर न्हासता रे, आखुर पडियौ अचाण।
हाथ माहैं जे लोयौ हुतौ रे, ते धूल मैं विखरियौ पिछाण। त०॥ ७ ॥
ततखिण पाछी आवी तदा रे, देखण लागी तिवार।
चूला लारै रोटी पडी हूती रे, ले गई ताम मजार। त०॥ ८ ॥

तवा तणो तवै बल गई रे, खीरा री खीरै हुय गई छार।
पांचूं बिललाई इण रीत सू रे, पाप तणा फल धार। त० ॥ ९ ॥
इमहिज एक भागा थका रे, पांच जावै परवार।
दोषण थोपै जे जाणनै रे, भव भव होवै खुवार। तं० ॥ १० ॥
दोष सेव्या डड सपजै रे, डड जितौई भागत।
नवी दिख्या आवै जेह थी रे, ते दोष सेव्या सर्व जावंत। त० ॥ ११ ॥
भिक्खु स्वाम भली परै रे, दीधौ वारु दृष्टन्त।
हलुकर्म्मी सुण हरषियै रे, भारी कर्म्मा भिडकत। तं० ॥ १२ ॥
पचीसमी ढाल परवरी रे, भिक्खु बुद्धि भरपूर।
नित्य प्रति हूं वन्दना करू रे, पौह ऊगतै सूर। तं० ॥ १३ ॥

दुहा

आधाकर्म्मी जायगा, थानक तिणरौ नाम।
एहवा थानक भोगवै, बले कहे निरदोषण ताम ॥ १ ॥
बलि कहै म्हे मुख सू कद कह्यौ, जद बोल्या भिक्खु स्वाम।
जाय जमाई सासेरे, ते पिण न कहै ताम ॥ २ ॥
मुझ निमतै सीरौ करौ, इम तौ न कहै तेह।
पिण कीधौ ते भोगवै, जद दूजी बार करेह ॥ ३ ॥
जो सीरा ना सूस करै, तौ न करै दूजी वार।
त्याग नही तिण सू करै, भोजन विविध प्रकार ॥ ४ ॥
ज्यू भेषधारी रहे थानक मझै, बले कहै मुख सू ताम।
थानक मुझ निमतै करी, इम म्हे कद कह्यौ आंम ॥ ५ ॥
त्या निमतै कियौ भोगवै, फिर करै दूजी बार।
त्याग करै थानक तणां, तौ आरम्भ टलै अपार ॥ ६ ॥
वले डावरौ कद कहै, करौ सगाई मोय।
पिण सगपण कीधा पछै, कुण परणीजै सोय ॥ ७ ॥
वलि वहू वाजै केहनी, घर किणरौ मडाय।
डावडा तणौज जाणज्यो, थानक एम गिणाय ॥ ८ ॥
थानक वाजै तेहनौ, माहे पिण रहै तेह।
न कह्यौ थानक ना तिणा, पिण सहु कांम करेह ॥ ९ ॥

ढाल : २६

[कपि रे प्रिया सदेशौ कहेय०—ए देशी]

गछबास्या रै उपसारै रे, मथेण तणै पोशाल।
फकीर रै तकियौ कहै रे, नाम मै फरे निहाल रे।
जीव स्वाम बुद्धि विशाल ॥ १ ॥

स्वाम बुद्धि अति शोभती रे, निर्मल न्याय निहाल रे। जी० ॥ २ ॥

कान फाडा रै आसण कहै रे, भक्ता रै अस्तल भाल।
भक्त फुटकर तेहनै रे, मढी नाम निहाल ॥ ३ ॥

सन्यासा रै मठ कहै रे, रामसनेह्या रै गेह।
राम दुवारौ केईक कहै रे, राम मोहलौ कहै केह ॥ ४ ॥

घर राध णी रै घर कहै रे, सेठ रै हवेली सुहाय।
कहै गांम धणी रै कोटरी रे, किहाएक रावलौ कहाय ॥ ५ ॥

राजा रै महिल कहै सही रे, कायक ठौर दरबार।
साधा रै थानक बाजतौ रे, नाम मैं फेर विचार ॥ ६ ॥

सगलाई घर रा घर अछै रे, कठैएक बुहा कौदाल।
किहांयक कसो बुही सही रे, आधाकर्म्मी असराल ॥ ७ ॥

आरम्भ तौ षटकाय नौ रे, हुवौ ज्यूं रौ ज्यूं जाण।
अरिहत नी नहिं आगन्या रे, छ काय नौ घमसाण ॥ ८ ॥

घर छोड़्या मुख सू कहै रे, गाम २ रह्या घर माड।
तिण घर री नाम थानक दियौ रे, रह्या भेष नै भाड ॥ ६ ॥

आधाकर्मी थानक भोगव्या रे, महा सावज किरिया सभाल।
दूजै आचारङ्ग देखल्यौ रे, कह्यौ दूजै अध्ययने दयाल ॥ १० ॥

आधाकर्म्मी आदस्या रे, चौमासी डड पिछाण।
निशीथ दश मै निहालज्यो रे, वीर तणी एह वाण ॥ ११ ॥

आधाकर्म्मी भोगव्या रे, रुलै अनन्तौ काल।
पहलै शतक भगवती मैं पेखल्यौ रे, नवमै उदेशै निहाल ॥ १२ ॥

इत्यादिक बहु बारता रे, आखी आगम माहि।
भिक्खु तास भली परै रे, रुडी रीत दीधी ओलखाय ॥ १३ ॥

उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे, अधिक उजागर आप।
निश दिन मनडौ माहरौ रे, जप रह्यौ आपरौ जाप ॥ १४ ॥

स्वप्नै सूरत स्वाम नी रे, देखत ही सुख होय।
प्रत्यष नौ कहिवौ किसूं रे, शरण आपनौ मोय ॥ १५ ॥

तवा तणो तवै बल गई रे, खीरा री खीरैं हुय गई छार।
पाचू बिललाई इण रीत सू रे, पाप तणा फल धार। त० ॥ ६ ॥
इमहिज एक भागा थका रे, पाच जावै परवार।
दोषण थोपै जे जाणनै रे, भव भव होवै खुवार। त० ॥ १० ॥
दोष सेव्या डड सपजै रे, डड जितौई भागत।
नवी दिख्या आवै जेह थी रे, ते दोष सेव्या सर्व जावत। त० ॥ ११ ॥
भिक्खु स्वाम भली परै रे, दीधी वारु दृष्टन्त।
हलुकर्म्मी सुण हरपियै रे, भारी कर्म्मा भिडकत। तं० ॥ १२ ॥
पचीसमी ढाल परवरी रे, भिक्खु बुद्धि भरपूर।
नित्य प्रति हू वन्दना करू रे, पौह ऊगतै सूर। तं० ॥ १३ ॥

दुहा

आधाकर्म्मी जायगा, थानक तिणरौ नाम।
एहवा थानक भोगवै, बले कहे निरदोषण ताम॥ १ ॥
बलि कहै म्हे मुख सू कद कह्यौ, जद बोल्या भिक्खु स्वाम।
जाय जमाई सासेरे, ते पिण न कहै ताम॥ २ ॥
मुझ निमतै सीरौ करौ, इम तौ न कहै तेह।
पिण कीधौ ते भोगवै, जद दूजी बार करेह॥ ३ ॥
जो सीरा ना सूस करै, तौ न करै दूजी वार।
त्याग नही तिण सूं करै, भोजन विविध प्रकार॥ ४ ॥
ज्यू भेषधारी रहे थानक मझै, बले कहै मुख सूं ताम।
थानक मुझ निमतै करौ, इम म्हे कद कह्यौ आंम॥ ५ ॥
त्या निमतै कियौ भोगवै, फिर करै दूजी बार।
त्याग करै थानक तणां, तौ आरम्भ टलै अपार॥ ६ ॥
वले डावरौ कद कहै, करौ सगाई मोय।
पिण सगपण कीधां पछै, कुण परणीजै सोय॥ ७ ॥
बलि बहू वाजै केहनी, घर किणरौ मंडाय।
डावडा तणौज जाणज्यो, थानक एम गिणाय॥ ८ ॥
थानक बाजै तेहनौ, माहे पिण रहै तेह।
न कह्यौ थानक नौ तिणा, पिण सहु काम करेह॥ ९ ॥

ढाल : २६

[कपि रे प्रिया सदेशौ कहेय०—ए देशी]

गछबास्या रैं उपसारैं रे, मथेण तणैं पोशाल।
फकीर रैं तकियौ कहै रे, नाम मै फरे निहाल रे।
जीव स्वाम बुद्धि विशाल॥ १ ॥
स्वाम बुद्धि अति शोभती रे, निर्मल न्याय निहाल रे। जी०॥ २ ॥
कान फाडां रैं आसण कहै रे, भक्ता रैं अस्तल भाल।
भक्त फुटकर तेहनैं रे, मढी नाम निहाल॥ ३ ॥
सन्यासा रैं मठ कहै रे, रामसनेह्या रैं गेह।
राम दुवारौ केईक कहै रे, राम मोहलौ कहै केह॥ ४ ॥
घर राध णी रैं घर कहै रे, सेठ रैं हवेली सुहाय।
कहै गाम धणी रैं कोटरी रे, किहाएक रावलौ कहाय॥ ५ ॥
राजा रैं महिल कहै सही रे, कायक ठौर दरबार।
साधा रैं थानक बाजतौ रे, नाम मैं फेर विचार॥ ६ ॥
सगलाई घर रा घर अछै रे, कठैएक बुहा कौदाल।
किहांयक कसो बुही सही रे, आधाकर्म्मी असराल॥ ७ ॥
आरम्भ तौ षटकाय नौ रे, हुवौ ज्यूं रौ ज्यूं जाण।
अरिहत नी नहि आगन्या रे, छ काय नौ घमसाण॥ ८ ॥
घर छोड्या मुख सू कहै रे, गाम २ रह्या घर माड।
तिण घर रौ नाम थानक दियौ रे, रह्या भेष नैं भाड॥ ९ ॥
आधाकर्मी थानक भोगव्या रे, महा सावज किरिया सभाल।
दूजै आचारङ्ग देखल्यौ रे, कह्यौ दूजै अध्ययने दयाल॥ १० ॥
आधाकर्म्मी आदस्या रे, चौमासी डड पिछाण।
निशीथ दश मै निहालज्यो रे, वीर तणी एह वाण॥ ११ ॥
आधाकर्म्मी भोगव्या रे, रुलै अनन्तौ काल।
पहलै शतक भगवती मै पेखल्यौ रे, नवमैं उदेशैं निहाल॥ १२ ॥
इत्यादिक बहु बारता रे, आखी आगम माहि।
भिक्खु तास भली परैं रे, रुडी रीत दीधी ओलखाय॥ १३ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि अति घणी रे, अधिक उजागर आप।
निश दिन मनडौ माहरौ रे, जप रह्यौ आपरौ जाप॥ १४ ॥
स्वप्नैं सूरत स्वाम नी रे, देखत ही सुख होय।
प्रत्यष नौ कहिवौ किसूं रे, शरण आपनौ मोय॥ १५ ॥

आदि जिणंद तणी परै रे, ओलखायी श्रद्धा आचार।
जन्म जन्म किम विसरै रे, तुझ गुण अनघ अपार॥ १६॥
बारु ढाल छबीसमी रे, भिक्खु गुण मुझ चित्त।
याद आया हियो हुलसै रे, परम आपसू प्रीत॥ १७॥

दुहा

भारीमाल शोभे भला, पूज भीखणजी पास।
बारूं कला बखाण की, घन जिम शब्द गुजास॥ १ ॥
नित्य बखाण दै निरमलो, ऊपर भिक्खु आप।
दान दया दीपावता, सुणता टलै सताप॥ २ ॥
हलुकर्म्मी हरपै घणा, भारीकर्म्मी भिडकन्त।
अल गाही अवगुण करै, विकल वचन विलपन्त॥ ३ ॥
किणहिक भिक्खु नै कह्यौ, वर तुम करौ बखाण।
निन्दक ऐ निन्द्या करै, अलगा बैठ अजाण॥ ४ ॥
भिक्खु उत्तर दै भलो, स्वान तणुज स्वभाव।
झालर रौ झिणकार सुण, रोवण करौ राव॥ ५ ॥
नीच इती जाणै नही, ए झालर अधिकार।
ब्याव तणी बाजै आछै, कै मुवा नी धार॥ ६ ॥
ज्यू ऐ पिण जाणै नही, बाचै ज्ञान बखाण।
राजी ह्वैणौ ज्याही रह्यौ, अवगुण करै अजाण॥ ७ ॥
उलटी निन्द्या ऐ करै, निन्द्या तणौज न्हाल।
स्वभाव यारौ छै सही, झूठी करै झखाल॥ ८ ॥
ऐसी बुद्धि उत्पात री, निर्मल अपूर्व न्याय।
मेलै मुनि महिमा निला, स्वाम घणा सुखदाय॥ ६ ॥

ढाल : २७

[हो म्हारा राजा रा—ए देशी]

स्वाम भिक्खु गुरु महा सुखदाई, भारीमाल शिष्य अति भारी।
अमृत वाण सुधा सी अनोपम, हद देश ना महा हितकारी।
हो म्हारा शासण रा शिणगार स्वामी जी, भिक्खु भारीमाल ऋष भारी॥ १ ॥
हद वाण सुणी हलुकर्म्मी हरषै, द्वेषी बोल्या धर्म्म द्वेष धारी।
सवादीढ पौहर रात्रि आइ सी, यानै कल्पै नही इणवारी॥ २ ॥

भिक्खु कहै दुःख नी रात्रि भूडी, झट सुख निशा सोहरी जावै।
समी साज माहै मनुष्य मूआ सू, लोका मैं रात्रि मोटी लखावै॥ ३ ॥
सत बखाण देवै ते न सुहावै, ज्यानै रात्रि घणीज जणावै।
दभ मिट्या तौ अधिक न दीसै, आतौ पौहर रे आसरै आवै॥ ४ ॥
दोहा सहित दिया दृष्टन्त दोनूं, पैतालीसै शहर पीपार।
तत चौमास मै सोजत तेपनै, उठै हुवौ घणौ उपगार॥ ५ ॥
किणहिक स्वाम भिक्खु नै कह्यौ, इम उपगार तौ आछौ कीधौ।
जीव घणा नै समझाया, जुगति सू लाभ धर्म्म रौ लीधौ॥ ६ ॥
बलता भिक्खु कहै खेती तौ बाही, पिण गामरै गोरवै पेखौ।
सो खर नही आय पड्या है तौ टिकसी, बाकी कठिन है अधिक विशेषो॥ ७ ॥
गधा समान पाखण्डी गिणियै, जिहा जोरौ विशेष जिणारौ।
खेती समान धर्म्म खय कर दै, तिणसू सग न करणौ तिणारौ॥ ८ ॥
किणही कह्यौ देवौ दृष्टन्त करला, स्वामीनाथ बोल्या सुण वायो।
करडौ रोग ऊठ्यौ गंभीर केरौ, मृदु फुजाल्या केम मिटायौ॥ ९ ॥
हलवाणी रा डाम लागा हुवै हलकौ, गभीर रौ रोग गिणायो।
करडौ मिथ्यात रोग मिटावण काजै, करडा दृष्टन्त कहायो॥ १० ॥
किणही स्वामीजी नै पूछा कीधी, कच्ची बुद्धिवालौ समझै न काई।
मुनि भिक्खु कहै दाल मूग मोठा री, फिर दाल चणा री पिण थाई॥ ११ ॥
पिण गोहा री दाल हुवै नही, प्रत्यक्ष ज्यू भारी करमा न समझै जाणी।
हलुकर्म्मी बुद्धिवान हुवै ते, पक्ष छाडै जिण धर्म्म पिछाणी॥ १२ ॥
शुद्ध जाब दूजौ देवै तिणमे न समझै, आपरी भाषा रौ ही अजाण।
दृष्टन्त स्वाम ते ऊपर दीधौ, समझावण काज सयाण॥ १३ ॥
एक बाई बोली म्हारौ भर्तार एहवौ, आखर लिखै ते अधिक अजोग।
बीजा सू आखर बचै नही बिरुआ, मोनै ठोठरौ मिल्यौ सयोग॥ १४ ॥
इतरै दूजी कहै मुझ पिउ इसडौ, पोता रा लिख्या अखर पिछाणौ।
जे पिण पोता सू वच्या नही जावै, अति ही मूर्ख एहवौ अजाणौ॥ १५ ॥
ज्यू आपरी भाषा नै आप न जाणै, केवली भाख्यौ धर्म्म किम आवै।
सरधा तौ परम दुर्लभ कही सूत्रे, परवीण हलुकर्म्मी पावै॥ १६ ॥
पाखड्या रौ मन गाया री पगडाडी, दूर थोडी तौ मारग दीसै।
आगै उजाड मोटी अटवी मै, दुष्ट काटा विपम दूधरीसै॥ १७ ॥
ज्यू दान शीलादिक अल्प दिखाई, पाखण्डी पछै हिंसा पमावै।
आगे चलै नही ये उन्मारग, जाब माहै घणा अटक जावै॥ १८ ॥

पातशाही रास्ता जिम पंथ प्रभु नी, नही अटकै कठेई ते न्यायो।
दृष्टन्त पाग तणो स्वाम दीधो, पार थेट तांई पीहचायो ॥ १९ ॥
पाग चोरी ल्याया पूछ्या न पूगै, मुदो थेठ ताई न मिलाई।
साची कहै मोल लियो उण सेती, रुडी अमकडिया पास रंगाई ॥ २० ॥
इम साची सरधा न्याय किहांई न अटकै, झूठी सरधा अटकै झोला खावै।
दृष्टन्त स्वाम भिक्खु एहवा दीधा, दान दया आज्ञा दरशावै ॥ २१ ॥
एहवा भिक्खु स्वाम आप उजागर, ज्यांरा गुण पूरा कह्या न जावै।
हद न्याय सुणी हरखै हलुकर्म्मी, भारी कर्म्मा सांभल भिडकावै ॥ २२ ॥
सखर ढाल कही सप्तवीसमीं, दृष्टन्त भिक्खु रा दिखाया।
मति श्रुत सूं वर न्याय मिलाई, स्वामी जीव घणा समझाया ॥ २३ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नै कह्यौ, सूस करावौ सोय।
ते लेई भागै तिको, पाप आपनै होय ॥ १ ॥
स्वामी भाखै साभलो, कोयक साहुकार।
वस्त्र किणनै बेंचियो, सौ रुपयां रो सार ॥ २ ॥
नफो मोकलो नीपनो, बेच्यो तास विचार।
बलि वस्त्र लेवाल रा, साभलजो समाचार ॥ ३ ॥
कपडो लीधो तिण किया, एक एक रा दोय।
तो पिण नफो उण तणो, बेच्यो तास न होय ॥ ४ ॥
कपडो जो लेई करी, जाले अग्नि मझार।
तोटो पिण उणरै तिको, बेच्यो तसु म विचार ॥ ५ ॥
समझाई म्हे सूस द्यां, तिणरो नफो अमाम।
हमनै तो ते हो गयो, तोटा मै नही ताम ॥ ६ ॥
सूंस पालसी अति सखर, थिर फल तेहने थाप।
भांग्यां दोषण उण भणी, पिण म्हानै नही पाप ॥ ७ ॥
बलि दूजो दृष्टन्त वर, दमि नै किण घृत दीध।
मुनि नै बहराई जिय मूंआं, पापज तास प्रसिध ॥ ८ ॥
अथवा मुनि अन्य साध नै, घृत दे बन्धे जिन गोत।
तो पिण फल ते मुनि तणै, हिव गृही नै नहिं होत ॥ ९ ॥

ढाल : २८

[आज शहर मे बाई०—ए देशी]

वैरागी री वाणी सुण्यां वैराग बाधै, दियौ स्वाम भिक्खु दृष्टान्तो रे लो।
कसुवौ आप गल्या गालै कपडौ, आवै रग अत्यन्तो रे लो।
स्वाम भिक्खु तणा दृष्टन्त सुणजो॥ १॥
गांठ कसुबा री गाढी बाधै, पोतै गलियां पिण रग न पमावै रे लो।
ज्यूं वेराग हीण तणी वाणी सूं, अति वैराग किण विध आवै रे लो॥ २॥
भेषधारी कहै म्हे जीव बचावां, भीखणजी नाहि बचावै रे लो।
भिक्खु कहै थारा रह्या बचावणा, मारणाज छोड़ौ मन ल्यायो रे लो॥ ३॥
थांनक माहै रहौ किवाड जडौ थे, जीव घणा मर जावै रे लो।
किवाड़ जडवारा सूस किया सूं, घणा जीवा री घात न थावै रे लो॥ ४॥
चौकीदार हुतो सो चौकी दैणी तौ छोडी, चोरी करवा लागौ छानै छानै रे लो।
कहै लोका नै चौकी द्यूं करू जाबता, मैनत रा पैसा देवौ थे म्हानै रे लो॥ ५॥
चौकी रही थारी चोरचा छोड तू, बोल्या लोक तिवारै रे लो।
दिन रा तौ घर हाट देखी जावै, पछै रात्रि समै आय फाड़ै रे लो॥ ६॥
पइसौ पइसौ तोनै देसा परहौ, घर बैठा नै गिणायो रे लो।
ज्यू भेषधारी कहै म्हे जीव बचावा, मारणा छोडौ भिक्खु फुरमायो रे लो॥ ७॥
किणही पूछचौ ऋषपाल मुनि कह्या, रिख्या करै किण री तो रे लो।
भिक्खु कहै ज्यू छै तिमहिज राखणा, आघा पाछा न करणा अनीतो रे लो॥ ८॥
पशु निलोती चरता नै मुनि पेखै, किम ऋषपाल कहीजै रे लो।
त्रिविधे त्रिविधे हणवौ त्याग्यौ ते, रक्षक अभय सर्व नै आपीजै रे लो॥ ९॥
कोई कहै हिवड़ा पचम काल छै, पूरो साधपणौ न पलायो रे लो।
तब पूज कहै चौथा आरा मै तेलौ, कितरा दिना रौ कहायो रे लो॥ १०॥
तब ते बोल्यौ तीन दिन रौ तेलौ, चौथै आरै चित्त चाह्यो रे लो।
भिक्खु पूछचौ एक भूग रौ भोगव्यां, तेलौ रहै कै भागै ताह्यो रे लो॥ ११॥
तब ते बोल्यौ परहौ भागै तेलौ, इम चोथा आरा रौ तेलौ उलखायौ रे लो।
फेर स्वामी पूछै पचम आरै, किता दिवस रौ तेलो कहायो रे लो॥ १२॥
तब ते बोल्यौ तेलो तीन दिना रौ, पचम आरै पिछाणी रे लो।
भिक्खु कहै एक भूग रौ खाधा, शुद्ध रहै कै भागै सो जाणी रे लो॥ १३॥
तब ते बोल्यौ परहौ भागै तेलौ, वलि पूज बोल्या वायो रे लो।
भूग रा सू ई तेलौ परहौ भागै, दोष थाप्या सजम किम ठहरायो रे लो॥१४॥

काल दुखम रै माथै कांय न्हाखी, नेयेठे छहूँ चरण ते नीकी रे लो।
पचम चौथा आरा मे प्रत्यप, सहु रे त्याग है एक सरीखी रे लो ॥ १५ ॥
दोप लागा री डड दोनू आरा मे, डड लीधा चारित्र दोनू आरी रे लो।
दोनूं आरा माहै दोप थाप्या सू, चारित दोनूआरा मे हुवै छारो रे लो ॥१६॥
भिक्खु स्वाम दृष्टन्त भली पर, वारु भिन्न भिन्न भेद वताया रे लो।
ज्या पुरुपा जिण माग जमायौ, स्वामी चार तीर्थ सुखदाया रे लो ॥ १७ ॥
एहवा पुरपा रा औगुण बोलै, कृतघ्न कर्म्म रेख काली रे लो।
दुर्ल्लभ बोध अवर्णवाद सू दाख्यौ, सूत्र ठाणाग लीजो सभाली रे लो ॥ १८ ॥
अष्टवीस मी ढाल अनोपम, भिक्खु रा दृष्टन्त भाली रे लो।
उत्पत्तिया भेद मति री है आछौ, नन्दी मे पाठ निहाली रे लो ॥ १९ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, सजम लेऊ सार।
मन उठै है माहरौ, स्वाम कहै सुखकार ॥ १ ॥
घर मै पुत्रादिक घणा, रुदन करै घर राग।
तुझ काची हियो तेहथी, अति ही कठिन अथाग ॥ २ ॥
न्याती रोता निरखनै, मोह धरौ मन माहि।
तूं पिण रुदन करै तदा, काम कठिन कहिवाय ॥ ३ ॥
तिण कह्यौ स्वामी तहत वच, आसू तौ आय जाय।
परियण रोता पेखनै, म्हारै पिण मोह आय ॥ ४ ॥
स्वाम कहै कोइ सासरै, जाय जमाई जाण।
आणौ ले आता छता, त्रिय तौ रोवै ताण ॥ ५ ॥
पिण उणरी देखा देख पिउ, जेह जमाई जोय।
रुदन करै मोह राग सूं हासी जग मै होय ॥ ६ ॥
त्रिय रोवै पीयर तणौ, वियोग पडै विशेष।
बर रोवै किण बासतै, उपनय कहू अशेष ॥ ७ ॥
ज्यू संयम लेवै जरै, स्वार्थ रुदन स्वजन।
तत चारित लेवै तिकौ, मोह धरै किम मन ॥ ८ ॥
तिणसू सयम कठिन तुझ, दियौ इसौ दृष्टान्त।
बलि हेतु आख्या विविध, स्वाम भला शोभत ॥ ९ ॥

ढाल २९

[भरत जी भूप०—ए देशी]

जगत तौ मोह नैं दया जाणै छै, दया ओलखणी दोहरी।
प्रत्यष राग अठारै पाप मै, साची श्रद्धा नही सोहरीरी।
भविकजन भिक्खु ना दृष्टन्त भारी॥ १॥
पूज मोह ओलखायौ प्रत्यष, दियौ एहवौ दष्टान्तो।
परण्या पछै कोई परभव, पौहतो बाल अवस्थावन्तो॥ २॥
मुऔ देख हाहाकार माच्यौ, त्रिया रोवै तिण वेला।
प्रत्यष हाय हाय शब्द पुकारै, भय चक्रजन हुवा भेला। भ०॥ ३॥
कहै बापरी छोहरी रौ घाट काई होसी, इणरी देखौ अवस्था ऐसी।
बारह वर्ष री विधवा होई सो, किण विध दिन काढैसी। भ०॥ ४॥
एम विलाप करै लोक अधिका, जगत इणनै दया जाणै।
करुणा दया एह छोहरी री करै छै, मूरख तौ इम माणै॥ ५॥
पण भौला इतरी नही पेखै, ऐ बछै इणरा काम भोगो।
जाणै ओ रह्यो हुतौ जीवतौ तौ, सखर मिल्यौ थौ सजोगो। भ०॥ ६॥
दोय चार होता डावरा डावरी, भोग भला भोगवती।
पिण न जाणै आ काम भोगा थी, माठी गति माहि पडती॥ ७॥
तिणरी चिन्ता तौ नही तिणानै, तथा पिउ किण गति पागरियौ।
ते पिण मूल चिन्ता नहिं त्यानै, जगत माया मोह जुडियौ। भ०॥ ८॥
ज्ञानी पुरुष मरण जीवण सम गिणै, उलट सोग नहिं आणै।
मूढ मिथ्याती मोह राग नै, जीवण नै दया जाणै॥ ९॥
अथवा राग द्वेष रै ऊपर, दृष्टान्त दूजौ दीधो।
डावरा रै किणही माथा मै दीधी, साम्प्रत द्वेष प्रसिद्धौ॥ १०॥
उणनै सहु कोई देवै ओलूभा, डावरा रै माथा मै काई देवै।
क्रोध करि दिया द्वेष कहै सहु, कोई आछौ नही कैहवै॥ ११॥
डावरा नै किणही लाडू दीधौ, अथवा मूलौ दियौ आणी।
कोई न कहै इणनै काई डब्रोवै, प्रत्यष राग पिछाणी॥ १२॥
औ राग ओलखणौ दोहरौ, अति ही इणनै दया कहै छै अजाणो।
दुर्जय राग दशम ताइं देखौ, वीता वीतराग कहाणो॥ १३॥
इम राग द्वेष भिक्खु ओलखाया, मोह राग पाखडी दया माणै।
स्वाम भिक्खु न्याय सूत्र शोधी, निरवद्य दया आज्ञा मैं जाणै॥ १४॥

काल दुखम रै माथै कांय न्हाखो, नेयेठै छहूँ चरण ते नीको रे लो।
पचम चौथा आरा मे प्रत्यप, सहु रे त्याग हे एक सरीखो रे लो ॥ १५ ॥
दोप लागा रो डंड दोनू आरा मे, डड लीधा चारित्र दोनू आरो रे लो।
दोनूं आरा माहै दोप थाप्या सू, चारित दोनू आरा मे हुवै छारो रे लो ॥१६॥
भिक्खु स्वाम दृष्टन्त भली पर, वारु भिन्न भिन्न भेद वताया रे लो।
ज्या पुरुपा जिण माग जमायो, स्वामी चार तीर्थ सुखदाया रे लो ॥ १७ ॥
एहवा पुरपा रा औगुण वोलै, कृतघ्न कर्म्म रेख काली रे लो।
दुर्ल्लभ वोध अवर्णवाद सू दाख्यो, सूत्र ठाणाग लीजो सभाली रे लो ॥ १८ ॥
अष्टवीस मी ढाल अनोपम, भिक्खु रा दृष्टन्त भाली रे लो।
उत्पत्तिया भेद मति री है आछौ, नन्दी मे पाठ निहाली रे लो ॥ १९ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु ने कह्यो, सजम लेऊ सार।
मन उठै है माहरो, स्वाम कहै सुखकार ॥ १ ॥
घर मे पुत्रादिक घणा, रुदन करै घर राग।
तुझ काचौ हियो तेहथी, अति ही कठिन अथाग ॥ २ ॥
न्याती रोता निरखनै, मोह धरौ मन माहि।
तूं पिण रुदन करै तदा, काम कठिन कहिवाय ॥ ३ ॥
तिण कह्यौ स्वामी तहत वच, आसू तौ आय जाय।
परियण रोता पेखनै, म्हारै पिण मोह आय ॥ ४ ॥
स्वाम कहै कोइ सासरै, जाय जमाई जाण।
आणौ ले आता छता, त्रिय तौ रोवै ताण ॥ ५ ॥
पिण उणरी देखा देख पिउ, जेह जमाई जोय।
रुदन करै मोह राग सू हासी जग मे होय ॥ ६ ॥
त्रिय रोवै पीयर तणौ, वियोग पडै विशेष।
बर रोवै किण बासतै, उपनय कहू अशेष ॥ ७ ॥
ज्यू संयम लेवै जरै, स्वार्थ रुदन स्वजन।
तत चारित लेवै तिको, मोह धरै किम मन ॥ ८ ॥
तिणसू सयम कठिन तुझ, दियो इसौ दृष्टान्त।
बलि हेतु आख्या विविध, स्वाम भला शोभत ॥ ९ ॥

आया दोय जणा तिण अवसरै, सामदासजी रा साधो रे।
खाधै पोथ्या तणा जोडा खरा, मैला वस्त्र मर्य्यादो रे। आ० ॥ ३ ॥
विहार करन्ता उपाश्रै आविया, बोलै मुख सू बोलो रे।
कठे भीखणजी रे भीखणजी कठै, तब भिक्खु बोल्या तोलो रे। आ० ॥ ४ ॥
भीखण नाम म्हारौ स्वामी भणै, वलि ते बोल्या विशेषो रे।
थानै देखण री मन मैं हुती, तब स्वाम कहै तुम देखौ रे॥ ५ ॥
वलि उवे बोल्या थे सगली वारता, आछी कीधी अमामो जी।
एक बात आछी नही आदरी, तब पूज कहै कहौ तामौ रे॥ ६ ॥
वलि ते कहिवा रे लागा वारता, म्हे बावीस टोला रा साधो रे।
त्या सगला नै असाध कहौ तिका, बिरुई बात विराधो रे॥ ७ ॥
मुनि भिक्खु कहै तुझ टोला मझै, लिखत इसौ अवलोयो रे।
इकबीस टोला रौ तुझ गण आविया, सयम दैणो सोयो रे॥ ८ ॥
ऐसौ लिखत थारा गण मे, अछै जाणौ कै थे न जाणो रे।
जद उवे बोल्या रे म्हे जाणा अछा, छै मुझ लिखत अछानो जी॥ ९ ॥
भिक्खु पभणै इक्कीस टोला भणी, थेइज प्रत्यष उथाप्या रे।
गृही नै दीख्या देई लौ गण मझै, थे गृही तुल्य त्यानैई थाप्या रे॥ १० ॥
इकवीस टोला रा तुझ गण आविया, दीख्या दे लेवौ माह्यो रे।
गृही नै दीख्या देई लौ गण विषै, गृही तुल्य तास गिणायो रे। आ० ॥ ११ ॥
इकबीस टोला इम थेइज उथापिया, तुझ टोलौ रह्यौ तेहो रे।
तिणरौ लेखौ बताऊं तो भणी, साभलजो ससनेहो रे। आ० ॥ १२ ॥
डड बेला रौ आवै जिण भणी, तेलौ देवै तहतीको रे।
तेला रौ डड आवै तिण भणी, श्री जिन वैण सधीको रे॥ १३ ॥
इकबीस टोला नै साध श्रद्धौ अछौ, वले नवौ साधपणौ देवौ रे।
तिण लेखै दीख्या रे तुझ आवै नवी, विवेक लोचन सू वेवौ रे॥ १४ ॥
थारौ टोलौ पिण इण लेखा थकी, ऊथप गयौ उवेखौ रे।
इम बावीस टोला ऊथप गया, दम्भ तजीनै देखौ रे॥ १५ ॥
एम सुणीनै ते बोल्या इण विधै, वारु वयण विचारी रे।
सुणौ भीखणजी रे साची वारता, वुद्धि तौ थारी भारी रे॥ १६ ॥
इम कहि जावा रे लागा उण समै, स्वाम कहै सुखकारी रे।
रहौ तौ चर्चा करा रुडी तरै, न्याय तणी निर्धारी रे॥ १७ ॥
तव उवे बोल्या रे मुझ रहिवा तणी, हिवडा थिरता न होयो रे।
तत् क्षण एम कही नै तिहां थकी, रह्या चालता दोयौ रे॥ १८ ॥

भरत खेत्र में दीपक भिक्खु, दीपा समान दीपायो।
जिहाज तुल्य भिक्खु यशधारी, प्रत्यप ही पेखायो॥ १५॥
याद आवै भिक्खु मुझ अहनिश, तन मन शरण तुमारौ।
त्या पुरुपा नी आसता तीखी, जिणरौ है सफल जमारौ॥ १६॥
गुणतीसमी ढाले ज्ञानी गरु ना, वारु वचन बताया।
कठा तलक भिक्खु गुण कहियै, चिर जग कलश चढायौ॥ १७॥

दुहा

विहरत पूज पधारिया, काफरलै किण वार।
सत गौचरी सचर्‍या, आज्ञा लेई उदार॥ १॥
एक जाटणी रै उदक, जाच्यौ साधा जाय।
ते धोवण नहि दै तिका, कहै देवै सो पाय॥ २॥
साधा आय कह्यौ सही, स्वाम पास सुबिहाण
एक जाटणी रै अधिक, पण नही देवै पाण॥ ३॥
तब स्वामी आया तिहा, बाई जल बहिराय।
जब ते कहै देवै जिसौ, परभव मै फल पाय॥४॥
औ धोवण द्यू आपनै, परभव धोवण पाय।
जे जल पीधौ जाय नही, मुझ सेती मुनिराय॥ ५॥
पूज तास पूछा करी, गाय भणी दै घास।
तिणरौ स्यू दै ते गऊ, आपै दूध उजास॥ ६॥
इम मुनि नै जल आपिया, परभव सुख फल पाय।
निर्दोषण ना फल निमल, स्वाम दई समझाय॥ ७॥
जद आज्ञा दी जाटणी, बहिरी ते शुद्ध वार।
आप ठिकाणै आविया, ऐसी बुद्धि उदार॥ ८॥
मति ज्ञान महा निर्मलौ, भिक्खु नौ भरपूर।
नीत चरण पालण निपुण, स्वाम सिंघ सम शूर॥ ९॥

ढाल ३०

[भगवन्त भाष्या०—ए देशी]

आज म्हारा पूज सूं पाखड थरहडै, सुरगिर आप सधीरोजी।
पारश साचो रे भिक्खु प्रगट्यौ, हद स्वाम अमोलक हीरो जी। आ० ॥ १॥
पादु शहरै रे पूज पधारिया, उतर्‍या उपासरै आणो जी।
शिष्य हेम सघातै रे गौचरी ऊठतां, इतलै कुण अवसानो जी॥ २॥

आया दोय जणा तिण अवसरै, सामदासजी रा साधो रे।
खाधै पोथ्या तणा जोडा खरा, मैला वस्त्र मर्य्यादो रे। आ० ॥ ३ ॥
विहार करन्ता उपाश्रै आविया, बोलै मुख सू वोलो रे।
कठे भीखगजी रे भीखणजी कठै, तव भिक्खु वोल्या तोलो रे। आ० ॥ ४ ॥
भीखण नाम म्हारौ स्वामी भणै, बलि ते बोल्या विशेपो रे।
थानै देखण री मन मैं हुती, तब स्वाम कहै तुम देखौ रे ॥ ५ ॥
बलि उवे बोल्या थे सगली बारता, आछी कीधी अमामो जी।
एक बात आछी नही आदरी, तव पूज कहै कहौ तामौ रे ॥ ६ ॥
बलि ते कहिवा रे लागा बारता, म्हे बावीस टोला रा साधो रे।
त्या सगला नै असाध कहौ तिका, विरुई बात विराधो रे ॥ ७ ॥
मुनि भिक्खु कहै तुझ टोला मझै, लिखत इसौ अवलोयो रे।
इकबीस टोला रौ तुझ गण आविया, सयम दैणो सोयो रे ॥ ८ ॥
ऐसौ लिखत थारा गण मै, अछै जाणौ कै थे न जाणो रे।
जद उवे बोल्या रे म्हे जाणा अछा, छै मुझ लिखत अछानो जी ॥ ९ ॥
भिक्खु पभणै इक्कीस टोला भणी, थेइज प्रत्यप उथाप्या रे।
गृही नै दीख्या देई लौ गण मझै, थे गृही तुल्य त्यानैई थाप्या रे ॥ १० ॥
इकवीस टोला रा तुझ गण आविया, दीख्या दे लेवौ माह्यो रे।
गृही नै दीख्या देई लौ गण विषै, गृही तुल्य तास गिणायो रे। आ० ॥ ११ ॥
इकबीस टोला इम थेइज उथापिया, तुझ टोलौ रह्यौ तेहो रे।
तिणरौ लेखौ बताऊ तो भणी, साभलजो ससनेहो रे। आ० ॥ १२ ॥
डड बेला रौ आवै जिण भणी, तेलौ देवै तहतीकौ रे।
तेला रौ डड आवै तिण भणी, श्री जिन वैण सधीको रे ॥ १३ ॥
इकबीस टोला नै साध श्रद्धौ अछी, बले नवी साधपणी देवौ रे।
तिण लेखै दीख्या रे तुझ आवै नवी, विवेक लोचन सू वेवौ रे ॥ १४ ॥
थारौ टोलौ पिण इण लेखा थकी, ऊथप गयौ उवेखौ रे।
इम बावीस टोला ऊथप गया, दम्भ तजीनै देखौ रे ॥ १५ ॥
एम सुणीनै ते बोल्या इण विधै, वारु वयण विचारी रे।
सुणौ भीखणजी रे साची वारता, वुद्धि तौ थारी भारी रे ॥ १६ ॥
इम कहि जावा रे लागा उण समै, स्वाम कहै सुखकारी रे।
रहौ तौ चर्चा 'करा रुडी तरै, न्याय तणी निर्धारी रे ॥ १७ ॥
तब उवे वोल्या रे मुझ रहिवा तणी, हिवडां थिरता न होयो रे।
तत् क्षण एम कही नै तिहा थकी, रह्या चालता दोयौ रे ॥ १८ ॥

ऐसी बुद्धि अनोपम आपरी, बुद्धिवन्त पामै विनोदो रे।
चिमत्कार अति पामै चित्त मझै, प्रगट पणै प्रमोदो रे॥ १९॥
रागी सुणनै रे चित्त मैं रति लहै, द्वेषी द्वेषज धारै रे।
उलट बुद्धि नर अवगुण आदरे, वच सुण मुह विगाडै रे॥ २०॥
वर भिक्खु री सुन्दर वारता, साभलता सुखकारी रे।
हलुकर्म्मी जन सुण हर्षे घणा, पूज बारता प्यारी रे॥ २१॥
तंत तीसमी ढाल तपास नी, अति बुद्धि भिक्खु नी एनी रे।
अंतर्य्यमी रे याद आया छता, चित्त मैं पामै चैनो रे॥ २२॥

दुहा

विचरत पूज पधारिया, शिरियारी मै सोय।
प्रश्न बौहरै पूछिया, जाति खीवसरा जोय॥ १ ॥
जीव नरक मै जाय तसु, तारण वालौ तांम।
कुण है कहो कृपा करी, इम पूछचौ अभिराम॥ २ ॥
भिक्खु उत्तर इम भणै, सखर जाब सुखकार।
पथर कुवा मै न्हाखिया, कुण तसु षाचणहार॥ ३ ॥
कठिन पत्थर भारे करी, आफेई तल जाय।
कर्म्म भार सूं कुगति लहै, स्वाम कहै इम वाय॥ ४ ॥
बौंहरौ पूछा बलि करी, जीव स्वर्ग किम जाय।
कुण लेजावणहार तसु, बारू अर्थ बताय॥ ५ ॥
भिक्खु कहै बौहरा भणी, प्रत्यष पाणी माय।
काष्ट न्हांखै कर ग्रही, ते किण रीत तिराय॥ ६ ॥
तिण काष्ठ रै तल कहो, किण मांड्या है हाथ।
हलकापणा स्वभाव सूं, ऊपर तिरनै आत॥ ७ ॥
हलकौ कर्म्म करी हुवा, जीव स्वर्ग मै जाय।
सगला कर्म्म रहित सो, परम मोक्ष गति पाय॥ ८ ॥
ऐसा उत्तर आपिया, बारु बुद्धि बिनाण।
बलि उत्पत्तिया बुद्धि थकी, सखर जाब सुबिहाण॥ ९ ॥

ढाल : ३१

[देवै मुनिवर देशना—ए देशी]

पूज भणी किण पूछियौ, हलकौ जीव किम होय। ललना।
दृष्टान्त स्वामी दियौ इसी, साभल जो सहु कोय। ललना॥
तंत दृष्टान्त भिक्खु तणा॥ १ ॥

त वचन तहतीक ललना, तत स्वाम नाव तारणी।
याय तंत निरभीक ललना, त० ॥ २ ॥
इसौ मेहलै पाणी मझै, तत्खिण डूबै तेह ल०।
णहिज पइसा नै अग्नि मै, अधिक ताप देवै एह ल०। त०। ३ ॥
टी कुटी बाटकी करी, तिरै उदक मै ताहि ल०।
लि उण बाटकी नै विषै, पइसौ मेल्या तिराय ल०। त०। ४ ॥
म जीव सजम तप करी, करै आत्म हलकी कोय ल०।
र्म भार अलगौ किया, तिरियै भवदधि तोय ल०। त०। ५ ॥
णही स्वाम भणी कह्यौ, दुरगा पात्रा देख ल०।
ला धौला लाल किण कारणै, स्वाम कहै सुविशेष ल०। त०। ६ ॥
विध रग कुथुवा हुवै, इक रग सू दूजा पर आय ल०।
म्प्रत दीसणौ सोहिलौ, कारण एह कहाय ल०। त०। ७ ॥
ति भार हीगलु एकलौ, कालौ फोडौ कहिवाय ल०।
लि सोहरौ बासी उतारणौ, इत्यादिक ओलखाय ल०। त०। ८ ॥
जूवा रग देवै जूदा, निगम मै बरज्या नाहि ल०।
र्या ते ममत्व भावे करी, ते ममत री थाप न ताहि ल०। त०। ९ ॥
लपणै स्वामी वैणीरामजी, भिक्खु प्रतै भाषंत ल०।
गलू सू पात्रा रगणा नही, तब कहै भिक्खु तत ल०। त०। १० ॥
ारै तो पात्रा रग्या अछै, तुझ मन शका हुवै ताम ल०।
तुझ पात्रा रगौ मती, म्हे तौ दोष न जाणा आम ल०। त०। ११ ॥
बोल्या वैणीरामजी, केलुथी रगवा रा भाव ल०।
क्खु तास भली परै, निर्मल बतावै न्याय ल०। त०। १२ ॥
केलु लेवा तू जाय छै, पहिला पीली कच्चा रग रौ पेख ल०।
का लाल रग रौ आगै पड्यौ, पहिलौ छोडणौ नही तुझ लेख ल०। त०। १३ ॥
हिला देख्यौ कच्चा रग रौ परिहरि, चोखौ केलु हेरै चित चाहि ल०।
द तौ ध्यान घणा रगरौज छै, इम कहिनै दिया समझाय ल०। त०। १४ ॥
ती बुद्धि उत्पात्त री, नही मान बडाई री नीत ल०।
तम अर्थी ओपता, पूरी ज्यारी प्रतीत ल०। त०। १५ ॥
प ववहार मै ओलखी, दोष जाणी क्रिया दूर ल०।
रदोष जाण्यौ निर्मलौ, सम आदरियौ शूर ल०। त०। १६।
यम आचारग पेखल्यौ, पचम अध्ययने पिछाण ल०।
वम उदेशौ पवंडौ, वीर तणी ए वाण ल०। त०। १७ ॥

शुद्ध व्यवहार आलोचियां, असम्य पिण सम्य थाय ल० ।
ते कामी नही तिण दोष नौ, शुद्ध साधु नी रीत सुहाय ल० । त० । १८ ॥
उत्तम ए पाठ ओलखी, कोईचोल री भ्रम कर्म्म योग ल० ।
तौ भिक्खु री आसता राखिया, पामै सुख परलोग ल० । त० । १९ ॥
आखी ढाल इकतीसमी, भिक्खु वृद्धि भडार ल० ।
दृष्टान्त दिल मै देखता, चित्त पामै चिमत्कार ल० । त० । २० ॥

दुहा

किण ही भिक्खु नै कह्यौ, जीव छोडावै जाण ।
सू फल तेहनौ सपजै, वर विक्खु कहै वाण ॥ १ ॥
घट मै ज्ञान घाली करी, हिंस्या छोड़ाया धर्म्म ।
जीवण वछे जेहनौ, कटै नही तसु कर्म्म ॥ २ ॥
ऊची कर वे आगुली, आखै भिक्खु आप ।
औ बकरौ रजपूत औ, कहौ बाधे कुण पाप ॥ ३ ॥
मरणहार डूबै महा, कै डूबै मारणहार ।
ओ कहै मारणहार सो, जासी नरक मझार ॥ ४ ॥
भिक्खु कहै डुबता भणी, तारै सत तिवार ।
समझावै रजपूत नै, शिव मार्ग श्रीकार ॥ ५ ॥
जे बकरा री जीवणु, बाछै नही लिगार ।
तिण ऊपर दृष्टान्त ते, साभलजो सुखकार ॥ ६ ॥
साहुकार रै दोय सुत, एक कपूत अवधार ।
ऋण करडी जागा तणु, माथै करै अपार ॥ ७ ॥
दूजौ सुत जग दीपतौ, यश ससार मझार ।
करडी जागा री करज, ऊतारै तिण बार ॥ ८ ॥
कहौ केहनै बरजै पिता, दोय पुत्र मै देख ।
बरजै कर्ज करै तसु, कै ऋण मेटत पेख ॥ ९ ॥

ढाल : ३२

[समता रस बिरला—ए देशी]

कर्ज माथै सुत अधिक करतौ, बार बार पिता वरजतो रे ।
समझू नर विरला ।
करडी जागां रा माथै काय कीजै, प्रत्यष दुख पामीजै रे । सम० ॥ १ ॥

अधिक माथा री जे कर्ज उतारै, जनक तास नहि वारै रे। सम०।
पिता समान साधुजी पिछाणी, बकरी रजपूत बे सुत माणी रे ॥ २ ॥
कर्म्म रूप ऋण माथै कुण करतौ, आगला कर्म्म कुण अपहरतौ रे। सम०।
कर्म्म ऋण रजपूत माथै करै छै, बकरा सचित कर्म्म भोगवै छै रे॥ ३ ॥
साधु रजपूत नै बर्जे सुहाय, कर्म्म करज करै काय रे। सम०।
कर्म्म बध्या घणा गोता खासी, परभव मैं दुख पासी रे॥ ४ ॥
सखरपणै तिणनै समझायौ, तिरणौ तिणरौ बछ्यौ मुनिरायो रे। सम०।
बकरा जीवावण नही दै उपदेश, रूडी ओलखै बुद्धिवत रेस रे॥ ५ ॥
इमहिज कसाई सौ बकरा हणतो, शुद्ध उपदेश दे तार्‌यौ सतो रे। सम०।
कसाई गुणग्राम साधु रा करन्तौ, मुझ तारक आप महतो रे॥ ६ ॥
बकरा हर्ष्या जीव बचिया विशेष, यारै काज न दियौ उपदेश रे। सम०।
ज्ञानादि चिऊ कसाई घट आया, पिण बकरा तौ मूल न पाया रे॥ ७ ॥
कहै कसाई दोनू कर जोड, सौ बकरा करै शोर रे। सम०।
कहौ तौ नीलौ चारौ यानै चराऊ, पछे काचौ पाणी त्यानै पाऊ रे॥ ८ ॥
आप कहौ तौ एवर मैं उछेरू, कहौ तौ अमरिया करेरू रे। सम०।
आप कहौ तौ सूपू आपनै आणी, पाइजो धोवण उन्हौ पाणी रे॥ ९ ॥
तुम सूकौ चारौ निरजो बहुतेरौ, एवर साधा रौ उछेरौ रे। सम०।
साधु कहै सूस सखरा पालीजे, जावता सूसा री कीजै रे ॥ १० ॥
सूसा री एम भलावण देवै, बकारा री मूल न वेवै रे। सम०।
उपदेश देवै जो बकरा बचावण, तौ बकरा री दैत भलावण रे॥ ११ ॥
समझ्यौ कसाई सखर शिव साई, इणरी मुनि नै दलाली आई रे। सम०।
तेहिज धर्म्म साधु नै जोय, पिण बकरा रौ धर्म्म न कोय रे॥ १२ ॥
कसाई अज्ञानी रौ ज्ञानी कहायौ, पिण बकरा तौ ज्ञान न पायौ रे। सम०।
कसाई मिथ्याती रौ समकती कहियै, शुद्ध तत्व बकरा न सदहियै रे॥ १३ ॥
हिंसक रौ दयावान हुवौ कसाई, दिल बकरा रै दया न आई रे। सम०।
तिरियौ कसाई बकरा नही तिरिया, दुर्गति सू नहि डरिया रे॥ १४ ॥
कसाई तिरियौ ते धर्म्म इण काज, तारक महामुनि राज रे। सम०।
तिरण तारण कसाई रा तपासो, वारू हिया मं विमासो रे॥ १५ ॥
तस्कर नौ दूजौ दृष्टन्त तेह, साभलजो ससनेह रे। सम०।
किण ही मेथी नी हाटे किण वार, उतरिया अणगार रे॥ १६ ॥
तस्कर रात्रि समै तिणवार, खोल्या है आय किमाड रे। सम०।
तव मुनिवर कहै जागीनै ताम, कुण हौ आया किण काम रे॥ १७ ॥

कहै तस्कर म्हे तौ चोर कहाया, इहा चोरी करणनै आया रे। सम०।
सहंस रुपया री थेली मेहली सेठ, निडर लेजावसा नेठ रे॥ १८॥
तब साधु उपदेश देवै तिण वार, कह्या चोरी रा फल दुःखकार रे। सम०।
आगै नरक निगोद ना दु:ख अधिकाया, भिन्न २ भेद वताया रे॥ १९॥
धन तौ न्यातीला सहू मिल खासी, परभव दुःख तू पासी रे। सम०।
रूडी उपदेश देई मुनिराया, त्याग चोरी ना कराया रे॥ २०॥
तस्कर कहै मुझ डुवता ने तार्‍यौ, विपम कर्म्म सू वार्‍यो रे। सम०।
वारु विविध गुण करत विख्यात, प्रगट थयौ प्रभात रे॥ २१॥
इतलै दूकान तणौ धणी आयौ, ज्ञान नही घट माह्यो रे। सम०।
पेड़ी नै नमस्कार करि प्रसिद्धो, कायक लटकौ साधू नै ही कीधौ रे॥ २२॥
तस्कर नै पूछा करी तिवार, कुण ही खोल्या किण दुवार रे। सम०।
तस्कर बोल्या म्हे चोर छा ताम, अब तौ त्यागे दीधी आम रे॥ २३॥
हुण्डी बटायनै रुपया हजार, थेली माहै मेहली थे तिवार रे। सम०।
सो म्हे साझै देखता था सोय, आया लेवण अवलोय रे॥ २४॥
साधां उपदेश देई समझाया, चोरी ना लखण छोडाया रे। सम०।
साधा री भलो होयजो कारज सार्‍या, तुरत डूबता नै तार्‍या रे॥ २५॥
मेसरी सुणनै हर्ष्यौ मन माह्यो, पडियौ साधा रै पायो रे। सम०।
आप म्हारी हाटे भलाई ऊतरिया, सकल मनोरथ सरिया रे॥ २६॥
थेली म्हारी आप राखी थिर थापी, प्रत्यष लेजावता चोर पापी रे। सम०।
हिवड़ा लेजावता रुपया हजार, निपट हुतौ निराधार रे॥ २७॥
चार पुत्र मुझ चतुर विचारा, कर्म्म वश रहिता कुवारा रे। सम०।
सुत चारूंई परणाव सूं सार, औ आप तणौ उपगार रे॥ २८॥
इम कहै मेसरी वयण अथागो, ऋषजी तणौ तौ रागो रे। सम०।
धन राखण उपदेश म धार, तेतौ तस्कर तारणहार रे॥ २९॥
कसाई समझ्या बकरा कुशले कह्या जी, तस्कर समझ्या धन रौ धनी राजी रे। सम०।
कसाई चोर तारण रिष कामी, धन बकरा राखण नही धामी रे॥ ३०॥
तीजो दृष्टन्त कहू तत सार, एक पुरुष लपट अधिकार रे। सम०।
सो पुरुष परनारी नौ सेवणहार, अति ही बधाणी पीत अपार रे॥ ३१॥
ते लपट आयौ मुनि तणै पाय, साधा दियौ समझाय रे। सम०।
पर स्त्री नौ पाप सुणी भय पायौ, अधिक वैरागज आयौ रे॥ ३२॥
ते त्याग जाव जीव कीधा ते ठाम, गावै मुनि ना गुणग्राम रे। सम०।
आप मोनै डूवता नै उवार्‍यौ, निकुच विसन थी निवार्‍यौ रे॥ ३३॥

शील आदरियौ सुण्यौ तिण नार, ऊपनौ द्वेष अपार रे। सम०।
उणनै कहै म्हैं धार्यौ इकतार, धुर ही थी था पर धार रे॥ ३४॥
काम औरा सू नही मुझ कोय, इसडी धारी अवलोय रे। सम०।
कैंह तौ म्हारी कह्यौ मानलै तास, म्हासू करौ गृहवास रे॥ ३५॥
कह्यौ न मान्यौ तौ कूवै पड सू, मोत कुमोते मरसू रे। सम०।
जब ते कहे मोनै मिलिया जिहाज, प्रत्यष भव-दधि पाज रे॥ ३६॥
त्या परनारी नौ पाप बतायौ, म्हैं त्याग किया मन लायो रे। सम०।
तिणसू म्हारै थासू मूल न तार, करै अनेक प्रकार रे॥ ३७॥
इम सुण स्त्री कुवै पडी आय, तिणरौ पाप साधू नै न थाय रे। सम०।
समझ्यौ कसाई बकरा बच्या सोय, तस्कर समझ्या रह्यौ धन जोय रे॥ ३८॥
नर लपट समझ्या कूवै पडी नारो, चतुर हिया मै विचारो रे। सम०।
तस्कर कसाई लपट नै तारण, साधा उपदेश दियो सुधारण रे॥ ३९॥
ऐ तीनू तिरिया साधु तारणहार, त्यारौ धर्म्म साधा नै उदार रे। सम०।
मुक्ति मारग या तीना रै बधाया, घणा जनम मरण मिटाया रे॥ ४०॥
बकरा बच्या धणी रै धन रहियौ, तिणरौ धर्म्म साधु रै न कहियौ रे। सम०।
नार कुवै पडी तिणरौ न पापो, अदल विचारौ आपो रे॥ ४१॥
केई अज्ञानी कहै भूला भरमौ, जीव धन रह्यौ तिणरौ है धर्म्मो रे। सम०।
उणरी सरधा रै लेखै इम थापो, प्रत्यष नार मुआरौ है पापो रे॥ ४२॥
नार मुआरौ पाप दिल नाणै, जीव बचिया रौ धर्म्म काय जाणै रे। सम०।
बले धन रह्या रौ धर्म्म काय धारो, वुद्धिवन्त न्याय विचारौ रे॥ ४३॥
भिक्खु स्वाम इम भेद वताया, असल न्याय ओलखाया रे। सम०।
कसाई तस्कर लपट केरौ, भिक्खु दृष्टन्त दियौ भलेरौ रे॥ ४४॥
ऐसा भिक्खु रिप महा अवतारी, त्या श्रद्धा शोधी तत सारी रे। सम०।
ज्या पुरुषा री जे प्रतीत करसी, त्यारौ जीवतब जन्म सुधरसी रे॥ ४५॥
ऐसा भिक्खु याद आवै मोय, हर्ष हियै अति होय रे। सम०।
स्मरण आप तणौ नित्य साधू, भिक्खु पारश साचौ म्हैं लाधू रे॥ ४६॥
सुर गिर सांप्रत आप सधीरा, मोनै मिलिया अमोलक हीरा रे। सम०।
पचम आरा मै कियौ प्रकाश, सखरी फैली है वास सुवास रे॥ ४७॥
दोय तीसमी ढाले दृष्टन्त, वर्णन वहु विरततो रे। सम०।
स्वाम भिक्खु ओल्खायौ विशेप, तिण म्हैं पिण आख्यौ सु अशेप रे॥ ४८॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नै कह्यौ, जीव वच्या ते जाण।
दया कहीजै तेहनै, जीवण दया पिछाण ॥ १ ॥
भिक्खु कहै कीडी भणी, कीडी जाणै कोय।
ज्ञान कहीजै तेहनै, कै कीडी ज्ञानज होय ॥ २ ॥
तब ते कहै कीड़ो भणी, जे कोय कीडी जाण।
ज्ञान कहीजै तेहनै, पिण कीडी नहि ज्ञान ॥ ३ ॥
बलि भिक्खु कहै कीडी भणी, कीडी सरधै कोय।
समकित कहीजै तेहनै, कै कीडी समकित होय ॥ ४ ॥
तब ते कहै कीडी भणी, कीडी सरधै तत।
समकत ते सरधा सही, पिण किडी नहि समकीत ॥ ५ ॥
त्याग कीडी हणवा तणा, दया तेह दीपाय।
कै कीडी रही तिका दया, भिक्खु पूछी बाय ॥ ६ ॥
तब ते कहै कीडी रही, तिका दया कहिवाय।
खोटी सरधा थापवा, बोल्यौ भूठ बणाय ॥ ७ ॥
भिक्खु कहै पवने करी, कीडी उड गई ताहि।
तुभ लेखै दया उड गई, निरमल निरखौ न्याय ॥ ८ ॥
जद उ कहै विचारनै, कीडी हणवा रा त्याग कियाह।
दया तेहिज दीसै खरी, पिण कीडी रही न दयाह ॥ ९ ॥

ढाल : ३३

[कर्म्म भुगत्याईज छुटिये—ए देशी]

बलता भिक्खु बोलिया, कीडी मारण रा पचखाण लाल रे।
तेहिज दया साची कही, बारु सुणी इक वाण रे लाल रे।
जोयजो रे बुद्धि भिक्खु तणी ॥ १ ॥
रूडी दया निज घट में रही, कै कीडी पास कहाय लाल रे।
तब ते कहै पोता कनै, कीडी पास न काय लाल रे ॥ २ ॥
पूज कहै घट में दया, कीडी पै दया नहि काय लाल रे।
किणरा जतन करणा कहौ, साचौ जाब सुहाय लाल रे ॥ ३ ॥
करणा जतन दया तणा, कै कीडी रा यत्न कराय लाल रे।
उ कहे यत्न दया तणा, इम साच बोली आयौ ठाय लाल रे ॥ ४ ॥

त्रिविध त्याग हणवा तणा, दया सवर रूप देख लाल रे ।
त्याग बिना ही हणै नही, सखर निर्जरा सपेख लाल रे ॥ ५ ॥
इमज छकाय हणै नही, दया तेहिज दीपाय लाल रे ।
जगत हणै जीवा भणी, निज पोता री दया न जाय लाल रे ॥ ६ ॥
भारी बुद्धि भिक्खु तणी, सखरी सिद्धत सभाल लाल रे ।
न्याय मिलाया निरमला, भाज्या भ्रम भयाल लाल रे ॥ ७ ॥
किणहिक इम पूछा करी, महा मोटौ मुनिराय लाल रे ।
अति ही थाकौ उजाड मैं, चालण शक्ति न काय लाल रे ॥ ८ ॥
सैहजेई गाडी आवती, तिण गाडा ऊपर बैसाण लाल रे ।
गाम माहैं आण्यौ सही, तेहनै काई थयौ जाण लाल रे ॥ ९ ॥
भिक्खु कहै गाडी नही, पूणिया आवत पेख लाल रे ।
गधै चढाय आण्यौ गाम मैं, तिण मैं स्यू थयौ तुझ लेख लाल रे ॥ १० ॥
तब ऊ बोल्यौ तडक नैं, गधा री क्यू करौ वात लाल रे ।
स्वाम कहै साधु भणी, दोनू अकल्प देखात लाल रे ॥ ११ ॥
गाडै वैसाणे आण्यौ गाम मैं, थे धर्म तणी करौ थाप लाल रे ।
तौ गधै वैसाण्या ही धर्म है, पाप छै तौ दोया मै ही पाप लाल रे ॥ १२ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि आपरी, निरमल चारित नीत लाल रे ।
सरधा शुद्ध शोधी सही, वारु स्वाम वदीत लाल रे ॥ १३ ॥
पाणी अणगल पाविया, केई पाखण्डी वहै पुन्य लाल रे ।
केयक मिश्र कहै तिहा, ते दोनू ई सरधा जवून लाल रे ॥ १४ ॥
पुण्यवाला कहै पूज नैं, सुणौ भीखणजी वात लाल रे ।
महा खोटी सरधा मिश्र री, किहाई मेल न खात लाल रे ॥ १५ ॥
भिक्खु स्वामी इम भणै, किणरी फूटी एक लाल रे ।
किणरी दोय फूटी सही, वारु करलौ विवेक लाल रे ॥ १६ ॥
मिश्र कहै छै मानवी, त्यारी फूटी एक लाल रे ।
पुन परूपै पापरी, दोनू फूटी देख लाल रे ॥ १७ ॥
जाव दियौ इम जुगत सू, अहो अहो वुद्धि अनूप लाल रे ।
अहो अहो खिम्या आपरी, चित्त चरचा हद चूप लाल रे ॥ १८ ॥
तुम चिन्तामणि सुरतरु, पचमै कियौ प्रकाश लाल रे ।
आशा पूरण आप छौ, वारु तुझ विश्वास लाल रे ॥ १९ ॥
तत ढाल तेतीसमी, भिक्खु गुण भडार लाल रे ।
अंतर्यामी माहरा, सुख सपति दातार लाल रे ॥ २० ॥

दुहा

पचावनं वर्ष पूज जी, शहर काकरोली सार।
सैहलोतां री पौल मे, ऊतरिया तिण बार॥ १॥
प्रत्यष बारी पौलरी, जडी हुती जिण वार।
ऋष भिक्खु रहिता थका, एक दिवस अवधार॥ २॥
बारी खोली बारणै, दिशा जायवा देख।
निसरिया भिक्खु निशा, पूछै हेम सपेख॥ ३॥
स्वामी बारी खोलण तणौ, नही काई अटकाव।
तब भिक्खु बोल्या तुरत, प्रत्यष ते प्रस्ताव॥ ४॥
पाली शहर तणो प्रत्यष, नाम चौथजी न्हाल।
दर्शण करवा आवियौ, ए देखै इण काल॥ ५॥
अति शकिलो एह छै, पिण इण बात री ताम।
शका इणरै ना पडी, केम पडी तुझ आम॥ ६॥
हेम कहै म्हारै हियै, काई शका रौ काम।
पूछण रूप म्हैं पूछियौ, नहिं शका रौ नाम॥ ७॥
पूज कहे पूछै इसी, इणरौ नहि अटकाव।
अटकाव हुवौ जो एहनौ, म्हैं खोला किण न्याव॥ ८॥
हेम सुणी जाण्यौ हियै, किवाडियौ खोलाय।
आहार लियां मै दोप नही, खोल्या दोष किम थाय॥ ९॥

ढाल : ३४

[सुराजो नरनाथ—ए देशी]

स्वाम भिक्खु रा दृष्टन्त सुहाया, भव्य उत्तम जीवा मन भाया।
सुणजो चित्त शांति, भिक्खु ना भारी दृष्टन्त॥ १॥
वचन सुधा बागरै स्वामी बारु, शुद्ध भविजन तारण सारु।
सुणजो सुखदाया, स्वामी ना दृष्टन्त सुहाया॥ २॥
असल न्याय भिन्न २ ओलखाया, प्रभु पथ भिक्खु हद पाया॥ ३॥
भेषधारी सरधाहीन भयाला, दियो दृष्टन्त पूज दयाला॥ ४॥
समकत हीण जे अधिक असार, यारो असल नही आचार॥ ५॥
थोथा चणा री भखारी थी एक, सावतो चणो मूल म पेख॥ ६॥
ऊंदरा रडवड कीधी आखी रात, एक कण पिण नायो हाथ॥ ७॥
सांग धार्यां माहैं समकत नाहिं, पडे ऊंदर सम नर पाय॥ ८॥

कही साध श्रावक त्यानै केम कहाय, ऐ तो दोनू सरीखा देखाय ॥ ९ ॥
समकित रहित दोनूई तत, दियो स्वाम भिक्खु दृष्टन्त ॥ १० ॥
कोयला री तो राब अति काली, काला बासण मैं राधी कराली ॥ ११ ॥
अमावस नी रात्रि आधा जीमण वाला, परुसण वालाई आधा पयाला ॥ १२ ॥
जीमता बोलै खुखारा करता, कालो कुखौ टालजो मतिवता ॥ १३ ॥
कहै खबरदार होय जीमजो सोय, रखे आय जायला कालो कोय ॥ १४ ॥
मूढ इतरो नही जाणै समेलौ, कालोहिज कालो हुवो भेलौ ॥ १५ ॥
ज्यू सरधा आचार रौ नही ठिकाण, सगलौ मिलियो सरीखौ घाण ॥ १६ ॥
साध श्रावकपणा रो अश नही सारो, सबर लेखै दोया रै अधारौ ॥ १७ ॥
न्याय री बात नही शुद्ध नीति, बले बोलै वचन विपरीत ॥ १८ ॥
वस्त्र पात्रा अधिका राखै विशेष, आधाकर्म्मादि दोष अनेक ॥ १९ ॥
बले कहै भीखणजी काढौ इणरौ तार, शुद्ध स्वाम बोल्या सुखकार ॥ २० ॥
तब पूज कहै काढै तार काई, थानै डाडा ही सूझै नाही ॥ २१ ॥
सबल आधाकर्म्मी आदि न सूझै, कहौ नान्हा दोष किम बूझै ॥ २२ ॥
दोष री थाप थारै दिन रैणौ, कठिन काम सरधा री तौ कैहणौ ॥ २३ ॥
वाय रै वग घरटी माडी बाई, पीसती जावै ज्यू उड्यौ जाई ॥ २४ ॥
आखी रात्रि पीसी ढाकणी मैं उसास्यौ, ऐहवौ दृष्टन्त भिक्खु उतास्यौ ॥ २५ ॥
ज्यू दोष लगाय नै डड न लेवै, कुमति दोष री थाप करेवै ॥ २६ ॥
क्यारे क्यारे क्यू ही नही रहै काई, देश सर्व दृष्टन्त देखाई ॥ २७ ॥
ऐसा भिक्खु ऋष आप उजागर, शरणागत महा बुद्धि सागर ॥ २८ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि अधिक अमामी, धुर जिन आज्ञा परमति धामी ॥ २९ ॥
जिन आगन्या माहै धर्म्म जतायौ, आज्ञा वारै अशुभ सहु आयौ ॥ ३० ॥
सगला न्याय मेल्या सूत्र देख, वाह वाह भिक्खु बुद्धि विशेष ॥ ३१ ॥
याद आया तन मन हुलसाय, रस कुपिका तू ऋषराय ॥ ३२ ॥
स्यू उपमा तुझनै कहू सार, अजिणा जिण सरिसा उदार ॥ ३३ ॥
उववाई मैं उपम एह अनूप, सखर थिवरा नै दीधी सद्रूप ॥ ३४ ॥
आदिनाथ ज्यू काढी धर्म्म आदि, सखरी उपजाई आप समाधि ॥ ३५ ॥
वारु शरण आपरौ सुविशाल, म्हारै तू हिज दीन दयाल ॥ ३६ ॥
स्वाम भिक्खु गुण गावत समरियौ, म्हारौ हिवडौ हरप सू भरियौ ।
चौतीसमी ढाले भिक्खु चित्त चाह्या, वारु परमानन्द वरताया ॥ ३७ ॥

दुहा

कालवादि करली घणी, नहिं समकित शुद्ध नीव।
सिद्धां में पावै नही, आखै तास अजीव ॥ १ ॥
बखतरांमजी नाम तसु, पुर माहैं पहिछांण।
कुकला कुबुद्धिज केलवी, विहार करि गया जाण ॥ २ ॥
इतलै भिक्खु आविया, चरचा करत पिछाण।
मेघ भाट मुनि नै कहै, बगताजी री वाण ॥ ३ ॥
कालवादि इसडी कहै, अति घन बात अतीव।
भीखणजी गाथा मझै, कहै एकलडी जीव ॥ ४ ॥

ते गाथा

एकलडी जीव खासी गोता, जद आडा नही आवै बेटा पोता।
नरक माहैं खाता मारौ, पायौ मनुष जमारौ मत हारौ ॥

दुहा

इण विध भीखणजी कहै, गाथा में इक जीव।
बलि नव तत्व मै पाच कहै, विरुई बात अतीव ॥ ५ ॥
जो पाच जीव नव तत्व मै, तौ कहिणौ पाचलडौ जीव।
एकलडी ते किम कहै, इम पूछा तिण कीव ॥ ६ ॥
पूज कहै तसु पूछणौ, सिद्धा मै सुखकार।
कहौ आत्मा केतली, तब कालवादि कहै चार ॥ ७ ॥
फिर त्यानै इम पूछणौ, ते च्यारू जीव कै नाहि।
जब कहै च्यारू जीव है, चार जीव तसु न्याय ॥ ८ ॥
चौलडौ जीव त्याहि कह्यौ, मुझ लड अधिकी एक।
सांभलनै ते समझियौ, मेघौ भाट विशेष ॥ ९ ॥

ढाल : ३५

[राजा दशरथ दीपतौ रे—ए देशी]

पूज भीक्खण जी पधारिया रे, देश ढूंढार दीपायो रे।
अति घणा श्रावगी आविया रे, चरचा करण चित्त चाह्यो रे।
भारी बुद्धि भिक्खु तणी रे ॥ १ ॥
स्वाम भणी कहै श्रावगी रे, नग्न मुद्रा मुनि नागा रे।
तार मात्र वस्त्र न राखणौ रे, राखै ते परीषह थी भागा रे।
तत दृष्टन्त भिक्खु तणा रे ॥ २ ॥

वस्त्र राखी शीत टालवा रे, ती भागा शीत परीषह थी ताह्यो रे।
तिणसूं वस्त्र नहि राखणां रे, जद पूज बतावै न्यायो रे॥ ३ ॥
स्वाम कहै कितरा सही रे, परीषह भेद प्रकाशी रे।
ते कहै परीषह बावीस छै रे, वलि पूछै पूज विमासो रे॥ ४ ॥
कहो प्रथम परीषहो किसौ रे, ते कहे क्षुध्या रो ताह्यो रे।
पूज कहै थारा मुनि रे, आहार करै कै नाह्यो रे॥ ५ ॥
श्रावगी कहे करै सही रे, इकटक आहार ते जागा रे।
पूज कहे तुझ लेखै मुनि रे, प्रथम परीषह थी भागा रे॥ ६ ॥
ते कहै क्षुध्या लागा छता रे, आहार करै अणगारो रे।
स्वाम कहै सी लागा सही रे, वस्त्र म्हे राखा विचारो रे॥ ७ ॥
पूज वलि पूछा करी रे, प्रगट तुझ मुनि पहिछाणी रे।
पाणी पीवै कै पीवै नही रे, उत्तर आपी सुजाणी रे॥ ८ ॥
श्रावगी कहै पीवै सही रे, इकटक उदक ते जागा रे।
स्वाम कहे तुझ लेखे तिकै रे, दूजा परीषह थी भागा रे॥ ९ ॥
ते कहै तृषा लागा छता रे, उदक पियै अणगारो रे।
स्वाम कहै सी टालिवा रे, वस्त्र ओढा म्हे विचारो रे॥ १० ॥
भूख लागा अन्न भोगवै रे, प्यास लागा पियै पाणी रे।
इम निर्दोषण आचस्या रे, न भागै परीषह थी नाणी रे॥ ११ ॥
तिम शीत मसादिक टालवा रे, मूर्च्छा रहित मुनिरायो रे।
वस्त्र मोनोपेत वावरै रे, ते परीषह थी भागै किण न्यायो रे॥ १२ ॥
इत्यादिक उत्पात्त सू रे, उत्तर दीधा अमामो रे।
स्वाम गुणा रा सागरू रे, ऊंडी बुद्धि अभिरामो रे॥ १३ ॥
एक दिवस बहु आविया रे, श्रावगी स्वामी पासो रे।
कहै वस्त्र न राखी ती तुम तणी रे, वारु करणी विमासो रे॥ १४ ॥
स्वाम कहे श्वेताम्बर शास्त्र थी रे, घर छोड थया अणगारो रे।
तिण माहें तीन पछेवडी रे, चोल पटादि कह्या सुविचारो रे॥ १५ ॥
तिण कारण राखा तिके रे, आगना तुझ शास्त्र नी आया रे।
नग्न होय जासा वस्त्र नें न्हाखनें रे, प्रतीत दिगम्बर नी पाया रे॥ १६ ॥
जाब दिया अति जुगत सूं रे, बुद्धिवंत हर्ष विशेषो रे।
स्वाम तीन थारै निरमली रे पक्ष रहित संवेगो रे॥ १७ ॥
वाह वाह भिक्खु मुनिवर रे, अन्तर्यामी जासो रे।
[illegible] तू [illegible] [illegible] रे [illegible] तुमारो जासो रे॥ १८ ॥

पैंतीसमी ढाल परवरी रे, चरचा दिगम्बर नी छाणी रे।
भिक्खु भजन सू भय मिटै रे, जय जश सुख हद जाणी रे ॥ १९ ॥

दुहा

दया धर्म्म अति दीपती, श्री जिन आण सहीत।
भिक्खु स्वाम भली परै, पवर धर्यौ अति पीत ॥ १ ॥
केई हिंस्या धर्म्मी कहै, दया दया पुकारी काय।
दया राड लोटै पडी, ऊकरडी रै माहि ॥ २ ॥
भिक्खु ऋष भाखै भली, दया मात दीपाय।
उत्तराध्ययन चौबीस मैं, कहि आठ प्रवचन माय ॥ ३ ॥
किण सेठ आउ पूरी कियौ, स्त्री रही लारै सोय।
सपूत सुत ह्वै ते सही, यत्न करै ते जोय ॥ ४ ॥
कपूत ह्वै ते मात नैं, बदै वचन विकराल।
रडकार नी गाल दै, बोलै आल पपाल ॥ ५ ॥
धणी दया ना दीपता, महावीर महाराज।
ते तौ मोख सिधाविया, कीधा आत्तम काज ॥ ६ ॥
श्रावक साधा सपूत ते, दया मात इम जाण।
यत्न करै अति जुगत सूं, विरुई न बदै वाण ॥ ७ ॥
प्रगट्या कपूत था जिसा, बोलावौ कहि राड।
दया मात ने गाल दे, ते भव भव होवै भाड ॥ ८ ॥
जिन मत एम जमावता, पाखड मत परिहार।
स्वाम रवि जिहा सचर्या, तिमर हरण इकतार ॥ ९ ॥

ढाल : ३६

[जोगीडौ कपट करे छै —ए देशी]

किणहिक भिक्खु नैं कह्यौ रे, थे जावौ जिण गाम रै माहि।
धसका पडै लोका तणै, तिणरौ काई कारण कहिवाय।
भिक्खु भवतारक भारी रे, आप प्रगट्या अवतारी रे।
उत्पत्तिया बुद्धि अधिकारी रे, दृष्टन्त दिया सुविचारी रे ॥ १ ॥
स्वाम कहै तुम्हे सामलौ रे, गारडु आवै गाम।
डाकणिया नै काढण भणी, जद कहौ डरै कुण ताम ॥ २ ॥
प्रभाते नीला कांटा मझै रे, बालस्या डाकणिया नै बोलाय।
तौ धसका पडै डाकणिया तणै, तथा न्यातीला रै पडै ताहि ॥ ३ ॥

दूजा तौ लोक राजी हुवै रे, त्यारे तौ चिन्त न काय।
जाणै उपद्रव शहर तणो मिटै, तिणसूं और तौ हर्षित थाय ॥ ४ ॥
ज्यूं गाम में साध आया छता रे, भेषधास्यां रे धसका पडत।
कै त्यारा श्रावका रै धसका पडै, भारीकर्म्मा तौ इम भिडकन्त ॥ ५ ॥
वारू सरधा आचार बतायनै रे, देसी म्हांनै ओलखाय।
त्यांरै धसका पडै तिण कारणे, हलुकर्मी तौ मन हरपाय ॥ ६ ॥
उत्तम मन इम चिंतवै रे, सुणसा साधा रा वखाण।
दान सुपात्र देई करी, करस्या आतम तणा किल्याण ॥ ७ ॥
कुगुरा रा पखपाती भणी रे, सत मुनि न सुहाय।
दृष्टन्त स्वाम दियौ इसौ, ते तौ साभलजो सुखदाय ॥ ८ ॥
जुरवाली गयी जीमवा रे, जीमणवार में जाण।
पकवान तौ कडवा घणा, बद बद कहै लोका नें वाण ॥ ९ ॥
लोक कहै लागै घणा रे, प्रगट मिठा पकवान।
तुझ शरीर में ताव है, जिणसूं कडुवा लागै छै जान ॥ १० ॥
ज्यूं मिथ्यात रोग जाडो हुवै रे, सत तास न सुहाय।
हलुकर्मी हियै हर्षता, चित्त में मुनि दर्शण चाहि ॥ ११ ॥
भूखा मरता रोटी वासतै रे, साग साधू नौं धारत।
त्यानें कहै चारित चोखो पालजो, जद स्वाम दियौ दृष्टन्त ॥ १२ ॥
बलवन्त वालै वाघनै रे, तिणनै कहै सिर नाम।
सती माता तेजरा तोडजे, ते काई तोडै तेजरा ताम ॥ १३ ॥
ज्यूं भेष पहिरै रोटी कारण रे, तेहनै कही चोखो चारित्र पाल।
ते कठिण चारित्र पालै किण विधै, दुक्कर कह्यौ है दीन दयाल ॥ १४ ॥
चोखा खोटा गुरु उपरै रे, दियौ नावा नौं दृष्टन्त।
काठ की नाव साजी कही, एक फूटी नावा छिद्रान्त ॥ १५ ॥
तीजी नाव पत्थर तणी रे, उपनय हिये अवधार।
शुद्ध सत साजी नाव सारिखा, निकै आप तिरै पर तार ॥ १६ ॥
सागधारी फूटी नावा सारिखा रे, आप डुबै औरा नैं डबोय।
पत्थर नावा जिसा कह्या पाखंडी, जे तीन नौं [illegible] ॥ १७ ॥
उत्तम तास न आदरै रे, धाम्या हुवै नी [illegible]।
सागधारी फूटी नावा सारिखा, त्यानें छोडता घणा [illegible] ॥ १८ ॥
इम भिक्खु [illegible] रे पाखण्डिया नैं [illegible]।
सु बुद्धि [illegible] स्वाम नी [illegible], [illegible] ॥ १९ ॥

पैंतीसमी ढाल परवरी रे, चरचा दिगम्वर नी छाणी रे।
भिक्खु भजन सूं भय मिटै रे, जय जश सुख हद जाणी रे॥ १९॥

दुहा

दया धर्म्म अति दीपती, श्री जिन आण सहीत।
भिक्खु स्वाम भली परै, पवर धर्‍यौ अति पीत॥ १॥
केई हिंस्या धर्म्मी कहै, दया दया पुकारी काय।
दया राड लोटै पडी, ऊकरडी रै माहि॥ २॥
भिक्खु ऋष भाखै भली, दया मात दीपाय।
उत्तराध्ययन चौबीस मै, कहि आठ प्रवचन माय॥ ३॥
किण सेठ आउ पूरौ कियौ, स्त्री रही लारै सोय।
सपूत सुत ह्वै ते सही, यत्न करै ते जोय॥ ४॥
कपूत ह्वै ते मात नै, बदै वचन विकराल।
रडकार नी गाल दै, बोलै आल पपाल॥ ५॥
धणी दया ना दीपता, महावीर महाराज।
ते तौ मोख सिधाविया, कीधा आत्तम काज॥ ६॥
श्रावक साधा सपूत ते, दया मात इम जाण।
यत्न करै अति जुगत सूं, विरुई न बदै वाण॥ ७॥
प्रगट्या कपूत था जिसा, बोलावौ कहि राड।
दया मात ने गाल दे, ते भव भव होवै भाड॥ ८॥
जिन मत एम जमावता, पाखड मत परिहार।
स्वाम रवि जिहा सचर्‍या, तिमर हरण इकतार॥ ९॥

ढाल : ३६

[जोगीडौ कपट करे छै —ए देशी]

किणहिक भिक्खु नै कह्यौ रे, थे जावौ जिण गाम रै माहि।
धसका पडै लोका तणै, तिणरौ काई कारण कहिवाय।
भिक्खु भवतारक भारी रे, आप प्रगट्या अवतारी रे।
उत्पत्तिया बुद्धि अधिकारी रे, दृष्टन्त दिया सुविचारी रे॥ १॥
स्वाम कहै तुम्हे सामलौ रे, गारुडु आवै गाम।
डाकणिया ने काढण भणी, जद कहौ डरै कुण ताम॥ २॥
प्रभाते नीला काटां मफै रे, बालस्या डाकणिया नै बोलाय।
तौ धमका पडै डाकणिया तणै, तथा न्यातीला र पडै ताहि॥ ३॥

दूजा तौ लोक राजी हुवै रे, त्यारे तौ चिन्त न काय।
जाणै उपद्रव शहर तणौ मिटै, तिणसू और तौ हर्षित थाय॥ ४॥
ज्यू गाम मै साध आया छता रे, भेषधास्या रै धसका पडत।
कै त्यारा श्रावका रै धसका पडै, भारीकर्म्मा तौ इम भिडकन्त॥ ५॥
बारू सरधा आचार बतायनै रे, देशी म्हानै ओलखाय।
त्यारै धसका पडै तिण कारणै, हलुकर्मी तौ मन हरषाय॥ ६॥
उत्तम मन इम चितवै रे, सुणसा साधा रा बखाण।
दान सुपात्र देई करी, करस्या आतम तणा किल्याण॥ ७॥
कुगुरा रा पखपाती भणी रे, सत मुनि न सुहाय।
दृष्टन्त स्वाम दियौ इसौ, ते तौ साभलजो सुखदाय॥ ८॥
जुरवालौ गयौ जीमवा रे, जीमणवार मै जाण।
पकवान तौ कडवा घणा, बद बद कहै लोका नै वाण॥ ९॥
लोक कहै लागै घणा रे, प्रगट मिठा पकवान।
तुझ शरीर मैं ताव है, जिणसू कडुवा लागै छै जान॥ १०॥
ज्यू मिथ्यात रोग जाडौ हुवै रे, सत तास न सुहाय।
हलुकर्मी हियै हर्षंता, चित्त मै मुनि दर्शण चाहि॥ ११॥
भूखा मरता रोटी वासतै रे, साग साधू नौ धारत।
त्यानै कहै चारित चोखौ पालजो, जद स्वाम दियौ दृष्टन्त॥ १२॥
वलवन्त बालै बाधनै रे, तिणनै कहै सिर नाम।
सतो माता तेजरा तोडजे, ते काई तोडै तेजरा ताम॥ १३॥
ज्यू भेष पहिरै रोटी कारणै रे, तेहनै कही चोखौ चारित्र पाल।
ते कठिण चारित्र पालै किण विधै, दुक्कर कह्यौ है दीन दयाल॥ १४॥
चोखा खोटा गुरु उपरै रे, दियौ नावा नौ दृष्टन्त।
काठ की नाव साजी कही, एक फूटी नावा छिद्रान्त॥ १५॥
तीजी नाव पत्थर तणी रे, उपनय हिये अवधार।
शुद्ध सत साजी नाव सारिखा, तिकै आप तिरै पर तार॥ १६॥
सागधारी फूटी नावा सारिखा रे, आप डुवै औरा नै डवोय।
पत्थर नावा जिसा कह्या पाखडी, जे तीन सौ तेसठ जोय॥ १७॥
उत्तम तास न आदरे रे, धास्या हुवै तौ छोडणा सुलभ।
सागधारी फूटी नावा सारिखा, त्यानै छोडणा घणा दुर्ल्लभ॥ १८॥
इम भिक्खु ओलखाविया रे, पाखण्डिया नै पिछाण।
सू वृद्धि कहियै स्वाम नी वाह, किहा लग करू वखाण॥ १९॥

ऊडी तुझ आलोचना रे, तीरथ वच्छल ताम।
शासण नायक स्वाम नै, करू बारम्बार सलाम ॥ २० ॥
तंत ढाल षट तीसमी रे, दाख्या स्वाम दृष्टन्त।
भिक्खु भजन थी भय मिटै, अरु जय जश सुख उपजत ॥ २१ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नै कह्यौ, टोला वाला ताहि।
शीत उष्ण अति कष्ट सहै, कठिण लोच कराय ॥ १ ॥
तप छठ अठमादिक तपै, सखरी करणी सोय।
यूँही जासी या तणी, एहना फल अवलोय ॥ २ ॥
स्वाम कहै इक सेठ री, पड्यौ देवालौ पेख।
तुरत लाख रुपया तणौ, बिगडी बात विशेष ॥ ३ ॥
पछै एक पइसा तणौ, आण्यौ तेल तिवार।
पइसौ तसु दीधौ परहौ, तौ पइसा रौ साहुकार ॥ ४ ॥
रुपया रा गहु आणनै, रुपीयौ पाछौ दीध।
तौ साहुकार रुपीया तणौ, प्रत्यक्ष ते प्रसिद्ध ॥ ५ ॥
इम पइसा रुपीया तणौ, साहुकार अवधार।
पिण देवालौ लाख नौ, तेह नौ नही साहुकार ॥ ६ ॥
ज्यू पच महाव्रत पचखनै, आधाकर्म्मी आदि।
थाप निरन्तर दोष नी, मेट दीधी मर्य्याद ॥ ७ ॥
औ देवालौ अति घणौ, लोच तपादिक कष्ट।
तेह थी किण विध उतरै, साधपणा री भिष्ट ॥ ८ ॥
मास खमणादिक पचखनै, शुद्ध पाल्या तसु साहुकार।
पिण महाव्रत भाग्या तेहनौ, साहुकार मत धार ॥ ९ ॥

ढाल : ३७

[विछिया नी—ए देशी]

किणहिक स्वाम भणी कह्यौ, सागधार्‍या रै साधू री साग रे।
उन्ही पाणी धोवण ऐ पिण आचरै, मान मूकी रोटी खावै माग रे।
तुम्हे सुणज्यो दृष्टन्त स्वामी तणा ॥ १ ॥
वर्षां वर्षे लोच करावता, शीत तापादि सहे साक्षात रे।
विहार नव कलपी विचरता, तौ ऐ क्यू नही साध कहात रे ॥ २ ॥
स्वाम कहे तुम्हे साभलौ, थिर चारित्र इम किम थाय रे।
जट्टवी वणी वणाई ब्राह्मणी, तिणरा माथी रै पिण कहिवाय रे ॥ ३ ॥

कुण बणी बणाई ब्राह्मणी, तब स्वाम कहै सुविशेष रे।
मेरा री इक गाम घाटा मझै, उठै उत्तम घर नही एक रे॥ ४ ॥
महाजन आवै सो दुख पावै घणा, जब कह्यौ मेरा नै जाम रे।
अठै उत्तम घर नही एक ही, तिणसू दुख पावा छा ताम रे॥ ५ ॥
घणी लागत देवा छा था भणी, उत्तम घर विण इहा अवधार रे।
पाणी रोटी तणी अबखाई पडै, शुद्ध राखौ उत्तम घर सार रे॥ ६ ॥
जद मेरा शहर माहैं जायनै, महाजना नै कह्यौ मन ल्याय रे।
उत्तम बसौ म्हारौ गाम आयनै, तिणरौ ऊपर राखसा ताय रे॥ ७॥
इम कह्यौ पिण कोई आयौ नही, एक ढेढा रौ गुरु मुऔ आम रे।
तिणरी स्त्री गुरुडी तदा, तिणनै मेरा आणी तिण ठाम रे॥ ८ ॥
बणाई मेरा तिणनै ब्राह्मणी, ब्राह्मणी जिसा वस्त्र पैहराय रे।
जागा कराय धवल राखी जिहा, तुलसी रौ थाणौ रोप्यौ ताहि रे॥ ९ ॥
दोय रुपया रा गेहु आणे दिया, अधेली रा मूंग दिया आण रे।
एक रुपया तणौ घृत आपियौ, बदै मेरा तेहनै इम बाण रे॥ १० ॥
पइसा लेई महाजन रा पासा थकी, आवै ज्यानै रोटी कर आप रे।
वर्ण पूछ्या बतावजे ब्राह्मणी, थिर जाति फलाणी थाप रे॥ ११ ॥
जाता आता महाजन आवै जिके, उत्तम घर पहिछाण रे।
ब्राह्मणी री घर मेरा बतावता, इम काल कितोयक जाण रे॥ १२ ॥
इतरै चार व्यापारी आविया, घणा कोसा रा थाका ते गाम रे।
आय पूछ्यौ मेरा नै इण तरै, उत्तम घर बतावौ आम रे॥ १३ ॥
तब मेरा कहै जावौ तुम्हे, तिण ब्राह्मणी रै घर तास रे।
जद आया व्यापारी चारू जणा, प्रगट वचन कहै तिण पास रे॥ १४ ॥
बाई रोटिया कर रूडी रीत सू, झट घाल थाका आया जाण रे।
जद इण गोहा री रोट्या जाडी करी, सुरहौ घृत घाल्यौ सुविहाण रे॥ १५ ॥
कीधी दाल तिणमै घाली काचस्या, जीमवा लागा चारूई जाण रे।
करडी भूख रोट्या पिण करकडी, वणिक जीमता करै वखाण रे॥ १६ ॥
राधण देखी फलाणा गाम री, अमकडिया नगर नी अवलोय रे।
राधणा देखी बडा बडा शहर नी, इसडी चतुराई नहि देखी कोय रे॥ १७ ॥
कहै देखौ रे दाल किसी करी, अति चोखी है स्वाद अत्यन्त रे।
माहैं काचरिया किमी स्वाद है, घणी करै प्रगसा जीमत रे॥ १८ ॥
जद आ वोली वीरा वात साभलौ, तीखण मिली हूती तौ ताम रे।
खबर पडती काचरिया रे स्वाद री, पिण ते मिली नहि अभिराम रे॥ १९ ॥

जद या पूछ्यौ तीखण कहै केहनै, तब आ कहै तीखण छूरीताम रे।
काचरिया बनावा कारणै, छूरी मिली नही अभिराम रे ॥ २० ॥
तब या पूछ्यौ छूरी तोनै ना मिली, तौ किणमूं बनारी तेह रे।
आ कहै दाता सू बनार २ नै, इण दाल माहै म्हांखी एह रे ॥ २१ ॥
तब यै बोल्या तडकनै हे पापणी, म्हानै भिष्ट किया तै जिमाय रे।
इम कहिनै लागा थाली पटकवा, तब आ बोली उतावली ताय रे ॥ २२ ॥
रे वीरा थाली भागजो मती, अमकडिया डूमरी आणी माग रे।
जद ऐ बोल्या हे पापणी, तू कुण जात री कुण तुझ साग रे ॥ २३ ॥
जद आ बोली वीरा बात साभलौ, बणी बनाई ब्राह्मणी छूं ताहि रे।
असल जात री तौ गुरुडी अछूं, मेरां ब्राह्मणी दीधी बणाय रे ॥ २४ ॥
धुर सूं बात सारी कही मांडनै, साभलनै च्यारूंई पछतात रे।
भिक्खु कहै साथी ब्राह्मणी तणा, सांगधारी सर्व साक्षात रे ॥ २५ ॥
ऊंन्हौ पाणी धोवण नित्य आचरै, पिण समकित चारित्र नही काय रे।
तिणसूं बणी बणाई ब्राह्मणी, तिणरा साथी कह्या इण न्याय रे ॥ २६ ॥
दृष्टन्त स्वाम इसौ दियौ, शुद्ध हेतु मिलाया सार रे।
भारीकर्म्मी सुण द्वेष माहैं भरै, चित्त पामै उत्तम चिमत्कार रे ॥ २७ ॥
स्वाम सावद्य निर्वद्य शोधिया, व्रत अव्रत जूआ बताय रे।
आज्ञा अण आगन्या ओलखायनै, दीधी दान दया दीपाय रे ॥ २८ ॥
भिक्खु स्वाम प्रगटिया भरत मै, आप कीधी अधिक उद्योत रे।
ऐसौ उपगारी कुण इण काल मै, जिन ज्यूं घण घट घाली जोत रे ॥ २९ ॥
इसा उपगारी गुण आगला, त्यारा दृष्टन्त साभल तंत रे।
हलुकर्म्मी हरष हिवडै धरै, बहुलकर्म्मी री मुह बिगडंत रे ॥ ३० ॥
तत ढाल कही सात तीसमी, स्वामी मेल्या है न्याय साक्षात रे।
रखे शका कंखा भ्रम राखनै, मत पडिवजजो मिथ्यात रे ॥ ३१ ॥

दुहा

किणहिक भिक्खु नै कह्यौ, पाखंडी पहिछांण।
सूत्र सार जिन वच सरस, बाचै सखर बखांण ॥ १ ॥
स्वाम कहै तुम्हे सांभली, वाचै सूत्र वखाण।
जीव खवाया पुण्य मिश्र, छेहडै इम करै छाण ॥ २ ॥
जिम वाया राती जगै, संसार लेखै जान।
गीत भला भला गावती, तीखै मन कर तान ॥ ३ ॥

गीता छेहडै गावती, मोख्यौ मारू मन्द।
ज्यू प्रथम सूत्र प्रगमायनै, छेहडै सावद्य फन्द ॥ ४ ॥
दीपावै सावद्य दया, दाखै सावद्य दान।
मोख्या मारू नी परे, सर्व बिगाडै तान ॥ ५ ॥
किणहिक भिक्खु नै कह्यौ, बुद्धिहीन इक बाल।
भाठा सू कीड्या भणी, कचरतौ तिण काल ॥ ६ ॥
उणरौ पथर लै उरहौ, खोसी करी कषाय।
कही तिणनै का सू थयौ, जद स्वाम कहै सुण बाय ॥ ७ ॥
तसु पासा थी खोसलै, तसु कर मै स्यू आत।
तब ओ बोल्यौ उण तणै, भाठौ आयौ हाथ ॥ ८ ॥
भाखै पूज विचार लौ, धर्म्म जिन आज्ञा माहि।
जबरी कौ जिण ना कह्यौ, इम सर्व वस्तु गिणाय ॥ ९ ॥

ढाल : ३८

[सत्य कोई मत राखज्यो—ए देशी]

किणहिक भिक्खु नै कह्यौ, टोला वाला ताह्यो रे।
आप साध न सरधौ या भणी, तौ साध कहौ किण न्यायो रे।
तत दृष्टन्त भिक्खु तणा ॥ १ ॥
ऐ साध अमकडिया टोला तणा, फलाणा टोला रा साधो रे।
इम साध कही बैण उचरया, सत्य कै मृषावादो रे ॥ २ ॥
स्वाम कहै किणहि शहर मै, किरियाबर किणरै थायो रे।
नैहता फेरे नगर मै, बदै इसी पर वायो रे ॥ ३ ॥
अमकडिया रै नैहती अछै, षेमा साहरा घर रौ जाणौ रे।
अमकडिया रै नैहती अछै, षेमा साहरा घर री पिछाणी रे ॥ ४ ॥
देवालौ त्या काढे दियौ, तौ पिण वाजै साहो रे।
खेमौ देवाल्यौ बाजै नही, द्रव्य निक्षेपौ देखायो रे ॥ ५ ॥
ज्यू सजम नही पालै जिके, नांम धरावै साधो रे।
द्रव्य निक्षेपै साधू कह्या, मूल न मृषावादो रे ॥ ६ ॥
लकडी रा घोडा भणी, अश्व कह्या दोष नाह्यो रे।
नाम असद्भाव थापना, कहिण मात्र कहिवायो रे ॥ ७ ॥
किणहि भिक्खु नै कह्यौ, टोला वाला मै ताह्यो रे।
कहौ साध यामै कवण छै, असाधु कुण या माह्यो रे ॥ ८ ॥

स्वाम कहै इक शहर मैं, आख आखम पूछै वायो रे।
नागा कितरा इण नगर मैं, कितरा ढकिया कहिवायो रे ॥ ६ ॥
वैद विचक्षण इम वदै, औषध तुम आख्या माह्यो रे।
घाल सूझतौ तो भणी, हू कर देसूं ताह्यो रे ॥ १० ॥
नागा ढकिया तू निरखलै, वैद बोल्यौ इम वायो रे।
स्वामं कहै साध असाध री, ओलखणा देस्या बतायो रे ॥ ११ ॥
पछै साध असाध तूं परखलै, कहै नाम लेई कोयो रे।
कजियौ पहिली तिणसू करै, जिणसूं कैहणी अवसर जोयो रे ॥ १२ ॥
किणहिक बलि इम पूछियौ, कुंण यामै साध असाधो रे।
स्वाम कहै तुम्हे साभलौ, बिरुओ तज विषवादो रे ॥ १३ ॥
संजम लेई पालै सही, ते साधु सुखदायो रे।
महाव्रत आदरै मूंकदै, असाधु ते असुहायो रे ॥ १४ ॥
दृष्टन्त भिक्खु दियो इसौ, किणहिक पूछ्यौ किवारो रे।
साहुकार कुण शहर मै, कुण है देवाल्यो विकारो रे ॥ १५ ॥
लेई पाछौ देवै लोक मै, साहुकार कहै सोयो रे।
दैणो न देवै देवालियौ झगडा, उलटा माडै जोयो रे ॥ १६ ॥
ज्यूं सजम लेई पाल्या साध है, दोष थाप्या नही साधो रे।
अथवा डड न आदरै, बरतां नै देवै बिराधो रे ॥ १७ ॥
भिक्खु इसा न्याय भाखिया, स्वाम बिना कुण शोधै रे।
पूज गुणा नी पिज्जरी, पूज भविक प्रतिबोधै रे ॥ १८ ॥
भिक्खु है दीपक भरत मै, भिक्खु भलौ भव तारण रे।
साहेब भिक्खु साचलौ, भिक्खु है विघ्न विडारण रे ॥ १६ ॥
याद आया हियौ उलसै, अन्तर्य्यामी आपो रे।
स्मरण सू सुख सपजै थिर, चित्त म्है करी थापो रे ॥ २० ॥
स्वाम जिसौ इण भरत मै, दीन दयाल न दूजौ रे।
भविक जीवा तुम्हे भाव सू, पवर भिक्खु गुण पूजौ रे ॥ २१ ॥
तन मन सेती तुझ भणी, हृदय ओलेख हरष्यौ रे।
आशा पूरण आप हौ, म्हैं तौ प्रत्यक्ष भिक्खु परख्यौ रे ॥२२॥
आखी ढाल अडतीसमी, समरयौ है भिक्खु सनूरौ रे।
जय जश सम्पत्ति मिलै, दालिद्र दुःख गया दूरो रे ॥ २३ ॥

दुहा

उपयोग री खामी ऊपरै, दियौ स्वाम दृष्टन्त ।
निरमल नीकी नीत सूं, शुद्ध जाणौ तसु सत ॥ १
कुणकौ देखी गुरु कह्यो, ए कुणकौ शिष्य जोय ।
ऊपर पग दीजो मति, तहत कियौ शिष्य सोय ॥ २
थोडी बार थी शिष्य तिकौ, फिरतौ फिरतौ आय ।
पग दीधौ तिण ऊपरै, तब गुरु बोल्या ताहि ॥ ३
तुझ म्हैं बरज्यौ थो तदा, मत दीजो पग साक्षात ।
शिष्य कहै उपयोग शुद्ध, चूकौ स्वामी नाथ ॥ ४
बीजी बेला शिष्य बलि, फिरता फिरता फेर ।
पग दीधौ कण ऊपरै, गुरु निषेध्यौ घेर ॥ ५
आगै तुझ बरज्यौ हुतौ, कहै शिष्य कर जोड ।
महाराज उपयोग मुझ, चूक गयो इण ठौड ॥ ६
गुरु कहै अबकै चूकियौ, तो काल विगैरा त्याग ।
फिरता फिरता शिष्य फिरी, बलि चूक्यौ ते जाग ॥ ७
इम बार बार खामी पडी, ते विगय टालण थी ताहि ।
बलि कण ऊपर पग दैण थी, राजी नहि मन माहि ॥ ८
कर्म्म योग उपयोग मैं, खामी तौ अधिकाय ।
पिण नीत शुद्ध अरु थाप नहि, साधपणी ते न्याय ॥ ९

ढाल : ३९

[जाणौ छै राव तू बात—ए देशी]

स्वाम भिक्खु ने सोय ए, किण ही पूछा करी इम जोय ए
साध साधविया रै माहि ए, अवगुण दीसै अधिकाय ए
ज्यारै नही इर्या री ठिकाण ए, भापा सुमति मै पिण दिसै हाण ए
केई करै चालता वात ए, सून्य उपयोग री साक्षात ए
सुमति एषणादिक मै सोय ए, अधिक फेर दिसै अवलोय ए
तीन गुप्त कही ततसार ए, अति हि दिसै है फरक अपार ए
कैकारी प्रकृति करडी धार ए, छेडविया सू करै फूकार ए
मान माया लोभ मै मत ए, किम कहियै तिणानै मत ए
करडी प्रकृति देख्या साध ए, कोई बोल्यौ वचन विगव ए

वर बोल्या है भिक्खु वाय ए, सुण दृष्टान्त एक शोभाय ए ।
एक साहुकार अवधार ए, कराई हवेली सुखकार ए ॥ ६ ॥
रुपया हजारा लगाविया ए, जाली झरोखा अधिक झुकाविया ए ।
ओपै मालिया महिल अनेक ए, शुद्ध शोभता सखर सपेख ए ॥ ७ ॥
चारु रूप विविध चित्राम ए, अति कोरणियां अभिराम ए ।
सुखदाई रूप सुविहाण ए, पुतलियां मनहरणी पिछाण ए ॥ ८ ॥
आवै लोक अनेक ए, देख देखनै हरपै विशेष ए ।
नरनारी हजारा आवता ए, घणा देख देख गुण गावता ए ॥ ६ ॥
महिल मालिया महा श्रीकार ए, तिके जू जूआ देखै तिवार ए ।
कहै देखौ कोरणिया ताम ए, चतुर रूप रच्या चित्राम ए ॥ १० ॥
साहुकारादिक सहु आय ए, ऐतौ सगलाई रह्या सराय ए ।
जठै भंगी देखण आयौ जान ए, धुन सेतखाना सू ध्यान ए ॥ ११ ॥
महिल मालिया साहमी न दिष्ट ए, जाली झरोखा सू नही इष्ट ए ।
तिणरै सेतखाना सू काम ए, तिणसू तेहिज छै परिणाम ए ॥ १२ ॥
कहै सेतखानौ तौ आछौ नही ए, सेठ सुणता अवगुण बोलै सही ए ।
जब सेठ कहै सुण वाय ए, ताडतखानौ किण वासतै ताय ए ॥ १३ ॥
सेतखानौ आछौ किम थाय ए, महा नीच वस्तु इण माहि ए ।
निन्दनीक वस्तु ए निदांन ए, तूं पिण नीच तिण सूं थारौ ध्यान ए ॥ १४ ॥
झरोखा जाल्या आदि दे जाण ए, प्रगट आछा है अधिक प्रदान ए ।
स्वाम कहै सुविचार ए, कहू उपनय ए अवधार ए ॥ १५ ॥
संजम तप तौ हवेली समान ए, सेतखांना ज्यू अवगुण जान ए ।
साहुकारादिक देखणहार ए, ते सम उत्तम जीव उदार ए ॥ १६ ॥
त्यारी दिष्ट संजम ऊपर तांम ए, पिण अवगुण सू नही काम ए ।
गुणग्राही उत्तम गुणवत ए, तेतौ सजम तप जाणै तत ए ॥ १७ ॥
सजम गुण जाणै शुद्ध मान ए, पिण अवगुण सूं नही ध्यान ए ।
छिद्रपेही भगी सम छार ए, सजम नै नही जाणै लिगार ए ॥ १८ ॥
छट्ठो गुणठाणौ इण विध जाय ए, त्यानै ते पिण खबर न काय ए ।
छट्ठो गुणठाणो इम ठहराय ए, ते पिण जाणपणो नही ताहि ए ॥ १६ ॥
अवगुण नै करै अगवाण ए, महानिन्दक मातग माण ए ।
कहै अवगुण आछा नाहि ए, तिणनै कैहिणौ इणरी कहिसी काय ए ॥ २० ॥
अवगुण तौ कदेही आछा न होय ए, ये तौ प्रत्यप ही अवलोय ए ।
ये तौ निंदवा जोग निषेध ए, इणमै तौ काई काढ्यौ भेद ए ॥ २१ ॥

पिण सजम गुण इण माहि ए, तिणसू वदवा जोग कहाय ए।
तू मुहढै आणै अवगुण बार बार ए, थारै कुमति हिया मै अपार ए ॥ २२ ॥
दीधौ हवेली रौ दृष्टन्त ए, भिक्खु भविक नी भाजण भ्रान्त ए।
स्वामी सूत्र न्याय श्रीकार ए, त्यारा जाण भिक्खु ततसार ए ॥ २३ ॥
औती दियौ भिक्खु दृष्टन्त ए, त्यारा हेतु नै पुष्ट करत ए।
सूत्र साख कहै जय सार ए, तिणरौ साभलजो विस्तार ए ॥ २४ ॥
कह्यौ सूत्र भगवती माहि ए, शतक पचीस मै सुखदाय ए।
उत्तर गुण पडिसेवी पिछाण ए, बुकस नियठौ श्री जिन वाण ए ॥ २५ ॥
जगन दोय सौ कोड ते जान ए, नही विरह कदे नहि हानि ए।
पंचम पद छट्ठै गुण ठाण ए, चारित्र रा गुण लेखै पिछाण ए ॥ २६ ॥
मूल गुण नै उत्तर गुण माहि ए, दोष लगावै ते दुखदाय ए।
पडिसेवण कुशील पिछाण ए, जगन दोय सौ कोड ते जाण ए ॥ २७ ॥
नही बिरह एह थी ओछा नाहि ए, ये पिण छट्ठै गुणठाणै कहिवाय ए।
यामै चारित गुण श्रीकार ए, तिणसू वदवा योग विचार ए ॥ २८ ॥
पुलाग नेयट्ठौ पिछाण ए, लब्धि फोड्या कह्यौ जिन जाण ए।
थिति अन्तर मुहूर्त्त थाय ए, लब्धि नी थिति तौ अधिकाय ए ॥ २९ ॥
विरह उत्कृष्ट सखेज वास ए, पछै तौ अवश्य प्रगटै विमास ए।
यामै चारित्र गुण श्रीकार ए, तिणसू वदवा योग विचार ए ॥ ३० ॥
कषय कुशील नेयठा माहि ए, पाच शरीर छः लेश्या पाय ए।
षट समुदघात कहिवाय ए, इणरौ पेटौ भारी है अथाय ए ॥ ३१ ॥
बहु फोडवै लब्धि प्रकाश ए, मोह कर्म्म उदय थी विमास ए।
पिण चारित्र गुण श्रीकार ए, तिण सू वदवा योग विचार ए ॥ ३२ ॥
पुलाक बुकस पडिसेवेणा पेख ए, दिल सू कषाय कुशील देख ए।
यामै दोष तणौ डड जोय ए, वले दोप री थाप न कोय ए ॥ ३३ ॥
तिण कारण चारित्र चीज ए, दोष थाप्या जावै गुण छीज ए।
जितरौ डड तितरौ चर्ण जाय ए, दोष थाप्या सर्व विललाय ए ॥ ३४ ॥
हीण वृद्धि पजवा मै होय ए, प्रगट शतक पचीसमौ जोय ए।
फेर अनन्त गुणी पजवा माहि ए, तौ पिण चारित्र गुण सुखदाय ए ॥ ३५ ॥
दशमै ध्ययन ज्ञाता मै दयाल ए, कह्यौ चन्द दृष्टन्त कृपाल ए।
एकम आदि पूनम चन्द पेख ए, वलि विद पख चन्द विशेप ए ॥ ३६ ॥
ते सम सत समृद्धि ए, यति धर्म दश मै हीन वृद्धि ए।
क्षान्ति आदि ब्रह्मचर्य्य माहि ए, एकम थी पूनम ताई गिणाय ए ॥ ३७ ॥

इम बिद पख चन्द समान ए, क्षमादिक गुण मै फेर जान ए ।
किहां एकम किहा पूंनम चन्द ए, दशूं धर्म एम वृद्धि मद ए ॥ ३८ ॥
चौथे ठाणे चौभगी उपन्न ए, शील सम्पन्न नो चरित्र सम्पन्न ए ।
दूजौ शील सम्पन्न न देख ए, चारित सहित कह्यौ विशेप ए ॥ ३९ ॥
तीजौ शील सम्पन्न स्वभाव ए, विले[1] चारित्र सम्पन्न साव ए[2]।
चौथौ शील चारित नही ताम ए, शील शीतल स्वभाव नौ नाम ए ॥ ४० ॥
शीतल प्रकृति तौ नहि कोय ए, दूजै भागै चारित कह्यौ जोय ए ।
वर न्याय हियै सुविचार ए, प्रकृति देखी म भिडकौ लिगार ए ॥ ४१ ॥
निशीथ वीस मै न्हाल ए, वार वार रौ डड विशाल ए ।
इम साभल छाडौ अनीत ए, राखौ सूत्र नी प्रतीत ए ॥ ४२ ॥
भारीकर्मा सुणी भिडकाय ए, वोलै ऊंधमति इम वाय ए ।
करै ढीली परूपणा काज ए, हिवै दोष तणी काई लाज ए ॥ ४३ ॥
इम बोलै मूढ गिवार ए, ज्यारा घट माहै घोर अन्धार ए ।
पिण इतरी न जाणै साख्यात ए, सर्व कही सूतर नी वात ए ॥ ४४ ॥
स्थिर राखणा समगत सार ए, अति मेटण भ्रम अन्धार ए ।
आगम रहीस वतावै अमांम ए, तेतौ एकन्त तारण काम ए ॥ ४५ ॥
अति मानणौ तसु उपगार ए, थिर समगत राखणहार ए ।
रह्यौ गुण मानणौ तौ ज्याहीज ए, उलटी क्यू करौ त्या पर खीज ए ॥ ४६ ॥
परम दुर्ल्लभ समगत पाय ए, रखे शका राखौ मन माहि ए ।
शका राख्या सू समकित जाय ए, तिणसूं बार बार समभाय ए ॥ ४७ ॥
पज्जवा नै हिणे पाडै कोय ए, बुकस पडिसेवणादिक जोय ए ।
तौ तिणरी तिणनै मुश्कल ए, पिण पोतै क्यू घालौ सल ए ॥ ४८ ॥
खोड उठ री ऊठनै होय ए, ज्यू पज्जवा हीण तसु सोच जोय ए ।
न फिरै घट्टौ गुणठाण ए, तठा ताई असाध म जाण ए ॥ ४९ ॥
श्रावक कह्या मात तात समान ए, पवर चौथे ठाणै पहिछांन ए ।
हेत सूं कहैं रूडी रीत ए, पिण अतरग मे अति प्रीत ए ॥ ५० ॥
स्वाम भिक्खु तणै प्रसाद ए, पामी समकित चरण समाधि ए ।
दीधौ हवेली री तौ दृष्टन्त ए, सपेख थकी चित्त शात ए ॥ ५१ ॥
त्यारा प्रसाद थी अनुसार ए, साखा न्याय कह्या जय सार ए ।
सूत्र मे जिम न्याय वताविया ए, लेश मात्र अणहुता न लाविया ए ॥ ५२ ॥

१—विलै = नाश

२—पिण चारित्र तणो अभाव ए । —ऐसा भी पाठ है ।

धिन धिन भिक्खु स्वाम ए, सास्या घणा जणा रा काम ए।
त्यारी आसता राखौ तहतीक ए, तिणसू होवै मोक्ष नजीक ए ॥ ५३ ॥
स्वामी दान दया दीपाय ए, आज्ञा अण आज्ञा ओलखाय ए।
ज्यारा गुण पुरा कहा न जाय ए, प्रत्यष पार्ग भिक्खु पाय ए ॥ ५४ ॥
स्वामी याद आवै दिन रैण ए, चित्त मे अति पामै चैन ए।
ऐसा भिक्खु औजागर आप ए, स्मरण सू मिटै सोग सताप ए ॥ ५५ ॥
नव तीसमी ढाल निहाल ए, भ्रम भजण समय सभाल ए।
हवेली रो हेतु कह्यौ स्वाम ए, सूत्र साख जीत कही ताम ए ॥ ५६ ॥

दुहा

विचरत पूज्य पधारिया, पादु शहर मझार।
शिष्य हेम साथै सखर, सत अवर पण सार ॥ १ ॥
ऐक भायी इह अवसरै, भिक्खु भणी भणेह।
हेम चदर हाथे करी, अधिकी दीसै ऐह ॥ २ ॥
चतुर स्वाम ते चदर ले, माप दिखायौ मान।
लाबपणै चौडापणै, अधिक नही उनमान ॥ ३ ॥
पूज कहै देखौ प्रगट, पछैवडी परमाण।
ते कहै अधिकी तौ नही, ऐ तौ छै उनमान ॥ ४ ॥
तूं अधिकी कहीतौ तदा, तद ते वोल्यौ ताम।
मुझ झूठी शका पडी, तब घणौ निषेध्यौ स्वाम ॥ ५ ॥
चार अगुल रै वासतै, सजम खोवा सार।
मुझ भौला जाण्या इसा, आण्यौ भ्रम अपार ॥ ६ ॥
ऐती प्रतीत न तो भणी, तौ मारग रै माहि।
पय काचौ पीवै तदा, तो तोनै खबर न काय ॥ ७ ॥
इत्यादिक वचने करी, अधिक निषेध्यौ आप।
कर जोडीनै ते कहे, कुडी शका किलाप ॥ ८ ॥
खरी इण पर सीख दै, खोड मिटावण काम।
फिर शका तसु ना पडी, पवर स्वाम परिणांम ॥ ९ ॥

ढाल : ५०

[जागपणु जग दोहेलो—ए देशी]

स्वाम भिक्खु गुण सागरु रे लाल, वरा भिक्खु खिम्यावान सुखकारी रे।
सबली वेवं स्वामजी रे लाल, सुणो सुरत दे कान ॥ सु० ॥
सुणजो गुण स्वामी तणा रे लाल ॥ १ ॥

शोभाचंद सेवक हुंतौ रे लाल, नाडोलाइ नौ नेहाल ॥ सु० ।
आयौ पाली मे एकदा रे लाल, तिणनै कहै पाखडी ते काल । सु० ॥ २ ॥
तूं विश्वर जोड भीखणजी तणा रे लाल, तोनै देसा बहु रुपया ताम । सु० ।
भीखणजी सूं बाता कर जोडसू रे लाल, इम कहै शोभाचन्द आम । सु० ॥ ३ ॥
इम कहि खैरवे आवियौ रे लाल, जिहा पूज विराज्या जाण । सु० ।
ऊभौ भिक्खु रै आगलै रे लाल, वंदणा कीधी आण । सु० ॥ ४ ॥
पूज कहै वच परवडा रे लाल, तुझ नाम शोभाचन्द ताय । सु० ।
शोभाचन्द कहै हा सही रे लाल, एहिज नाम कहाय । सु० ॥ ५ ॥
भिक्खु बलि तसु इम भणै रे लाल, सुत रौडीदास नौ सोय । सु० ।
सेवक कहै स्वामी भणी रे लाल, सत वच तुझ अवलोय । सु० ॥ ६ ॥
बलि शोभाचन्द बोलियौ रे लाल, आप आछी न कीधी एक । सु० ।
उथापी श्री भगवान नै रे लाल, विरुई बात विशेष । सु० ॥ ७ ॥
बलता भिक्खु बोलिया रे लाल, म्हे क्यानै उथापा भगवान । सु० ।
म्हे भगवत रा वचना थकी रे लाल, घर छोड़ साधु थया जाण । सु० ॥ ८ ॥
बलि शोभाचन्द बोलियौ रे लाल, आप देवरौ दियौ उथाप । सु० ।
जाब देवै स्वामी जुगत सू रे लाल, चतुर सुणै चुपचाप । सु० ॥ ९ ॥
हजारां मण पत्थर देवल तणौ रे लाल, कहौ उथापियै केम । सु० ।
म्हेतौ सेर दो सेर प्रयोजन विना रे लाल, आघौ पाछो करा नही एम । सु० ॥ १० ॥
फेर शोभाचन्द पूछतो रे लाल, आप जिन प्रतिमा दी उथाप । सु० ।
प्रतिमा नै कही पाषांण छै रे लाल, ए आछी न करी आप । सु० ॥ ११ ॥
स्वाम कहै तू साभल रे लाल, म्हे प्रतिमा उथापा किण काम । सु० ।
म्हारै त्याग है झूठ बोलण तणा रे लाल, इणरौ न्याय कहू अभिराम । सु० ॥ १२ ॥
सोना री प्रतिमा भणी रे लाल, सोना री प्रतिमा कहत । सु० ।
रूपा री प्रतमा भणी रे लाल, म्हे रूपा नी कहा धर खत । सु० ॥ १३ ॥
सर्वधातु नी प्रतिमा भणी रे लाल, सर्वधातु नी कहा सोय । सु० ।
पाषांण री प्रतिमा भणी रे लाल, कहा पषाण री जोय । सु० ॥ १४ ॥
पाषाण री प्रतिमा भणी रे लाल, सोना री कह्या लागै झूठ । सु० ।
तिणसू कहां छा प्रतिमा पाषांण री रे लाल, म्हे तौ दीधी है झूठ नै पूठ । सु० ॥ १५ ॥
शोभाचन्द इम साभली रे लाल, हर्ष्यौ घणौ हिया मांय । सु० ।
इसडा उत्तम महा पुरुषा तणा रे लाल, किम अवगुण कहिवाय । सु० ॥ १६ ॥
गुण चाहिजै ए पुरुष ना रे लाल, वारु इसडौ विचार । सु० ।
दोय छन्द जोड्या दीपता रे लाल, साभलता सुखकार । सु० ॥ १७ ॥

स्वामी नैं छन्द सुणायनैं रे लाल, पाछौ आयौ पाली माहि । सु० ।
पाखडमतिया पूछियौ रे लाल, थैं छन्द बणाया कै नाहि । सु० ॥ १८ ॥
ते कहै छन्द बणाविया रे लाल, पाखण्डमति वोल्या फेर । सु० ।
भीखणजी रा श्रावका रैं आगलै रे लाल, छन्द कहिजे होय सेर । सु० ॥ १९ ॥
स्वामीजी रा श्रावका कनैं रे लाल, आया सेवक लेई साथ । सु० ।
पाखण्डमति कहै श्रावका भणी रे लाल, बारु सुणौ मुझ बात । सु० ॥ २० ॥
सेवक औ निरापेखी सही रे लाल, अदल कहिसी अवलोय । सु० ।
थारे म्हारै श्रद्धा पक्ष नी रे लाल, इणरै तौ पक्ष नहिं कोय । सु० ॥ २१ ॥
शोभाचन्द नै इम कहे रे लाल, भीखणजी साधु किसाएक । सु० ।
शुद्ध छै किंवा अशुद्ध छै रे लाल, तब सेवक कहै सुविशेष । सु० ॥ २२ ॥
उणरी श्रद्धा उणा केनें रे लाल, आपारी आपा पास । सु० ।
तौ पिण पाखडमतिया कहै रे लाल, तू तौ निशक प्रकाश । सु० ॥ २३ ॥
जब शोभाचन्द कहै साभली रे लाल, गुण अवगुण भीखणजी मैं होय । सु० ।
कहिसू मोनै दर्शसी जिसा रे लाल, तब ऐ कहै दरशै जिसा तोय । सु० ॥ २४ ॥
शोभाचन्द सेवक इम साभली रे लाल, शुद्ध कह्या त्या छन्द श्रीकार । सु० ।
ते छन्द दोनूई गुण तणा रे लाल, साभलजो सुखकार । सु० ॥ २५ ॥

शोभाचंद सेवक कृत छन्द

अनभय कथणी रहिणी करणी अति, आठूंई कर्म जीपैं अधिकाई ।
गुणवत अनत सिद्धन्त कला गुण, प्राक्रम पौच विद्या पुण भारी ।
शास्त्र सार बतीस जाणैं सहु, केवलज्ञानी का गुण उपगारी ।
पचेन्द्री कू जीत न मानत पाखड, साध मुनिन्द्र वडा सतधारी ।
साधु मुक्ति का वास वदा सहु, भीखम स्वाम सिद्धन्त है भारी ॥ १ ॥
स्वामी परभव कै स्वार्थ साच है, वाचै सूत्र कला विस्तारी ।
तेराहि पथ साचा तिहू लोक मैं, नाग सुरेन्द्र नमैं नर नारी ।
सुणियै सत्य वात सिद्धन्त सुज्ञान की, वहुत गुणी करणी वलिहारी ।
पृथ्वी कै तारक पंचम आरा मैं, भीखम स्वाम का मारग भारी ॥ २ ॥

ढाल तेहिज

शोभाचन्द छद कह्या इसा रे लाल, साभल ते गया सरक । सु० ।
मन माहैं मुर्झाणा घणा रे लाल, स्वामीजी रा श्रावक होय गया गरक । सु० ॥ २६ ॥
पूज खिम्या रा प्रताप सू रे लाल, पाडी पाखडिया री आब । सु० ।
ऐसा भिक्खु गुण आगला रे लाल, सुजश विसतर्‌यौ सताब । सु० ॥ २७ ॥

ऊंडी पूज आलोचना रे लाल, बारु बुद्धि ना जाब। सु०।
धोरी धर्म तणी धूरा रे लाल, दियौ पाखड मत दाब। सु०॥ २८॥
अवतरिया इण भरत मै रे लाल, खरै मारग रह्या खेल। सु०।
सूत्र बुद्धि समसेर सू रे लाल, पाखण्ड मत दियौ पेल। सु०॥ २९॥
स्मरण तुझ गुण सभरू रे लाल, आवे निश दिन याद। सु०।
रोम रोम सुख रति लहू रे लाल, पामू पर्म समाधि। सु०॥ ३०॥
चारु ढाल चालीसमी रे लाल, भय भ्रम भजन स्वाम। सु०।
जय जश सम्पति दायको रे लाल, आशा पूरण आम। सु०॥ ३१॥

दुहा

बूदी मै बूझा करी, सवाई रामजी सोय।
बखांण सम्पूर्ण हुवा पछै, आप नैहत मागौ अवलोय॥ १॥
नुहत घाल सौगध करौ, इसडी कहौ छौ आप।
काई आपरै ई तोटी अछै, ते तोटी बूरण थाप॥ २॥
सुता परणाई सेठ किण, न्यात जिमाई न्याल।
तोटौ बूरण नैहत लै, ज्यू सूं तोटौ तुम भाल॥ ३॥
स्वाम कहै एक सेठ तिण, सुता परखाई सोय।
बोलाया बहु गाम रा, न्यात मित्र अवलोय॥ ४॥
जीमण कर जीमाविया, सगला नै पकवान।
दिवस घणा राख्या पछै, सीख दीधी सनमान॥ ५॥
एक एक पकवान री, साथे कोथली दीध।
रसतै भूख भाजन भणी, इम सुखे पूगता कीध॥ ६॥
ज्यू म्हैं पिण बहु दिवस लग, वखाण मै विस्तार।
वाता विविध वैराग नी, सभलाई सुखकार॥ ७॥
हलुकर्मी सुण हर्षिया, कर्म काट्या अधिकाय।
छेहडै एक पकवान री, कोथली रूप कहाय॥ ८॥
त्याग करावा नेहनै, सुखे मोक्ष मै जाय।
इम तोटी मेटण अवरनु, नुहत मागा इण न्याय॥ ९॥

ढाल : ४१

[धीज करै सीता सती रे लाल — ए देशी]

स्वाम भिक्षु बुद्धि सागरू रे लाल, निर्मल मेल्या न्याय रे। सुगुण नर।
सुविनीत गुरु हर्ष करै रे लाल, अवनीत नेंअ सुहाय रे। सुगुण नर।
सुणजो दृष्टान्त स्वामी तणा रे लाल॥ १॥

अवनीत साधु ऊपरै रे लाल, दीधी स्वाम दृष्टान्त रे । सु० ।
एक साहुकार नी स्त्री रे लाल, पाणी काजै गई घर खत रे । सु० ॥ २ ॥
बेहडी ती माथै पाणी सू भरयौ रे लाल, पोता रै घर आवता पेख रे । सु० ।
मार्ग मै तिणरी बाहिली मिली रे लाल, बाता करबा लागी विशेष रे । सु० ॥ ३ ॥
एक घडी ताई तौ उभा थका रे लाल, हिल मिल वाता करी हर्षाय रे । सु० ।
पछै घर आवी निज पिउ भणी रे लाल, तिण हेली पाड्यौ ताहि रे । सु० ॥ ४ ॥
तुर्त घडी उतारौ मुझ सिर तणु रे लाल, जो किंचित वेला थी भरतार रे । सु० ।
बेहडौ उतारयौ तिण वैरनौ रे लाल, तौ क्रोध मै आवी अपार रे । सु० ॥ ५ ॥
कहै म्हारै माथै तौ बेहडौ उदक नौ रे लाल, सो हू भारया मुई घणी सोय रे । सु० ।
थानै तौ मूल सूजै नही रे लाल, जिगसू वेला इतरी लगाई जोय रे । सु० ॥ ६ ॥
ससार तणै लेखै सही रे लाल, नार इसडी अविनीत रे । सु० ।
रस्तै एक घडी बेहडो छता रे लाल, पोतै वाता करी धर प्रीत रे । सु० ॥ ७ ॥
किंचित् जेज पिउ करी रे लाल, तडका भडका करवा लागी ताम रे । सु० ।
इसडी अजोग ते स्त्री रे लाल, अवनीत जग कहै आम रे । सु० ॥ ८ ॥
अविनीत साधु एहवौ रे लाल, गोचरियादिक माहि रे । सु० ।
किणही बाई भाई सू बाता करै रे लाल, एक घडी ताई ऊभा ताहि रे । सु० ॥ ९ ॥
अथवा दर्शन देवा कोई भणी रे लाल, झट चलाई नै परहौ जाय रे । सु० ।
तिहा ऊभा घणी बेला लगै रे लाल, वाता करै वणाय रे । सु० ॥ १० ॥
बडा थोडौ ई काम भलाइया रे लाल, करता कठ मठाठ करै जेह रे । सु० ।
तथा पाणी राख्यौ ते लेवा मेलिया रे लाल, टाला टोलौ कर देवै तेह रे । सु० ॥ ११ ॥
अथवा जातौ दोहरौ हुवै रे लाल, वले देवै मुह विगाड रे । सु० ।
गुरु सीख दियै चूक थी पड्यो रे लाल, तौ करै उलटी फुकार रे । सु० ॥ १२ ॥
अवनीत साधु नै दीधी उपमा रे लाल, अवनीत स्त्री नी भिक्खु आप रे । सु० ।
इम साभल उत्तमा नरा रे लाल, थिर चित्त सुविनय थाप रे । सु० ॥ १३ ॥
वलि वनीत अवीनीत री चौपई विषै रे लाल, आख्या दृष्टन्त अनेक । सु० ।
सक्षेप थकी कहू छू सही रे लाल, साभलजो सुविवेक । सु० ॥ १४ ॥
अवनीत नै थावरिया नी उपमा रे लाल, गर्भवती नै कह्यौ डाकोय रे । सु० ।
पुत्र होसी पुन्य आगली रे लाल, पाडोसण नै कहै पुत्री होय रे । सु० ॥ १५ ॥
गुरु भगता श्रावक श्राविका कनै रे लाल, गावै गुरु रा गुणग्राम । सु० ।
आपरै वश जाणे तिण कनै रे लाल, अवगुण बोलै ताम । सु० ॥ १६ ॥
कनै रहै साधु ते थकी रे लाल, वैर वृद्धि ज्यू जाण । सु० ।
और अलगा रहै ते थकी रे लाल, हेत राखै सुविहाण । सु० ॥ १७ ॥

कुह्या काना री कुती भणी रे लाल, काढै घर सूं सहु कोय*।
ज्यूं अवनीत जिहा जावै तिहा रे लाल, आदर मान न होय* ॥ १८ ॥
भंडसुरौ कण छाडिनै भीष्टौ भखै रे लाल, हरिया जव छाडी मृग पडै पास।
ज्यूं अवनीत विनय छाडी करी रे लाल, अविनय धारै उलास ॥ १९ ॥
गधौ घोडौ गलियार अवनीतडौ रे लाल, कूट्या बिन आघौ नही चालै कोय रे।
ज्यूं अवनीत नै काम भलाविया रे लाल, कह्या नीठ नीठ पार होय रे ॥ २० ॥
बुटकनै गधै मामे बलदनै रे लाल, मरायौ कुबुद्धि सीखाय।
ज्यूं अवनीत री सगत किया रे लाल, भव भव मै दुःख पाय ॥ २१ ॥
वेश्या मुतलब थी पुरुषा रिझावती रे लाल, स्वार्थ न पूगा तुरत देवै छेह रे।
ज्यूं अविनीत मुतलब विनय करै घणु रेलाल, स्वार्थ नही सझ्या तोडै सनेह रे ॥ २२ ॥
बाध्यौ काला री पाखती गोरियौ रे लाल, वर्ण नावै तौ पिण लक्षण आय रे।
ज्यूं अवनीत री सङ्गत करै रे लाल, तौ उवे अविनय कुबुद्धि सीखाय रे॥ २३ ॥
सौक रा सौक्र लोका कनै रे लाल, अवगुण बोलैनै बाछै घात।
ज्यू अविनीत बरतै गुरु थकी रे लाल, अवगुण ग्राही साख्यात ॥ २४ ॥
कुजाति री त्रिया पिउ सू लडी रे लाल, ताकै कुवै कै उठै और साथ रे।
करै अविनीत क्रोध सू सलेषणा रे लाल, कै गण छोड जूदौ होय जाय रे ॥ २५ ॥
शोर ठडौ हुवै मुख मै घालिया रे लाल, तातौ अग्नि मै गालियां हुवै ताय।
ज्यू वस्त्रादिक दिया अवनीत राजी रहै रे लाल, स्वार्थ अण पूगा अवगुण गाय ॥ २६ ॥
शोर शोरीगर रा घर थकी रे लाल, दूरा रहै बुद्धिवान रे।
ज्यूं अविनीत सूं अलगा रहै रे लाल, ते डाहा चतुर सुजांण रे ॥ २७ ॥
आछी वस्त घालै जो अग्नि मै रे लाल, ते छिन माहैं होय जावैं छार रे।
ज्यू अविनय अग्नि सू गुण बलै रे लाल, अवगुण प्रगटै अपार रे ॥ २८ ॥
नाग खिजावै नान्हौ जाणनै रे लाल, तौ ओ घात पामै तत्काल रे।
ज्यूं नान्हा गुरु नी पिण निंद्या किया रे लाल, आपदा पामै असराल रे ॥ २९ ॥
कालो नाग कोप्यौ करै रे लाल, जीव घात सू अधिक म जाण रे।
पण गुरु ना अप्रसन्न हुआ रे लाल, अबोद्धि दुर्गत दुख खाण रे ॥ ३० ॥
कदा अग्नि न बालै मत्र जोग सू रे लाल, कदा कोप्यौई सर्प न खाय।
कदा तालपुट विष पिग मारै नही रे लाल, पिण गुरुहेलणा सू मुक्ति न जाय ॥ ३१ ॥
कोई वाछे सिर सू गिरि फोडवौ रे लाल, सूतौ ही सिह जगाय।
कोई भाला री अणीनै मारै टाकरा रे लाल, ज्यू गुरु नी असातना थाय ॥ ३२ ॥

---

*प्रत्येक गाथा के द्वितीय और चतुर्थ चरण के बाद 'सुगण नर' पढें।

कदा गिरि पिण फोडै कोई मस्तक रे[1], कदा कोप्यौई सिंह न खाय[2]।
कदा भालौ न भेदै टाकर मारिया रे[1], पण गुरु हेलणा सू शिव नाहि[2] ॥ ३३ ॥
ज्यू काष्ठ वहौ जाय जल मझै रे, ज्यू अवनीत ताणीजै ससार।
कुशिष्य क्रोधी अभिमानी आतमा रे, धूर्त मायावियौ धार ॥ ३४ ॥
गुरु सीख दियै अविनीत नै रे, तौ क्रोध करै तिण वार।
ते डाडे कर ठेलै लिछमी आवती रे, साची सिख न श्रद्धै लिगार ॥ ३५ ॥
केई हाथी घोडा अविनीत छै रे, दीखै प्रत्यक्ष दुख।
तौ धर्माचार्य ना अविनीत नै रे, कहौ हुवै किम सुख ॥ ३६ ॥
अविनीत नर नारी इण लोक मै रे, विकलेन्द्री सरीखा विपरीत।
ते डाडै शस्त्रे करी ताडीजता रे, अति दुःख पामै गुरु नौ अविनीत ॥ ३७ ॥
बले देव दानव अविनीत छै रे, दुखिया तै पिण देख।
गुरु ना अविनीत नै दुख अति घणी रे, काल अनन्त सपेख ॥ ३८ ॥
विनीत अवनीत जाता बाट मै रे, दोनू जणा हथिणी नौ पग देख।
अविनीत कहै पग हाथी तणु, इणनै ऊंधौ सूझै अशेष ॥ ३९ ॥
विनीत कहै हथिणी पण काणी डावी आखरी रे, ऊपर राजा री राणी सहित।
बले पुत्र रत्न तिणरी कूख मै रे, विवरा सुध बोल्यौ सुविनीत ॥ ४० ॥
एक बाई प्रश्न आगै पूछियौ रे, ऊभी सरवर पाल।
म्हारौ सुत प्रदेश ते मिलसी कदे रे, कहै अविनीत उण कियौ काल ॥ ४१ ॥
हू काटू बाढू जीभडली ताहि री रे, तू विरुऔ बोल्यौ केम।
धसकौ क्यू न्हाखै पापी एहवौ रे, जब विनीत कहे छै एम ॥ ४२ ॥
पुत्र थारौ घर आवियौ रे, आज मिलसी तोसू निशक।
इणरौ वचन म माने औ झूठौ घणू रे, इणरै जीभ वैरण गै वक ॥ ४३ ॥
ए दोनू बोला मै अविनीत झूठौ पड्यौ रे, पछै गुरु सू झगड्यौ आय।
कहै मोनै न भणायौ कपटे करी रे, गुरु पूछे निरणु कियौ ताहि ॥ ४४ ॥
इह लोक मै गुरु ना अवनीत री रे, अकल विगड गई एम।
तौ धर्म्माचार्य ना अवनीत री रे, ऊधी अकल री कहिवौ केम ॥ ४५ ॥
ज्यूं नकटी छुटी कुल हीणी नार नै रे, परहरी निज भरतार।
जोगी भखरादिक तिणनै आदरै रे, उवा पिण जावै उणा लार ॥ ४६ ॥
नकटी सरीषी अविनीत री रे, तिणनू निज गुरु न धरै प्यार।
तिणनै आप सरीषो आवी मिलै रे, तव पामै हर्ष अपार ॥ ४७ ॥

१—प्रत्येक गाथा के पहले और तीसरे चरण के अन्त मे 'लाल' पद है।
२— " दूसरे और चौथे चरण के अन्त मे 'सुगुण नर' है।

नकटी तौ जोवै भखरादिक भणी रे, अविनीत जोवै अजोग।
जो अशुभ उदै हुवै अविनीत रे, मिल जावै सरीषौ संयोग ॥ ४८ ॥
सौ बार पाणी सूं कादो धोविया रे, बिरुई न मिटै बास।
घणू उपदेश दै गुरु अविनीत नै रे, पिण मूंल न लागै पास ॥ ४६ ॥
अविनीत उजिया भोगवती जिसौ रे, ऋषिया रोहणी जिसौ सुवनीत।
गुरु गण सूपै सुविनीत नै रे, पूरी तिणरी प्रतीत ॥ ५० ॥
किणही गाय दीधी चार. विप्रां भणी रे, ते बारै बारै दूहै ताहि।
पिण चारो न नीरै लोभ थकी रे, तिण सू दु:खे २ मूई गाय ॥ ५१ ॥
गाय सरिषा आचार्य मोटका रे, दूध सरीषौ ज्ञान अमोल।
शिष्य मिला ब्राह्मण सारिषा रे, ते ज्ञान लियौ दिल खोल ॥ ५२ ॥
आहार पांणी आदि व्यावच तणी रे, नकरै सार सभाल।
एहवा अविनीता रै वश गुरु पड्या रे, त्या पण दु:खे २ कियौ काल ॥ ५३ ॥
ब्राह्मण तौ एक भव मझै रे, फिट फिट हुवा इहलोक।
गुरु ना अविनीत रौ कहिवौ किसो रे, पीडा विविध परलोक ॥ ५४ ॥
गर्ग आचार्य नै मिल्या रे, पाच सौ शिष्य अविनीत।
तिणरौ विस्तार तौ छै घणू रे, ऊत्तराध्ययन माहैं सगीत रे ॥ ५५ ॥
एकल थकी पिण बुरौ अवनीतडौ रे, साधा रा गण माहैं जाण रे।
सामद्रोही सेवग सारीषौ रे, दुमनु चाकर दुश्मन समान रे ॥ ५६ ॥
छलबल खेलै चोर ज्यू रे, छिद्री थकौ रहै टोला माहि।
चर्चा उपदेश तिणरौ अति बुरौ रे, फाडा तोडा काजै करै ताहि ॥ ५७ ॥
और साधा रा काढै गृहस्थ खूंचणा रे, तिणसू बात करै दिल खोल।
अतरग मै जाणै आपरौ, तिणनै सिखावै चर्चा बोल ॥ ५८ ॥
गुण ग्राम गावै सुविनीत रा रे, तौ अविनीत सू सहा नही जाय।
निज आपौ प्रगट करै रे, म्हानै तौ ललपल न सुहाय ॥ ५६ ॥
और सधा री आसता उतारवा रे, आपौ प्रगट करै मूढ।
गुरु सीख देवै खामी मेटवा रे, तो साहमौ मड जायै करै खोटी रूढ ॥ ६० ॥
जिण नै आप तणु करै रागियौ रे, शका औरा री घाल।
अभिमानी अविनीत नी रे, एहवी छै ऊंची चाल ॥ ६१ ॥
सुविनीत रा समझाविया रे, साल दाल ज्यू भेला होय जाय।
अविनीत ना समझाविया रे, कोकला ज्यू कानी थाय ॥ ६२ ॥
समझाया सुविनीत अविनीत रा रे, फेर कितोयक होय।
ज्यू तावडो ने छाहडी रे, इतरौ अतर जोय ॥ ६३ ॥

अविनती नै अविनीत मिलै रे, ते पामै घणौ मन हर्ष।
ज्यूं डाकण राजी हुवै रे, चढवानै मिलिया जरख ॥ ६४ ॥
डाकण मारै मनुष नै रे, औ करै समकित नी घात।
डाकण चोर राजा तणी रे, औ तीर्थंकर नौ चौर विख्यात ॥ ६५ ॥
लपट रूपगृद्धि फिट फिट हुवै रे, जे न गिणै जाति कुजाति।
ज्यूं अविनीत गृद्धि घणो खाणरौ रे, विकला नै मूडै विख्यात ॥ ६६ ॥
ए अविनीत साधु ओलखावियौ रे, इमहिज साधवी जाण।
वले श्रावक नै श्राविका तणी रे, तिमहिज करजो पिछाण ॥ ६७ ॥
साध साधविया री निन्दा करै रे, अवगुण बोलै विपरीत।
सूस करावै गृहस्थ भणी रे, त्यारी भौला मानै प्रतीत ॥ ६८ ॥
केई श्रावक खावै घर तणु रे, केयक मागे खाय।
पिण अविनीतरणी छूटै नही रे, तौ गरज सरै नही काय ॥ ६९ ॥
त्यानै दीधा मै पुन्य परूपिया रे, स्वान ज्यूं पूछ हिलाय।
साधु पाप परूपै त्यारा दान मै रे, तौ लागै अभ्यतर लाय ॥ ७० ॥
कोई अविनीत हुवै साध सावधी रे, कदा गुरु दै लोका नै जताय।
जो अविनीत श्रावक साभलै रे, तौ तुर्त कहै तिणनै जाय ॥ ७१ ॥
साधा नै आय वदणा करै रे, साधविया नै न वादै रूडी रीत।
त्यानै श्रावक श्राविका म जाणजो रे, ते तौ मूढ मति छै अविनीत ॥ ७२ ॥
तिण श्री जिन धर्म न ओलख्यौ रे, वले भण भण करै अभिमान।
आप छादै माठी मति उपजै रे, तिणनै लागी नही गुरु कान ॥ ७३ ॥
मोटौ उपगार मुनि तणु रे, कृतघ्न कीधौ न गिणत।
एहवा अविनीत साधु श्रावक ऊपरै रे, भिक्खु आख्यौ एक दृष्टन्त ॥ ७४ ॥
कोई सर्प पड्यौ उजाड मै रे, चैत नही सुध काय रे।
तिण सर्प री अणुकपा करी रे, दूध मिश्री घाली मुख माय रे ॥ ७५ ॥
ते सर्प सचेत थया पछै रे, आडौ फिरियौ आय।
जो ओ लूठौ हुवै तौ उणनै दाव दै रे, काचौ हुवै तौ दै डक लगाय ॥ ७६ ॥
सर्प सरीषा अविनीत मानवी रे, एकल फिरै ज्यूं ढोर रुलिया रे।
त्यानै समकित चारित्र पमायनै रे, कीधौ मोटौ अणगार रे ॥ ७७ ॥
एहवौ उपगार कियौ तिकौ रे, तत्काल भूलै अविनीत।
उलटा अवगुण बोलै तेहना रे, उणरै सर्प वाली छै रीत ॥ ७८ ॥
आहार पाणी वस्त्रादि कारणै रे ते पिण भूठौ भगडौ जोय।
इणनै ऊपरलो हुवै तौ दावै डक दे रे, आघौ वादै तौ उल्टौ भाडै सोय ॥ ७९ ॥

सर्प नै मिश्री दूध पाया पछै रे, डक दै ते गैरी सर्प देख।
ज्यूं औ समकित चारित्र लिया पछै रे, हुवौ साधा रौ वैरी विशेष ॥ ८० ॥
बले खाणा पीणा रौ हुवौ लोलपी रे, आपरो दोष न सूझै मूल।
छेडविया सू स्हामौ मण्डै रे, बलि क्रोध करै प्रतिकूल ॥ ८१ ॥
तिणनै दूर करै तौ दुश्मण थकौ रे, बोलै घणु विपरीत।
असाध परूपै सगला साधनै रे, तिणरै गैरी सर्प नी रीत ॥ ८२ ॥
सुगुरा सांप नै दूध पायां थका रे, औ करै पाछौ उपगार।
तिणनै धन देई धनवत करै रे, बले दीठा हुवै हर्ष अपार।
भाव सुणौ सुविनीत रा रे लाल ॥ ८३ ॥
केई आप छादै फिरै एकला रे, पिण सरल प्रणामी शुद्ध रीत रे।
तिणनै समझाय समकित चारित्र दियौ रे, ते आज्ञा पालै रूडी रीत रे ॥ ८४ ॥
तिणरै समकित नै सजम विहु रे, रुचिया अभ्यतर सार।
चलावै ज्यू चालै छान्दी रूधनै रे, ज्यांसू करै पाछो उपगार ॥ ८५ ॥
मोटौ उपगार त्यारौ किम विसरै रे, सूंपै सर्व देही त्यारै काज।
त्यारौ दर्शण हर्षत हुवै रे, सर्व काम मै धोरी ज्यूं समाज ॥ ८६ ॥
बले गामा नगरां फिरता थका रे, सदा काल करै गुणग्राम।
ते सुविनीत गुणग्राही आत्मा रे, त्यानै वीर बखाण्या ताम ॥ ८७ ॥
शिष्य सुविनीत नै शोभती रे, उपमा दीधी अनेक रे।
सूत्र न्याय भिक्खु स्वामजी रे, साभलजो सुविशेष रे ॥ ८८ ॥
भद्र कल्याणकारी घोडै चढ्या रे, असवार रै हर्ष आणद।
ज्यू सीख दिया सुवनीत नै रे, गुरु पामै परमानद ॥ ८९ ॥
सुविनीत हय देखी चाबषौ रे, असवार रै गमतौ चालत।
चावका रूप वचन लागा बिना रे, सुविनीत वर्तै चित शान्ति ॥ ९० ॥
अग्निहोत्री ब्राह्मण सेवै अग्नि नै रे, ते घृतादिक सींची करै नमस्कार।
सुविनीत सेवै इम गुरु भणी रे, केवली छतौ पिण अधिकार ॥ ९१ ॥
सुविनीत हय गय नर नारी सुखी रे, सुखी देव दानव सुवितीत।
ते तौ पूर्व पुन्य रा प्रभाव सूं रे, दीसै लोक मै विनय सुरीत ॥ ९२ ॥
केई पेट भराई शिल्प कारणै रे, ससार ना गुरु कनै सोय।
राजादिक ना कुंवर डाडादिक सहै रे, करडा वचन सहै नर्म होय ॥ ९३ ॥
तो सिद्धन्त भणावै ते सत गुरु तणौ रे, किम लोपै विनयवत कार।
समगत चारित्र पमावियौ रे, औ उत्कृष्टौ उपगार ॥ ९४ ॥

धर्म रूप वृक्ष री विनय मूल छै रे, बीजा गुण शाखादिक सम जाण ।
तिणसू शीघ्र वृद्धि कीर्त्ति सूत्र नी रे, दशवैकलिक नवमा रै दूजै बाण ॥ ९५ ॥
वृक्ष री मूल सूका छता रे, शाखा पान फलादि सूक जाय ।
ज्यूं विनय मूल धर्म विणसिया रे, सगलाई गुण विल्लाय ॥ ९६ ॥
एहवौ विनय गुण वर्णव्यौ रे, साभल नैं नर नार ।
अविनय नैं अलगो करी रे, करो विनय धर्म अंगीकार ॥ ९७ ॥
अविनीत रा भाव साभली रे, अविनीत बहु दुख पाय ।
केई कुगुरु सुध बुध बाहिरा रे, ते पिण हर्षंत थाय ॥ ९८ ॥
विनीत रा गुण साभली रे, विनीत रै आनन्द ओछाव ।
तौ पिण कुगुरु हर्षंत हुवै रे, विनय करावण चाव ॥ ९९ ॥
ते समझै नही जिन धर्म मैं रे, आज्ञा अणआज्ञा ओलखै नाय ।
ते व्रत विहुणा नागडा रे, प्रत्यक्ष प्रथम गुणठाणौ देखाय ॥ १०० ॥
हाल देखी हसली तणी रे, बुगली पिण काढी चाल ।
पिण बुगली सूं चाल आवै नही रे, ऐ दृष्टान्त लीजो सभाल ॥ १०१ ॥
कुगुरु साधा नै देखी करी रे, ते पिण करवा लागा अभिमान ।
आडबर कर विनय करावता रे, नहिं श्रद्धा आचार नु ठिकाण ॥ १०२ ॥
कोयल रा टहुका सुणी करी रे, का का शब्द करै काग ।
शोभाग सुणी सतिया तणा रे, कूढै कुसतिया अथाग ॥ १०३ ॥
सागधारी कुसतिया काग सारीषा रे, अशुद्ध श्रद्धा आचार रै माहिं ।
ठाला बादल ज्यू थोथा गाजता रे, विनय करावता लाजै नाहिं ॥ १०४ ॥
गैवर नी गति देखनै रे, भूसै स्वान ऊचा कर कान ।
ज्यू भेषधारी देखी साध नै रे, स्वान ज्यू कर रह्या तान ॥ १०५ ॥
ते पिण विनय करावणा रा भूखा घणा रे, साथी सीप मिगोट्या रा भोय ।
मिथ्यादृष्टि ते मूलगा रे, त्यानैं ओलखैं बुद्धिवंत लोय ॥ १०६ ॥
त्मा ठाम २ थानक बांधिया रे, थापै जीव खवाया पुन्य ।
ते पिण नाम धरावैं साधरो रे, सवलौ न सूझै समकित सुन्य ॥ १०७ ॥
पोपा बाई रा राज मै रे, नव तूवा तेरै नेगदार ।
ज्यू विकल सेवग स्वामी मिल्या रे, एहवी भेषधार्‍या रै अधार ॥ १०८ ॥
वस्त्र पात्र अधिका राखता रे, आडा जडै किमाड ।
मोल लिया थानक माहैं रहै रे, इसडी थाप निरन्तर धार ॥ १०९ ॥
आज्ञा बारै पुन्य श्रद्धता रे, आज्ञा मैं पाप समाज ।
काचौ पाणी पायां पुन्य श्रद्धता रे, प्रत्यक्ष पोपां बाई रो राज ॥ ११० ॥

ते समझ न पडै श्रावका भणी रे, ज्यारा मत माहे मोटी पोल।
पिण आंधा नै मूल सूझै नही रे, तावा ऊपर झोल ॥ १११ ॥
कुगुरु निषेध्या अविनीतडी रे, ऊधा अर्थ करै विपरीत।
ते सत गुरु नै कुगुरु कहै रे, नहि विनय करण री नीत। ११२ ॥
उणसूं विनय कियौ जावै नही रे, तिणसूं बोलै कपट सहित।
कहै विनय कह्यौ छै शुद्ध साध नौ रे, इणरै भ्यन्तर खोटी नीत ॥ ११३ ॥
साधां नै असाध सरधायवा रे, बोलै माया सहित।
तिणनै बुद्धिवत हुवै ते ओलखै रे, औ पूरै मतै अविनीत ॥ ११४ ॥
कहै आचार मै चूकै घणा रे, म्हांसूं विनय कियौ किम जाय।
ते बुद्धिहीण जीव बापडा रे, न जाणै सूत्र न्याय ॥ ११५ ॥
बुकस पडिसेवण भेला रहै रे, अवधि मनपर्यव केवल अबक।
ते भेला आहार करता शकै नही रे, इणनै विनय करता आवै शक ॥ ११६ ॥
देखौ अधारौ अवनीत रै रे, निज अवगुण सूझै नांय।
विनय नौ तौ गुण पोतै नही रे, तिणसू पर तणौ औगुण देखाय ॥ ११७ ॥
दर्शण मोह उदय घणु रे, पूरौ विनय कियौ नही जाय।
ओलखै अवगुण आपरौ रे, ए उत्तमपणौ सुहाय ॥ ११८ ॥
ते कहै केवली बुकस भेला रहै रे, मोह बल्यौ तिणसूं नावै लैहर।
लैहर आवै चित्त थिर नही रे, ते जाणै निज कर्म रौ जहर ॥११९ ॥
बुकस पडिसेवण कदे नहिं मिटै रे, तीनू ही काल रै माय।
दोय सौ क्रोड सूं घटै नही रे, चित्त अथिर सूं, ते न मिटाय ॥ १२० ॥
ज्यांरै सूत्र तणी नही धारणा रे, अति प्रकृति घणी अजोग रे।
ते थोडा मै रग विरग हुवै रे, मोटौ दर्शन मोह रोग रे ॥ १२१ ॥
कै कारै दर्शन मोह तौ दिसै घणौ रे, पिण सैणा घणा बुद्धिवान।
ते गुरु नै सुणाय निशंक हुवै रे, ज्यारै समकित री जोखौ मति जाण ॥ १२२ ॥
दोष री थाप गुरा रै नही रे, दोष रा डड री थाप।
और री कीधी थाप हुवै नही रे, इम जांण निशक रहै आप ॥ १२३ ॥
इम सांभल उत्तम नरा रे, राखौ देव गुरा नी प्रतीत।
आसता राख आगै घणा रे, गया जमारौ जीत ॥ १२४ ॥
वर्ण नाग नतुआ तणौ रे, मित्र तर्‍यौ प्रतीत सूं पेख।
तै उत्तम पुरुषा री प्रतीत सूं रे, तिर्‍या तिरैनै तिरसी अनेक ॥ १२५ ॥
भिक्खु स्वाम कह्या भला रे, दीपता वर दृष्टन्त।
केयक तौ सूत्रे करी रे, केयक बुद्धि उपजंत ॥ १२६ ॥

उत्पत्तिया वुद्धि अति घणी रे, स्वाम भिक्खु नी सार।
स्वाम गुणा नौं पोरसौ रे, स्वाम शासण शिणगार ॥ १२७ ॥
स्वाम दिसावान दीपतौ रे, स्वाम तणी वर नीत।
आसता तास न आदरै रे, ते अपछंदा अविनीत ॥ १२८ ॥
भिक्खु दीपक भरत में रे, प्रगट्यौ वहु जन भाग।
स्वाम भिक्खु गुण सभरू रे, आवै हर्ष अथाग ॥ १२९ ॥
ढाल भली इकचालीसमी रे, आख्या दृष्टन्त अनेक।
भिक्खु स्वाम प्रसाद थी रे, जय जश करण विशेष ॥ १३० ॥

दुहा

इत्यादिक दृष्टान्त अति, सूत्र न्याय वलि सार।
सखरा मेल्या स्वामजी, भिक्खु वुद्धि भण्डार ॥ १ ॥
अणुकम्पा रै ऊपरै, करणी पटम गुण ठाण।
इन्द्रीवादी ऊपरै, वहु दृष्टान्त वखाण ॥ २ ॥
पोत्यावध ऊपर प्रत्यष, प्रज्ञ्यावादि पिछाण।
कालवादी की चौपई, दृष्टान्त त्या वहु जाण ॥ ३ ॥
व्रत अव्रत री चौपई, अरु श्रद्धा आचार।
जिण आज्ञा पर युक्ति सू, सखरा हेतू सार ॥ ४ ॥
टीकम डोसी कच्छ नौं, सूक्ष्म पूछा सोय।
जाब दिया अति जुक्ति सू, ऋष भिक्खु अवलोय ॥ ५ ॥
भिक्खु नाम कह्यौ भलौ, सूत्रा में वहु ठाम।
भेदै कर्म भणी भलौ, गुण निष्पन्न तुझ नाम ॥ ६ ॥
पच महाव्रत अक पच, वार व्रत ना वार।
अव्रत वारै अक धर, त्रि कर्ण जोग प्रकार ॥ ७ ॥
इण विध माड वतावता हेतु न्याय अनेक।
आप दिखाया अधिक ही, वर्णवें केम विशेष ॥ ८ ॥
दाख्या ते दृष्टान्त नी, संकलना सुविशाल।
कहू छू सक्षेपे करी, सुचा मात्र सभाल ॥ ९ ॥

ढाल : ४२

[डाब मूजादिक नी [illegible]]

पाच सौ मण चणा पिछाण, पच भिक्षा हेत ते [illegible] ।
टोकरा नै चणा भेर दीधू, पीन पोय [illegible] ॥ १ ॥

आखा पजुसणा में नआल, चौडै परंपरा थित चालै[३] ।
माता वेश्या नै तै जल पायौ, पाप छै पिण सरीपा न थायौ ॥ २ ॥
तिम श्रावक कसाई न सरिषौ, पाप सुणी कोई मत भिडकौ[४] ।
चदर ले गयौ तसकर एक, एक दीधी प्रायछित किणरी पेख[५] ॥ ३ ॥
थारा धणी री नाम नाथू होय, कहै क्यानै नाथू हुवै सोय[६] ।
मूला दिया काई हुवै त्यानै, पूछ्यौ अमरसिंघजी रा साधां नै[७] ॥ ४ ॥
पडिया तसकर नै आफू खवायौ, ते तौ सेठ नौ वैरी छै तायो[८] ।
खेत पाका करसणी रै वाली, तिणरौ रोग मेट्या फल न्हालौ[९] ॥ ५ ॥
ममता ऊतरी कहै प्रसिद्धि, दश वीगा खेती किणनै दीधी[१०] ।
सावज दांन रा तू करै त्याग, म्हानै भांडवा नै कै वैराग[११] ॥ ६ ॥
जल लोट्यौ सूपजो म्हारै हाट, ज्यूं पुन्य कहै सानी रै वाट[१२] ।
पड़िमाधारी नै दिया सू होय, लैणवाला नै ते अवलोय[१३] ॥ ७ ॥
कोई काचौ पाणी किणनै पावै, कोई पार की खाई लुटावै[१४] ।
धन दियौ अव्रती नै ताहि, लाय मा सू न्हाख्यौ लाय माहि[१५] ॥ ८ ॥
घृत तम्बाकू भेला न मेल, ज्यू व्रत अव्रत मै नही भेल[१६] ।
आंख जीभ औषध री दृष्टन्त, व्रत अव्रत ऊपर उपजंत[१७] ॥ ९ ॥
शोर अग्नि न्यारा सूं न नाश, ज्यूं व्रत अव्रत जुजूवा तास[१८] ।
सोमल मिश्री पसारी रे न्यार, व्रत अव्रत जुवा विचार[१९] ॥ १० ॥
कहै गृहस्थ री है छंद, छादा मै तौ धूल है मद[२०] ।
खाड घृत मैदौ खरा होय, ज्यू चित्त वित पात्र सुजोय[२१] ॥ ११ ॥
थानै असाध जाणेने दियौ दान, उत्तर खाधी मिश्री विष जान[२२] ।
आक थोर रौ दूध अशुद्ध, सावज दया अनुकपा न शुद्ध[२३] ॥ १२ ॥
लाय बुझाया मिश्र थापत, तो नाहर मार्‍या न पाप एकंत[२४] ।
बले करुणा घणा री आण, कसाई नै मार्‍या मिश्र जाण[२५] ॥ १३ ॥
बले उरपुर नै मारै विशेष, तिणमै पिण मिश्र छै त्यारै लेख[२६] ।
बले अटवी बालतौ जाणै, तिणनै मार्‍या मिश्र क्यू न माणै[२७] ॥ १४ ॥
कतल करतौ तुर्कादिक ताय, तिणनै मार्‍या मिश्र त्यारै न्याय[२८] ।
गायादिक हिंसक जीव सघारै, त्यानै मार्‍या मिश्र क्यूं नहि धारे[२९] ॥ १५ ॥
फासी काढै ते धर्मी कहिवायो, तौ थारा गुरु न काढै किण न्यायो[३०] ।
चोर ग्यारह मै एक छुडायौ, तिणरौ सेठ प्रत्यक्ष फल पायौ[३१] ॥ १६ ॥
उरपुर खाधौ उजाड रै मायो, मत्रवादि झाडी दे बचायौ[३२] ।
साधा सुणायौ श्री नवकार, आज्ञा मै किसौ छै उपगार[३३] ॥ १७ ॥

साहुकार नी स्त्रिया दोय, एक रोवें न रोव ते जोय।
कही साधुजी किणनें सरावै, ससारी रै मन कुण भावे[३४] ॥ १८ ॥
मोहकर्मसिहजी पूछयो महाराज, आप गमता लागो किण काज।
नारी हर्षं कासीद नैं निरख, तिम शिव मग नों यारै हर्ष[३५] ॥ १९ ॥
तुझ अवगुण काढै है ताय[३६], थारो मुहडी देख्यां नर्क जाय[३७]।
ताकडी डाडी री दृष्टान्त[३८], कहै उघा भणी वात्त[३९] ॥ २० ॥
गुण गोली सीरा सूं शोभाय[४०], ऐक भागा पाचू किम जाय[४१]।
करो थानक में कद आख्यो, सीरो करी जमाई न दाख्यौ[४२] ॥ २१ ॥
सखरी मुझ करो सगाई, डावरै कद कह्यौ छै ताहि[४३]।
जति री उपासरो कहाय, मथेण रै पोशाल है ताय[४४] ॥ २२ ॥
झालर सुण स्वान रुदन करत, विहाव री मुवा री न जाणत[४५]।
दुःख नी रात्रि मोटी दिखाय, सुख नी रात्रि छोटी दीसै ताय[४६] ॥ २३ ॥
गाम रै गोरवै खेती वाही, गधा न पड्या है तो ठैहराई[४७]।
करडा दृष्टान्त कही किण न्याय, करडो रोग फूजाल्या न जाय[४८] ॥ २४ ॥
गोहा री तो दाल हुवै नाहि, अल्प बुद्धि न समझै ताहि[४९]।
आपरी भाषा नहि ओलखाय, पोतै लिख्यो वाच्यो नहि जाय[५०] ॥ २५ ॥
गो पगडाडी पाखड मग ताहि, जिण माग रस्तो पातशाही[५१]।
पाग चौरी मुदो न पोंचाय, झूठो ठाम ठाम अटक जाय[५२] ॥ २६ ॥
साधा सूस करायो सोय, भाग्या साध नें पाप न होय।
कपडा वेच नफो लियो सार[५३], साधु नें घृत दियो उदार[५४] ॥ २७ ॥
वैरागी वैराग चढावै, कसूबो गलिया रग पमावें[५५]।
कहै म्हे जीव वचावा ऐ ठागो, चौकी छोड चोरया करवा लागो[५६] ॥ २८ ॥
ऋषपाल जिम छै तिम राखै[५७], पूरी न पलै पचम काल भाषे।
तेली तीन दिना री ते काल, हिवडा पिण तीन दिवस नों म्हाल[५८] ॥ २९ ॥
दीख्या लेऊ पिण आसू तो आय, जमाई रोया शोभ न पाय[५९]।
वाल विधवा देखी लोक रोय, तिणरा काम भोग वाछै सोय[६०] ॥ ३० ॥
डावरा रै माथै दिया द्वेष, लाडू दियां ते राग सपेख[६१]।
जाटणी री उदक जाच्यो जाय, चारो निरख्या दूध दै गाय[६२] ॥ ३१ ॥
और गण री थारै माय आय, तिणनें दीख्या देई ल्यो माय[६३]।
नरक में जाय कुण तसु ताणें, पथर नें डुबै तजि कुण आणें[६४] ॥ ३२ ॥
कुण स्वर्ग ले जावें ताय, काष्ठ जल पर कुण तिराय[६५]।
पत्थरी डूबै काठकी तिराय, संजम तप सूं स्वर्गे धाय[६६] ॥ ३३ ॥

पात्रा रै रंग कुंथवा दोहरा, काला लाल सू देखणा सोहरा[६७]।
म्हारै केलु सूं रङ्गवा रा भाव, कच्ची कैलु छोडै किण न्याव[६८] ॥ ३४ ॥
कुजागां रा करै ऐक माथै, एक कर्ज मेटै निज हाथै[६९]।
चोर हिसक कुशीलिया तीन, त्यारा तीन दृष्टान्त सुचीन[७२] ॥ ३५ ॥
कीडी नै कीडी जाणै ते नाण, पिण कीडी ज्ञान मति जांण[७३]।
साधु थाका नै गाडै बैसाण, किणही गधै बैसाण्यो जांण[७४] ॥ ३६ ॥
पुन्य मिश्र ऊपर अवलोय, किणरी एक फूटी किणरी दोय[७५]।
पील वारी खोली दीसा वार, देखी हेम नै उत्तर उदार[७६] ॥ ३७ ॥
थोथा चणा री भखारी विख्यात, ऊंदरा रडवड की सारी रात[७७]।
कोयला री राव वासण काला, वलि आधा जीमन परुसण वाला[७८] ॥ ३८ ॥
तार काढी काढै तार काइ, थानै डाडा ही सूझै नाही[७९]।
वाय वग घरटी उडै जाय, दोप थाप्या सजम किम ठहराय[८०] ॥ ३९ ॥
एकलडी जीव कही किण लेख, त्यारै लेखे ही चीलडो देख[८१]।
वस्त्र राख्या सी परसीह थी भाजे, तो अन्न सूं प्रथम रहै किण लाजै[८२] ॥ ४० ॥
श्वेताम्बरी शास्त्र थी घर छड, तिणसू राखा छा तीन सुडण्ड[८३]।
अनार्य कहै दया नै राड, करै कपूत माता नै भाड[८४] ॥ ४१ ॥
डाकनिया डरै गारडू आया, साधु आया पाखण्डी भय पाया[८५]।
कडवा पकवान जुर सू कहाय, मिथ्या जुर सू साधु न सुहाय[८६] ॥ ४२ ॥
वाघी वाल्या किम तेजरा तोडै, चारित्र वैराग विण किम जोडै[८७]।
दियो तीन नावा री दृष्टान्त, सुगुरु कुगुरु ऊपर शोभन्त[८८] ॥ ४३ ॥
भेषधारी पिण तप करै ताय, मोटी देवाली केम मिटाय[८९]।
वणी वणाई ब्राह्मणी री वात, साम्प्रत तिणरा साथी साख्यात[९०] ॥ ४४ ॥
मूल खावै छेहडै हिस्या थावै, छेहडै मोस्या मारू ज्यूं [illegible][९१]।
पत्थर गोल्यो तिणनै [illegible] होय, तिणरै हाथ आयो ते तूं जोय[९२] ॥ ४५ ॥
[illegible] घर री नेहनी होय, द्रव्य साध याने कहा [illegible][९३]।
[illegible] यही वाय, नागा हंसिया [illegible] गाम माय[९४] ॥ ४६ ॥
[illegible] देखायो साहूकार, [illegible] बनावं कल्यो विचार[९५]।
दियो [illegible] पग तीन चार, [illegible] विण निगम न [illegible][९६] ॥ ४७ ॥
दियो [illegible] रा दृष्टान्त, छिद्र पेखी [illegible][९७]।
[illegible] अविराय, तिण नै कठिन [illegible][९८] ॥ ४८ ॥
[illegible] नै [illegible] न [illegible][९९]।
[illegible][१००] ॥ ४९ ॥

अविनीत त्रिया नौ पिछाण, अविनीत साधु ऊपर जाण[१२१] ।
कह्या सपेख थी अल्प मात, पाछै वर्णवी सगली वात ॥ ५० ॥
चौपी विनीत अवनीत री तास, आसरै तिणसूं हेतु पचाम[१५१] ।
ते इकतालीमी ढाल मै आख्या, तिण कारण इहा न भाख्या ॥ ५१ ॥
इत्यादिक कह्या हेतु अनेक, पूरा कह्या न जाय विशेष ।
हुवा भिक्खु उजागर ऐसा, साम्प्रत काल मै श्रीजिन जैसा ॥ ५२ ॥
तसु भजन चित्तामण सरखौ, प्रत्यक्ष पारश भिक्खु नै परखौ ।
म्हारै प्रवल भाग्य प्रमाण, इणकाल अवतरिया आंण ॥ ५३ ॥
नित्य स्मरण कर नर नार, सुख सम्पति कारण सार ।
दुःख दोहग टालणहार, इह भव परभव सुखकार ॥ ५४ ॥
निर्मल ज्ञान नेत्रे करी निरखौ, पूज भिक्खु विविध कर परखौ ।
वर पूरौ है तसु विश्वास, अति वछत पूरण आश ॥ ५५ ॥
बयालीसमी ढाल विमास, शुद्ध दूजौ खण्ड सुप्रकाश ।
स्वामी जय जश करण सुहाया, प्रवल भाग वले भिक्खु पाया ॥ ५६ ॥

कलश

दृष्टन्त वारु अधिक चारु, स्वामनाज सुहामणा ।
भव उदधि तारण जग उद्धारण, रूप भिक्खु रलियामणा ॥ १ ॥
सुख वृद्धि सम्पति दमन दम्पति, भ्रम भजन अति भलौ ।
हद वृद्धि हिमागर सुमति सागर, नमो भिक्खु गुण निलौ ॥ २ ॥

तृतीय खण्ड

सोरठा

आख्यौ द्वितीय खण्ड रे, असि आउ सा नै प्रणम।
मुनि वर्णन महिमण्ड रे, तीजौ खण्ड निसुणौ तुम्हे ॥ १ ॥

वैणीरामजी स्वामी कृत

दुहा

चारित्र लीधौ चूंप सूं, पाखण्ड पन्थ निवार।
भवियण रै मन भावता, हुवा मोटा अणगार ॥ १ ॥
उदै उदै पूजा कही, समण निर्ग्रन्थ नी जाण।
तिणसूं पूज प्रगट थया, ए जिन वचन प्रमाण ॥ २ ॥
उपम तो आछी कही, समण निर्ग्रन्थ नै श्रीकार।
चौरासी अति दीपती कही, सूत्र अनुयोग द्वार मझार ॥ ३ ॥
वले दशमा अग अधिकार मै, कही तीस उपमा तत।
समण भिक्खु नै शोभती, भाख गया भगवत ॥ ४ ॥
वले षटदश उपमा, बहुश्रुति नै श्रीकार।
उत्तराध्ययन इग्यार मै, श्री वीर कह्यौ विस्तार ॥ ५ ॥
इण अनुसारै ओलखो, भिक्खु नै भली भत।
उपम गुण आछा घणा, त्यांरी पार न कोई पामत ॥ ६ ॥
गुणवन्त गुरु ना गुण गांवता, तीर्थंकर नाम गोत बन्धाय।
हिवै ओपम सहित गुण वर्णवूं, ते सुणज्यो चित्त लाय ॥ ७ ॥

ढाल : ४३

[हरिया ने रंग भरिया जी [illegible] जिन निरखू [illegible] — ए देशी]

आदिनाथ आदेश्वरजी, जिनेश्वर जग तारण गुरु।
धर्म आदि कारी अरिहन्त।
इण दुषम आरै कर्म काटिया जी, प्रगटिया आदि जिणन्द ज्यू।
ए इचरज अधिक आवन्त।
श्याम वरण अति सोहै जी, मन मोहै नेम जिणन्द ज्यू।
ज्यारी वाणी अमीय समान।
भवियण रै मन भाया जी, चित्त चाह्या तीरथ चारमा।
मुनि गुण रत्ना री खाण।
साध भिक्खु सुखदाया जी, मन भाया भवियण जीवा नैं ॥ १ ॥
कालवादि आदि जाणी जी, मत आंणी मार्ग उथापवा।
कुबद्धा केलविया कूट।
औ पाखण्ड घोचा पोचा जी काई, ज्ञान करी गिरवा मुनि।
चरचा कर किया चकचूर। साध० ॥ २ ॥
शख उज्वल श्रीकारी जी, पयधारी दोनू दीपता।
नहीं विगडै दूध लिगार।
ज्यू थे तप जप क्रिया कीधी जी, कर लीधी आतम उजली।
पय दस यति धर्म धार ॥ ३ ॥
कबोज देश नीं घोडी जी, अति मोगे करै सिन्दार नैं।
नहीं आणै अहिल लिगार।
ज्यू भवियण नैं थे तार्या जी, उतार्या पार संसार थी।
सुखे जासी मोक्ष मझार ॥ ४ ॥
सूर शिरोमण साचो जी, नहीं कायरो [illegible] कटक में।
सुवनीत अश्व असवार।
ज्यू कर्म कटक दल दीधी जी, जश लीधो जाझो जगत में।
चढ सूत्र अश्व [illegible] ॥ ५ ॥
हाथी हथण्या परवारै जी, दल धारै दिन [illegible]।
[illegible]
ज्यू थे तयारी वर्ष [illegible] जी, [illegible]
[illegible] ॥ ६ ॥

वृषभ सिंह खघ भारी जी, सिरदारी गाया गण मझै।
थेट भार बहै भली भंत।
ज्यूं थे गण भार थेट निभाया जी, चलाया तीरथ चूंप सूं।
सहु सधां मै शोभंत ॥ ७ ॥

सिंह मृगादिक नौ राजा जी, तप ताजा डाढा तेज सूं।
जीव न जीपै जोय।
ज्यूं आप केशरी नी परै गुंज्या जी, धूज्या पाखण्डी धाक सूं।
थाने गज सकै नही कोय ॥ ८ ॥

वासुदेव बल जाणो जी, बखाण्यौ वीर सिद्धांत मै।
शख चक्र गदा धरणहार।
ज्यूं थारा ज्ञान दर्शण चारित्र तीखा जी, नही फीका त्यांकर तेज सूं।
पूज पाखण्ड दियौ निवार ॥९॥

आखा भरत नौ राजा जी, अति ताजा सेन्या सझ करी।
आणै बंस्या नौं अन्त।
थे पाखण्ड सहु ओलखाया जी, हटाया बुद्ध उत्पात सूं।
तत्व बताया तंत ॥ १० ॥

शकेन्द्र सिरदारी जी, बज्रधारी सुर मे शोभतो।
जक्षादिक ने जीपै जाण।
जिम सूत्र वज्र श्रीकारी जी, बलधारी बुद्ध उत्पात्त सूं।
पूज पाडी पाखण्ड री हाण ॥ ११ ॥

आइच्च उग्यो आकाशै जी, विणाशै तिमिर तेज सूं।
अधिको करै उद्योत।
ज्यूं थे अज्ञान अधारो मिटायो जी, बतायो मारग मुगत रो।
घण घट घाली जोत ॥ १२ ॥

चंद सदा सुखकारी जी, परिवारी ग्रह ना गण मझे।
सोमकारी शोभंत।
ज्यूं चार तीरथ सुखदाया जी, मन भाया भवियण जीव रै।
भिक्खु भला जगवन्त ॥ १३ ॥

लोक घणा आधारी जी, अति भारी धानाकर भर्‍यो।
ते कोठागार कहाय।
ज्यूं ज्ञानादिक गुण भरिया जी, परवरिया पूज्य प्रगट थया।
आधारभूत अथाय ॥ १४ ॥

सर्व वृक्षा मैं अति सोहै जी, मन मोहै दीसै दीपती।
जम्बू सुदर्शन जाण।
ज्यूं सता मैं सिरदारी जी, मतभारी भिक्खु भरत मैं।
उपना इचरजकारी आण ॥१५॥

सीता नंदी सिरै जाणी जी, वखाणी वीर सिद्धान्त मैं।
पाच सै जोजन प्रवाह।
ज्यू तप तेज अति तीखा जी, नही फीका रह्याज फाबता।
सदाकाल सुखदाय ॥ १६ ॥

मेरु नी ओपमा आछी जी, नही काची कही कृपाल जी।
ते ऊचौ घणु अत्यन्त।
औषध अनेक छाजै जी, विराजै गुण त्यामै घणा।
ज्यू अै वहुश्रुति वुद्धवन्त ॥ १७ ॥

स्वयभूरमण समुद्र रूडो जी, पूरो पाव राज पहुलो पड्यौ।
प्रभूत रत्तन भरपूर।
सागर जेम गम्भीरा जी, शूरा वीरा गुण कर गाजता।
सूत्र चरचा मै शूर ॥ १८ ॥

ऐ षटदश ओपम आछी जी, काई साची सूत्र मे कही।
वहुश्रुति नै श्रीकार।
इण अनुसारै जाणो जी, पिछाणो कर ल्यो पारीखा।
भिक्खु गुण भण्डार ॥ १९ ॥

उपमा अनेक गुण छाज्या जी, विराज्या गादी वीर नी।
पूज्य पाट लायक गुण पाय।
समुद्र जेम अथागा जी, जल थागा जिन कह्यौ नही।
ज्यू गुण पूरा केम कहाय ॥ २० ॥

पाट लायक शिष्य भाली जी, सुहाली प्रकृति सुन्दरु।
भारमलजी गैहर गम्भीर।
पदवी थिर कर थापी जी, आ आपी आचरज तणी।
जाणे सुविनीत सधीर ॥ २१ ॥

दुहा

भाग बली भिक्खु तणै, सत हुवा गण माहि।
वर्णन संक्षेपे पवर, आख धर उछाहि ॥ १ ॥

केयक पण्डित मरण कर, कीधी जन्म कल्याण।
कर्म जोग केइयक टल्या, सुणज्यो चतुर सुजाण॥ २॥
बडा सत भिक्खु थकी, जनक सुतन वर जोड।
पिता स्वाम थिरपाल जी, फतैचन्द सुत मोड॥ ३॥
बडा टोला मे था विहु, राख्या बडा सुरीत।
सरल भद्र विहुं श्रमण शुद्ध, पूरी तसु प्रतीत॥ ४॥
तपसी तप करता विहु, शीत उष्ण वरसाल।
बड वयरागी विनय वर, रूडा मुनि ऋषपाल॥ ५॥
निर अहकारी निर्मला निरलोभी निकलङ्क।
हलुआकर्मी उपधि करे, आर्जव उभय अवङ्क॥ ६॥
सीतकाल अति सीत सहै, पछेवडी परिहार।
जन निशि देखी जाणियो, ऐ तपसी अणगार॥ ७॥
कोटै आप पधारिया, महिपति आवणहार।
साम्भल नै ते सत विहु, तत्क्षण कियो विहार॥ ८॥
निज आतम तारण निपुण, बारु वेपरवाह।
तप मुद्रा तीखी घणी, चित्त इक शिवपद चाह॥ ९॥

ढाल : ४४

[राणी भाखै हो दासी साभल बात०—ए देशी]

सत दोनू हो शोभै गुणवन्त नीत २, त्यासू प्रीत पूर्ण भिक्खु तणी।
भिक्खु सेती हो ज्यारै पूर्ण प्रीत २, गुणग्राही आत्म घणी॥ १॥
पद आचार्य हो भिक्खु बुद्धि ना भण्डार २, जन बहु देखता युक्ति सूं।
आप मूकी हो पद नौ अहकार २, कर जोरी वन्दना करै भक्ति सू॥ २॥
किण टोला ना हो तुम्हे सत कहिवाय २, इण विध लोक पूछै घणा।
मान मूकी हो बोलै विहु मुनिराय २, म्हे भीखणजी रा टोला तणा॥ ३॥
प्रश्न चरचा हो त्यानै कोई पूछन्त २, तो संत दोनू इम भाखता।
भिक्खु भाखै हो तेहिज जाणज्यो तंत २, रूडी आसता भिक्खु नी राखता॥ ४॥
म्हानै तो हो पूरी खबर न काय २, भीखणजी नै पूछी निर्णय करौ।
शुद्ध जाणौ हो तेहिज सत्यवाय २, प्रगट कहै इम पाधरौ॥ ५॥
त्यारा तप नौ हो अधिकौ विस्तार २, कायर सुण कम्पै घणा।
अति पामै हो शूरा हर्ष अपार २, सत दोनू ई सुहामणा॥ ६॥
सजम पाल्यौ हो बहु वर्ष श्रीकार २, विचरत बरलू आविया।
धर्म मूर्त्ति हो ज्ञानी महा गुणधार २, हलुकर्मी हर्षाविया॥ ७॥

शुद्ध तपस्या हो फतैचन्दजी सेतीस २, अधिक कियौ तप आकरौ।
बारु करणी हो ज्यारी विश्वावीस २, क्षान्ति गुणे मुनिवर खरौ॥ ८ ॥
पिता दीधी हो तसु पारणी आण २, ठण्डी घाट बाज री तणी।
फता करलै हो पारणौ पहिछाण २, सरल पणै कहै सुत भणी॥ ९ ॥
निरममती हो सुत सन्त निहाल २, प्रगट अपथ्य कियौ पारणौ।
कर गयौ हो तिण जोग सू काल २, सुमति जन्म सुधारणौ॥ १० ॥
एकतीसै वर्ष हो सम्वत अठार २, फतैचन्द फतै कर गया।
निरमोही हो तात निमल निहार २, थिर चित सजम अति थया॥ ११ ॥
मुनि आयौ हो खेरवा शहर माहि २, सलेखणा मण्डिया सही।
चिहु मासे हो पारणा चित्त चाहि २, आसरै चवदे किया वही॥ १२ ॥
थिर चित्त सू हो मुनिवर थिरपाल २, वर्ष बतीसै विचारियौ।
कर तपस्या हो मुनि कर गयौ काल २, जीतब जन्म सुधारियौ॥ १३ ॥
जोडी जुगती हो तात सुतन जिहाज २, स्वाम भिक्खु रा प्रसाद थी।
पण्डितमरणी हो ओ तौ भवदधि पाज २, पाम्या है पर्म समाध थी॥ १४ ॥
सखरी भाषी हो चौमालीसमी ढाल २, स्वाम भिक्खु गुण सागरु।
वारु करवै हो जय जश सुविशाल २, अधिक गुणा रा आगरु॥ १५ ॥

दुहा

समत अठारह बतीस मैं, भिक्खु बुद्धि भण्डार।
प्रकृति देख साधु तणी, लिखत कियौ तिणवार॥ १ ॥
सहु साधा नै पूछनै, बाधी इम मर्याद।
सुखे सजम पालण भणी, टालण क्लेश उपाधि॥ २ ॥
पद युवराज समापियौ, भारीमाल नै जाण।
सर्व साध नै साधवी, पालज्यो यारी आण॥ ३ ॥
भारमलजी री आज्ञा थकी, विचरवौ शेषै काल।
चौमासौ करिवौ तिकौ, आज्ञा ले सुविशाल॥ ४ ॥
दीक्षा दैणी अवर नै, भारीमाल रै नाम।
पिण आज्ञा लीधा बिना, शिष्य न करणौ ताम॥ ५ ॥
इच्छा हुवै भारीमाल री, शिष्य गुरु भाई सोय।
पदवी देवै तेहनै, तसु आज्ञा अवलोय॥ ६ ॥
एक तणी आज्ञा मझै, रहिवौ रूडी रीत।
एहवी रीत परम्परा, बाधी स्वाम बदीत॥ ७ ॥

टोलामां सूं कोई टलै, एक दोय दे आदि।
धूर्त्त बगुल ध्यानी हुवै, तिणनै न गिणवौ साध ॥ ८ ॥
तीर्थ मैं गिणवौ न तसु, चिउ संघ नौ निन्दक जांण।
एहवा नै व्रान्दै तिके, आज्ञा बार पिछांण ॥ ९ ॥

ढाल : ४५

[पाड़वा बोलै म बोल—ए देशी]

एहवौ लिखत अमांम, सखर मर्यादा हो बाधी स्वामजी।
नीचै साधां रा नाम, कठिन संजम नै पालण काम जी ॥ १ ॥
मेटण क्लेश मिथ्यात, थिर चित्त थापण हो मर्यादा थुणी।
बारु बुद्धि विख्यात, सुगुण सुबुद्धि हो हर्ष पामै सुणी ॥ २ ॥
अपछन्दा अवनीत, दोषण काढै हो इण मर्याद मै।
कुबुद्धि कहै कुरीत, अवगुण ग्राही हो आत्म असमाधि मै ॥ ३ ॥
बिगड़्यौ पछै वीरभाण, आज्ञा लोप्या सूं स्वामी अलगौ कियौ।
पाछै कह्यौ प्रबन्ध पहिछाण, दर्शण मोह पिण तिणनै दबावियौ ॥ ४ ॥
टोकरजी ततसार, हाजर रहिता हो स्वामी हरनाथ जी।
संत दोनूं सुखकार, वर जश बारु हो तासू विख्यात जी ॥ ५ ॥
भारीमाल नै भाल, पद युवराज हो पूज समापियौ।
सत बडा सुविशाल, दम्भ मेटीनै हो थिर चित्त थापियौ ॥ ६ ॥
सोम्य मूर्त्ति सुखकार, स्वाम प्रशस्या हो अत्य समय सही।
साझ थी सजम सार, कीर्ति भिक्खू हो आप मुखे कही ॥ ७ ॥
बगड़ी शहर विशेष, स्वाम टोकरजी हो संथारो लियौ।
देश ढुढार मै देख रे, हृद सथारौ हरनाथजी कियौ ॥ ८ ॥
स्वाम भिक्खु रे प्रसाद, सत दोनूं हो जन्म सुधारियौ।
उपजै मन अहिलाद, स्मरण साचौ अति सुखकारियौ ॥ ९ ॥
भारीमाल युवराज, सेवा स्वामी नी अन्त ताई शिरै।
पदवीधर भव पाज, अणशण आछौ वर्ष अठन्तरै ॥ १० ॥
लिखमैजी सजम लीध, कर्म प्रभावै गण सू न्यारौ थयौ।
पड़िवाई कहौ कद सिद्ध, देसुण अध पुदगल हो उत्कृष्ट जिन कह्यौ ॥ ११ ॥
अखैरामजी सु मण्ड, स्वाम भिक्खु पैही सजम आदर्‍यौ।
भेपधार्‍या नै छंड, शुद्ध मन सेती हो पवर चरण धर्‍यौ ॥ १२ ॥
पारख जाति पिछाण, पारख साची हो थे पूर्ण करी।
लोहावट ना सुजाण, चरण अराध्यौ हो थिर चित्त आदरी ॥ १३ ॥

धर तप छेहडै धिन, छतीस तेला हो चौला मे चलता रह्या।
अखै दिवाली दिन, वर्ष इकसठै परभव मे गया॥ १४॥
अमरौजी छुटक धार, पच काया थी अभवी अनन्त गुणा।
अभवी थी अधिकार, ज्ञानी देवा भाप्या पडिवाई अनन्त गुणा॥ १५॥
संत वडा सुखराम, वासी लोहावट ना हो पोत्यावध सही।
समझाया भिक्खु स्वाम, सुर तरु सरीषो हो चरण लियौ सही॥ १६॥
देव मूर्त्ति सम देख, धुनि इर्या नी हो निर्मल धारणा।
वारु चर्ण विशेष, सोम्य सुप्रकृति महासुख कारणा॥ १७॥
आसरै बयालीस वास, निर्मल चारित्र हो स्वामी गुण निलो।
वासठै वर्ष विमास, दिवस पचीसे अणशन अति भलौ॥ १८॥
स्वाम भिक्खु साख्यात, तत्व ओलखाई बहुजन तारिया।
वर्णवियै स्यू वात, स्वाम सौभागी हो महा सुखकारिया॥ १६॥
समरूं हू दिन रैण, याद आया सू हो हिवडौ उल्सै।
चित्त माहि पामूं चैन, वछित पूर्ण तू मुझ मन बसै॥ २०॥
पांच चालीसमी ढाल, श्रमण शोभाया हो भजन बछित फलै।
जय जश करण विशाल, स्मरण सम्पति हो मन चिन्तत मिलै॥ २१॥

सोरठा

छुटक तिलोकचन्द रे, वासी चेलावास रा।
चन्द्रभाण कर फन्द रे, जिलौ बाध नै फटाविया॥ १॥
मौजीराम गण माहि रे, शुद्ध मन सू सजम लियौ।
कर्मा दियौ धकाय रे, ते पिण छुटक जाणज्यौ॥ २॥

दुहा

शिवजी स्वामी शोभता, स्वाम तणा सुवनीत।
पण्डित मरण कियौ पवर, गया जमारौ जीत॥

सोरठा

जाति चौरडिया जाण रे, पुर ना वासी पिछाणज्यो।
चारित्र चन्द्रभाण रे, शुद्ध मन सू सजम लियौ॥ १॥
भण्या बुद्धि भरपूर रे, पिण प्रकृति अहकार नी।
अविनय अवगुण भूर रे, आज्ञा कठिन आराधवी॥ २॥
जिलौ बाधियौ जाण रे, तिलोकचन्द सूं तुरत ही।
मन मे अधिकी मान रे, साध फटाया अवर ही॥ ३॥

संत अवर समझाय रे, स्वाम भिक्खु सिह सारिषा।
एक एक नै ताहि रे, छोड्या बिहु नै जु जुआ ॥ ४ ॥
अवगुण अधिक अजीर रे, त्या बोल्या भिक्खु तणा।
प्रत्यक्ष कषाय प्रयोग रे, असाध प्ररूप्या स्वाम नै ॥ ५ ॥
भिक्खु बुद्धि भण्डार रे, शुद्ध मन सू समझाविया।
प्राश्चित कर अङ्गीकार रे, पाछा आया गण मझे ॥ ६ ॥
सहु नै किया निशङ्क रे, आया डंड अगीकरी।
विरुऔ यामै बक रे, प्रत्यक्ष लोका पेखिग्रौ ॥ ७ ॥
श्रमणी सत समाधि रे, किणनै डड न ठहराविया।
सहु नै कह्या असाध रे, त्याराहिज पग वादिया ॥ ८ ॥
मान घणौ घट माहि रे, बिगडी तिणसूं बातडी।
प्राश्चित गही लै ताहि रे, बिहु नै साथे छोडिया ॥ ९ ॥
वर्णन बहु विस्तार रे, रास माहि भिक्खु रच्यौ।
अल्प इहा अधिकार रे, दाख्यौ मै प्रस्ताव थी ॥ १० ॥
अणन्दै बिना विचार रे, सथारौ कीधौ सही।
चौविहार चित्त धार रे, गाम बिठौरै पूज्य गण ॥ ११ ॥
उपनी तृषा अपार रे, सतरै दिन सू निसर्यौ।
सेणा करै सथार रे, तिणसूं पहिला तोल नै ॥ १२ ॥
पनजी छुटक पेख रे, सतोकचन्द शिवराम नै।
चन्द्रभाणजी देख रे, दोनू भणी फटाविया ॥ १३ ॥
केई पोतै हुवा न्यार रे, केइका नै दूरा किया।
अपछन्दा अवधार रे, त्यानै चारित्र दोहिली ॥ १४ ॥

ढाल : ४६

[करकसा नार मिली०—ए देशी]

नीत निपुण नगजी नी निर्मल, कुड्या ना बसवान।
सथारौ कर कारज सार्यो, कियौ जनम किल्याण।
सुवनीत शिष्य आय मिल्या, धन्य धन्य हो भिक्खु थारा भाग्य।
सुखदाई शिष्य आय मिल्या ॥ १ ॥
स्वाम राम बुन्दी ना वासी, जाति श्रावकी जाण।
जुगल जोडलै दोनू जाया, सोम्य भद्र सुविहाण। सु० ॥ २ ॥
करि मनसोवी आया कैलवै, पूज भिक्खु पै ताम।
आज्ञा रांम भणी आपीनै, सजम दिरायो स्वाम। सु० ॥ ३ ॥

इह अवसर मैं श्रीजी द्वारै, साह भोपौ सुत सार।
नाम खेतसी निर्मल नीकौ, थयौ सजम नै त्यार। सु० ॥ ४ ॥
दोय व्याह पहिली कर दीधा, तीजी करता त्यार।
उत्तम जीव खेतसी अधिकौ, इणरै बछा न लिगार। सु० ॥ ५ ॥
वहिन दोय रावलिया व्याही, जाय तिहां किण वार।
वेन बँनोई न्यातीलां नै, समझावै सुखकार। सु० ॥ ६ ॥
बिणज करत मुख जयणा विध सूं, वर वैराग बधाय।
चित्त चारित्र लेवा सूं चढती, आज्ञा मागी नही जाय। सु० ॥ ७ ॥
इसा विनीत तात ना अधिका, इतलै तिण पुर माही।
संजम ले रगुजी सती, साभल्या भोपै साह। सु० ॥ ८ ॥
भोपौ साह कहै खेतसी भणी रे, चित तुझ लैण चरित्र।
कहै खेतसी वेकर जोडी, मुझ मन अधिक पवित्र। सु० ॥ ६ ॥
आज्ञा हर्ष धरी नै आपी, वदै भोपौ साह बाय।
रगुजी भेला करौ रे, इणरा महोछब अधिकाय। सु० ॥ १० ॥
अडतीसै सजम आदरियौ, भिक्खु ऋष रै हाथ।
विहार करी कोठारयै आया, लारै तौ चल गयौ तात। सु० ॥ ११ ॥
भिक्खु पूछ्यां सत जोगी भाखै, मन चिन्ता किम मोय।
पहिली उवे अबै आप मिलिया, पिय विरह पड़्यौ नही कोय। सु०॥१२॥
परम विनीत खेतसी प्रगट्या, स्वाम भणी सुखकार।
कार्य भलाया बेकर जोडी, तुर्त करण नै त्यार। सु० ॥ १३ ॥
कोमल कठिन वचन करि भिक्खु, सीख दियै सुखकार।
क्षान्ति हर्प कर धरै खेतसी, तहत वचन ततसार। सु० ॥ १४ ॥
हर्ष धरी रहै भिक्खु हाजर, अन्तरग प्रीत अपार।
सेवकरी रिझाया स्वामी, सो जाण लिया ततसार। सु० ॥ १५ ॥
सतजुग सरिषा प्रकृत विनय सू, निर्मल सतजोगी नाम।
गण आधार खेतसी गिरवौ, सरायौ भिक्खु स्वाम। सु० ॥ १६ ॥
सतजुगी चरित्र माही छै सगलौ, विवरासुध विस्तार।
इहा सक्षेप करी नै आख्यौ, सत वर्णन माहैं सार। सु० ॥ १७ ॥
पाच पाच ना पवर थोकडा, वर किया बोहली बार।
उत्कृष्टो तप दिवस अठारह, एकटक उदक आगार। सु० ॥ १८ ॥
ऊभा रहिवारी तपस्या अति, एक पहोर उन्मान।
जे बहु वर्ष लग जाणज्यौ रे, खेतसी जी गुणखान। सु० ॥ १६ ॥

सीत उष्ण मुनि सह्यौ अधिकौ, सकल संघ सुखकार।
स्वाम सतजुगी सभख्या रे, आवै हर्ष अपार। सु० ॥ २०॥
सतजुगी तणा प्रसंग थी रे, अधिक हुवौ उपगार।
बे बहिन भाणेजे चारित्र लीधौ, ते आगै चलसी विस्तार। सु० ॥ २१ ॥
वर्ष बावीस स्वाम नी सेवा, छेहडा लग सुविचार।
भारीमाल नी छेह लग भक्ती, आसरै वर्ष अठार। सु० ॥ २२ ॥
सलेखणा छेहडै करी सखरी, सखरोई सथार।
भिक्खु भारीमाल पाछै परभव मै, असीयै वर्ष उदार। सु० ॥ २३ ॥
भिक्खु स्वाम प्रसाद थी रे, सतजुगी सजम भार।
पछै स्वामजी संजम पचख्यौ, औ भिक्खु तणौ उपगार। सु० ॥ २४ ॥
भिक्खु भांज्या भ्रम घणारा, भिक्खु भव-दधि पाज।
भिक्खु दीपक भरत क्षेत्र मै, जगत उद्धारण जिहाज। सु० ॥ २५ ॥
भाग बले भिक्खु ऋष भारी, शिष्य मिलिया सुविनीत।
भिक्खु याद आवै निशदिन मुझ, पर्म भिक्खु सू प्रीत। सु० ॥ २६ ॥
पवर ढाल कही छयालीसमी, सतजुगी नौ विस्तार।
सेव करै स्वामी नी सखरी, जय जश करण उदार। सु० ॥ २७ ॥

दुहा

साम राम साधु सरल, संता नै सुखदाय।
भद्र प्रकृति भारी घणी, नीत निपुण नरमाय ॥ १ ॥
वर्ष पैसठै उपवास मैं, भिक्खु पाछै भाल।
पाली मै परभव गया, निर्मल साम निहाल ॥ २ ॥
रांम ऋषि रलियामणा, इन्दुगढ मै आय।
चौला मे चलता रह्या, सितरै वर्षे ताय ॥ ३ ॥
देवगढ दीख्या ग्रही, सभुजी सुविचार।
बार वार शंका पडी, छोड दियौ तिण बार ॥ ४ ॥
तौ पिण गण बारै छतौ, करै साधा नी सेव।
साध आहार आंण्यां पछै, आप ल्यावै नित्यमेव ॥ ५ ॥
पीत मुनि थी अति पवर, मुनि जिण गाम मझार।
आवै दर्शण करण कु, पिण शका थी हुवौ खुवार ॥ ६ ॥
संघजी थी गुजरात रौ, चर्ण लियौ चित्त चाहय।
शिरियारी मे निकल्यौ, दुधर व्रत दिखाय ॥ ७ ॥

तदनन्तर सजम लियौ, वरल्या बौहरा जोय।
एकचालीसै आसरे, नाम नानजी सोय ॥ ८ ॥
स्वाम भिक्खु पाछै सही, एकोतेरे अवलोय।
तेला मे चलता रह्या, धर्म ध्यान मे जोय ॥ ९ ॥

ढाल : ४७

[परम गुरु पूज्य जी मुझ प्यारा रे—ए देशी]

नानजी पछै चरण निहाली रे, मुनि नेम मोटौ गुण माली रे।
वासी रोयट नौ सुविशाली।
हर्ष ऋषराय नै नित्य वन्दी रे॥ १ ॥

पवर चण भिक्खु पासे पायौ रे, सजम वहु वर्षे शोभायौ रे।
मुनि जिन शासन दीपायौ।
भिक्खु शिष्य शोभता नित्य वन्दी रे ॥ २ ॥

शहर नंणवे कियौ सथारौ रे, पाम्यौ भवसायर नौ पारौ रे।
औ तौ भिक्खु तणौ उपगारौ ॥ ३ ॥

तदनन्तर वर्ष चौमालौ रे, वैणीरामजी अधिक विशालो रे।
निकलक चरण चित्त निहालौ ॥ ४ ॥

दीख्या भीखण जी स्वामी दीधी रे, वसवान वगडी रा प्रसिद्धि रे।
मुनि गण माहि शोभा लीधी ॥ ५ ॥

हुवौ वेंणीराम ऋषि नीको रे, प्रबल पण्डित चरचावादी तीखौ रे।
मुनि लियो सुजश नौ टीकौ ॥ ६ ॥

वारु वाचत सखर बखाणौ रे, सखर हेतु दृष्टान्त सुजाणौ रे।
भर्त मै प्रगट्यौ जिम भाणौ ॥ ७ ॥

हद देशना मे हुशियारौ रे, श्रोता नै लागै अधिक सुप्यारौ रे।
चित्त माहें पामै चमत्कारौ ॥ ८ ॥

जाय मालव देश जमायौ रे, खण्डीसू चरचा कर तायौ रे।
वहु जन नै लिया समझायौ ॥ ९ ॥

त्यारी धाक सू पाखण्ड धूजै रे, वैणीराम केशरी जिम गूजै रे।
प्रगट हलुकर्मी प्रतिबूजै ॥१०॥

उत्पत्तिया है बुद्धि उदारौ रे, समझाया घणा नरनारौ रे।
हुवौ जिण शासण शिणगारौ ॥११॥

घणा नै दियौ सजम भारो रे, धर्म वृद्धि-मूर्त्त सुखकारौ रे।
ऐ तौ भिक्खु तणौ उपगारो ॥१२॥

कीधौ स्वाम भिक्खु पछै कालौ रे, शहर चासटु मै सुविशालौ रे।
सवत् अठारह सितरै निहालौ ॥ १३ ॥

भिक्खु तास्या घणा नर नारो रे, भवितारक भिक्खु विचारी रे।
स्वामी जय जश कर्ण श्रीकारो ॥१४॥
सैतालीसमी ढाल सुहायो रे, भिक्खु शिष्य मोटा मुनिरायो रे।
स्वाम सग पर्म सुख पायो ॥१५॥

दुहा

तिण अवसर कोटा तणा, दौलतरामजी देख।
आया तसु टोला थकी, सन्त च्यार सुविशेष ॥ १ ॥

सोरठा

दोय रूपचन्द देख रे, वारु ऋष वर्द्धमांनजी।
सूरतौजी सपेख रे स्वाम गणे सजम लियौ ॥ १ ॥
रूपचन्द बहुमान रे, छूटौ तेह प्रयोग थी।
प्रकृति अजोग पिछाण रे, सूरतो पिण छूटक थयौ ॥ २ ॥

दुहा

बड़ा सत वर्द्धमानजी, सजम सरल सुधार।
विचरत विचरत आविया, देश ढूंढाड मझार ॥ २ ॥
लू रा कारण थी लियौ, मारग मे सथार।
सम्बत् अठारह पचावनै, लीधौ सजम भार ॥ ३ ॥
लघु रूपचन्द स्वामगण, माधोपुर रै माहि।
अणशण रौ बधौ कियौ, बैणीरामजी पाहि ॥ ४ ॥
पछै परिणाम कचा पड़्या, बोल्यौ एहवी वाय।
हू थारै नही काम कौ, रत्न काकरौ थाय ॥ ५ ॥
इम कहीनै अलगौ थयौ, काल कितौ इम थाय।
एक चेलौ कीधा पछै, आयौ इन्द्रगढ माय ॥ ६ ॥
शिष्य तज कहै गृहस्थां भणी, तत सूत्र मुझ ताम।
भिक्खु नै बहिरावज्यो, मुझ गुरु भिक्खु स्वाम ॥ ७ ॥
इम कही साधपणौ पचख, दियौ सथारौ ठाय।
पाच दिवस रै आसरै, परभव पहोती जाय ॥ ८ ॥

सोरठा

जति भेष नें जाण रे, मयारामजी मूकियौ।
प्रत्यक्ष ही पहिछाण रे, भेषधास्या मे आवियौ ॥ ३ ॥

भेषधारी नैं छड रे, सजम लीधौ स्वाम पै।
बहु वर्ष चरण सुमण्ड रे, निकल कालवादी थयौ ॥ ४ ॥
विगतौ नाम विचार रे, वासी बोरावड तणौ।
सजम ले सुखकार रे, कर्म प्रभावे निकल्यौ ॥ ५ ॥

ढाल : ४८

[बाजटो पर नही बेसणो मुनि पग ऊपर पग मेल०—ए देशी]

तदन्तर टूगचना बासी, सुखजी नाम सुखकार।
स्वाम भिक्खु पै सजम लीधौ, आणी हर्ष अपार रा॥
भिक्खु स्वाम उजागर आपरा।
सुविनीत भला शिष्य, जिन मार्ग जमायौ रे।
सुगुणा परम पूज रै, प्रसग सुज्ञानी जय जश छायौ रे।भि०।१॥
स्वाम भिक्खु पछै चौसठे, काई शहर देवगढ सार।
अणशण कर आतम उजवालियौ, तौ शुद्ध दश दिन सथार। भि०। २ ॥
वर्ष तेपनै गिरियारी वासी, हेम आछा हद जाति।
सजम स्वाम समाप्यो सुवर्णन, हेम नवरसै विख्यात। भि०। ३ ॥
उत्पत्तिया बुद्धि आगला, स्वामी हेम सखर सुविनीत।
प्रवल वुद्धि पुन्य पोरसा, काई पूर्ण पूज्य सू प्रीत। भि०। ४ ॥
परम विनयवन्त परखिया, बारु बुद्धि भारी सुविचार।
हद कियौ सिंघाडौ हेम नौ, भारी ज्ञानी गुणा रा भण्डार।भि०। ५ ॥
हेम सुनिर्मल हीया तणा, अरु हेम स्वामी हितकार।
हेम सुमति ना सागरु, अरु हेम गुप्ति गुणकार। भि०। ६ ॥
हेम दिसावान दीपतौ, मुनि हेम मोटौ महाभाग।
हेम उजागर ओपतौ, वर हेम हीयै वैराग। भि०। ७ ॥
हेम इर्या धुनि ओपती, गति जाणै चाल्यौ गजराज।
हेम गम्भीर गैहरौ घणौ, औ तौ हेम गरीब निवाज। भि०। ८ ॥
हेम दया दिल मैं घणी, शुद्ध सत दत हेम सधीर।
हेम शील माहीं रम रह्यौ, बारु कर्म काटण बड वीर। भि०। ९ ॥
हेम सग रहित सुरतरु, काई हेम मेरू जिम धीर।
हेम चिन्तामणि सारीषौ, औ तौ हेम जाणै पर पीर। भि०। १० ॥
सुन्दर मुद्रा हेम नी, अरु अतिशय कारी ऐन।
पेखत चित्त प्रसन्न हुवै, चित्त माहैं पामै चैन। भि०। ११ ॥
सम्बत् अठारहसै तेपने पाछै, धर्म वृद्धि अधिकाय।
वक चूलिया मैं वार्ता, आ तौ प्रत्यक्ष मिली इहा आय।भि०।१२॥

बारह संत तौ आगै हुंता, काई स्वाम भिक्खु पै सोय।
हेम हुवा सत तेरमा, त्या पछै न घटियौ कोय।भि०। १३॥
भागबली भिक्खु तणौ, शिष्य हेम हुवा वृद्धिकार।
पाखण्डी पग माण्डै नही, पडै हेम नी धाक अपार। भि०। १४॥
चौथे आरै साभल्या, एतो क्षमा शूरा अरिहत।
प्रत्यक्ष आरै पंचमै, ऐतौ हेम सरीषा सन्त। भि०॥ १५॥
भिक्खु भारीमाल ऋषराय रै, बर्तारा मै हेम बदीत।
चर्चावादी शूरमां, लिया घणा पाखड्या नै जीत। भि०॥ १६।
घणा जणा नै सजम दियौ, देश व्रत घणा नै सुलभ्भ।
बहु भणाय पडित किया, हेम जिन शासन री थम्भ। भि०॥ १७॥
हेम नवरसा मै कह्यौ, वर हेम तणु विस्तार।
ग्रन्थ बधतौ जाणनै, इहा सक्षेप्यौ अधिकार। भि०॥ १८॥
भिक्खु भारीमाल चलिया पछै, ऋषराय तणै वर्तार।
उगणीसै चौके समै, शिरियारी मै हेम सन्थार। भि०॥ १९॥
भाग प्रबल भिक्खु तणा, हुवा सन्त शासण शिणगार।
हेम गजेन्द्र समो गुणी, बलि आखू अवर अणगार। भि०॥ २०॥
आठ चालीसमी शोभती, आखी ढाल रसाल अपार।
स्वाम भिक्खु गण सुर तरु, ओ तौ जय जश करण उदार। भि०॥ २१॥

दुहा

तदनन्तर तपसी भलौ, वर चपलोत विचार।
वासी कैलवा नौ पवर, उदैराम अधिकार॥ १॥
पचावनै पाली मझै, पूज भीखणजी पास।
श्रावण मै सजम लियौ, अधिकौ धर्म उजास॥ २॥
अति उमग तप आदर्‌यो, वर आबल बर्द्धमान।
बयालीस ओली लगै, चढ्यौज चढतै ध्यान॥ ३॥
अवर तप कीधौ अधिक, छठ छठ आदि विचार।
आठ सौ इकतालीस आसरै, आबिल किया उदार॥ ४॥
साठै स्वाम पछै सही, सखरो कर सथार।
चेलावास चलतौ रह्यौ, भारीमाल उतार्‌यौ पार॥ ५॥

सोरठा

तदनन्तर तिणवार रे, खुशालजी सजम लियौ।
प्रकृति कठिण अपार रे, कर्म जोग थी निकल्यौ॥ १ ॥
ओटौ जाति सोनार रे, वासी खारचिया तणौ।
स्वाम कनै समाचार रे, आप कहै इह रीत सू॥ २ ॥
अति कायौ हुवौ बाप रे, आज्ञा दी मुझ इण परै।
तूं मुझ क्यूं दै ताप रे, कर तुझ दाय आवै जिसौ॥ ३ ॥
म्हारी कानी सू जाण रे, जोगी जति ह्वै ढूढियौ।
इक नर सुणतां कहि बाण रे, स्वामी तब सजम दियौ॥ ४ ॥
प्रकृति तणै प्रताप रे, सजम पालणौ दोहिलौ।
कठिण परीषा ताप रे, छूटौ ते तब छिनक मै॥ ५ ।
नाथो जी पोरवाल रे, वासी देसुरी तणौ।
सुत गृह छाडी सार रे, सजम सतरै स्वाम पै॥ ६ ॥
जीभा लोलपी जाण रे, मुनि बांधी मर्याद नै।
छूटौ तेह पिछाण रे, पिण श्रद्धा सनमुख रह्यौ॥ ७ ॥

ढाल : ४९

[जै जै जै गणपति रे नमू — ए देशी]

समत अठारै वर्ष सतावनै, गांम रावलिया गुणियै
लघु वेस ऋष राय दीख्या ली, थिर चित्त सेती थुणियै।
जै जै जै गणपति रे नमु॥ १ ॥
बब जाति चतुरौ साह सुतवर, नाम रायचन्द नीकौ।
वर्ष इग्यारह आसरै वय मैं, सजम सखर सधीकौ। जै० ॥ २ ॥
हथिणी होदै हर्ष हुऔ अति, मातु कुशाला बारु ।
साथै संजम पूज समाप्यौ, चैत्री पुनम चारु। जै० ॥ ३ ॥
प्रबल बुद्धि गुण पुन्य पेखनै, पर्म पूज फरमायौ।
पद लायक ए पुन्य पोरसौ, वचनामृत बरसायो। जै० ॥ ४ ॥
दिशावान ऋषराय दीपतौ, भाग्य बली वृद्धि भारी।
हस्तमुखी मूर्त्ति हद हर्षत, पेखत मुद्रा प्यारी। जै० ॥ ५ ॥
पाट तीजै आगुच परूप्या, स्वाम वचन सुखदाया।
जम्बू स्वाम जैसा जैवन्ता, जाझा ठाठ जमाया। जै० ॥ ६ ॥

अन्तकाल भिक्खु नैं अधिकौ, साझ सखर सुखदाया।
भारीमाल रै पास भुजागल, रायचन्द ऋष राया। जै० ॥ ७ ॥
गुणतरै वर्ष भारीमाल नी, आज्ञा ले अगवाणी।
प्रथम शिष्य ऋष जीत कियौ, निज पाट लायक सुविहाणी। जै० ॥ ८ ॥
भारीमाल नैं साझ दियौ अति, अन्त समय अधिकायौ।
आप ओजागर अधिक अनोपम, दीन दयाल दीपायौ। जै० ॥ ९ ॥
तस उपगार तणौ वर्णन, करता अति ग्रन्थ वधियौ।
भिक्खु तणौ सम्बन्ध इहा, तिण कारण सखेपियौ। जै० ॥१०॥
संसारी लेखै मामा सतजुगी, महा मतिवन्ता।
भल भाणेज रायचन्द भणियै, जशधारी जैवंता। जै० ॥११॥
भिक्खु ऋष अति भाग वली, शिष्य मिलिया रायचन्द नीका।
गिरवा गैहर गभीर गुणागर, पूज्य प्रथम ही परीखा। जै० ॥१२॥
बहु वर्षां लग मार्ग नी वृद्धि, जिनजी आगु जाणी।
भिक्खु रै अति भागबली, ऋषराय मिल्या शिष्य आणी। जै० ॥१३॥
ऐसा भिक्खु आप उजागर, शिष्य पिण मिल्या सरीखा।
तस पग छेहडै सन्त हुवा ते, सांभलियै सुवृद्धिका। जै० ॥१४॥
ए गुणपचासमी ढाल अनुपम, मिल्यौ सत मन मान्यौ।
कहियै धर्म वृद्धि नौ कारण, जय जश कर्ण सुजाण्यौ। जै० ॥१५॥

दुहा

समत अठारै सतावनै, जेठ मास मै जोय।
पिता पुत्र धर चरण पद, हर्ष घणौ अति होय ॥ १ ॥
ताराचन्दजी तात सुत, डूंगरसी महा मण्ड।
पिता भार्या परहरी, सुतन सगाई छण्ड ॥ ३ ॥
बड वैरागी सत बिहु, सखरी कर सथार।
भिक्खु स्वाम पछै उभय, समचित जन्म सुधार ॥ २ ॥
अणशण इकतालीस दिन, ताराचन्द उवेख।
दश दिन अणशण दीपतौ, डूंगरसी नै देख ॥ ४ ॥
तदनतर संजम लियौ, वरल्या बौहरा ताहि।
जीवौ मुनि तासोल नौ, महा मोटौ मुनिराय ॥ ५ ॥
सरल भद्र प्रकृति सखर, तीन पाट नी ताम।
सेव करी साचै मनै, धुन सुविनय मैं धाम ॥ ६ ॥

भिक्खु भारीमाल पाछै भलौ, नेउऐ वर्ष निहाल।
गोघुदै अणशण गुणी, महा मुनि गुणमाल ॥ ७ ॥

ढाल ५०

[चेत चतुर नर कह तने सत गुरु—ए देशी]

जोगीदासजी स्वामी जोरावर, तदनन्तर त्रिया त्यागी।
स्वाम भीखणजी सजम दीधौ, वालपणै बड वैरागी।
भ्रम छाड भिक्खु शिष्य भजलै, तज मिथ्या मति तालदा।
कर्म जाल काटौ करणी कर, पर्म ज्ञान पर्मानन्दा ॥ १ ॥
शहर कैलवा रा वासी शुद्ध, जोगीदास साचौ जोगी।
सखर सौभागी ममता त्यागी, भल सुमति पिण नही भोगी ॥ २ ॥
अल्प काल मे अचाणचकरौ, शहर पीसागण मै सुणियौ।
चौविहार सथारौ चोखौ, थिर चित्त सू मुनिवर थुणियौ ॥ ३ ॥
गुणसठै वर्ष मुनि गुणवतौ, पूज्य छता परभव पहुतौ।
आत्म तारयौ जन्म सुधारयौ, हियै निर्मल ऋषराज हुतौ ॥ ४ ॥
तदनन्तर जोधौ मारु ते, गाम केरडा नौ गुणियौ।
स्वाम भिक्खु स्वहथ सजम शुद्ध, भारी तपसी तप भणियौ ॥ ५ ॥
अढी मास तप आछ आगारै, तप उतकृष्टपणौ तपियौ।
सरल भद्र मुनिवर सौभागी, जाप विविध तन मन जपियौ ॥ ६ ॥
दिन अडतीस कोचलै दीप्यौ, सथारौ सखरौ सुणियौ।
स्वाम पछै परभव सुमति शुद्ध, जोधौ धिन माता जणियौ ॥ ७ ॥
शहर खैरवा रा भगजी शुद्ध, वर आज्ञा दी बहिन बडी।
सजम भिक्खु स्वाम समाप्यौ, सखर विनय थी शोभ चढी ॥ ८ ॥
जाति बैद मूहता जश धारी, भगजी भक्ति करी भारी।
भिक्खु भारीमाल ऋषराय तणी भल, पेखत ही मुद्रा प्यारी ॥ ९ ॥
ऋषराय तणै वरतारै रूडी, पडित मरण मुनि पायौ।
निनाणुवै आत्म नै निन्दी, शुद्ध परिणामे शोभायौ ॥१०॥

सोरठा

जोगड जाति सुजाण रे, वासी बीदासर तणु।
पूज समीप पिछाण रे, भागचन्द आवी करी ॥ १ ॥
वारु गुणसठै वासरे, चारित्र धारयौ चूप सू।
वर्ष कितैक विमास रे, कर्म जोग थी निकल्यौ ॥ २ ॥

चन्द्रभाणजी माहि रे, रह्यौ पंच मास आसरै।
भारीमाल पै आय रे, कहै मुझनै ल्यो गण मझै॥ ३ ॥
हू रह्यौ चन्द्रभाण माहि रे त्यानै साध न श्रद्धियौ।
थे मोटा मुनिराय रे, साधु श्रद्धतौ स्वाम गण॥ ४ ॥
भारीमाल ऋषराय रे, छेद दियौ षटमास रौ।
लियौ तास गण माँहि रे, अवलोकी भिक्खु लिखत॥ ५ ॥
आपां माहिलौ जाण रे, जाय चन्द्रभाणजी मझै।
अल्पकाल पहिछाण रे, आहार पाणी भेली करै॥ ६ ॥
पिण आपांनै साध रे, श्रद्धै शुद्ध मन सूं सही।
श्रद्धै तास असाध रे, नवी दीख्या दंणी न तसु॥ ७ ॥
जथा जोग दण्ड जाण रे, दे लैणु तस गण मझै।
वर्ष सैतीसै बाण रे, लिखत भिक्खु ऋष नौ कियौ॥ ८ ॥
एहवौ लिखत अवलोक रे, नवी दीख्या दीधी न तसु।
छेद दे मेट्यौ दोष रे, भारीमाल व्यवहार थी॥ ६ ॥
पासत्था पास पिछाण रे, आहार आद लेवै देवै तसु।
निशीथ बीस मै जाण रे, डंड चौमासी दाखियौ॥ १० ॥
चौमासी डड स्थान रे, वार वार सेव्यां छतां।
व्यवहार प्रथम कही बान रे, चौमासी प्राछित तसु॥ ११ ॥
इम बहु न्याय विचार रे, बलि मर्याद विमास ने।
वारु देख व्यवहार रे, छेद देई माहैं लियौ॥ १२ ॥
बीत्यौ कितोयक काल रे, फिर छूटक थयौ एकलौ।
इक शिष्य कीधौ न्हाल रे, नाम भवानजी तेहनौ॥ १३ ॥
डड ले आया माँहि रे, तपनौ अभिग्रह आदर्यौ।
नायौ पालणी ताहि रे, तिण कारण थयौ एकलौ॥ १४ ॥
काल कितोक वदीत रे, फिर आयौ भारीमाल पै।
सन्त सत्यां नै सुरीत रे, कर जोडी वंदना करी॥ १५ ॥
वोलै वे कर जोड रे, मुझनै लेवौ गण मझे।
अढी द्वीप ना चौर रे, त्यांस् हू अधिकौ वणौ॥ १६ ॥
छठ छठ तप पहिछांन रे, जावजीव अदराय दौ।
कहो तौ करु सथार रे, पिण मुझनै ल्यौ गण मझे॥ १७ ॥
भारीमाल वहु जांण रे, दीख्या दे माँहि लियौ।
सवन अठारै पिछाण रे, एकोतरै वर्ण आदर्यौ॥ १८ ॥

मास खमण वहु वार रे, विकट तप मुनिवर कियौ।
सताणुवै सुखकार रे, जन्म सुधारी जग लियौ॥ १६॥

ढाल तेहिज

भारी तपसी भोप हुवौ भल, कोसीथल वासी कहियौ।
जाति तणौ चपलोत जाणिजै, लाभ स्वाम हाथै लहियौ॥ ११॥
पाली मैं सजम लै प्रत्यक्ष, मुनि तपसा करवा मडियौ।
कवहिक छासठ कवहिक अडसठ, चढत चढत अधिकौ चढियौ॥ १२॥
कदहिक चार मास मं कीधा, सतर पारणा सुमति सहु।
ग्रन्थ वहुल भय तप वर्णन गुण, तिण कारण सहु ते न कहू॥ १३॥
साडी चार पहोर सथारौ, स्वाम पछै शुद्ध गति सारु।
पाली धर्म उद्योत प्रगट हद, वर्प छासठै मुनि वारु॥ १४॥
मुनि महिमागर अधिक उजागर, गुण सागर नागर ज्ञानी।
वचन सुधा वागर धर्म जागर, धर्म धुनि धर महा ध्यानी। १५॥
अञ्जन मञ्जन चन्दन अङ्गन, शिव गञ्जन रञ्जन माधी।
भ्रम भञ्जन भिक्खु गुरु भेटी, अरि गञ्जन मति आराधी॥ १६॥
स्वाम शरण सुख करण तरण शुद्ध, तम भ्रम हरण स्वाम तरणी।
शिव वधू वरण धरण दुधर सम, कहा कहू मुनि नी करणी॥ १७॥
सुर गिर धीर गभीर समीर, सदा सुख सीर सुतार सजै।
तोड जजीर वीर वड तुम हो, ऋप भिक्खु गुण हीर रजै॥ १८॥
पर्म प्रतीत रीत प्रभु वच सैं, लोक वदीत अनीत लजै।
ज्ञान संगीत नीत हद गुणियण, भल भिक्खु ऋप जीत भजै॥ १६॥
वाण विमल अति निमल कमल वर, जमल अमल शिव मग जाणी।
समल तमल मिथ्या मति सोपी, आप सुर्ति अवदल हाणी॥ २०॥
आप तर्ण प्रसाद अनोपम, तत मुनीश्वर वहु तरिया।
आप सुरतरु आप गुणोदधि, आप घणा ना अघ हरिया॥ २१॥
स्मरण स्वाम तणौ नित साधू, स्वाम तणौ मुझ नित शरणौ।
आशा पूरण स्वाम अनोपम, निर्मल चित्त कीयौ निरणौ॥ २२॥
सखरा स्वाम मुनि गुण साचा, म्हे सक्षेप थकी गुणिया।
जल सागर किम झालै गागर, गुण अनन्त अथग अनघ गुणिया॥ २३॥
निमल पचासमी ढाल निहाली, भल भिक्खु गुण सू भरिया।
जय जश सम्पति करण जाणजो, इण खण्ड भिक्खु अवतरिया॥ २४॥

दुहा

अडतालीस मुनि अख्या, पूज छता पहिछान।
चारित्र लीधौ चित्त धरी, उज्झम अधिकी आण ॥ १ ॥
अष्टवीस गण मैं सही, सखर रह्या सुजगीस।
गुरु छदै गिरवा गुणी, अलग रह्या छै बीस ॥ २ ॥
बीसा माहै एक वर, रूपचन्द शुद्ध रीत।
छेहडै अणशण चर्ण लिये, पूज आण प्रतीत ॥ ३ ॥
पूज थका चारित्र प्रगट, अब सतिया अधिकार।
कैईक बारै नीकली, पहोती कैईक पार ॥ ४ ॥
एक साथ व्रत आदर्या, तीन जण्या तिण वार।
कुशला जी बडी करी, कुशल क्षेम अवतार ॥ ५ ॥

ढाल : ५१

[खम्यावत जोय भगवन्त रौ ज्ञान—ए देशी]

पवर चरण शुद्ध पालताजी, कुशलाजी ने विचार।
दीर्घ पृष्ठ गुदोच मैं जी, ते डसियौ तिण वार।
खिम्यावत धिन सतिया अवतार ॥ १ ॥
जत्र मत्र झाडा भणी जी, वछ्यौ नही तिण वार।
शुद्ध परिणामे महासती जी, पोहती परलोक मझार ॥ २ ॥
मटूजी मोटी सती जी, स्वाम आण शिर धार।
पद आराधक पामियौ जी, औ भिक्खु नौ उपगार ॥ ३ ॥

सोरठा

अजबू प्रकृति अजोग रे, कर्म जोग सू नीकली।
प्रकृति कठिण प्रयोग रे, चारित्र खोवै छिनक मैं ॥ १ ॥

ढाल तेहिज

नाम सुजाणा निरमली जी, देऊ जी दीपाय।
स्वाम तणै गण मैं सही जी, परभव पोहती जाय ॥ ४ ॥

सोरठा

तदनन्तर तिण वार रे, साधुपणौ लीधौ सही।
नेउ नाम निहाल रे, कर्म प्रयोगे नीकली ॥ २ ॥

ढाल तेहिज

सती गुमाना शोभती जी, संजम वर सथार।
इमज करूंवाजी अखी जी अणशण अधिक उदार॥ ५ ॥
जीऊजी वले जांणियै जी, स्वाम तणे गण सार।
पोतै वहु सुत परहरी जी, वासी रीया रा विचार॥ ६ ॥
काल कितैक पछै कियौ जी, शहर पीपाड सथार।
इगताली खडी ओपती जी माढी करी तिवार॥ ७ ॥

सोरठा

फतू अखूजी न्हाल रे, अजबू चदूजी अजा।
भेषधार्‍या मं भाल रे पछै चर्ण लियौ पूज पं॥ ३ ॥
समत अठारै सोय रे, वर्ष तेतीसै वारता।
लिखत करी अवलोय रे मुनि लीधी टोला मझै॥ ४ ॥
आर मतै अववार रे, मन छडै रही मोकली।
अति तनु कठिण अपार रे, छादै गुरा रै चालणौ॥ ५ ॥
अशुद्ध प्रकृति अविनीत रे, सुमते जाणौ स्वामजी।
शिष्य भिक्खु शुद्ध रीत रे, तंतु धाम्यौ तेहनै॥ ६ ॥
तुझनं कल्पै तेह रे, ते ततु लेवौ तुम्हे।
इम कही कपड़ौ देह रे, फतु आदि पांचा भणी॥ ७ ॥
पूछ्यौ तास प्रमाण रे, कहै मुझ अधिकौ को नही।
पूज करै पहिछान रे, निसुणौ निरणय निर्मलो॥ ८ ॥
अखैराम अणगार रे, मेल्यौ कपडौ मापवा।
तस थानक तिणवार रे, माप्या अधिकौ निकल्यौ॥ ९ ॥
इम ततु अति राख रे, झूठ बोली बले जाणनै।
शुद्ध नही सजम साख रे, नीत चरण पालण तणी॥ १० ॥
च्यारू ते पहिछान रे, चैना भेली पंचमी।
झट पाचूं नै जाण रे, छोडी चडावल मझै॥ ११ ॥

ढाल तेहिज

मैणाजी मोटी सती जी, वासी पुरना विचार।
स्वाम कनै संजम लियौ जी, छाडी निज भरतार॥ ८ ॥
पढो भणी पडित थई जी, बहु सूत्रा नी रे जाण।
साठै संथारौ करै जी, कीधौ जन्म निरवाण॥ ९ ॥

सोरठा

धनू फेलीजी धार रे, रत्तू नन्दूजी बलि।
माढा गाम मभार रे, छोडी या च्यारा भणी ॥ १२ ॥

ढाल तेहिज

रगूजी रलियामणा जी, श्रीजीद्वारा ना सार।
पोरवाल प्रगट पणै जी, सजम लियौ सुखकार ॥ १० ॥
अडतीसै व्रत आदस्यौ जी, स्वाम खेतसी रै साथ।
गिरियारी चलता रह्या जी, बारु भणी विख्यात ॥ ११ ॥
सदाजी मोटी सती जी, तलेसरा तत सार।
श्रीजी द्वारा ना सही जी, सखर कियौ सथार ॥ १२ ॥
सुत बहु तज सजम लियौ जी, कटाल्या ना कहिवाय।
अणशण लोढोती मभै जी, फूला जी सुखदाय ॥ १३ ॥
उत्तम अमरा आर्यां जी, स्वाम तणै उपगार।
जीतब जन्म सुधारियौ जी, सखरौ कर सथार ॥ १४ ॥
ढाल एक पचासमी जी, भिक्खु नै गण भाल।
वडी वडी सतिया हुई जी, बारु गण सुविशाल ॥ १५ ॥

सोरठा

रत्तू ले चारित्र रे, छूटी खोयौ चर्ण नै।
पाली माहि पवित्र रे, पछै सथारौ पचखियौ ॥ १ ॥
उपाय किया अनेक रे, भेषधास्या लेवा भणी।
तौ पिण राखी टेक रे, त्या माहै तौ ना गई ॥ २ ॥

दुहा

शुद्ध चित्त सूं तेजु सती, पोरवाल पहिछाण।
वासी ढोल कवोल रा, सजम लियौ सुजाण ॥ ३ ॥
काल कितैक पछै कियौ, सथारौ सुविहाण।
दिवस वेयाली दीपतौ, कीधौ जन्म किल्याण ॥ ४ ॥

सोरठा

वनाजी सुविचार रे, सजम लीधौ शुद्ध मनै।
कर्मा करी खुवार रे, टोला सू न्यारी टली ॥ ५ ॥

दुहा

बगतुजी बगडी तणा, वर कुल जाति सवेत।
हीरां हीर कणी जिसी, भारीमाल ना नेत ॥ ६ ॥
नाम नगी गुण निर्मली, वैणीरामजी री बहैन।
एक दीवस तीनू अजा, चर्ण धार चित चैन ॥ ७ ॥
चौमालीसै वर्ष स्वामजी, सजम दे इक साथ।
सूंप्या रगुजी भणी, बारू जश विख्यात ॥ ८ ॥
ए तीनू भिक्खु पछै, सथारा कर सार।
महियल मोटी महासती, पामी भवनी पार ॥ ९ ॥
सरूप भीम ऋष जीत नी, अजबू भुवा सुजोग।
चौमाले धार्‌यौ चर्ण, अठासीयै परलोग ॥ १० ॥
गिरियारी ना महासती, पन्नाजी पहिछाण।
संजम पाल्यौ स्वाम गण, सथारौ सुविहाण ॥ ११ ॥

सोरठा

काकरोली री कहाय रे, लालांजी सजम लियौ।
परवस सीत सुपाय रे, इण कारण गृह आविया ॥ १२ ॥
बहु वर्षा सुविचार रे, श्रावक धर्मज साधियौ।
तप जप कियौ उदार रे, फिर चारित्र नही पचखियौ ॥ १३ ॥

ढाल ५२

[ज्यारा इन्द्र चन्द्र रखवाला—ए देशी]

गुमाना महा गुणवंती, तासोल तणी चित्त शाती।
जीवा मुनि री बडी मा जाणी, सती सजम लियौ सुखदाणी हो लाल।
सतिया ना मज मोटी ॥ १ ॥
एक मास कियौ अति भारी, दोय मास छेहडै दिल धारी।
शुद्ध राजनगर सथारौ, सती सरल भद्र सुखकारौ हो ॥ २ ॥
वर शहर बुदी रा वासी, बारू श्रावगी कुल सुविमासी।
खेरवै संथारौ खती, खेमां जी खेम करती हो ॥ ३ ॥

सोरठा

जूं परीषह थी जांण रे, छूटी जसु छिनक मैं।
चोखी टली पिछाण रे, काकरौली री विहु कही ॥ १ ॥

ढाल तेहिज

सतजुगी री बहिन सुखवासी, ऋष रायचदजी री मासी।
पिउ पुत्र तज्या पहिछाणी, रूपाजी महा रलियाणी हो ॥ ४ ॥
संजम बावनै सधीकौ, सतावनै सथारौ नीकौ।
खुशालाजी री लघु बहिन कहियै, रूपाजी जग जश लहियै हो ॥ ५ ॥
सरूपाजी कटाल्यै सथारौ, अग्रवाल जाति अवधारौ।
माधोपुर ना वसवानौ, सुत तीन तज्या व्रत ध्यानो हो ॥ ६ ॥
बरजूजी बदीत विमासी, रूडी शील गुणा री रासी।
तिणरौ भिक्खु तोल बधायौ, सती सुजश शासण मैं पायौ हो ॥ ७ ॥
बीजांजी महा वृद्धकारी, धर चरण शील सुखकारी।
करडौ तप छेहडै कीधौ, सती जग मोहे जश लीधौ हो ॥ ८ ॥
बनाजी सुविनयवती, शुद्ध चरण पालण चित्त शंती।
सुखदायक गण सुविशाली, सती आतम नै उजवाली हो ॥ ६ ॥
शुद्ध या तीना नै सिख्या, दीधी भिक्खु एक दिन दीख्या।
सखरौ छेहडै संथारौ, समणी हद मुद्रा सारो हौ ॥ १० ॥

सोरठा

बीरां जाति कुमार रे, सजम लीधौ स्वाम पै।
प्रकृति अशुद्ध अपार रे, तिण कारण गण सू टली ॥ २ ॥

ढाल तेहिज

उदाजी उद्यमवती, सती जाति सोनार सोहंती।
बहु वर्षां चरण सुविचारौ, आबेट माहै सथारौ हो ॥ ११ ॥
झुमाजी जाति पोरवाल, श्रीजी द्वारा ना सार।
छपनै वर्ष सजम लीधौ, स्वाम पछै संथारौ सिद्धौ हो ॥ १२ ॥
वर्ष सतावनै सुविचारौ, ऋषराय चरण हितकारो।
तिण बहुत हुवौ उपगारौ, तिणरौ साभलजो विस्तारौ हो ॥ १३ ॥
ससार लेखै शोभाया, लखपती ल्होडै सजनाया।
मतिवत हस्तु महि मडी, लीधौ चरण पिउ सुत छडी हो ॥ १४ ॥
दुःख घरकां बहुलौ दीधौ, सती अडिगपणै व्रत लीधौ।
सताणूवै लाहवै सथारौ, हस्तु गुण ज्ञान भडारौ हो ॥ १५ ॥
कुशलाजी रावलियां रा कहियै, सतजुगी री बहिन व्रत लहियै।
ऋषरायचन्दजी नी माता, संजम ले पामी साता।
औ तौ जिन शासन मै सुखदाता हो ॥ १६ ॥

भल हस्तुजी नी भग्नी, सती कस्तुराजी शुभ लग्नी।
सुत पिउ छाड व्रत धारो, सततरै उजैण सथारो हो ॥ १७ ॥
ल्हावा थी सजम लीधौ, पिउ छाड पर्म रस पीधौ।
घणी बुद्धि अकल गुणवन्ती, जोताजी महा जशवन्ती हो ॥ १८ ॥
शिरियारी रा सुमगन मै, छोड्यौ पिउ सुत तिण छिन मै ।
सथारो बहुतरै सिद्धौ, नोराजी जग जश लीधौ हो ॥ १६ ॥
शुद्ध एक वर्ष मै शिक्षा, दुर्मति तज लीधी दीक्षा।
पाचा ही पिउ नै छडी, त्यारी प्रीत मुक्ति सू मडी हो लाल ॥२०॥
गुणसठै वर्ष गुणवती, बहु चरण धार बुद्धिवती।
त्यामै तीन जण्या एक साथै, हद दीक्षा भिक्खु नै हाथै हो ॥ २१ ॥
कुशालाजी नाथाजी बीजाजी, पाली ना तिहु भ्रम भाजी।
तीनू शीलामृत कूपी, दीख्या देईनै ब्रजुजी नै सूपी हो ॥ २२ ॥
सततरै कुशालाजी संथारौ, भारीमाल भेला सुविचारो।
माधोपुर मास कार्तिक मै, परलोके पोहता छिनक मै हो ॥ २३ ॥
नाथाजी गाम जसोल न्हाली, वर सथारौ सुविशाली।
ससार लेखै ऋद्धिवती, समणी शुद्ध प्रकृति सोहती हो ॥ २४ ॥
तप दिवस बतीस सु तपियो, जिन जाप बीजाजी जपियो।
तीन दिवस तणौ सन्थारो, वर्ष छियासीयै अवधारौ हो ॥ २५ ॥
सरूप भीम जीत ना ताह्यौ, कलुबै काकी कहिवायौ।
गुणसठै दीक्षा गुणवती, गोमाजी नेवुयै पार पहोती हो ॥ २६ ॥
जगोदा खेरवा निवासी, डाहीजी नोजाजी विमासी।
सजम भिक्खु छता सारो, बहु वर्ष पाछै सथारो हो ॥ २७ ॥
ए स्वाम तणौ गण सारु, छपन गण चर्ण प्रकारु।
सतरै छुटक हुई अजा, छोडी लोकिक लोकोत्तर लजा हो ॥२८ ॥
रही गुण चालीस गण राची, पिउ छाड सात व्रत जाची।
दोय बहिन भाया रा जोडा, सतजोगी वैणीराम सु होडा हो ॥ २६ ॥
ऋष रायचन्द मा साथै, सजम लीधौ पूज हाथै
आख्यौ समणी नौ अधिकारौ, औ तौ भिक्खु तणौ उपगारौ हो ॥ ३० ॥
आगै सत कह्या अडताली, अजा छपन इहा भाली।
सहु थया एक सौ चार, स्वामी गण लीधौ चर्ण सुखकार हो ॥३१॥
बीस सतरे गण बारी, अठवीस गुण चालीस सुधारी।
बीस मे रूपचन्द शुद्ध रीत, राखी स्वाम तणी प्रतीत हो ॥ ३२ ॥

छन्द भुजंगी

थया सत मोटा वडा सु थिरपाल[१], भलू नद नीको फतैचन्द[२] भालं।
विनयवंत बारु सु टोकर[३] विशाल, निजानन्दकारी हरुनाथ[४] न्हाल ॥ १ ॥
भला धर्म धोरी मुनी भारमाल[५], चल्या आप चारू वडा नी सुचाल।
अखै स्थान काजै अखैराम[६] आछा, सदानदकारी सुखाराम[७] साचा ॥ २ ॥
शिवानन्द सारू शिवो[८] स्वाम शीश, नगो[९] स्वाम नीको नगेन्द्र नमीशं।
भला स्वामजी[१०] सत हुवा सुभारी, सही खेतसीजी[११] सदा शातिकारी ॥ ३ ॥
ऋषिराम[१२] रूडो भिक्खु शीश राजै, वलि नानजी[१३] स्वामी स्वामी निवाजै ॥ ४ ॥
निभै नेम जाचा मुनि नेम[१४] नामं, वडो सत्त ज्ञानी भलो वैणीराम[१५] ॥ ५ ॥
बलि सत मोटो बडो वर्द्धमान[१६], सुखो[१७] स्वाम साचो शुभ ध्यान सुजान ॥ ६ ॥
हदा हेम जैसा सु हेम[१८] हजारी, उदैराम[१९] आछो तपेस्वी उदारी ॥ ७ ॥
ऋषि पाट थाप्यौ मुनि रायचन्दं[२०], दीपै तेज तीखौ सुमेरु दिनन्द ॥ ८ ॥
भलौ सत तारा सुचन्द्र[२१] भणीजै, गिरेन्द्र समौ सत डूगर[२२] गिणीजै ॥ ९ ॥
जयौ जीवराजं[२३], अरु जोगीदास[२४], दमीश्वर जोधौ[२५] तपे देह त्रास ॥ १० ॥
भगो नाम[२६] नीको भिक्खु शीश भारी, सही भागचन्द[२७] पछैहि सुधारी ॥ ११ ॥
थयौ भोप[२८] भारी तपे ध्यान थापी, पका सत शूरा भिक्खु नै प्रतापी ॥ १२ ॥
रह्या स्वाम आग धुरा छेह रूडा, सही केटली नै थया फेर शूरा ॥ १३ ॥
आख्या सत नाम अठावीस आछा, जिकै जीव तार्या भिक्खु स्वाम जाचा ॥ १४ ॥

छप्पय

इसा भिक्खु अणगार, सार जिण मार्ग शोधी।
अधिक कियौ उपगार, बहु भवि नै प्रतिबोधी।
श्रमणी सत सुजांण, सखर कीधा सुखकारी।
पर्म धर्म पहिछाण, धुरा जिन आणा धारी।
अरु देश व्रत धारक अधिक, नित्य कृत्य भजन तू नामको।
सुख करण शरण हद जग सुजश, सखर भीखणजी स्वाम कौ ॥ १ ॥

दुहा

अष्टवीस मुनिवर अख्या, सखरा गण शिणगार।
वीस थया गण बाहिरै, तास नाम अवधार ॥ १ ॥
वीरभाण[१] लिखमो[२] बलि, अमरोजी[३] अभिधांन।
तिलोक[४] मौजीरांमजी[५], चन्द्रभाणजी[६] जांन ॥ २ ॥

अणंदौजी[7] पनजी[8] अख्या, सन्तोष[9] शिवजीरांम[10] ।
शंभु[11] सघजी[12] रूपजी[13], लघु रूपजी[14] ताम ॥ ३ ॥
सूरतौजी[15] सघ सूं टल्यौ, मयाराम[16] पहिछाण ।
वीगतौ[17] कुशलजी[18] वलि ओटौ[19] नायू[20] जाण ॥ ४ ॥
केईकां नैं न्यारा किया, कैइक टलिया आप ।
अब कहियैं छै आर्जिका, चतुर सुणौ चुपचाप ॥ ५ ॥

छप्पय

कुशला[1] मट्टु[2] कहाय, सुजाणा[3] कहियै साची ।
देउ[4] गुमाना[5] देख, कमुबाजी[6] नहि काची ।
जीऊ[7] मैणा[8] जिहाज, रगू[9] सदा[10] फूला[11] सुखकारी ।
अमरा[12] तेजु[13] आण, वलि वगतु[14] वृद्धकारी ।
हीरा[15] हीर कणी जिसी, सती शिरोमणि शोभती ।
निकलंक नगा[16] अजबू[17] निमल, महियल ए मोटी सती ॥ १ ॥
पन्ना[18] सती पिछाण, गुमाना[19] खेमा[20] गुणियैं ।
रुपाजी[21] वर रीत, सरूपा[22] समणी सुणियै ।
वरजु[23] वीजा[24] विशाल, वना[25] ऊदा[26] हद वारु ।
झूमा[27] हस्तु[28] जिहाज, कुशाला[29] गण सुखकारु ।
कस्तुरा[30] जोताजी[31] कही, शुद्ध सजम नौरा[32] सजी ।
इक वर्ष माहि व्रत आदस्या, पाचू या प्रीतम तजी ॥ २ ॥
सखर खुशाला[33] सती, पवर नाथा[34] पुनवती ।
विनय वीजा[35] सुविनीत, घणू गोमा[36] गुणवती ।
चर्ण यशोदां[37] चित्त, हियैं डाही[38] हरषती ।
नौजा[39] निमल निहाल, स्वाम आणा समरती ।
ए गुण चालीस अजा गण में अखी, एक सोनार सुजाणियैं ।
कुलवत इतरी सतिया कही, वडी वैराग वखाणियैं ॥ ३ ॥

दुहा

सतरै छुटक नाम तसु, अजबू[1] नेतू[2] ताय ।
वलि फतू[3] नैं अखू[4], फिर अजबू[5] कहिवाय ॥ १ ॥
चन्दूजी[6] चैना[7] छूटक, धनु[8] केली[9] धार ।
रत्तू[10] नदू[11] फिर रतु[12], बना[13] थई गण वार ॥ २ ॥
लाला[14] परवस नीकली, जसु[15] चोखी[16] वीरा[17] जांन ।
सतरै छुटक साभली, गण गुण्याली सुज्ञान ॥ ३ ॥

ढाल : तेहिज

भिक्खु हुवा उजागर भारी, हद करणी री बलिहारी।
नित याद आवै मुझ मन, तन मन अति होय प्रसन्न हो ॥ ३३ ॥
सुमतागर शासण स्वामी, जगधर अन्तरजामी।
सखरी कुण स्वामी सरपी, पूज गुण सुखम दग परखी हो ॥ ३४ ॥
आशा पूरण आपी, जपू आप तणी नित जापी।
पूर्ण मुझ आपसू प्रीत, निरमल शुद्ध आपरी नीत हो ॥ ३५ ॥
कही ए बावनमी ढाल, वर जय जश कर्ण विशाल।
मोनै भाग प्रमाणै मिलिया, मननाज मनोर्थ फलिया हो।
मुह माग्या पासा ढलिया ॥ ३६ ॥
तीजौ खण्ड कह्यौ तहतीकौ, निर्मल भिक्खु गण नीकौ।
शासण सुखदाय सधीकौ, जय जग वृद्धि शिव नौ टीकौ हो लाल ॥ ३७ ॥

कलश

मुनि सुगुण माला वर विशाला, सुमति पाल सुजाणियै।
तम कुगति ताला भ्रम ज्वाला, परम दयाल पिछाणियै ॥ १ ॥
सुख सद्म सत महत सुन्दर, भ्रान्त भजन अति भली।
सुमति सुसागर अमल आगर, निमल मुनि गण गुण निली ॥ २ ॥

चतुर्थ खण्ड

सोरठा

समरू गोयम स्वाम रे, सुधर्म जम्बू आद मुनि।
बले भिक्खु गुरु नाम रे, चौथौ खण्ड कहू चूप सू॥ १ ॥
मुरधर देश मेवाड रे, हाडोती ढूढाड मै।
चावा देशज चार रे, समचित विचरया स्वामजी॥ २ ॥
गेरुलालजी व्यास रे, श्रावक तेरा माहिलो।
ते कच्छ देशे गयो तास रे, टीकम नै समझावियो॥ ३ ॥
टीकम डोसी आम रे, देश कच्छ मे दीपतो।
तेपनै गुणसठै ताम रे, पूज्य कनै आयो प्रगट॥ ४ ॥
प्रगट तेह प्रयोग रे, कच्छ देशे धर्म बाधियो।
स्वाम तणै सजोग रे, जीव हजारा उद्धरया॥ ५ ॥
चर्म कल्याण पिछाण रे, इण भव आश्री जाणजो।
सुणजो चतुर सुजाण रे, पूज भिक्खु नो प्रगट हिव॥ ६ ॥

दुहा

पाचू इन्द्रया परवरी, न पडी काई हीण।
वृद्ध पणै पिण पूज नी, शीघ्र चाल शुभ चीन॥ १ ॥
थाणै कठेई ना थया, उद्यमी अधिक अपार।
चारु चरचा करण चित्त, पूज तणै अति प्यार॥ २ ॥
उठै गोचरी आप नित, अतिशय कारी ऐन।
पूज्य सुमुद्रा पेखता, चित्त मै पामै चैन॥ ३ ॥
छेहला छेहला गाम फर्शता, छेहलाई करत विहार।
चाणोद सू पीपाड लग, विचरया स्वाम उदार॥ ४ ॥

ढाल : ५३

[सल्हा मारुना गीत नी—ए देशी]

भ्रम भय भजन हो जन रजन गुण जिहाज, सुमति सुमंडन स्वाम शोभाविया ।
कुमति विहंडन हो मिथ्या खण्डन काज, विचरत विचरत सोजत आविया ॥ १ ॥
चौहटै चारु हो छत्री छै सुविचार, आज्ञा लेईनै स्वाम तिहा उतस्या ।
जन मन हर्ष हो निरख्यौ पूज्य दिदार, जाणै के श्रीजिन आप समवसस्या ॥ २ ॥
दर्शण कारण हो धारण चर्चा वोल, सत सती बहु स्वाम पै आविया ।
आज्ञा लेवा हो चौमासा री अमोल, पर्म पूज्य पै आवी सुख पाविया ॥ ३ ॥
दम सम सागर हो स्वामी पर्म दयाल, भलाया चौमासा सत सत्या भणी ।
एटलै आयौ हो हुकमचन्द आछौ न्हाल, पूज दर्शण कर प्रीत पामी घणी ॥ ४ ॥
बेकर जोडी हो मान मरोडी बोलत, विविध विनय करि कर रह्यौ विनती ।
स्वामी चौमासौ शिरियारी करौ सत, सुजती छै पकी हाट मुझ शोभती ॥ ५ ॥
गुण निधि ज्ञानी हो गिरवा आप गम्भीर, ऋपपति अर्ज करू हू रीत सू ।
बारु वचने हो विनती कीधी वजीर, सुगरु प्रसन्न हुवै शिष्य सुविनीत सूं ॥ ६ ॥
स्वामी मानी हो विनती तसु सार, विहार करी ने वगडी आविया ।
निर्मल चित्त सू हो अर्ज करै नर नार, शहर कटाल्ये बगडी सुशोभाविया ॥ ७ ॥
गति गयवर-सी हो इर्या धुन गुण जिहाज, प्रवर सता कर मुनिवर प्रवस्या ।
प्रत्यक्ष कहियै हो ऋषि भव दधि नी पाज, शहर शरियारी मे स्वाम समवसस्या ॥ ८ ॥
शहर शरियारी हो शोभै काठा नी कोर, दोलो मगरौ गढ कोट ज्यू दीपती ।
जन बहु बस्ती हो महाजना री जोर, जूना जूना केई पुर भणी जीपती ॥ ९ ॥
निर्भय नगरी हो ऋद्धि समृद्धि निहोर, ज्या धर्म ध्यान घणौ तप जापनौ ।
राज करै छै हो दौलतसिह राठोड, कूपावत कहियै करडी छापनौ ॥ १० ॥
तिहा मुनि आया हो सप्त ऋषि तत सार, जय जश धर्ण कर्ण मन जीपता ।
स्वामी शोभै हो गण नायक सिरदार, दमीश्वर पूज्य भीखणजी दीपता ॥ ११ ॥
भरत क्षेत्र मै हो भिक्खु साम्प्रत भाण, आज्ञा लेईनै पकी हाट उतरचा ।
जन बहु हर्ष्या हो पूज पधारचा जाण, धर्मानुराग करि तन मन भरचा ॥ १२ ॥
बखाण बाणी मै हो आगैवाण विशाल, थिर पद पूज भीखण जी थापियौ ।
भार लायक हो शोभे मुनि भारीमाल, पद युवराज पहिला ही समापियौ ॥ १३ ॥
सखर सेवा मै हो खेतसीजी सुवनीत, सतजुगी नाम अपर शोभावियौ ।
पूर्ण त्यारै हो पूजजी री प्रतीत, चार तीर्थ माहि जश तसु छावियौ ॥ १४ ॥
उदैराम जी तपसी अधिक उदार, ऋष रायचन्दजी बालक वय राजता ।
जीवौ मुनि हो भगजी गुण ना भण्डार, स्वाम तणी हद सेवा सुसाभता ॥ १५ ॥

ए तो आखी हो तीन पचासमी ढाल, गरियारी मै स्वाम आया सुख कारणा।
रूडी निसूणी हो आगल बात रसाल, जय जश करण भिक्खु जन तारणा॥ १६ ॥

दुहा

श्रावण मासे स्वामजी, पूनम लगै पिछाण।
सखरी गोचरी शहर मे, आप करी अगवाण॥ १ ॥
आवसग अर्थ अनोपम, लिख लिखनै अवलोय।
शिष्य नै आप सिखावता, जग धारी मुनि जोय॥ २ ॥
श्रावण सुद छेहडै सही, मुनि तणै तन माही।
काईक कारण ऊपनौ, फेरा तणौज ताही॥ ३ ॥
तो पिण उठै गोचरी, गाम माहि मुनिराय।
दिसा बाहिर जावै सही, लाबी गिणती न काय॥ ४ ॥
औषध लियौ अणायनै, कारण मेटण काम।
पिण कारण मिटियौ नही, पूज समा परिणाम॥ ५ ॥

ढाल : ५४

[केते पूजी गोरज्या केते ईस—ए देशी]

चर्म कल्याण चतुर सुणौ, मास भाद्रवा मायो ए। सुखदायो ए।
धर्म वृद्धि अति धर्म नी क भवियण ए॥ १ ॥
पजुसणा मै परवडा वारुहुवै, बणाणो ए। सुविहाणो ए।
दरगे तीन टक देगना क मुनिवर ए॥ २ ॥
सुन्दर वाण सुहामणी, निसुणै बहु नर नारो ए। सुखकारो ए।
चौथज आई चादणी क। मु० ॥ ३ ॥
पिंजर तन हीणौ पड्यौ, पर्म पूज्य पहिछाण्यौ ए। मन जाण्यौ हे।
आउ नेडौ उनमानथी क। मु० ॥ ४ ॥
स्वाम कहै सतजुगी भणी, थे सखर शिष्य सुविनीतो ए। धर प्रीतो ए।
साभ्र दियौ सजम तणौ क। मु० ॥ ५ ॥
टोकरजो तीखा हुन्ता, विनय वत सुविचारी ए। हितकारी ए।
भक्ति करी भारी घणी क। मु०। ६ ॥
भारमलजी सूं भेलप भली, रहीज रूडी रीतो ए। अति प्रीतो ए।
जाण के पाछल भव तणी क। मु० ॥ ७ ॥
सखर तीना रा साभ्र सू, वर सजम उजवाल्यौ ए। म्हैं पाल्यौ ए।
प्रत्यक्ष ही गूरापणै क। मु० ॥ ८ ॥

चित्त समाधि रही घणी, म्हारा मन मझारो ए। हुंशियारो ए।
या तीना रा साझ थी क। मु० ॥ ६ ॥
शिष्य सुविनीत हुवै सही, गुरु रै रहै आणदो ए। चित्त चदो ए।
देव जिनेंद्र दाखियौ क। मु० ॥ १० ॥
गुणग्राही एहवा गुणी, पूज्य भीखणजी पेखौ ए। दिल देखौ ए।
स्वाम गुणज्ञ सुहामणा क। मु० ॥ ११ ॥
ऐसी कीजै प्रीतडी, जैसी भिक्खु भारीमालो ए। सुविशालो ए।
सतजुगी टोकरजी सारिषी क। मु० ॥ १२ ॥
जोडी वीर गोयम जिसी, पवर स्वाम शिष्य प्रीतौ ए। हद रीतो ए।
चाल सखर चौथा तणी क। मु० ॥ १३ ॥
ए चौपनमी ढाल मैं, सखरौ कह्यौ सबंधो। ए प्रबधो ए।
स्वाम भिक्खु नौ शोभतौ क। मु० ॥ १४ ॥

दुहा

साध श्रावक नै श्राविका, बहु सुणता तिणवार।
सीखामण दै स्वामजी, हद सखरी हितकार ॥ १ ॥
वीर जी मोक्ष विराजतां, बारु कियौ वखाण।
सोलह पहौर रे आसरै, सीख दीधी सुविहांण ॥ २ ॥
इण दुखम आरा मझै, स्वाम भीखणजी सार।
प्रत्यक्ष श्री जिन नी परै, आखी सीख उदार ॥ ३ ॥
सखर बुद्धि बाणी सखर, सखर कला सुखकार।
नीत सखर चित निरमलै, वचन बदै सुविचार ॥ ४ ॥

ढाल : ५५

[आगे जाता अटवी आवै—ए देशी]

जिम मुझनै जाणता, म्हारी प्रतीतो रे।
तिमहिज राखज्यो, भारमालजी री रीतो रे।
सीख स्वामी तणी ॥ १ ॥
सहु सन्त सत्या रा, भारीमालजी नाथो रे।
आज्ञा आराधज्यो, मत लोपज्यो वातो रे ॥ २ ॥
यारी आण लोपी नै, निकलै गण वारौ रे।
तसु गिणज्यो मति, चिहु तीर्थ मझारो रे ॥ ३ ॥
यांरी आण अरावै, सदा रहै सुविनीतो रे।
तसु सेवा करो, ए जिन मत रीतो रे ॥ ४ ॥

मैं पदवी आपी, भारलायक जांणी रे।
भारमल जी भणी, शुद्ध प्रकृति सुहाणी रे॥ ५ ॥
नीत चर्णं पालण री, भल ऋद्ध भारीमालो रे।
शक म राखज्यो, शुद्ध साधु नी चालो रे॥ ६ ॥
शुद्ध श्रमण सेवजो, अणाचारचा सू दूरा रे।
सीख दोनूं धरज्या, हुवै मुग्ति हजूरा रे॥ ७ ॥
अरिहंत गुरु आज्ञा, लोपै कर्म जोगो रे।
अपछन्दा तिके, नही वदण जोगो रे॥ ८ ॥
उसन्ना नै पासत्था, कुशील्या प्रमादी रे।
अपछदा इणा, जिण आण विराधी रे॥ ९ ॥
या नै वीर निषेध्या, ज्ञाता मैं विशालो रे।
सग करणी नही, बाधी जिनपालो रे॥ १० ॥
आणंद लियौ अभिग्रही, जिण गण थी न्यारू रे।
तसु वांदूं नही, पहली वचन उचारू रे॥ ११ ॥
अन्यमति ना देव गुरु, अथवा जमाली रे।
तास नमू नही, नहिं वदू न्हाली रे॥ १२ ॥
बलि बिगर बोलाया, बोलण रौ नेमो रे।
आहार आपू नही, अभिग्रह लियौ एमो रे॥ १३ ॥
अभिग्रह जिन आगल, आणद ए लीधौ रे।
सप्तम अग मै, शुद्ध पाठ प्रसिद्धो रे॥ १४ ॥
रीत एहिज राखणी, चिउं सग नै चारु रे।
टालोकड तणी, सग दूर निवारु रे॥ १५ ॥
ए रीत आराध्या, पामौ भव पारो रे।
श्रीजिन सीखडी, सरध्या सुख सारो रे॥ १६ ॥
सहु साध साधवी, वर हेत विशेषो रे।
रूडौ राखजो, धरणु नही द्वेषो रे॥ १७ ॥
बलि जिलौ न बाधणी, गुरु आण सुगांमी रे।
सीख प्रथम सही, दी भिक्खु स्वामी रे॥ १८ ॥
गुरु आज्ञा लोपी, बाधै जे जिल्लौ रे।
अति अविनीत ते, दियौ कर्मां टिल्लौ रे॥ १९ ॥
एकल सूई खोटौ, इसडौ अविनीतो रे।
तसु समभायनै, राखणी शुद्ध रीतो रे॥ २० ॥

चित्त समाधि रही घणी, म्हारा मन मझारो ए। हुशियारो ए।
या तीना रा साझ थी क। मु० ॥ ९ ॥
शिष्य सुविनीत हुवै सही, गुरु रै रहै आणदो ए। चित्त चदो ए।
देव जिनेंद्र दाखियौ क। मु० ॥ १० ॥
गुणग्राही एहवा गुणी, पूज्य भीखणजी पेखौ ए। दिल देखौ ए।
स्वाम गुणज्ञ सुहामणा क। मु० ॥ ११ ॥
ऐसी कीजै प्रीतडी, जैसी भिक्खु भारीमालो ए। सुविशालो ए।
सतजुगी टोकरजी सारिषी क। मु० ॥ १२ ॥
जोडी वीर गोयम जिसी, पवर स्वाम शिष्य प्रीतौ ए। हद रीतो ए।
चाल सखर चौथा तणी क। मु० ॥ १३ ॥
ए चौपनमी ढाल मैं, सखरौ कह्यौ सबधो। ए प्रबधो ए।
स्वाम भिक्खु नौ शोभती क। मु० ॥ १४ ॥

दुहा

साध श्रावक नै श्राविका, बहु सुणतां तिणवार।
सीखामण दै स्वामजी, हद सखरी हितकार॥ १ ॥
वीर जी मोक्ष विराजतां, बारु कियौ वखांण।
सोल्ह पहौर रे आसरै, सीख दीधी सुविहाण॥ २ ॥
इण दुखम आरा मझै, स्वाम भीखणजी सार।
प्रत्यक्ष श्री जिन नी परै, आखी सीख उदार॥ ३ ॥
सखर वृद्धि वाणी सखर, सखर कला सुखकार।
नीत सखर चित निरमलै, वचन वदै सुविचार॥ ४ ॥

ढाल : ५५

[आगे जाता अटवी आवै—ए देशी]

जिम मुझनै जाणता, म्हारी प्रतीतो रे।
निमहिज गखज्यो, भारमालजी री रीतो रे।
सीख स्वामी तणी॥ १ ॥
सहु सन्त सत्या रा, भारीमालजी नाथो रे।
आज्ञा आराधज्यो, मत लोपज्यो वातो रे॥ २ ॥
यारी आण लोपी नै, निकलै गण बारौ रे।
तसु गिणज्यो मति, चिहु तीर्थ मझारो रे॥ ३ ॥
यारी आण अराधै, सदा रहै सुविनीतो रे।
तसु सेवा करौ, ए जिन मत रीतो रे॥ ४ ॥

मैं पदवी आपी, भारलायक जाणी रे।
भारमल जी भणी, शुद्ध प्रकृति सुहाणी रे॥ ५ ॥
नीत चर्ण पालण री, भल ऋद्धष भारीमालो रे।
शक म राखज्यो, शुद्ध साधु नी चालो रे॥ ६ ॥
शुद्ध श्रमण सेवजो, अणाचारयां सूं दूरा रे।
सीख दोनूं धरचा, हुवै मुग्ति हजूरा रे॥ ७ ॥
अरिहत गुरु आज्ञा, लोपै कर्म जोगो रे।
अपछन्दा तिके, नही वदण जोगो रे॥ ८ ॥
उसन्ना नै पासत्था, कुशील्या प्रमादी रे।
अपछदा इणा, जिण आण विराधी रे॥ ९ ॥
यां नै वीर निषेध्या, ज्ञाता मै विशालो रे।
सग करणी नही, बांधी जिनपालो रे॥ १० ॥
आणंद लियौ अभिग्रहो, जिण गण थी न्यारूं रे।
तसु वांदू नही, पहली वचन उचारूं रे॥ ११ ॥
अन्यमति ना देव गुरु, अथवा जमाली रे।
तास नमू नही, नहिं वदू न्हाली रे॥ १२ ॥
बलि बिगर बोलाया, बोलण रौ नेमो रे।
आहार आपू नही, अभिग्रह लियौ एमो रे॥ १३ ॥
अभिग्रह जिन आगल, आणद ए लीधौ रे।
सप्तम अग मै, शुद्ध पाठ प्रसिद्धो रे॥ १४ ॥
रीत एहिज राखणी, चिउ सग नै चारु रे।
टालोकड तणी, सग दूर निवारु रे॥ १५ ॥
ए रीत आराध्या, पामौ भव पारो रे।
श्रीजिन सीखडी, सरध्या सुख सारो रे॥ १६ ॥
सहु साध साधवी, वर हेत विशेषो रे।
रूडौ राखजो, धरणु नही द्वेषो रे॥ १७ ॥
बलि जिलौ न बाधणौ, गुरु आण सुगामी रे।
सीख प्रथम सही, दी भिक्खु स्वामी रे॥ १८ ॥
गुरु आज्ञा लोपी, बाधै जे जिल्लौ रे।
अति अविनीत ते, दियौ कर्मां टिल्लौ रे॥ १९ ॥
एकल सूई खोटौ, इसड़ौ अविनीतो रे।
तसु समभायनै, राखणी शुद्ध रीतो रे॥ २० ॥

दिल देख देखनै, दीख्या शुद्ध दीजो रे।
वलि जिण तिण भणी, गण मै म मुडीजो रे॥ २१॥
श्रद्धा आचार री, कल्पसूत्र नो वोलो रे।
गुरु बुद्धिवंत री, राखी प्रतीत अमोलो रे॥ २२॥
कोई बोल न वैसै, केवलिया नै भलावी रे।
ताण कीजो मती, मन नै समभावी रे॥ २३॥
अपछंदै विण आज्ञा, नहि थापणी वोलो रे।
गुरु आज्ञा थकी, तीखी गण तोलो रे॥ २४॥
एक दो तीन आदि, निकलै गण वारो रे।
साध म सरधजो, शुद्ध सीख श्रीकारो रे॥ २५॥
इक आज्ञा मैं रहिजो, ए रीत परपर रे।
लिखत आगै कियौ, सहु धरजो खरा खर रे॥ २६॥
कोई दोष लगावी, वलि बोलै कूडी रे।
प्राछित ना लियै, तिणनै कर दीज्यौ दूरो रे॥ २७॥
शासण प्रवर्ताविण, सिख दीधी स्वामी रे।
और कारण नही, भल अन्तर जामी रे॥ २८॥
सुणता सुखदाई, स्वामी ना वोलो रे।
बहु सुणता कह्या, आछा नै अमोलो रे॥ २९॥
ऐसा स्वाम अनोपम, गण तारक ज्ञानी रे।
कहा कहियै, तसु बतका सुविहांनी रे॥ ३०॥
पचावनमी बारू, कहि ढाल रसालो रे।
बात सुणी वलि, जय जग सुविशालो रे॥ ३१॥

दुहा

सीखावण दी स्वामजी, आछी अधिक अनुप।
हलुकर्मी धारै हिये, सखरी सीख सद्रुप॥ १॥
नीर गगा ज्यूं निर्मला, पूज तणा परिणाम।
निर्मल ध्यान निकलक चित, समता रमता स्वाम॥ २॥
पद युवराज सु आदि मुनि, पूछा करै सुजोय।
अछै खेद सूं आपरै, स्वाम कहे नहिं कोय॥ ३॥
निर्मल चर्ण वर कर्ण निज, विमल सुधा सम बांण।
अमल दियै उपदेश अरु, सुणजो चतुर सुजाण॥ ४॥

ढाल : ५६

[सायर लैहर सू जाणै मीडक—ए देशी]

भारीमाल शिष्य भारी जी, आदि साधा भणी ।
स्वाम कहै सुविचारी जी, वाण सुहामणी ॥ १ ॥
परभव निकट पिछाणौ जी, दीसै मुझ तणु ।
मुझ भय मूल म जाणौ जी, हर्ष हियै घणौ ॥ २ ॥
घणा जीवा रै घट माह्यो जी, सम्यक्त रूपियौ ।
म्है बीज अमोलक बाह्यौ जी, मग ओलखावियौ ॥ ३ ॥
देश व्रत दीपायौ जी, लाभ अधिक लियौ ।
साधपणौ सुखदायो जी, बहु जन नै दियौ ॥ ४ ॥
म्हैं जोडा करी सूत्र न्यायो जी, शुद्ध जाणे सही ।
म्हारे मन रै माह्यो जी, उणायत ना रही ॥ ५ ॥
थे पिण थिर चित्त थापी जी, प्रभु पथ पालजो ।
कुमति कलेश नै कापी जी, आतम उजवालजो ॥ ६ ॥
रायचन्द ब्रह्मचारी नै जाणो जी, सीख दै शोभती ।
तू बालक छै बुद्धिमानो जी, मोह कीजै मती ॥ ७ ॥
ब्रह्मचारी कहै बाणो जी, शुद्ध वच सुदरु ।
आप करौ जन्म रौ किल्याणौ जी, हू मोह किम करू ॥ ८ ॥
बले स्वामी सीख दै सारो जी, सहु सता भणी ।
आराधजो आचारो जी, मत चूकौ अणी ॥ ६ ॥
इरिया भाषा उदारौ जी, अधिकी एषणा ।
वस्त्रादि लैता विचारौ जी, परठत पेखणा ॥ १० ॥
सखरी पाच सुमति जी, गुप्त गुणी धरौ ।
दय सत शील सुदती जी, ममता मत करौ ॥ ११ ॥
शिष शिषणी पर सोयो जी, उपग्रण ऊपरै ।
मुर्छा म कीजौ कोयो जी, प्रमाद नै परहरो ॥ १२ ॥
पुद्गल ममत प्रसगो जी, तन मन सू तजी ।
सजम सखर सुचगो जी, भल भावै भली ॥ १३ ॥
आछी सीख अनूपी जी, अति अभिराम जी ।
अमृत रस नी कुपी जी, दीधी स्वामजी ॥ १४ ॥
आखी ढाल उदारो जी, षट पचासमी ।
जय जश करण श्रीकारो जी, स्वामी मति समी ॥ १५ ॥

दुहा

सीख सखर दै स्वाम जी, हद वाणी हितकार।
स्वाम वचन सुणता छता, चित पामै चिमत्कार॥ १ ॥
समता खमता सखर चित, दमता रमता देख।
नमता जमता निमल मुनि, वमता वक्र विशेष॥ २ ॥
भव समुद्र तिरवा भणी, भिक्खु भलैंज भाव।
वृद्धि भाव हद वीर रस, जाणे तिरण री दाव॥ ३ ॥
वर वायक वाणी विमल, दायक अभय दयाल।
पद लायक भिक्खु प्रगट, नायक स्वाम निहाल॥ ४ ॥

ढाल : ५७

[धन धन जबू स्वामी न—ए देशी]

शिष भारीमाल सोहामणा, पर्म भक्ता पहिछाण हो। मुणद।
पण्डित मर्ण पेखी पूज री, बोलै एहवी वाण हो। मुणद।
धिन धिन भिक्खु स्वाम ने॥ १ ॥
धन धन निर्मल ध्यान हो मु०, धन धन पवर शूरापणु।
धन धन स्वामी नौं ज्ञान हो॥ २ ॥
सखर स्वाम ना सग थी, मन हुशियारी माहि हो। मु०।
अबै विरही पडै आपरां, जाणै श्री जिणराय हो॥ ३ ॥
प्रभु गोयम री प्रीतडी, चौथै आरै पिछाण हो। मु०।
प्रत्यक्ष आरे पचमै भिक्खु, भारीमाल री जाण हो॥ ४ ॥
तिण कारण भारीमालजी, आखी अल्प सी बात हो। मु०।
विरह तुमारौ दोहिलौ, जाणै श्री जगनाथ हो॥ ५ ॥
भिक्खु बलता इम भणै, थे सजम पालसौ सार हो।
निर अतिचारे निर्मली, होसौ देव उदारो हो॥ ६ ॥
महा विदेह क्षेत्र मझै, मुझ थकी मोटा अणगार हो।मु०।
अरिहत गणधर आद दे, देखजो तसु दिदार हो॥ ७ ॥
सतजुगी भाखै स्वाम नै, आप जाता दिसौ झड माहिं हो।मु०।
स्वामी कहै सुणो साधजी, चित्त मैं झड तणी नही चाहि हो॥ ८ ॥
सुख स्वर्गादिक ना सहु, पुदगल रूप पिछाण हो। मु०।
पामला सुख पोचा घणा, ज्यानै जाणू जैहर समान हो॥ ९ ॥

बार अनती भोगव्या, अधिका सुख अहमद हो। मु०।
तौ पिण नही हुवौ तृपती, तिण कारण ए सुख फद हो॥ १०॥
तिणसू म्हारै भंड तणी, बंछा नही लिगार हो। मु०।
मुझ मन एकत मोक्ष मैं, शाश्वता सुख श्रीकार हो॥ ११॥
वैरागी एहवा मुनिवरु, जाण्यो पुदगल जैहर हो। मु०।
स्वाम सम्बध सुण्या छता, आवै संवेग नी लैहर हो॥ १२॥
सखर सतावनमी सोभती, ढाल रसाल अपार हो। मु०।
स्मरण भिक्खु स्वाम नौ, जय जश कर क़रण श्रीकार हो॥ १३।

दुहा

सुख कारण तारण सुजन, कुगति निवारण काम।
विघन विडारण अति पवर, सीख समापी स्वाम॥ १॥
पडित मरण सुकरण पर, धरण आराधक धाम।
शिव बधू वरण रु तरण शुद्ध, पूज पर्म परिणाम॥ २॥
निर्मल नीत शुद्ध रीत नीज, पूज प्रथमहि पेख।
अत काल आया छता, बारू अधिक विशेष॥ ३॥
समय जाण स्वामी सखर, आलोवण अधिकार।
आतम शुद्ध करै आपरी, ते सुणजो विस्तार॥ ४॥

ढाल : ५८

[कोसी जल नहि भेदै तिम ज्यारे—ए देशी]

स्वाम भिक्खु तिण अवसरै रे, आउ नैडो आयो जाण।
करै आलोवण किण विधै रे, सखर रीत सुविहाण।
भविक रे भिक्खु गुण रा भडार॥ १॥
तस थावर जीवा तणी रे, हिंसा करी हुवै कोय।
त्रिविध त्रिविध कर तेहनौ रे, मिच्छामि दुक्कड़ मोय॥ २॥
क्रोध मान माया करी रे, लोभ वशे अवलोय।
झूठ लागो हुवै जेहनौ रे, मिच्छामि दुक्कड मोय॥ ३॥
अदत्त जे कोई आचर्यो रे, ज्यारा भेद अनेक सुजोय।
हद जिन आज्ञा लोपी हुवै रे, मिच्छामि दुक्कड मोय॥ ४॥
ममत धरी हुवै मैथुन सूं रे, सुता जागता सोय।
मन वचन काय माठा तणौ रे, मिच्छामि दुक्कड मोय॥ ५॥
परिग्रह नवूं प्रकार नौ रे, शिष्य शिष्यणी उपधि पर सोय।
त्रिविध २ ममता तणु रे, मिच्छामि दुक्कड मोय॥ ६॥

किणहि सूं क्रोध कियौ हुवै रे, वलि क्रोध वशे वच कोय।
करड़ी सीख किण नैं कही रे, मिच्छामि दुक्कड मोय॥ ७ ॥
मान माया लोभ मन में धर्यौ रे, दिल धरचा राग द्वेष दोय।
इत्यादिक पाप अठार नौ रे, मिच्छामि दुक्कड मोय॥ ८ ॥
राग कियौ हुवै रागी थकी रे, द्वेषी सू धरची हुवे द्वेष।
मन साचै हिवे माहरै रे, वर मिच्छामि दुक्कड विशेष॥ ९ ॥
पाचू आस्रव पाडुवा रे, लागी जाण्यौ किण वार।
सभाल सभाल स्वामी जी रे, आलोया अतिचार॥ १० ॥
पच सुमति तीन गुप्ति मै रे, पच महाव्रत मझार।
याद करे अतिचार नै रे, आलोवै भिक्खु अणगार॥ ११ ॥
सहु जीवाजोनि ससार मै रे, चउरासी लाख सुचिन्त।
ज्यारा भेद जू जूआ जाणजो रे, खमावू धर खत॥ १२ ॥
बडा शिष्य सुविनीत छै रे, अतेवासी अमोल।
आगै लैहर आई हुवै रे, खमावै दिल खोल॥ १३ ॥
बले सत अनै सतिया मझै रे, कैका नै करडा देख।
कठिण सीख कडवौ कह्यौ रे, खमावू सु विशेष॥ १४ ॥
श्रावक नैं बले श्राविका रे, केई कठिण प्रकृति रा कहाय।
कठिण वचन कह्यौ हुवै रे, खात करी नैं खमाय॥ १५ ॥
केई गण बारै निकल्या रे, साध साधवी सोय।
करडौ काठौ कह्यो हुवै रे, ज्या सूं खमत खामणा जोय॥ १६ ॥
चन्द्रभाणजी थली मझै रे, तिलोकचदजी ताम।
कहिजो खमत खामणा माहरा रे, त्यासू पडियौ बौहली काम॥ १७ ॥
चरचा कीधी चूप सू रे, घणा जणा सू बहु ठाम।
वच कठण कह्या जाण्या तसु रे, खमावै ले नाम॥ १८ ॥
केई धर्म तणा द्वेषी हुता रे, छिद्रपेही अध्यवसाय।
त्या ऊपर खेद आई तिका रे, सगला नै देऊ खमाय॥ १९ ॥
चऊ तीर्थ शुद्ध चलायवा रे, सीखामण देता सोय।
कठिन वचन जो कह्यौ हुवौ रे, मुझ खमत खामणा जोय॥ २० ॥
इण विध करी आलोवणा रे, गिरवा महा गुणवंत।
स्वाम भीखणजी शोभता रे, पदवीधर पूज महत॥ २१ ॥
एहवी आलोवण काना सुण्या रे, आवै अधिक वैराग।
करै त्यारी कहिवौ किसू रे, त्यारै माथै मोटा भाग॥ २२ ॥

अठावनमी शोभती रे, आखी ढाल सुऐन।
जय जग करण भिक्खु भला रे, चित्त सुणता पामै चैन ॥ २३ ॥

दुहा

इण विध करी आलोवणा, निर्मल निरतिचार।
स्वाम हुवा शुद्ध रीत सू, अब अणगण अधिकार ॥ १ ॥
भाद्र शुक्ल पंचम भली, सम्वत्सरी नौ सार।
स्वाम कियौ उपवास शुद्ध, चित्त उजल चौविहार ॥ २ ॥
अतुल तृषा नी ऊपनी, अधिक असाता आम।
सखर आण शूरापणौ, समचित सहिज स्वांम ॥ ३ ॥
पूज कियौ छठ पारणौ, औषध अल्प आहार।
पिण ते समौ न परगम्यौ, वमन हुवौ तिण वार ॥ ४ ॥
तिण दिन तीनू आहार ना, त्याग किया तहतीक।
पुदगल स्वरूप पिछाणियौ, निर्मल स्वाम निरभीक ॥ ५ ॥

ढाल ५९

[राजा राघव रायारा राय—ए देशी]

सातम आठम भिक्खु स्वाम जी, अल्प सो लियौ आहारो।
ततखिण त्याग कियौ मन तीखै, हद पूजरो मन हुशियारो।
भिक्खु स्वामी आप जिन मत अधिक जमायौ ॥ १ ॥
खेतसीजी स्वामी कहै खाच कर, तरकै न करणा त्यागो।
पूज कहै देही पतली पाडणी, बारु विशेष चाहिजै वैरागो ॥ २ ॥
भाद्र शुक्ल नवमी दिन भिक्खु, कहै करू आहार ना पचखाण।
कहै खेतसीजी मुझ कर केरौ, चर्म आहार लौ पिछाण ॥ ३ ॥
अल्प आहार खेतसीजी आणियौ, चाख किया पचखाणौ।
वारु मन राख्यौ शिष्य सुविनीत रौ, पिण बहुल इछा मत जांणौ ॥ ४ ॥
दशम दिन भारीमालजी विनवै, स्वामी आहार कीजै सुविहाणो।
चाली चावल दश मौठ रे आसरै, चाख किया पचखाणौ ॥ ५ ॥
इग्यारस आहार त्याग दियौ मुनि, अमल पांणी उपरतो।
मुझ हिव आहार लैतौ मत जाणजो, कह्यौ वयण अमोलक तंतो ॥ ६ ॥
बारस दिन बेलौ कियौ पूज, तीन आहार तणा किया त्यागो।
सखर संथारो कर्ण सूं स्वामी नौ, बारु चढतौ वैरागो ॥ ७ ॥
सांमली हाट सूं उठ मुनीश्वर, चलिया चलिया आयो।
पकी हाट नै पका मुनीश्वर, पकौ संथारौ सुहायौ ॥ ८ ॥

नयण शिष्या कीधी सुखदाई, वारु पूज लियौ विसरामो।
तनलै ऋष रायचन्दजी आयनै, रूडा वचन बदै अभिरामो॥ ९ ॥
स्वामी कृपा कीजै दर्शन दीजियै, वदै ब्रह्मचारी जी विख्यातो।
पूज स्हामु जोवे नेत्र खोलनै, हद मस्तक दीधौ हाथो॥ १० ॥
पूज नै कहै प्राक्रम हीण पडिया, ऋषराय तणी सुण वायो।
भिक्खु पहिला तन तोल त्यारी था, सुण सिह ज्यू उठ्या मुनिरायो॥ ११ ॥
भिक्खु कहै बोलावौ भारीमाल नै, बले खेतसीजी नै विचारो।
याद करताई सत दोनूंई, झट आय ऊभा है तिवारो॥ १२ ॥
नमोथुणो कियौ अरिहत सिद्धा नै, तीखै वच बोल्या तामो।
बहु नर नारी सुणता नै देखता, सथारौ पचख्यौ भिक्खु स्वामो॥ १३ ॥
शिष्य पर्म भग्ता कहै स्वामी नै, क्यू न राख्यौ अमल रो आगारो।
पूज कहै आगार किसौ हिवै, किसी करणी काया नी सारो॥ १४ ॥
भाद्रवा सुदि वारस भली, तिथी सोमवार सुविचारो।
अणशण आदर्यौ वैराग आणीनै, शुद्ध छेहली दुघडियौ सारो॥ १५ ॥
घणा जन आवता गुण गावता, वोलता बे कर जोडो।
धिन धिन हो थे मोटा मुनीश्वर, कीधी वडा वडेरा री होडो॥ १६ ॥
केई सनमुख आया नै प्रणमैं पाया, विकसत होवै विलास।
घात करीनै स्वामी नै खमावता, हिवडै आण हुलास॥ १७ ॥
धिन धिन पूज री धीरापणुं, धिन धिन पूजरो ध्यानो।
धिन धिन स्वाम शूरा घणा सदरा, मन कियौ मेरू समानो॥ १८ ॥
आसी ए गुणमठमी ओपती, शुद्ध ढाले स्वाम सथारो।
भव जग जग कर स्वाम भिक्खु नौ, स्मरण महा सुखकारो॥ १९ ॥

दुहा

कैसा अभिग्रह एहवौ कियौ, या शुद्ध मत काढ्यौ सार।
केई अणशण आवसी, पकी उतरसी पार॥ १ ॥
इन निज अभिग्रह आदर्यौ, भौला लोका ताम।
या सुणी नहै पचखियौ, अणशण भिक्खु स्वाम॥ २ ॥
द्वेषी था जिन धर्म ना, चित्त पांम्या चिमत्कार।
[illegible] ए मारग खरी, कई बादै वारूवार॥ ३ ॥
घणि नर नारी आवता, गावता मुनि गुणग्राम।
[illegible] माहि खमावता, सरावता धिन स्वाम॥ ४ ॥

ढाल : ६०

[राम को सुजश घणो--ए देशी]

स्वाम तणो संथारो सुणी हो, आवै लोक अनेक।
कोड करीनै करै घणा हो, बारु वैराग विशेष।
स्वामी नौ सुजश घणो ॥ १ ॥
कोई कहै सथारो सीझै स्वामी नौ हो, त्या लग कांचा पाणी ना त्याग।
कोई करै त्याग कुशील रा हो, वर चित आण वैराग ॥ २ ॥
केई अन्न आरम्भ नहिं आदरै हो, केई करै हरी ना पचखाण।
कैका रात्रि भोजन तज्यौ हो, इत्यादिक वैराग बखाण ॥ ३ ॥
केई धर्म तणा द्वेषी हुता हो, ते पण अचरज पाम्या तिणवार।
अनमी कई आवी नम्या हो, स्वाम तणै सथार ॥ ४ ॥
पडिकमणौ कीधा पछै हो, स्वाम भिक्खु सुविहाण।
भारीमाल आदि शिष्य भणी हो, कहै बारु करौ बखाण ॥ ५ ॥
शिष्य सुविनीत कहै सही हो, सथारो आपरै सोय।
बखाण नौ सू विशेष छै हो, तब पूज्य बोल्या अवलोय ॥ ६ ॥
किणहि आरजिया अणशण कियौ हुवै हो, तौ करौ बखाण त्या जाय।
मुझ अणशण माहैं देशना हो, नहि करौ थे किण न्याय ॥ ७ ॥
बखाण कियौ विस्तार सु हो, शिष्य सुविनीत श्रीकार।
भागबली भिक्खु तणौ हो, मिलियौ जोग उदार ॥ ८ ॥
परिणाम चढता पूज रा हो, इण विध निकली रात।
दिन तेरस हिव दीपतौ हो, प्रगटियौ प्रभात ॥ ९ ॥
गाम गाम रा आवै घणा हो, दर्शण करवा देख।
जाणक मेलौ मडियौ हो, बारु हर्ष विशेष ॥ १० ॥
गुण स्वामी ना गावता हो, आवता अति जन वृन्द।
हिवडै हर्ष हुलसावता हो, पामता परमानन्द ॥ ११ ॥
जश करमी था जीवडा हो, जय जश करता जन।
पर्म पूज मुख पेखनै हो, तन मन होय प्रसन्न ॥ १२ ॥
घुर ही थी धर्म छाणनै हो, शुद्ध मग लियौ सार।
अंत ताई उजवालियौ हो, जिन मारग जयकार ॥ १३ ॥
धोरी थे जिन धर्म ना हो, इम बोलै नर नार।
शूरपणै सखरौ कियौ हो, स्वामी थे संसार ॥ १४ ॥

ऐ साठमी गुण आगली हो, रूडी ढाल रसाल।
जय जश करण स्वामी तणो हो, वारु गुण विशाल ॥ १५ ॥

दुहा

पाणी पीधौ पूज जी, आफे चित उजमाल।
पौहर दिवस जाभौ प्रगट, आयौ थौ तिण काल ॥ १ ॥
साध बैठा सेवा करै, आणी हर्ष अपार।
श्रावक श्राविका स्वाम नो, देख रह्या दिदार ॥ २ ॥
भिक्खु ऋष शुद्ध भाव सूं, ध्यावत निर्मल ध्यान।
सकै तौ जाणूं स्वाम नै, ऊपनौ अवधि सुज्ञान ॥ ३ ॥
साध श्राविका होवै सही, वैमानिक विख्यात।
अवधिज्ञान तसु ऊपजै, आगम वचन आख्यात ॥ ४ ॥
दिन चढ्यौ पौहोर दौढ आसरै, सांभलता सहु कोय।
वचन प्रकाशै किण विधै, भल सुणियै भवि लोय ॥ ५ ॥

ढाल : ६१

हेमराज जी स्वामी कृत

[नमो अरिहताण नमो सिद्ध निरवाण—ए देशी]

साधु आवै साहमा जावौ, मुनि प्रकाशे वांण।
बले साधवियां आवै बारै, स्वामी बोलै वचन सुहाणं ॥
भवियण नमो गुरु गिरवाण, नमो भिक्खु चतुर सुजाणं ॥ १ ॥
कै तौ कह्यौ अटकल उनमानै, कै कह्यौ बुद्धि प्रमाण।
कै कोई अवधिज्ञाण ऊपनौ, ते जाणै सर्व नाण ॥ २ ॥
केई नर नारी मुख सू इम भाखै, स्वामी रा जोग साधां मै वसिया।
इतलै एक मुहूर्त्त आसरै, साध आया दोय तिसिया ॥ ३ ॥
विकसत विकसत साधु वादै, चर्ण लगावै शीश।
नर नारी जाणै अवधि उपनौ, साचौ विश्वावीसं ॥ ४ ॥
स्वामी साधु आया जाणी, मस्तक दीधौ हाथं।
एटलै दोय मुहूर्त्त आसरै, आयौ साधवियां रौ साथ ॥ ५ ॥
वेणीरामजी साध वदीता, साथै खुसाल जी आया।
साधवियां बगतुजी जुमा डाही जी, प्रणमैं भिक्खु पाया ॥ ६ ॥
परचा ज्यूं ज्यूं आय पुगै छै, नर नारी हर्षत थावै।
धिन हो धिन थे मोटा मुनीश्वर, आप तुलै कुण आवै ॥ ७ ॥

आया ते साधु गुण गावै, भात भात प्रणाम चढावै।
थे मोटा उपगारी महिमा भारी, सखरी सुजश सुणावै ॥ ८ ॥
थे पका पका पाखण्डी हटाया, सूत्र न्याय बताया।
दान दया आछी दीपाया, बुद्धिवता मन भाया ॥ ९ ॥
सावद्य निर्वद्य भला निवेड़ा, कीधा बुद्धि प्रमाणं।
सूत्र न्याय श्रद्धा शुद्ध लीधी, धारी अरिहत आण ॥ १० ॥
साधां जाण्यौ स्वामी सुता नै, घणी हुई छै वार।
आप कहौ तौ बैठा करा हिव, जब भरियौ काय हुकार ॥ ११ ॥
बैठा कर साधु लारै बैठा, गुण स्वामी रा गावै।
बहु नर नारी दर्शण देखी, मन मै हर्षत थावै ॥ १२ ॥
आयौ आऊखौ अण चिन्तवियौ, बैठा बैठा जाण।
सुखे समाधे बाह्य दिसत, चट दे छोड्या प्राण ॥ १३ ॥
अणशण आयौ सात भगत नौ, तीन भगत सथार।
सात पौहोर तिण माहैं वरत्या, पकौ उतास्यौ पार ॥ १४ ॥
माहडी सीवे दरजी पूगा, कहै सूई पग मै घाली।
अचरज लोक पाम्या अधिकौ, चट स्वामी गया चाली ॥ १५ ॥
सम्बत अठारै साठे वर्ष, भाद्रवा सुद तेरस मगलवार।
पूज पौहता परलोक शिरियारी, गुण गावै नर नार ॥ १६ ॥
दिन पाछलौ दौढ पोहर आसरे, उण वेला आऊखौ आयौ।
दिवसे मरवौ रात्रि जनमवौ, कहै विरला ने थायो ॥ १७ ॥

दुहा

सथारौ कीधौ सखर, सखर स्वाम श्रीकार।
शूरपणै सिझ्यो सखर, सखर सुजश ससार ॥ १ ॥
साधा तन वोसिरायनै, चिउ लोगस चित्त धार।
कियौ तदा शुद्ध काउसग्ग, अरु तिण दिन तज आहार ॥ २ ॥
पूज तणौ विरहौ पड्यौ, कठिन अधिक कहिवाय।
याद किया अरिहत नै, समभावे सुख पाय ॥ ३ ॥
अहो अथिर ससार ए, सजोग जठै विजोग।
पूज सरीषा पुरुष था, पौहता आज पर लोग ॥ ४ ॥
देख्या भिक्खु दिलकरी, बारु निसुणी वाण।
याद करै ते अति घणा, जन गुणग्राही जाण ॥ ५ ॥

चिउं तीर्थ आवी मिल्या, स्वाम तणै सथार।
मास भाद्रवा रै मझै, अचरज ए अधिकार॥ ६ ॥
प्रबल पुन्य ना पोरसा, प्रबल गुणागर जाण।
पूज हुंता प्रगट पणै, परभव कियो पयाण॥ ७ ॥

ढाल : ६२

[आनदा रे—ए देशी]

स्वाम सथारो सीझिया गुणधारी रे, म्हेल्या माढी रै माहिं। स्वाम सुखकारी रे।
तेरह खडी माहढी तणी गुणधारी रे, महिमा कीधी अथाय स्वाम सुखकारी रे॥ १ ॥
रुपया सैकडा लगाविया गुणधारी रे, अनेक उछाल्या लार भिक्खु रिष भारी रे। स्वा०।
ए सावद्य किरतब ससार ना गुणधारी रे, तिणमैं नही ततसार। स्वा०॥ २ ॥
बात हुई जिसी बरणवै गुणधारी रे, समभावे सुविचार। स्वा०।
तिण माहै पाप म ताणजो गुणधारी रे, दभ तजी दिलधार। स्वा०॥ ३ ॥
अति घन जन वृ द आविया गुणधारी रे, आदरै सूंस अनेक। स्वा०।
विविध वैराग वधावता गुणधारी रे, बारु आण विवेक। स्वा०॥ ४ ॥
पूज सथारो पेखनै गुणधारी रे, गावै जन गुण ग्राम। स्व०।
धिन धिन भिक्खु स्वामजी गुणधारी रे, नित्य प्रत लीजै नाम। स्वा०॥ ५ ॥
आदेज वचन सु ओपतौ गुणधारी रे, स्वामी सिघ सरूप। स्वा०।
खिम्यावत स्वामी खरा गुणधारी रे, सखरा स्वाम सद्रुप। स्वा०॥ ६ ॥
नीत स्वाम नी निरमली गुणधारी रे, प्रीत स्वाम गुण पूर। स्व०।
जीत लिया जन दुरमती गुणधारी रे, स्वाम वदती सनूर। स्वा०। ७ ॥
स्वाम बुद्धि ना सागरू गुणधारी रे, निरमल मेल्या न्याय। स्वा०।
प्रत्यक्ष आरै पाचमै गुणधारी रे, जिन मत दियौ जमाय। स्वा०॥ ८ ॥
उद्यमी स्वामी अति घणा गुणधारी रे, स्वाम सुमति सुखदाय। स्वा०।
स्वाम गुपति हद शोभती गुणधारी रे, निरमल स्वाम नरमाय। स्वा०। ६ ॥
मणिधारी स्वाम महा मुनि गुणधारी रे, स्वाम प्रबल संतोष। स्वा०।
जग तारक स्वाम जाणजो गुणधारी रे, पूरण स्वाम नौ पोष। स्व०। १० ॥
दिशावान स्वाम दीपतौ गुणधारी रे, अधिकी बुद्धि उत्पात। स्वा०।
मिथ्या तिमिर सुमेटवा गुणधारी रे, सूर्य स्वाम साख्यात। स्वा०। ११ ॥
सखर भिक्खु नाम साभली गुणधारी रे, पाखण्ड भय पामत। स्वा०।
जश भिक्खु नौ जगत मैं गुणधारी रे, देश देश मैं दीपत। स्वा०। १२ ॥
स्वाम तिलक शासन तणौ गुणधारी रे, स्वाम आज्ञा सु उवेख। स्वा०।
स्वाम समी हद शोभता गुणधारी रे, स्वाम दमीसर देख। स्वा०। १३ ॥

स्वाम सुदान दीपावियो गुणधारी रे, स्वाम सुज्ञान सरद्ध। स्वा०।
स्वाम सुजान शोभावियौ गुणधारी रे, स्वाम सुमान मरद। स्वा०। १४॥
द्रव्य भाव स्वाम देखाविया गुणधारी रे, स्वाम आस्रव ओलखाय। स्वा०।
पुन्य पाप नै परखनै गुणधारी रे, स्वाम दिया सरधाय। स्वा०। १५॥
स्वाम सवर अरु निरजरा गुणधारी रे, बंध मोक्ष पहिछाण। स्वा०।
स्वाम जीवादिक जूजुआ गुणधारी रे, स्वाम दिखाया सुजाण। स्वा०। १६॥
स्वाम दया ओलखायनै गुणधारी रे, अति घन कीध उद्योत। स्वा०।
स्वाम सावद्य निरवद्य सोधनै गुणधारी रे, घण घट घाली जोत। स्वा०। १७॥
शुभ जोगा नै स्वाम जी गुणधारी रे, ओलखाया हद रीत। स्वा०।
आसता स्वाम नी आदर्‌या गुणधारी रे, जाय जमारौ जीत। स्वा०। १८॥
इन्द्रीवादी ओलखावियौ गुणधारी रे, कर कालवादी निकद। स्वा०।
प्रज्यावादी पिछाणियौ गुणधारी रे, स्वाम साचेलौ चन्द। स्वा०। १९॥
आचार सरधा ऊपरै गुणधारी रे, स्वाम शोध्या शुद्ध न्याय। स्वा०।
सूत्र वच शिर धरी गुणधारी रे, व्रत अव्रत बताय। स्वा०। २०॥
सोध्या तौ लाधै नही गुणधारी रे, स्वाम सरीषा साध। स्वा०।
करड़ौ काम पड्या चरचा तणौ गुणधारी रे, आवैला भिक्खु याद। स्वा०। २१॥
स्वाम भीखण जी सारीखा गुणधारी रे, भरत क्षेत्र रे माहि। स्वा०।
हुआ नै होसी बले गुणधारी रे, हिवडा नहि देखाय। स्वा०। २२॥
ऐसा भिक्खु ऋष ओपता गुणधारी रे, याद करै नर नार। स्वा०।
पूज गुणा री पजारौ गुणधारी रे, स्वाम सकल सुखकार। स्वा०। २३॥
स्वाम तणौ नाम सम्भर्‌या गुणधारी रे, आवै हर्ष अपार। स्वा०।
तौ प्रत्यक्ष नौ कहिवौ किसू गुणधारी रे, पांमै तन मन प्यार। स्वा०। २४॥
शरियारी मै स्वामजी गुणधारी रे, साठै वर्ष सथार। स्वा०।
मास भाद्रवा मैं भलौ गुणधारी रे, जीत गर्भ मै जिवार। स्वा०। २५॥
पचम काले हू ऊपनौ गुणधारी रे, पिण इक मुझ हर्ष पर्म। स्वा०।
आप शुद्धमग धार्‌या पछै गुणधारी रे, जन्म थई पायौ धर्म। स्वा०। २६॥
आशा पूरण आप छौ गुणधारी रे, मेटण सकल सताप। स्वा०।
स्मरण नित्य प्रति स्वाम नौ गुणधारी रे, जपू तुम्हारौ जाप। स्वा०। २७॥
बासठमी ढाल ओपती गुणधारी रे, समर्‌या स्वाम सुजाण। स्वा०।
जय जश करण भिक्खु भला गुणधारी रे, पूरण प्रीत पिछाण। स्वा०। २८॥

दुहा

वरप तैयालीस विचरिया, जाभौ कांयक जोय।
चारित्र पाल्यौ चूप सू, हर्ष हियै अति होय॥ १ ॥
अधिकौ बल इन्द्रचा तणौ, निरमल देह निरोग।
भिक्खु सूरत अति भली, अरु तीखौ उपयोग॥ २ ॥
सखर चौमासा स्वाम ना, बारु अधिक विशाल।
साभलजो भवियण सहु, चरम सहित चौमाल॥ ३ ॥
आठ चौमासा आगै किया, असल नहि अणगार।
सतरा सू साठा लगै, वरत्यौ शुद्ध व्यवहार॥ ४ ॥
किहा किहा चौमासा किया, जूजुआ नाम सुजांण।
सक्षेपे निरणय सहु, आख् उज्भम आण॥ ५ ॥

ढाल ६३

[सीता आवै रे धर राग—ए देशी]

शहर कैलवै षट चौमासा, सतरै इकवीसै सोय।
पचीसै अडतीसै गुणपचासै, अठावनै अवलोय।
भिक्खु भजलै रे धर भाव॥ १॥
वारू एक चौमासौ बडलु, बरस अठारै विचार।
राजनगर वीसै शुद्ध रीते, कियौ घणौ उपकार॥ २ ॥
दोय चौमासा किया दीपता, पवर कटाल्यै पिछाण।
चौत्रीस अठावीसै चारू, जन्म भूमि निज जाण॥ ३ ॥
बगडी तीन चौमासा वारू, सतवीसै सुविशेष।
तीतं अरु छतीसै त्यां द्रव्य, दीख्या महोछब देख॥ ४ ॥
गढ रिणतभवर किलारी तलेटी, नगर माधोपुर न्हाल।
दोय चौमासा किया दीपता, इकतीसै अडताल॥ ५ ॥
दोय चौमासा किया दीपता, प्रगट शहर पीपार।
चउतीसै पैतालीसै वर्षे, कियौ घणौ उपगार॥ ६ ॥
एक चौमासौ शहर आवेट मैं, वर्ष पैतीसे विचार।
सैतीसै पादु सुखदाई, भिक्खु गुण भडार॥ ७ ॥
गोजन शहरै कियौ स्वामजी, वारु एक चौमास।
वर उपगार तेपनै धर्म वृद्धि, हेम चरण तिण वास॥ ८ ॥
श्री जी दुवारै तीन चौमासा, तसु धुर वरप तयाल।
पवर पचासै छपनै पूरण, वर उपगार विशाल॥ ९ ॥

पुर मै दोय चौमासा प्रगट, स्वाम किया सुविहांण।
सैतालीसै वर्ष सतावनै, जुओ छोडायौ जाण ॥ १० ॥
शहर खैरवै पाच चौमासा, छावीसै बतीसै छांण।
वर्ष इकतालै अरु छयालै, बलि चौपनै जाण ॥ ११ ॥
सात चौमासा पाली शहरै, तेवीसै तेतीसै थाट।
चालीसै चमालै बावनै, पचावनै गुणसाठ ॥ १२ ॥
सात चौमासा शरियारी मै, उगणीसै बावीसै सार।
गुणतीसै गुणाल वयाल एकावनै, साठै कियो सथार ॥ १३ ॥
पनरै गाम चौमासा पगट, स्वाम किया श्रीकार।
ज्ञान दिवाकर घण घट घाली, मेट्यौ भ्रम अन्धार ॥ १४ ॥
श्री वर्द्धमान तणौ शासण, सखरौ दीपायौ स्वाम।
बहु जीवा नै प्रतिबोद्धि नै, पोहता परभव ठांम ॥ १५ ॥
सुख कारण तारण भव सारण, विघन विदारण वीर।
नरक निवारण जनम सुधारण, सखरा स्वाम सधीर ॥ १६ ॥
समता दमता खमता रमता, नमता जमता न्हाल।
तमता भ्रमता वमता तन मन गमता वचन विशाल ॥ १७ ॥
आप उजागर गुणमणि आगर, साघर स्वाम सुजाण।
वयण सुधावागर धर्म जागर, नागरनाथ निध्यान ॥ १८ ॥
भरम विहंडन दुरमति खडन, महि मडन मुनिराज।
कुमति निकदन मन आनदन, पूज भवो दधि पाज ॥ १९ ॥
सुमती करण अघहरण स्वामजी, शिव वधू वरण सनूर।
भव दधि तरण करण सुख सम्पति, चरण धरण चित्त शूर ॥ २० ॥
परम धरम भज भरम करम तज, शरम नरम उभ साज।
शिव पद अचरम आप आराधण, रूडौ भिक्खु ऋषराज ॥ २१ ॥
वर वायक पद लायक बारु, नायक नाथ निहाल।
बोद्धि पमायक धरम बधायक, दायक स्वाम दयाल ॥ २२ ॥
ज्ञान गम्भीरा सखर सधीरा, षट पीहरा तज खार।
हिवडै स्वाम अमोलक हीरा, तोड जजीरा तार ॥ २३ ॥
जप तप नी तरवारे झटकौ, पाखण्ड पटकौ पैल।
समय सुलटकौ गुण नौ गटकौ, मटकौ मन कौ मैल ॥ २४ ॥
ऐसा भिक्खु आप औजागर, अवतरिया इण आर।
स्वाम जिसा चौथै आरै पिण, विरला संत विचार ॥ २५ ॥

जन्म किल्याण कटाल्यौ जांणौ, शरियारी चरम किल्यांण।
द्रव्य दीख्या महोछब बगडी मैं, जोडै ए त्रिहु जांण ॥ २६ ॥
स्वाम भिक्खु हिवडै सभरिया, हियो तन मन हुलसाय।
सूक्ष्म वृद्धि करी सुविचार्‍या, विमल कमल विकसाय ॥ २७ ॥
भाद्र शुक्ल तेरस दिन भिक्खु, परभव कियौ पयान।
तिथि चउदश धरती धूजी अति, न्याय जाणै बुद्धिवान ॥ २८ ॥
तीन प्रकारै धरती धूजै, ठाणाग तीजै ठाण।
भेद जूजुआ श्री जिन भाख्या, समझै सखर सयाण ॥ २६ ॥
घर मैं वर्ष पचीस आसरै, आठ भेष मै तास।
पछै सजम ले परभव पौहता, चमालीस मै वास ॥ ३० ॥
सर्व आउ सततर वरष आसरै, साध्यौ भिक्खु स्वाम।
जीव घणा समझाविया रै, कीधौ उत्तम काम ॥ ३१ ॥
साध साधवी स्वाम छता आसरै, एक सौ चार बोद्धि।
देशव्रत दीधौ बहु नै, सखरी रीत सुशोध ॥ ३२ ॥
अडती सहस आसरै कीधी, युक्ति न्याय सूं जोड।
मुरधर मेवाड ढूढार हाडोती, विचर्‍या शिरमणि मौड ॥ ३३ ॥
राम नाम ज्यू रटै स्वाम नै, मुझ मन अधिक निहोर।
हसा मानसरोवर हरषै, चित्त जिम चन्द चकोर ॥ ३४ ॥
चात्रक मोर पपईया घन चिन, गरजी ध्यान गगन।
राग विलासी राग अलापै, मुझ भिक्खु नै मन ॥ ३५ ॥
पतिवरता समरै जिम पिउ नै, गोप्या रै मन कान्ह।
तबोली रा पान तणी पर, धरूं स्वाम नौ ध्यान ॥ ३६ ॥
आशा पूरण आप तणा गुण, कह्या कठा लग जाय।
सागर जल गागर किम मावै, किम आकाश मिणाय ॥ ३७ ॥
श्री वीर तणै पट स्वाम सुधर्मा, भिक्खु पट भारीमाल।
रायचद ऋप तीजै पाटै, दाख्यौ आगुच दयाल ॥ ३८ ॥
आप तणा गुण हू किम विसरू, आप तणौ आधार।
स्मरण आप तणी नित्य समरू, आप दयाल उदार ॥ ३६ ॥
नाम आपरौ घट भीतर मुझ, जपूं आपरौ जाप।
तुझ नामै दुख दोहग दूरा, कटै पाप सताप ॥ ४० ॥
मन वछित मिलियै तुझ स्मरण, साध्या सेती सोय।
भजन तुम्हारी भय भव भजन, हर्ष अनोपम होय ॥ ४१ ॥

मन्त्राक्षर जिम स्मरण मोटौ, परख्यौ म्हैं तन मन ।
इहभव परभव मे हितकारी, भिक्खु तणौ भजन ॥ ४२ ॥
नमो नमो भिक्खु ऋष निरमल, मोक्ष तणा दातार ।
स्मरण स्वाम तणौ शुद्ध साध्यां, शिव सुख पामैं सार ॥ ४३ ॥
हूंस घणा दिन सूं मुझ हुती, आज फली मन आश ।
भिक्खु जश रसाकण नामै, ग्रंथ रच्यौ सुविलास ॥ ४४ ॥
विस्तार रच्यौ भिक्खु मुनिवर नौ, सुणियौ तिण अनुसार ।
भिक्खु दृष्टान्त हेम लिखाया, देखी ते अधिकार ॥ ४५ ॥
वैणीरामजी हेम कृत वर, भिक्खु चरित सुपेख ।
इत्यादिक अवलोकी अधिकौ, ग्रंथ रच्यौ सुविशेष ॥ ४६ ॥
अधिकौ ओछौ जे कोई आयौ, विरुद्ध आयौ हुवै कोय ।
सिद्ध अरिहंत देव री साखे, मिच्छामि दुक्कड मोय ॥ ४७ ॥
सबत उगणीसै आठै आसोज, एकम सुदि सार ।
शुक्रवार ए जोड रची, बीदासर शहर मझार ॥ ४८ ॥
तेसठमी ढाले स्वामी समस्या, कर्म काटण रै काम ।
कर जोडी ऋष जीत कहै, नित्य लेऊं तुम्हारी नाम ॥ ४९ ॥

कलश

मतिवंत संत महंत महा मुनि, तंत भिक्खु ऋष तणा ।
गुण सघन गाया परम पाया, हद सुहाया हियै घणा ॥ १ ॥
तज जंत्र मंत्र सुतंत्र लौकिक, भज ए मंत्र मनोहरू ।
सुख सद्म पद्म सुकरण जय जश, नमो भिक्खु मुनि वरू ॥ २ ॥

: ४ :

लघु भिक्खु जश रसायण

[चतुर्थाचार्य जीतमलजी स्वामी कृत]

दुहा

वीर पाट सौधर्म वर, जंबू प्रभव उदार।
भट्ट सिज्झंभव मनकपिय, जशोभद्र जयकार ॥ १ ॥
जसोभद्र ना सीस बे, सभूत विजय सुजाण।
भद्रबाहु मुनिवर भला, सोल स्वपन कृत छाण ॥ २ ॥
स्थूलभद्र दढ चित रह्या, ए चउदश पूर्व्वधार।
महागिरी सुहस्त फुन, गोत्र एलावच्छसार ॥ ३ ॥
सुद्ध परंपरा महागिरी, नंदी नाम उदार।
बहुल प्रमुख पट दूसगणी, अंत नाम अवधार ॥ ४ ॥
सप्रति नै समझावीयौ, सिथिल थया सुहस्त।
कृतगढ अनेषणी प्रमुख, दोष विषै आशक्त ॥ ५ ॥
महागिरी समझावीयौ, तब बोल्या इम वाय।
काल आगामिक नै विषै, धर्म प्रवर्त्तस्यै ताय ॥ ६ ॥
दुर्भिक्ष मे मुनिवर भणी, जन देस्यै अनपाण।
आहार पाणी तब तोडीयौ, नशीतचूरणे जाण ॥ ७ ॥
सुहस्त पट सुस्थिति जे, कोडिवार जे ताहि।
सूर मत्र जपवा थकी, कोटिक गच्छ कहिवाहि ॥ ८ ॥
सुहस्त परपाटी थई, तेह असुद्ध जणाय।
कल्पसूत्र मै नाम तसु, वलि बहुश्रुत जाणै ताय ॥ ९ ॥
आरंभी सुहस्त थी, सुस्थित सुप्रतिबद्धाद।
अनुक्रम श्रेणज नीकली, नंदीवृत्ति सवाद ॥ १० ॥
सुहस्त पाछा सुद्ध हुवा, सुघ परिपाटी आय।
ते पिण जाणै केवली, वंदे नदी माय ॥ ११ ॥
प्रश्नोतर रत्न मालिका, ग्रथ कथा मै ख्यात।
सुहस्ति दंड ले सुद्ध थया, एह मिलती दीसै बात ॥ १२ ॥
वज्रस्वाम नदी विषै, सुघ परिपाटी पट्ट।
कल्पसूत्र पिण नाम तसु, असुद्ध परंपर वट्ट ॥ १३ ॥

नदीसूत्र विषै कथा, ते अनुसारे ताय।
धुर परिपाटी असुध में, द्रव्यै चरण जणाय ॥ १४ ॥
पछै सुध दिष्या ग्रही, सुध परिपाटी पट्ट।
एहवी न्याय जणाय छै, बहुश्रुत वदै सुवट्ट ॥ १५ ॥
नदी स्थिरावली विषै, दूसगणी अभिधान।
अत नाम ए आखीयो, पाछै न कह्यौ जान ॥ १६ ॥
कल्पसुत्र मै पिण कह्यौ, दूसगणि नो नांम।
थया हुवै ए वज्र जिम, ते पिण जाणे केवली तांम ॥ १७ ॥
तथा वज्र पिण बे थया, दूसगणि पिण दोय।
ते पिण जांणे केवली, निश्चै खबर न कोय ॥ १८ ॥
कल्पसूत्र मै इम कह्यौ, दूसगणि पट ताहि।
क्षमाश्रमण स्थिरगुप्त जे, वच्छस गोत्रज पाहि ॥ १६ ॥
कुमार धर्म थया पछै, पछै देवढ्ढी नाम।
पछै नाम नही आखिया, कल्प विषै पिण ताम ॥ २० ॥
कल्प विषै शाखा घणी, आखी छै त्या माहि।
चरणधार केई सुद्ध हुवै, ते पिण जांणै केवली ताहि ॥ २१ ॥

ढाल : १

[सीता सती सुत जनमीया—ए देशी]

वीर निर्वाण थकी रह्यौ, प्रवर पूर्व नौ ज्ञान।
एक सहंश्र वर्सां लगै, सतक वीस मे जान ॥ १ ॥
सवत पनरैसै तदा, वर ईकतीसै वाश।
भसमग्रह उतर्‍यां पछै, लूको प्रगट्यौ तास ॥ २ ॥
धूमकेतु वेठौ तदा, दश वर्षां पहला दीस।
तास स्थिति वर्प तीन सौ, ऊपर फुन तेतीस ॥ ३ ॥
भवग्रह स्थिति वे सहस्र वर्ष नी, उतरीयां सुं ताहि।
उदै उदै पुजा निग्रथ नी, कल्पसुत्र मे वाय ॥ ४ ॥
वकचुलीया मे कह्यौ, प्रभु सिव थी पेष।
वे सौ एकाणव वर्षा लगै, विसुद्ध परुपणा विशेष ॥ ५ ॥
ता पाछै उतसूत्र नी, परुपणा अधिकाय।
वप सोलसौ ऊपरै, निनाणूं लग ताय ॥ ६ ॥

तिहां दुष्ट वाणीया मानस्यै, हिंसा धर्म दिढाय।
बहु जन भणी कुपथ मे, न्हाखेसी इधकाय॥ ७॥
बे सौ एकाणव वर्ष लगै, सुध परुपणा ष्यात।
सोलेसै निनाणुं वर्ष ए, असुद्ध असुद्ध अधिक अवदात॥ ८॥
ए उगणीसौ नेउ थयां, सघ सूत्र जे रासि।
धूमकेतु तब बैसिस्यै, स्थिति त्रिण सय तेतीस वासि॥ ९॥
ए वर्ष तेवीसै तेवीस जे, तठा पछै अधिकाय।
उदय संघ नै सूत्र तणौ, वंकचूलीया मे वाय॥ १०॥
वर्ष तेवीसौ तेवीस ए, किसा वर्ष लग थाय।
तेह तणौ निर्णय कहुं, सांभलजो चित ल्याय॥ ११॥
च्यार सो सित्तर वर्ष लगै, नदीवर्द्धन नौ सोय।
संवत वरत्यौ तठा पछै, वीर विक्रम नौ जोय॥ १२॥
अठारै सय तेपनै थया, वर्ष तेवीसौ तेवीस।
धूमकेतु जद उतरयौ, सघ पुजा अति दीस॥ १३॥
द्वादश मुनि था तेपनै, स्वाम भिक्खू रै जोय।
तब हेम हुवा मुनि तेरमा, पछै न घटीयौ कोय॥ १४॥
बेसौ एकाणु वर्षां लगै, सुध परुपणा किण न्याय।
सहस्र वर्ष पूर्वधर रह्या, ते तौ सुध देषाय॥ १५॥
विसभोग सुहस्त थी, नसीतचूरणे न्हाल।
उतसूत्र तास परपरा, पूर्वधर तिण काल॥ १६॥
छ सौ नव वर्षां पछै, दिगबर मत देष।
इम पूर्व ज्ञानी थका, विरुद्ध पण शेष॥ १७॥
इम बैसौ एकाणुं लगै, अति उतसूत्र न थाय।
पाछै उतसूत्र तणी, परुपणा अधिकाय॥ १८॥
सोलैसै निनाणु वर्ष ते, अति उतसूत्र कुहेतु।
ए उगणीसै नेउ थया, बेठौ ग्रह धूमकेतु॥ १९॥
पनरसै इकतीसै समै, लुकौ प्रगट्यो न्हाल।
भस्मग्रह तब उतरयौ, धूमकेतु वय बाल॥ २०॥
लूका नां प्रतिबोधिया, सुध ववहार जणाय।
धूमकेतु बल बाधीया, ते पिण ढीला थाय॥ २१॥
सतरैसै नवकै समै, ढुढया नीकल्या ताहि।
संकडाइ माहै ते रह्या, सम्यक्त दीसै नाहि॥ २२॥

समत् अठारै सत्तरोत्तरै, पचाग लेखे सुजाण।
वय वृध धूमकेतु थया, प्रगट्या भीक्खू भाण॥ २३॥
मदवल धूमकेतु जदा, लूको प्रगट्यौ ताम।
ऊतरतै मदबल तदा, प्रगट्या भिक्खू स्वाम॥ २४॥
तेर सत सु नीकल्या, धूमकेतु थौ तिवार।
तिणसू तेपनां लग, बहु वध्यौ न सघ विस्तार॥ २५॥
अत तेपनै उतर्यौ, धूमकेतु अपयोग।
ता पाछै वाध्यौ बहु, च्यारु सघ प्रयोग॥ २६॥
अठारैसै साठै समै, एकवीस मुनि योग।
अज्जा सतावीस मेलनै, पोहता भीक्खू परलोग॥ २७॥
समत अठारै अठंतरै, सत पैंतीस सुचाल।
अज्जा इकतालीस मेलनै, परभव भारीमाल॥ २८॥
उगणीसै आठै समै, सतसठ मुनिराय।
इकसौ चमालीस अज्जामेल नै, परभव मै ऋषराय॥ २९॥
भीक्खु नै वरतारै थया, सत सती सुषकार।
एकसौ च्यार रै आसरै, दीष्या लीधी सार॥ ३०॥
मुनी अज्जा वैयासी थया, भारीमाल वरतार।
थया वेसी पैंतालीस, रायऋषी छतां सार॥ ३१॥
इम दिन दिन दीसै दीपतौ, च्यार तीर्थ वृद्धकार।
वकचुलीया री वारता, मिलती दीसै उदार॥ ३२॥
प्रथम ढाल मै पीठका, धुर सु वात प्रकासी।
सुध श्रद्धा आचार सु, जयजश आनन्द थासी॥ ३३॥

दुहा

हिव उत्पति भीक्खू तणी, धुर सेती अवलोय।
सक्षेपै कहियै अछै, साभलजो सहु कोय॥ १॥
किण स्थानक मुनि जनमीया, द्रव्य दिष्या किण ठाम।
सुध श्रद्धा आई किहा, सुत्र थकी अभिराम॥ २॥
किम चरचा द्रव्य गुरु थकी, आहार तोड्यौ किण ग्राम।
किम वहुजन प्रतिबोधीया, च्यार तीर्थ गुणधाम॥ ३॥
लिपन मर्यादा किम करी, सलेपणा किम अत।
किण विध संथारी कियौ, सहु सक्षेप कहत॥ ४॥

ढाल : २

(राजग्रही नगर भली ए—ए देशी)

भिक्खू प्रगट्या भरत मैं, मणिधारी मुनिराय।
अतिसय धारी ओपता, जबर दिशा अधिकाय।
सुगण जन साभलो रे॥ १॥
दान दया दिक ऊपरै, दीया विविध दृष्टात।
श्रीजिन आज्ञा सिर धरी, दीपायौ प्रभु पथ॥ २॥
सावज्भ निरवद सोधीया, ऊंडी बुद्धि उत्पात।
भाग्यबली भिक्खू भला, वारु जश सुविष्यात॥ ३॥
समत सतरै बयासीयै, शहर कटाल्यै सार।
सीह सपनै सुत जनमीयै, आसाढ सुध अधिकार॥ ४॥
रमण एक परण्या तिहा, काल कितै सुविचार।
शील आदर्‍यौ बिहु जणा, दिष्या री दिलधार॥ ५॥
अनुमत माता ना दीयै, सुपनै देष्यौ सीह।
द्रव्य गुरु कहै ए गूंजसी, मृगपति जेम अबीह॥ ६॥
समत् अठारै आठै समैं, द्रव्य गुरु धार्‍या रुघनाथ।
दिष्या मोहछब दीपता, बगडी शहर विष्यात॥ ७॥
बहु सिद्धांत वाचीकरी, जाण लीयौ तिण वार।
थाप बहु दोषा तणी, पिण द्रव्य गुरु सूं अति प्यार॥ ८॥
पूछ्यां सुद्ध उत्तर नही, इह अवसर रै माय।
बात सुणी रुघनाथजी, कहै भिक्षु नै बोलाय॥ ९॥
श्रावक रायनगर तणा, वंदणा छोडी ताहि।
थे जइ सका मेट दौ, बुधिवत विण मिटै नाहि॥ १०॥
सुण भिक्षु आया तिहा, भारीमालजी जांण।
टोकरजी हरनाथजी, वलि साथै वीरभाण॥ ११॥
श्रावक कहै भिक्षु भणी, आधाकर्मी आदि।
थाप दोष री थांहरै, म्हे किम सरधा साध॥ १२॥
द्रव्य गुरु री वच राषवा, निज बुद्धि करनै ताय।
पगां लगाया तेहनै, वलि श्रावक कहै वाय॥ १३॥
सका तौ मुज ना मिटी, पिण थारी परतीत।
तिण कारण वदना करा, आप वैरागी वदीत॥ १४॥

इह अवसर भिक्षु तणै, तनु में प्रगट्यौ ताप।
सीयौ दु सह अति घणौ, तव मन चिंते आप ॥ १५ ॥
म्हे साचा नै भूठा कीया, प्रत्यक्ष मोटो पाप।
आउ आवै इण अवसरै, तो कुण गति में मिलाप ॥ १६ ॥
द्रव्य गुरु काम आवै कदी, मिटीया वेदन मोय।
सुध मारग धारू सही, काण न राखूं कोय ॥ १७ ॥
अभिग्रह एहवौ आदर्यो, तुरत मिट्यो तत्र ताव।
वार वार सूत्र वाचीया, सपरी जाण्यौ साव ॥ १८ ॥
सुद्ध हाथे नाइ श्रद्धा, असल नही आचार।
वर जिन वचन बिलोकता, भूला ए भेपधार ॥ १९ ॥
ताम श्रावका नै तदा, वोल्या भिक्षू वाय।
थे साचा सुद्ध थापथी, म्हे भूठा छा तायि ॥ २० ॥
सुण श्रावक हरख्या सही, आप तणी परतीत।
जिसी हुती ते तुरत ही, आप दिखाडी सुरीत ॥ २१ ॥
इम सवत अठार पनरोत्तरै, राजनगर मैं रंग।
सुत्र वाच निर्णय कीयौ, सखरी रीत सुचग ॥ २२ ॥
हिव चउमासौ ऊतर्या, मरुधर देश मझार।
सोजत मै आवी मिल्या, द्रव्य गुरु सू तिण वार ॥ २३ ॥
द्रव्य गुरु नै इह विध कहै, भूला मार्ग सार।
सुध सरधा आइ नही, असल नही आचार ॥ २४ ॥
सावज करणी पाप री, निरवद पुन री होय।
पिण एकण करणी मझै, पुन्य पाप नही दोय ॥ २५ ॥
असजती नै दान दै, जिन कह्यौ एकात पाप।
शतक आठ मै भगवती, स्थिर चित सेती थाप ॥ २६ ॥
असजती रौ जीवणौ, वंछ्या सावज जोग।
सावज अनुकपा कही, देख रे दे उपीयोग ॥ २७ ॥
आधाकर्मी भोगवा, थानक नित पिंड आहार।
मोल लीया वस्त्रादि जे, अहोनिश जडी कवाड़ ॥ २८ ॥
इत्यादिक बहु वारता, दाखी विविध प्रकार।
द्रव्य गुरु सुण मानी नही, क्रोध चढ्या तिणवार ॥ २९ ॥
जद भिक्खू मन चिंतवै, करिवौ कवण प्रकार।
हिवडा न दीसै समभता, समजावि धर प्यार ॥ ३० ॥

दोय वर्ष कै आसरे, किया अनेक उपाय।
केतलायक नै सयजायवा, द्रव्य गुरु नै पिण ताहि ॥ ३१ ॥
वले वगडी माहै आवीया, बोल्या भिक्षु वाय।
सुध सरधा आचार नै, धारौ आंण उछाह ॥ ३२ ॥
तब द्रव्य गुरु मानी नही, मन मे कीयो विचार।
ए तौ न दीसै समजता, हिवै करू आत्मा नौ उधार ॥ ३३ ॥
इम मन पक्की धारनै, भिक्षु बुधि भडार।
तडकै तोडी नीकल्या, आया स्थानक रै बार ॥ ३४ ॥
सेवग पुर मै फिर गयौ, बोल्यो एहवी वाण।
जागा दीधी भिक्षु भणी, तौ सघ तणी छै आण ॥ ३५ ॥
करली कुबुधिज कैलवी, सेज्या न मिल्या सोय।
आफेई आसी उरहा, थानक मै अवलोय ॥ ३६ ॥
पुर मै जागा ना मिली, भिक्षु कीयौ विहार।
वगडी बाहिर आवीया, वाउल वाजी तिवार ॥ ३७ ॥
जैतसिहजी री जिहा, छतरी अधिक उदार।
आवीनै बैठा तिहा, सुणीयौ शहर मझार ॥ ३८ ॥
दूजी ढाल प्रगटपणै, स्वाम तणी सुषदाय।
वारु वतका साभल्या, जयजश हरष सवाय ॥ ३९ ॥

दुहा

द्रव्य गुरु साभलीयौ तदा, लोक बहु ले लार।
आया छत्र्या नै विषै, भीक्षु कनै तिवार ॥ १ ॥
द्रव्य गुरु नै भिक्षु तिहा, बैठा छत्र्या माहि।
माहोमा वाता करै, ते सुणजो चितल्याय ॥ २ ॥

ढाल : ३

[हारा मेवासी नन्ही सी नणदोलीरा—ए देशी]

हां रे, भीषन तब द्रव्य गुरु बोल्या ताह्यौरा हो।
जी भिक्खू द्रव्य० सुण मुज वायौरा २। सुण वारुजी।
हा, रै भीखन तोनै म्है, दीधी छै दीष्यारा।
हो जी, भिक्खू० घर मुज शिष्यारा २, । सुण वारु जी ॥ १ ॥
हा, औ दुखम पचम आरौ रा, हो अधिक असारौरा २।
हा, थारै दृढ सजम सु पेमौरा, हो भिक्खू २ निभै लो केमौरा २ ॥ २ यत ॥

यतनी

तव भीक्षु बोल्या ताह्यौ, म्है किम माना तुज वायौ।
सुत्र वाचैनै कीधौ निरणौ, लेसा जिन वचना नो सरणौ ॥ ३ ॥

सूत्र रूप तीर्थ ए जाचौ, रैहसी छेहडा तांई साचौ।
सुध पालसा संजम भार, करस्यां आत्म तणौ उवार ॥ ४ ॥
द्रव्य गुरू सुण वचन उदार, तव तूटी आस तिवार।
मोह आयौ तिणवार, मन चिंता हुई अपार ॥ ५ ॥
उदैभाण बोल्यौ तब एम, इम आसुं पचकरौ केम।
बाजो टोला तणा धणी आप, राखौ थिर चित दृढ मन थाप ॥ ६ ॥
कहै किणरौ जावै एक, म्हारा जावैं पांच विशेष।
औ तौ प्रत्यक्ष ही इहवार, गण माहै पडै बघार ॥ ७ ॥
भीक्षु दृढ चित कीयौ उदार, म्है घर छोड्यौ तिणवार।
मुज माता रोई अपार, तो पिण न मान्यौ तिवार ॥ ८ ॥
जो हुं रहु भागला माय, तौ परभव में दुख पाय।
इम दृढ चित ज्ञान विचार, आप सैठा रह्या तिणवार ॥ ९ ॥
द्वेष सूं तो तुरत डिगै नाहि, मोह राग थकी चल जाय।
द्रव्य गुरु मोह आण्यौ ताहि, पिण कारी न लागी काय ॥ १० ॥

दुहा

वलि द्रव्य गुरु मन चिंतवै, इम तौ डिगीयौ नाय।
वलि चलावा कारणै, बोल्या इह विधि वाय ॥ ११ ॥

ढाल तेहिज

हारे, तु जासी कितीयक दूरीरा हो, हूं लोक लगासूं पूरीरा २।
हां आंगो थारौ नै पूठौ माहारौरा हो२, रहि सूं लारीरा २ ॥ १२ ॥

यतनी

जद भिक्षु बोल्या वाय, परिषह खमवारी मन माय।
इम तौ डरायौ न डरूं कोय, किती काल जीवणौ मोय ॥ १३ ॥
पछै छत्र्यां सुं कियौ विहार, हुवा रुघनाथजी लार।
चरचा किधी है वरलू माहि, ते सांभलजो चितल्याय ॥ १४ ॥
तब द्रव्य गुरु बोल्या ताय, साभल भीखन मुज वाय।
साधुपणौ पलै नही पूरौ, ए दुषम काल करूडौ ॥ १५ ॥
तब भिक्षु कहै इम वाय, कह्यौ सुत्र आचारंग माहि।
ढीला भागल कहैसी एम, हिवडां न पलै चरण सुध नेम ॥ १६ ॥
बल संघयणादिक हीण, दुषमकाल महा क्षीण।
न पलै आचार सुध भाव, नही उत्सर्ग नौ प्रस्ताव ॥ १७ ॥
कह्यौ आगूच अर्थ उदार, इम कहसी ते भेषधार।
द्रव्य गुरु हुवा कष्ट अपार, सध जाब न आयौ तिवार ॥ १८ ॥

द्रव्य गुरु भीक्षु रैं ताहि, बहु चरचा हुई माहो माहि।
इहा सक्षेप मात्रज आषी, वलि द्रव्य गुरु इह विधि भाषी॥ १९॥

ढाल तेहिज

हारे, सुद्ध चारित्त निरतीचारो रा हो, दुक्कर कारोरा २। हारे।
जो दोय घडी निरदोषौरा होजी २, चारित्र पालै चौषौरा २॥ २०॥
हां, इम सुध तन मन सु भावै हो २, तो केवल पावैरा २॥ २१॥

यतनी

हां, इम बोल्या है विना विचार, भीक्षु साभल नै तिणवार।
पाछौ उत्तर देवे एम, तुम्हे सांभलजौ घर प्रेम॥ २२॥

कलश

इम वचन सुन झट सुघट, सुध वट प्रगट भिक्षु उच्चरे।
घटिकां जु बे सुध चरण, निर्मल अमल करि केवल वरै॥ २३॥

बे घड़ी तलक वक्र काय, नाशा रूध समभावे रहु।
थिर चित्त अधिक पवित्त, अति हित चितथी केवल लहू॥ २४॥

सौधर्म जबु मुनि रह्या, छद्मस्थ बहु वर्षे सही।
सुध निरतीचार बे घडी, त्या चरण पाल्यौ कै नही॥ २५॥

तसु पट्ट प्रभव सिजभवादिक, पूर्व ज्ञान जपावही।
तुज लेख सुद्ध चरित्त, त्या पिण बे घडी पाल्यौ नही॥ २६॥

मुनि तेर सहस्रज नै तीनसय फुन रह्या, जे छद्मस्थ ही तुज लेख।
सुद्ध चरित्त त्या पिण, बे घडी पाल्यौ नही॥ २७॥

मुनि गौतमादिक सप्तसय, छद्मस्थ जे बहु काल ही।
तुज लेख सुद्ध चरित्त, त्या पिण बे घडी पाल्यौ नही॥ २८॥

फुन वर्ष द्वादश तेर पष, महावीर प्रभू छद्मस्थ ही।
तुज लेख सुद्ध चरित्त, त्या पिण बे घडी पाल्यौ नही॥ २९॥

सोरठा

ए चर्म सरीरी जेह रे, केवल उत्पत्ति काल थी।
बहु पूर्व कालेह रे, स्यू दोय घडी पाल्यौ नथी॥ ३०॥

दुहा

इत्यादिक हुई घणी, चरचा माहोमाहि।
समजाया समजै नही, कीया अनेक उपाय॥ ३१॥

ढाल तेहिज

हांरे सुगणजन वरलूं सुं, कियौ विहारो रा हो जी स्वामीर।
भीक्षु सारोरा जश भारी जी हा रे सु०, वृद्ध भीक्षु नी भारी रा हो स्वामी २।
अधिक उदारीरा २। ज०॥ ३२॥

हारे, भिक्षु चितव्यौ मन माहिरा। हो हो स्वाम २, ए तौ समज्या नांहीरा २।
हारे, निज काका गुरू तामोरा हो २, जैमलजी नामोरा। ज० ॥ ३३ ॥
हारे, ते समजाउ सधीकोरा हो २, ते सरल भद्रीकोरा २।
हारे, इम चिंतव मन माहीरा हो २, आया चलाईरा २॥ ३४ ॥
हारे, जैमलजी रै उदारीरा हो २, श्रद्धा बैसारीरा २।
हारे, तत्क्षिण भिक्षु रै लारी रा हो, ते पिण हुवा त्यारी रा २॥ ३५ ॥
हारे, द्रव्य गुरु सुणनै तामोरा हो २, भाग्या परिणामोरा २।
हारे, बुद्धिवंत तुज गुण माह्योरा हो २, त्यानै लेसी ताह्योरा २॥ ३६ ॥
हारे, बीजानै न लेवै लारोरा हो २, हुसी निराधारोरा २।
हारे, इम ए दुषीया होसीरा हो २, थानै सहु रोसीरा २॥ ३७ ॥
हारे, थारै बहु परिवारौरा होजी मुनि २, मतीय विचारौरा २।
हारे, थे छौ थणा रा नाथोरा हो २, मति विचारौ वातोरा २॥ ३८ ॥
हारे, तुज मुनि जो सु तामौरा हो २, भीक्खुरौ होसी नामोरा २।
हारे, टोली भिक्षु री वाजेसीरा हो २, थारौ नाम न रैहसीरा २॥ ३९ ॥
हारे, फकीरवालौ दुपटो होइरा हो २, ए दृष्टात जोईरा २।
हारे, इत्यादिक वच करि तामौरा हो २, भाग्या परिणामौरा २॥ ४० ॥
हारे, बोल्या जैमलजी वायौरा हो २, सुणौ भिक्षु ताह्यौरा हो २।
हारे, गला जितौ हुं कलीयौरा हौ २, न कहु वच अलीयौरा २॥ ४१ ॥
हारे, थे सजम सुध पालीरा हो मु० २, आत्म उजवालीरा २।
हारे, पडिता रै अवलोयो रा हो २, जाणी वरते सोयोरा २॥ ४२ ॥
हारे, जैमलजी रा उदारौ रा हो २, षट अणगारौरा २।
हारे, मन माहि गाढी धारौरा हो २, हुवा भिक्षु लारौरा २॥ ४३ ॥
हारे, जैमलजी रा षट सचोरा हो २, द्रव्य गुरू रा पचोरा २।
हारे, अन्य गणना बे धारीरा हो २, तेरै थया त्यारीरा २॥ ४४ ॥
शहर, जौधाणै समेरोरा हो २, थया श्रावक तेरोरा २।
हारे, सामायक पोसह धारोरा हो २, बैठा बजारौरा २॥ ४५ ॥
हारे, फतैचद दीवाणीरा होजी भविक २, सिंघी पिछाणी २।
हारे, देपी पूछै तिवारोरा हो, क्यू बैठा बाजारोरा २॥ ४६ ॥
हारे, थानक माहै सीधारा हो २, पोसा क्यूंनी कीधारा २।
हारे, श्रावक कहै तिवारोरा हो २, मुज गुरु सारोरा २॥ ४७ ॥
हारे, तज थानक नीसरीयारा हो २, भिक्षु गुण दरीयारा २।
हारे, ताम दीवाणजी इच्छैरा हो २, उत्पत्ति पूछैरा २॥ ४८ ॥

हारे, श्रावक बोल्या साष्यातौरा हौ २, छै बहु वातौरा २।
हारे, थिरता ह्वै जद सुणजोरा हो २, थिर चित थुणजोरा २॥ ४६॥
हारे, कहै दीवान उदारूरा हो २, थिरता अबारूरा २।
हारे, श्रावका ताम कह्यौ सुणायोरा, होजी भवि आचार बतायोरा॥ ५०॥
हाजी, आधाकर्मी आदोरा हो २, तजिया विवादीयोरा २।
हाजी, कृतगडनै नित पडोरा, होजी। दोषण छडोरा २॥ ५१॥
हाजी, इत्यादिक आचारोरा हो २, आष्यौ उदारोरा २।
हाजी, साभल सिंघी हरष्यौरा हो २, भिक्षु गुण परष्यौरा २॥ ५२॥
हाजी, ओहीज मुनी नौ आचारो हो २, सुध मग्ग सारोरा २।
हाजी, करै प्रसस सवायोरा हो २, मन हरषायो रा॥ ५३॥
हाजी, सत किताक सुमेरोरा हो भ० २, श्रावक कहै तेरोरा २।
हाजी, किता श्रावक थे सारोरा हो २, अधिक उदारो रा २॥ ५४॥
हाजी, म्हे भिक्षु ऋषि केरारा हो २, श्रावक तेरारा २।
हाजी, सिंघी बोल्यौ तिवारीरा हो २, जोग मिल्यौ ए भारीरा २॥ ५५॥
सेवग, उभो ज्याहीरा हो २, तुको जोड्यौ त्याहीरा॥ ५६॥

सेवगोक्त दूहौ

आप आपरो गिलौ करै, ते आप आपरौ मंत।
सुणजो रे शहर का लोका, ए तेरापथी तंत॥ ५७॥

ढाल तेहिज

हाजी, तेरै श्रावक तेरै सतोरा हो २, तेरापथी ततोरा २।
हाजी, जग विस्तारीयौ तामोरा हो २, तेरापथी नामोरा २॥ ५८॥
हाजी, ताम भीक्षु इम कैहवैरा हो जी स्वा०२, समचित वेवैरा २।
हाजी, हे प्रभुजी म्हे तेरारा होजी २, अवर अनेरारा २॥ ५६॥
हाजी, सुमत गुप्त अठ सचोरा हो २, पालै व्रत पचोरा २।
हाजी, ए तेरै पालै चित सतीरा होजी २, सोही तेरापथी रा २॥ ६०॥

छंद

गुण विण भेष कु मूल न मानत, जीव अजीव का किया निवेरा।
पुन्य पाप कु भिन भिन जानत, आस्रव कर्म कु लैत उरेरा।
आवता कर्मां नै सवर रोकत, निर्जरा कर्मां कु देत विखेरा।
वध तौ जीव कु बाधिया राखत, शाश्वता सुख तौ मोक्ष मैं डेरा।
इसो घट प्रकाश किया, भव जीवका मेट्या मिथ्यात अंधेरा।
निर्मल ज्ञान उद्योत किया एतौ, है पंथ प्रभु तेरा ही तेरा॥ ६१॥

तीन सौ तेसट्ठ पाखण्ड जगत मैं, श्री जिन धर्म सूं सर्व अनेरा।
द्रव्य लिंगी केई साध कहावत, त्या पिण पकड्या त्याराइज केडा॥
ताहि कु, दूर तजैं ते सत, विधि सू उपदेश दिया रूडेरा।
जिन आगम, जोय प्रमाण किया, जव पाखण्ड पथ मे पड़्या विखेरा॥
व्रत अव्रत दान दया, वतावत, सावद्य निर्वद्य करत निवेरा।
श्री जिन आगन्या माहै धर्म बतावत, ए तौ है पथ प्रभु तेरा ही तेरा २॥६२॥

ढाल तेहिज

हांजी, ढाल तीजी ए सीधीरा हो २, जय जश कीधीरा॥ ज० ६३॥

दुहा

भिक्षु भारीमालजी, आदि सत सुविचार।
नवो चरण लेवा भणी, ततक्षिण होय गया त्यार॥ १॥
समत् अठार सतरोत्तरै, पचाग लेपै पिछाण।
आषाढ सुदि पूनम दिने, वारु चरण कल्याण॥ २॥
अरिहत नी लेई आगन्या, शहर कैलवा माहि।
सजम धार्यो स्वामजी, सिद्ध शाषे सुपदाय॥ ३॥

ढाल : ४

[सुण चिरली थारली—ए देशी]

थिरपालजी फतैचन्दो, दोनू बाप वेटा सुषकदो।
जैमलजी रा टोला रा जाणी, भिक्षु साथ चरण गुणषाणी।
सुण सुखकारी, भिक्षु प्रतिबोध्या बहु नरनारी।
सुण सुखकारी, भिक्षु थया ओजागर भारी॥ १॥
आचार्य भिक्षु ऋषिरायो, वले टोकरजी सुखदायो।
हरनाथजी ज्ञान गभीरा, हद भारीमाल गुण हीरा॥ २॥
सत तेरां मैं ताह्यो, रह्या दृढ चित छहु मुनिरायो।
शेष सात नीसरीया, ते पिण वादल जिम बीषरीया॥ ३॥
भिक्खु दान दया दिपावै, बहु नरनारी समजावै।
व्रत अव्रत लेषौ वतावै, हलुकर्मी सुण हरषावै॥ ४॥
मुरधर देश मझारो, स्वामी आछौ करे उपगारो।
आया देश मेवाडो, बहु प्रतिबोध्या नरनारो॥ ५॥
श्रद्धा नै आचारो, व्रत अव्रत ऊपर विचारो।
वली अणुकपा नी सुरंगी, स्वामी जोड करी अति चंगी॥ ६॥

धुर गुणठाणा नी करणी, निर्वंध आज्ञा में उचरणी।
जिन आज्ञा ऊपर जाणी, स्वामी जोडां करी सुषदाणी॥ ७॥
च्यार निक्षेपा नी जाची, पोतीयाबंध उपर आछी।
कालवादी ऊपर सीधी, सुत्र साष देइ जोडां कीधी॥ ८॥
पर्यायवादी पिछाणो, वले इन्द्रियवादी जाणो।
वले एकल नै ओलषायो, बहु जोडां करी मुनिरायो॥ ६॥
वले टीकम डोसी कहिवाइ, तिणरी श्रद्धा नै ओलषाई।
नवतत्व नी जोड सुरगी, चारु सुत्र साष दे चंगी॥ १०॥
वले विनीत नै अविनीतो, तिण ऊपर जोडा पवित्तो।
टालोकर नै ओलषायो, वृध रास माहै बहु न्यायो॥ ११॥
वले जोड्या सखर बषाणो, वारु वैराग रस गुणषाणो।
आसरै अडतीस हजारो, स्वामी ग्रथ जोड्या सुषकारो॥ १२॥
सूत्रा नी हूंडी सीधी, वले पोत्याबध उपर कीधी।
अवर ही बोल अनेको, वले मेल्या न्याय विशेषो॥ १३॥
उत्पतिया बुद्धि सु उदारी, स्वामी दृष्टांत दीधा भारी।
हलुकर्मी सुण हरषावै, चित चिमत्कार अति पावे॥ १४॥
वले संत सती बहु कीधा, घणा श्रावक श्राविका सीधा।
विचर्‍या मुरधर नै मेवाडो, वले हाडोती देश ढूंढाडो॥ १५॥
चूरु ताइ थली मैं आया, प्रयोजने ऋषिराया।
वहु विचर्‍या मरुधर मेवाडो, दोय चोमासा देश ढूंढाडो॥ १६॥
ओजागर भिक्षु आपो, स्थिर च्यार तीर्थ मैं स्थापो।
पूर्वधारी जेहवा, ए तो स्वाम भीखणजी एहवा॥ १७॥
दशविध जती धर्म धारी, ज्यारी करणी री बलिहारी।
परभव चिंता पूरी, ज्यारी कीर्त्ति जग मे रूडी॥ १८॥
क्षमावत गुणषानो, स्वामी अधिक अवसर ना जानौ।
सिंह तणी पर सूरा, झट मेलै न्यायज रूड़ा॥ १६॥
वले वैराग रस माहै भीना, सवेग करी लह लीना।
नाम सुणी पाषडी धड़कै, जन हलुकर्मी सुण हरषै॥ २०॥
शील सिरोमणी साचा, जशधारी भिक्षु जाचा।
दयावत इन्द्रया दमता, सत दत्त नि कचन रमता॥ २१॥
एहवा भिक्षु ऋषिरायो, त्यारा गुण पूरा कह्या न जायो।
सक्षेप मात्र वताया, गुण अनघ अथग अधिकाया॥ २२॥

वलि बांधी बहु मर्यादौ, आतौ आणी अति अहलादौ।
धुर बतीसै धारी, अत गुणसठै लिषत उदारी।
जन सुषकारी, भिक्षु बाधी मर्यादा भारी ॥ २३ ॥
गणपति नामै दिष्या, करणा शिष्य शिष्यणी वर शिष्या।
दिष्या देनै सूंपणा आणी, लिषत गुणसठै भिक्षु नी वाणी ॥ २४ ॥
शेखै काल चौमासौ, रहिवै गणपति आण हुलासौ।
किण ही खेत्र रै माहि, गणि आणा विण रहिवौ नाहिं ॥ २५ ॥
आचार्य नी इच्छा आवै, गुरुभाई चेला नै सुभावै।
सूंपै टोला रौ भारौ, तिणरी आण मै रहिवौ तिवारौ ॥ २६ ॥
सहु सत सत्या नै ताह्यौ, रहिणौ एकण री आज्ञा माह्यौ।
एह रीत परपरा बाधी, मार्ग चालै जठा ताई साधी ॥ २७ ॥
कर्म जोग इक बे त्रिण आदौ, गण सु नीकल करै विवादौ।
तिणनै सुध सरधवौ नाहि, न गिणवौ च्यार तीर्थ रै माहि ॥ २८ ॥
च्यार तीर्थ रौ तेही, निंदक जाणवौ जेही।
वादै पूजै एहवा नै कोई, ते पिण जिण आज्ञा बारै होई ॥ २९ ॥
नीकल नवी दिष्या लै कोई, तिणनै साधु न सरधणो सोई।
तिणरी बात न मानणी लिगारौ, आरै कीधौ दीसै अनंत संसारौ ॥ ३० ॥
कर्म जोगे नीकलीया बारौ, तिणनै टोला तणा तिणवारौ।
हुता अणहुता जाणौ, अवगुण बोलण रा पचखाणौ ॥ ३१ ॥
विटल होई भागै सूंस कोई, तसु हलुकर्मी न मानै सोई।
उण सरीपौ विटल मानै वायौ, ते लेपा माहि न गिणायौ ॥ ३२ ॥
इमही पचासै जाणौ, अवगुण बोला रा पचषाणौ।
नीकल नवी दिष्या लै कुमागो, तौ पिण अवगुण बोलण रा त्यागो ॥ ३३ ॥
म्हे नवी दिष्या लीधी समभावौ, आगला सूसा रौ नही अटकावौ।
यूं पिण वोलण रा पचषाणौ, लिषत पचासै भिक्षु वाणौ ॥ ३४ ॥
पत्र लिष्या जाच्या गण माही, तिके वाहिर ले जावणा नाही।
इक निगि उपरत जाणौ, क्षेत्रां मै रहिवारा पचपाणौ ॥ ३५ ॥
लिपत पैतालीसै अमोली, श्रद्धा आचार कल्पसुत्र बोली।
गुरु तथा वृद्धिवत सतो, कहै जिम करणौ धर षतो ॥ ३६ ॥
पचासै गुणसठै जाणौ, वले सैतीसै रास मै वाणौ।
दोप देखे तौ तुरत कहिणौ, घणा दिवस दावे नही रहिणौ ॥ ३७ ॥
आचार्य री आज्ञा विण ताह्यौ, एक निगि उपरत गाम माह्यौ।
मुनि अज्जा नै भेली न रैहणौ, पचासा लिपत माहि ए वैणौ ॥ ३८ ॥

आहार पाणी वहिरीनै ल्यायौ, संभोगी नै वाटी दैणी ताह्यौ।
आप आण्यौ जाणी अधिक लेवै, अदत्त लागै प्रतीत न रैवै ॥ ३९ ॥
दैणी दिष्या महाजन नै ताह्यौ, स्वामी छेहड़ै वचन फुरमायौ।
पिण पाना मैं लिषीयौ नाही, सुवनीत धर्‍यौ दिल मांही ॥ ४० ॥
इत्यादिक मर्यादौ, स्वामी बाधी धर अहिलादौ।
वहु वर्षां लग तामौ, स्वामी सासण चलावण कांमौ ॥ ४१ ॥
चोथी ढाल मभारौ, भिक्षु वर्णक अधिक उदारौ।
सुष पायौ तास पसायौ, गणि जयजश हरष सवायौ ॥ ४२ ॥

दुहा

सतरा सुं साठा लगै, अधिक कीयो उपगार।
जीव घणा समजावीया, सषरा तीर्थ च्यार ॥ १ ॥
भिक्षु रा मुष आगलै, भारीमाल सुष स्हाज।
अष्टादश बतीस मै, थाप्यौ पद युवराज ॥ २ ॥
चित अनुकुल मुनि चालता, प्रकृति भद्र पुन्यवान।
गर्व रहित गिरवा गुणी, विनयवान जशवान ॥ ३ ॥
घन गर्जारव सा वचन, वारु तास वषाण।
वीर तणा मुष आगलै, गोतम जिम अगवाण ॥ ४ ॥
ग्रथ हजारा तासु मुष, अधिक चातुरी आप।
अतिसैधारी ओपता, स्थिर पद त्यांरी स्थाप ॥ ५ ॥
परम प्रीत भिक्षु थकी, अंत सीम अवधार।
सेवा करी साचै मनै, भारीमाल धर प्यार ॥ ६ ॥
अड्तीसै दिष्या ग्रही, षेतसीजी धर क्षत।
भक्तिवंत भारी घणा, क्षमावंत्त जशवंत ॥ ७ ॥
चरचावादी विमल चित्त, उपगारी अधिकाय।
चरण चमालीसै चतुर, वैणीराम मुनिराय ॥ ८ ॥
धर संवेग तणुं सही, ज्ञान ध्यान सुं प्रेम।
उत्पत्तिया अति चरण चित, वृद्धि तैपनै हेम ॥ ९ ॥
सतावनै संजम लीयौ, भिक्षु बुद्धि अमंद।
पट लायक परष्यौ प्रगट, हस्तमुषी नृपचंद ॥ १० ॥
अधिक गुणी ए आदि दे, अड़तालीस अणगार।
अज्जा छपन आसरै, स्वाम छतां व्रतसार ॥ ११ ॥

अष्टवीस मुनि आसरै, समणी गुणचालीस।
गण माहै गाढा रह्या, शेष नीकल्या दीस॥ १२॥
वीस रह्या गण बारणै, रूपचंद त्यां माय।
स्वाम शाष संजम ग्रही, अणसण दीधौ ठाय॥ १३॥
पांचूं इन्दरख्या परवरी, थाणै थपीया नाहि।
चरम चौमासै आवीया, शहर सरियारी माहि॥ १४॥

ढाल : ५

(धन-धन भिक्षु स्वाम दीपाई दान दया—ए देशी)

श्रावण मास मझार, दस्तकारण तनु मै।
दिशां जावै पुर बार, गिणत नही बहु मन मै।
बहु मन मै जी फुन बहुजन मै, पुर माहि गौचरी प्रगट पणै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, भाव आराम घनै॥ १॥
श्रावण पूनम स्वाम, गोचरी आप गया।
भाद्रव मै अभिराम, अधिक चित शाति भया।
चित साति भयाजी वर ध्यान लह्या, ऋषि लीन परम भावेज रह्या।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, मरण पडित उमह्या॥ २॥
त्रिहु टक हुवै वखाण, पजूषण माहि भला।
चउथ चादणी जाण, वयण भाषै विमला।
भाषै विमला जी अती ही अमला, वच सत षेतसी नै निमला।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, यमल गुण उभय झिला॥ ३॥
थे सषरा शिष्य सुविनीत, चरण नौ स्हाज दीयौ।
टोकरजी वर रीत, भक्ति करि सुजश लीयौ।
सुजश लीयौ जी तनु मन ठरीयौ, भारीमाल परम भक्ता वरीयौ।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, ज्ञान गुण नौ दरीयौ॥ ४॥
या तीना रा स्हाज, थकी समभाव पणै।
पाल्यौ संजम पाज, हरष आनंद घणै।
आनद घणै जी त्रिहु सत तणै, अतहि इकधार रह्या सुमणै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सुजश तसु जगत थुणै॥ ५॥
सुणतां तीर्थ तीन, शीष आपै सखरी।
रहिजौ थे लहलीन, गणि सिर आण धरी।
आण धरी मुझनी जवरी, भारीमाल तणी तिन धार षरी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, अमल वाणी उच्चरी॥ ६॥

भारीमाल नी आण, अखंडत जेह धरै।
ते सुविनीत पिछाण, सत सुगणाज सिरै।
सुगणाज सिरै कुण होड करै, तसु सेवक री तन मन सखरै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, अमल सिष्या उच्चरै ॥ ७ ॥

एहनी लोपै आण, दूर करिवूज बही।
ते अपछंदा जाण, तीर्थ मै तेह नही।
तेह नही जी जिन समय कही, निंदण जोगा ते छै अति ही।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सीष आपै सुरही ॥ ८ ॥

आणद अभिग्रह कीध, वीर आणा बारै।
वदन नेमज लीध, प्रथम बोलण वारै।
बोलण वारै जी इम मन धरै, चिहु आहार दान तसु परिहारै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, जिनन्द्र ज्यू इण आरै ॥ ९ ॥

अज्जा सत विशेष, राषजो हेत अती।
दिष्या दीजो देष देष, परभव अरथी।
परभव अरथी सम्यक् धुर थी, पिण जिण तिणनै मूडीज मती।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, तास सिर अधिक रती ॥ १० ॥

आलोयण अधिकाय, करी अति स्वाम भली।
लख चौरासी खमाय, करै आत्म निसली।
आत्म निसली जी खामैज वली, गणथी टलनैज थया विकली।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, तास चित कुसमकली ॥ ११ ॥

वडा शीस अवलोय, परम भक्ता वारु।
लैहर आई हुवै कोय, खमावै चित चारु।
चित चारुजी निज हित कारु, मुनि अजा अन्य वलि गुण धारु।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, निजात्मज निस्तारु ॥ १२ ॥

जे श्रावक श्राविका तेह, खमावै तास भणी।
वलि जती ढूढीया जेह, जूजूआ नाम गिणी।
नाम गिणीजी चरचाज घणी, तसु लैहर आई हुवै द्वेष तणी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, निसल आत्म अपणी ॥ १३ ॥

अतीचार आलोय, सुमति अरू गुप्ति मझै।
दोष लागो हुवै कोय, पच महाव्रत । रै जै।
व्रत रै जै जी अघ थी जल जै, इम निसल्ल थई गुणी थी जग जै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सखर सिव पथ सझै ॥ १४ ॥

आयु निकट पिछाण, निसल आतम कीधी।
हिवै सलेषण आण, सुणी भवियण सीधी।
भवियण सीधी जी तप असि लीधी, उपवाश पचमी तप वृद्धी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सुमति नी समृद्धी ॥ १५ ॥

छठ पारणैधार, अल्प औषधि आहारं।
वमन हुवौ तिणवार, साम भिक्षु सारं।
भिक्षु सार जी तिण दिन धार, पचखाण करै त्रिण विध आहार।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, हीयै अति हुसीयारं ॥ १६ ॥

सातम आठम जाण, अल्प अन्न आचरीयौ।
तुरत कीया पचखाण, कहै सतजुगि दरियौ।
सतजुग दरियौजी गुण रस भरीयौ, इम तुरत त्याग किम उच्चरीयौ।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, जगत जश विस्तरीयौ ॥ १७ ॥

नवमी त्याग करत, पेतसी पाच कही।
अल्प आहार मुज हस्त, तणौ लीजैज सही।
लीजैज सही जी इम कहै ऊमही, तसु वचन मान अन्न अल्प लही।
सुविनीत तणौमन राषण ही,
धिन धिन भिक्षु स्वाम, कीर्ति जग छाय रही ॥ १८ ॥

दशमीं त्याग करंत, अरज वड शिष्य न्हाली।
दस मोठ आसरै हस्त, लीयै चावल चाली।
चावल चाली जी अघ नै टाली, उपरत त्याग कीधा भाली।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, लगी सिवसै ताली ॥ १९ ॥

ग्यारस अमल आगार, कीयौ इम उपवासं।
हिव मुज आहार मजाण, वयण इम प्रकास।
प्रकास जन विश्वास, अणसण थी अति चित हुलास।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, अमल सिवपद आसं ॥ २० ॥

बारस बैलौ कीध, स्वामीजी समभावै।
हाट स्हामली थकी, पकी हाटे आवै।
हाटे आवै जी तनु नै तावै, वर पका मुनि जन गुण गावै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, पकौ अणसण ठावै ॥ २१ ॥

तांम लीयौ विश्रांम, अरज ऋषिराय करै।
पुद्गल पडीया हीण, स्वाम सुण हरष धरै।
हरष धरै जी इम वच उचरै, बौलावौ शिष्य भारीमाल सिरै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, तास कुण होड करै ॥ २२ ॥

चटदे उभा आण, सुणी भारीमालं।
वले षेतसी आदि, मुनि आया चालं।
आया चालं ऋष गुण मालं, वच वदै स्वाम अति सुविसालं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, पीत सिव पट सालं॥ २३॥

करिवौ मुझ सथार, एम पभणै स्वामी।
नमोथुणं गुण तामं, सिद्ध अरिहंत नामी।
अरिहंत नामी सिवपद कामी, ऊंचै स्वर वच स्थिर चित धामी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, परम संपति पामी॥ २४॥

जाव जीव लग मोय, त्याग त्रिहु आहार तणा।
श्रावक श्राविका संत, सुणै जन वृन्द घणा।
जन वृन्द घणाजी गुण करत जना, अणसण धार्‍यौ भिक्षु सुगुणा।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, काज सारै अपणा॥ २५॥

यतनी

शिष्य भारीमाल कहै सार, क्यूं नी राष्यौ अमल आगार।
स्वामी कहै धार्‍यौ सथार, किसी करणी देही नी सार॥ २६॥

ढाल तेहिज

तैरस नै जनवृन्द, दर्श करिवा आवै।
सूस आषडी करै, स्वाम ना गुण गावै।
गुण गावै जी अति हुलसावै, बाजार माहिज जन नही मावै।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, विमल भावन भावै २७॥

सवा पोहर उनमान, दिवस चढीयां जाणी।
निज कर सेती आप, स्वाम पीधौ पाणी।
पीधौ पाणी अति गुण षाणी, आसरै मुहुर्त्त पाछै जाणी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, वदै इह विधि वाणी॥ २८॥

आवै संत सुजाण, मुनि स्हांमा जायो।
वलि आवै छै अज्जा, वदै इह विधि वायौ।
इह विधि वायौ जन सुण ताह्यौ, सुणतां वलि वर वहु मुनिरायौ।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, चरम वच फुरमायौ॥ २९॥

जन कहै स्वामी तणा, जोग मुनि मे वसीया।
एक मुहुर्त्त आसरै, साधु आया तिसीया।
आया तिसिया जी वे गुण रसीया, वंदणा करनै मन हुलसीया।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, दुरित दोहग न्हसीया॥ ३०॥

वैणीरामजी संत, वडा जग विख्यात।
वले कुसालजी साथ, वदै सिर करि नाथं।
करि नाथ जी अति रलियात, तसु स्वाम दीयो मस्तक हाथ।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, अमल जग अखियात॥ ३१॥

दोय आगुली थकी, सैन करिनै जाणी।
सुखसाता पूछत, कची चखु पहिछाणी।
पहिछाणी जी उच्चरग आणी, सावचेत इसा मुनि गुण खाणी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, महाकीर्त्ति माणी॥ ३२॥

साधु आया तेह, अधिक ही गुणगात।
दोय मुहुर्त्त आसरै, आयी समणी साथ।
समणी साथ वदै नाथ, जन कहै अवधि उपनी ख्यात।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, कही अचरज वात॥ ३३॥

अटकल सू आख्यात, तथा वुद्धि थी दापी।
तथा अवधि उपनो, तिको सर्वज्ञ साखी।
सर्वज्ञ साखी जी आगूच आपी, प्रगट पिण छानै नही रापी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, वात अचरज भापी॥ ३४॥

स्वामी सूता भणी, हुई छै वहु वारं।
पूछ्यो वैठा करस, भख्यो तव हूकार।
हूकार ऋषि तिण वार, वैठा कर मुनि वेठा लार।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, शासण रा सिणगार॥ ३५॥

करै सत गुणग्राम, आप महा उपगारी।
वडा वडा पापड, हटाया वहु वारी।
बहु वारी जी वलि जन तारी, फुन दान दया दिल मे धारी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, आप मग्ग ने तारी।
परम कीर्ति प्यारी।
आप जग जशधारी,
धिन धिन भिक्षु स्वाम, वदै इम अणगारी॥ ३६॥

दरजी माढी सीव, सूइ पागे घाली।
जन कहै स्वाम तिवार, गया चटदे चाली।
चटदे चाली जी प्रत्यक्ष भाली, वतका ए अति अचर्यवाली।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, पूरण कीर्ति पाली॥ ३७।

माढी तेरै षड, तणी कीधी त्यारी।
महोत्सव कीधा अधिक, कार्य लौकिक धारी।
लौकिक धारीजी आज्ञा बारी, आसरै पच सय कहै लारी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, सप्त पौहर सथारी॥ ३८॥

समत अठैरै साठै, भाद्रव सारी।
परभव पोहता पूज्य, तेरस मगलवारी।
मंगलवारी जी काई सिरीयारी, भारीमाल पाठ बैठा भारी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, जाऊं सब बलिहारी ॥ ३९ ॥

घर मै वर्ष पचीस, आंसरै अठ वासं।
भेषधारयां मै रह्या, पछै सुध व्रत फास।
सुध व्रत फासं मुनि गुण रासं, वर्ष तयालीस जाको जासं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, प्रगट जन विश्वास ॥ ४० ॥

आसरै सिततर वर्ष, आयु पाल्यौ स्वामी।
परभव कीयौ पयाण, धर्म मूर्त्ति धामी।
मूर्ति धामी जी अति हित कामी, पदधार परम संपति पामी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, निमल जग मै नामी ॥ ४१ ॥

भिक्षु तणै प्रशाद, जीव बहुला तरीया।
साप्रति काले तिरै, स्वाम वच सिर धरीया।
सिर धरिया जी जन उद्धरीया, तिरस्यैज अनागति गुण दरीया।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, तास उत्तम किरीया ॥ ४२ ॥

भिक्षु भवदद्धि पाज, भाव नावा तरणी।
ज्ञान क्रिया किरि युक्त, केहा कहियै करणी।
कहीयै करणीजी वर उच्चरणी, संक्षेप मात्र विध मैं वरणी।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, मुर्त्ति तसु मनहरणी ॥ ४३ ॥

उगणीसै तेवीस, माघ सुदि तिथ तिज।
गुरुवारे ए जोड, करी भिक्षु वीजं।
भिक्षु वीजं तसु जप कीज, भारीमाल रायऋष रमणीजं।
धिन धिन भिक्षु स्वाम, लहै जय जश रीझं ॥ ४४ ॥

●